हिन्दुस्तानी कोष

हिन्दी और उर्दू में आमतौर से प्रचलित संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की, अँग्रेजी और पोर्चुगीज आदि भाषाओं तथा युक्तप्रांत के देहातों के शब्दों का संग्रह।

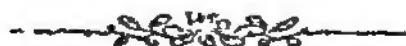


सम्पादक

रामनरेश त्रिपाठी

प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग



पहला संस्करण १००० } अगस्त, १९३३ { मूल्य दो रुपये

पहला संस्करण १०००, अगस्त, १९३३

प्रारंभ के सवा दो फार्म हिन्दी मन्दिर प्रेस, इलाहाबाद में और
शेष सब कायस्थ पाठशाला प्रेस, इलाहाबाद में मुद्रित हुए।

भूमिका

इस समय तक हिन्दी में जितने कोष, चाहे वे हिन्दुस्तानियों के लिखे हों, चाहे अँग्रेज़ों के, प्रकाशित हो चुके हैं, उनको शुद्ध हिन्दी का न कहकर अवधी, व्रजभाषा और खड़ीबोली का मिश्रित कोष कहना अधिक सार्थक होगा। क्योंकि उनके निर्माताओं ने अवधी और व्रजभाषा के पद्य और वर्तमान हिन्दी (जिसे खड़ीबोली भी कहते हैं) के गद्य पद्य दोनों में प्रचलित शब्दों को एक ही कोष द्वारा सर्वसाधारण को दिया है। उन्होंने हिन्दी की स्वतंत्र सत्ता का ध्यान नहीं रक्खा है।

हिन्दी, जो केवल हिन्दुओं की भाषा न कहलाकर सम्पूर्ण हिन्द अर्थात् हिन्दुस्तान की भाषा के अर्थ में व्यवहृत हो रही है और जो राष्ट्रभाषा और हिन्दुस्तानी के नाम से भी प्रसिद्ध है, अपना एक स्वतंत्र रूप रखती है और एक ऐसा कोष चाहती है जो केवल उसी का हो। हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा होने के कारण अब अवध और व्रज का सङ्कुचित क्षेत्र ही नहीं, बल्कि विशाल भारत उसके विकास का क्षेत्र हो गया है। उसका रूप, उसका साहित्य, उसका प्रभाव अब सब कुछ स्वतन्त्र है, अतएव साझे के कोष से उसका काम नहीं चल सकता। मैंने इसी भाव से प्रेरित होकर यह कोष तैयार किया है। इस कोष में जहाँ संस्कृतके वे तमाम तत्सम और तद्भव शब्द आ गये हैं जो हिन्दी की पुस्तकों और पत्रों में चल रहे हैं, वहाँ अरबी, फारसी, तुर्की और अन्य विदेशी भाषाओं के वे शब्द भी साथ साथ कर दिये गये हैं जो उर्दू की दुनिया में चलते हैं। यहाँ यह बता देना भी आवश्यक है कि मैं हिन्दी और उर्दू को भिन्न भाषायें नहीं मानता।

अँगरेजी राज के प्रभाव से हिन्दी में अँग्रेजी शब्दों की संख्या भी काफी बढ़ गई है। मैंने उनको भी हिन्दुस्तानी मानकर उनको अपनी सेवा का भार सौंपना मुनासिब समझा है।

साथ ही कुछ देहाती शब्दों को भी, जिनके पर्यायवाची शब्द प्रचलित हिन्दी में प्राय नहीं हैं, पर जिनकी नितान्त आवश्यकता है, मैंने इसमें स्थान दिया है। हमें अपने ग्रामीण शब्दों को अपने ज्ञान-कोष में प्रमुख स्थान देना ही चाहिये क्योंकि वे हमारे अपने हैं और उनके द्वारा हम समाज के अन्तस्तल में अधिक व्यापक होकर, अपने लाखों-करोड़ों विचारों से, अधिक विस्तृत सीमा के अन्दर, अधिक सम्यक् मार्गों के कल्याण साधन में सफल प्रयत्न हो सकते हैं। यद्यपि देहाती शब्द अभी विवादग्रस्त हैं, क्योंकि भिन्न भिन्न स्थानों में उनके रूप और अर्थ में बड़ी भिन्नता मौजूद है, इससे मेरा ही दिया हुआ उनका रूप और अर्थ प्रामाणिक नहीं माना जा सकता, पर मैंने विचार के लिये यह प्रश्न विद्वानों के समक्ष रक्खा है कि ये भी हिन्दी की सीमा में क्यों न आने दिये जायँ और उनसे हम काम क्यों न लें? जैसा आजकल टर्की में मुस्तफ़ा कमाल पाशा कर रहे हैं।

सम्पूर्ण देश में एक राष्ट्रीयता का भाव भरने और उसे स्थायी रखने के लिये एक राष्ट्रभाषा की नितान्त आवश्यकता है और हिन्दी प्रान्तवालों के लिये यह हर्ष की बात है कि उनकी हिन्दी ही भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा स्वीकार की गई है। ऐसी दशा में हिन्दीवालों के लिये यह पहला कर्तव्य होजाता है कि वे अपनी हिन्दी को अधिक से अधिक व्यापक होने की शक्ति प्रदान करें और यह व्यापकता तभी सम्भव है जब हम देशभर में प्रचलित शब्दों को हिन्दी का रूप देकर अधिक से अधिक संख्या में उसमें भर लें जैसा अँग्रेज़ी भाषा में सदा होता रहता है।

मेरा यह विचार नया नहीं है। अब से पन्द्रह वर्ष पहले मेरे पास कुछ मदरासी विद्यार्थी हिन्दी सीखने के लिये रहते थे। उनको जो साहित्यिक हिन्दी सिखाई जाती थी, उसमें अवधी और ब्रजभाषा ही का अंश अधिक होता था जिससे वे राष्ट्रभाषा हिन्दी से पूर्ण परिचित नहीं हो पाते थे इससे मैंने उनके लिये उर्दू में प्रचलित बहुत से

विदेशी शब्द संग्रह करके उन्हें याद कराये थे। उसी समय से विदेशी शब्दों का संग्रह में कर रहा हूं, और आज सचमुच मुझे हार्दिक हर्ष है कि मैं उनको एक कोष में बैठाकर विचार धारा में प्रवाहित कर पाया हूं।

मैं हृदय से चाहता हूं कि हिन्दी उर्दू का अन्तर मिट जाय। हिन्दी उर्दू में केवल लिपि का अन्तर है। लिपि के सम्बन्ध में इलाहाबाद हाइकोर्ट के चीफ जस्टिस सर सुलेमान का यह कथन काफी होगा, जिसे हिन्दी और उर्दू दोनों के हिमायतियों को सदा स्मरण रखना चाहिये—

"नागरी और उर्दू लिपि का विवाद भाषा से उतना सम्बन्ध नहीं रखता जितना कि राजनीति से। किसी विशेष प्रकार की लिपि का व्यवहार विशेषकर भिन्न भिन्न व्यक्तियों की प्रवृत्ति या इच्छा पर निर्भर है। इसलिये लिपि को अधिक महत्व न देना चाहिये। किसी विशेष लिपि का अपनाना बिल्कुल लोगों की इच्छा पर निर्भर है। कोई विशेष लिपि गढ़ी जा सकती है, कहीं से ली जा सकती है तथा हठात् बदल या त्याग भी दी जा सकती है। इस प्रकार के परिवर्तन संसार में सभी जगह हो चुके हैं। परन्तु टर्की को छोड़कर इस प्रकार के परिवर्तन अधिकतर क्रमश और धीरे धीरे इस तरह हुये हैं कि लोग जल्दी ही उन्हें भूल भी गये हैं। किसी भी लिपि की कृत्रिमता हम उस समय तुरन्त जान सकते हैं जब कि हम देखते हैं कि कुछ भाषाएँ भिन्न भिन्न समयों में भिन्न भिन्न रीति से लिखी गई हैं। इस बात का अब पता लग गया है कि मेक्सिकन चित्र लिपि नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाती थी। चीनी लिपि ऊपर से नीचे की ओर, सेमिटिक भाषायें दाहिने से बायें ओर को लिखी जाती हैं। संस्कृत तथा इससे उत्पन्न भाषायें बायें से दाहिने को लिखी जाती हैं। यद्यपि संस्कृत भी जब खरोष्ठी लिपि में लिखी जाती थी तब दाहिने से बायें को लिखी जाती थी। ग्रीक भाषा

एक समय बायें से दाहिने को लिखी जाती थी, पर बाद में यह उस ढंग से लिखी जाने लगी, जैसे बैल से हल जोता जाता है; अर्थात् क्रम से एक बार दाहिने से बायें और फिर बायें से दाहिने। यदि एक पंक्ति दाहिने से बायें लिखी गई तो उसके बाद की पंक्ति वहीं से आरम्भ होती जहां पहली पंक्ति समाप्त हुई थी और यही क्रम बराबर चलता रहता। बाद में यह प्रथा छोड़ दी गई और फिर बराबर बायें से दाहिने को लिखने की प्रथा चल गई। उपरोक्त बयान से यह स्पष्ट होजाता है कि किसी विशेष लिपि का अपनाना स्वेच्छा पर निर्भर है। जब चाहें तब हम इसमें परिवर्तन या इसका त्याग कर सकते हैं।

हिन्दी के सिवा दूसरी कोई भाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती न अँग्रेज़ी, न बँगला, न मराठी। क्योंकि इन भाषाओं का प्रचार हिन्दी की अपेक्षा कम है और इनमें हिन्दी के समान व्यावहारिक शब्दों के हज़म करने की शक्ति भी नहीं है। अँग्रेज़ी में शक्ति है अवश्य पर वह भाषा हिन्दुस्तान की स्वाभाविक भाषा नहीं। अतएव उसको राष्ट्रभाषा मानने या बनाने का प्रयत्न समय के अपव्यय के सिवा और कुछ नहीं।

The s gn fi ance of this a pe t of the matter has howev r b n con lerably obscured by an unfortunate controversy over the hara cters in which thi dialect may be written But the quarrel over the nature of the cript wheth r it should be Urdu or Nagari charact r is sometim s more a political than a linguistic one The kind of script that is to be used is a matter of lesser imp rtance d pending t a large extent on individual feelings and inclinations The adoption of a particular script is a purely arbitrary act A particular cript can be newly in ented can b freely borrowed can be ud lenly charged or delib rately abandoned Cha ges of this type have taken place all over the wo ld. B it except in the ca e of Turkey th transfor mation has often been so grad l a to be almost forgotten One can easily appr ciate the ar it rariness of a script by rec llecting the d fferent ways in which some languages have been written and the

मार्च, सन् १९३२ में हिन्दुस्तानी एकेडेमी (युक्तप्रान्त) के वार्षिकोत्सव में पढ़ने के लिये मैं ने 'हिन्दी या हिन्दुस्तानी' विषयक एक लेख† लिखा था; यह लेख एकेडेमी की तिमाही पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' में प्रकाशित हुआ था। उसे लेकर हिन्दी के पत्रों में बड़ा शोर मचा। मेरी जानकारी में बीसियों लेख हिन्दी के मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्रों में मेरे उस लेख के विरोध में निकले। मैं ने दुःख के साथ यह अनुभव किया कि प्रायः उन सभी लेखों के लेखकों ने मेरे लेख को आदि से अन्त तक पूरा पढ़े बिना ही जो कुछ जी में आया, लिख मारा था। किसी ने लिखा, मैं एकेडेमी के प्रभाव से प्रेरित होकर हिन्दी, उर्दू को एक करना चाहता हूँ। किसी ने लिखा, मैं संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों के बहिष्कार करने का पाप कर रहा हूँ। किसी ने लिखा,

---

changes effected in them from time to time It is now known that the Mexican picture writing was written from bottom to top that is going upward The chinese characters are arranged in vertical columns to be read from top to bottom The semitic languages are written from right to left The Sanskrit language and its descendents are written from left to right But even Sanskrit when written in kharoshti script was written from right to left Greek was at one time written from right to left and then it followed a method corresponding to the ploughing of a field by oxen that is alternately from right to left and then left to right If one line was written from right to left the next began close to the end of the first line and was written from left to right and so on This system was later on changed to one of writing from left to right all along the page This furnishes a good illustration how arbitrary is the choice of a particular form of a script and how it can be altered or abandoned

हिन्दुस्तानी एकेडेमी के वार्षिकोत्सव में पठित।

†सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह लेख भी इस कोष में अलग दे दिया जा रहा है।

मैं हिन्दी की संस्कृति को नष्ट करने पर तुला हूँ। विचारणीय विषय को महत्त्व न देकर कइयों ने मुझपर व्यक्तिगत हमले भी किये; पर यदि वे मेरे लेख को पूरा पढ़कर कुछ लिखने बैठते तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे मेरी ही परिधि में होते; मुझे हिन्दी के एक अच्छे सेवक के रूप में स्मरण करते और मेरे विरुद्ध जनता में गलतफ़हमी फैलाने की ग़लती स्वयं न करते। सब को अलग अलग उत्तर देने की अपेक्षा मैंने यह उचित समझा कि मैं अपने उत्तर को इस कोष के रूप में अधिक स्पष्ट करके शिक्षितवर्ग के सामने रक्खूँ; ताकि मेरे हिन्दी भाषा विषयक विचारों के सम्बन्ध में फैला हुआ या फैलाया हुआ भ्रम दूर हो जाय।

यद्यपि यह कोष पूर्ण नहीं कहा जा सकता, और मैं अकेला इसे पूर्ण बना भी नहीं सकता था, पर मैंने अपनी शक्तिभर शब्दों के संग्रह में कोई कसर उठा नहीं रक्खी। लगातार एक वर्ष के परिश्रम से मैं इसे इस रूप में कर पाया हूँ।

इस कोष की तैयारी में मुझे हिन्दी, उर्दू और अँग्रेज़ी हिन्दी के सुप्रसिद्ध कोषों से अनेक बार सहायता लेनी पड़ी है, जिनके लिये मैं उनके सम्पादकों का हृदय से कृतज्ञ हूँ।

इस कोष के बाद मेरे मन में यह लालसा है कि इसी तरह मैं ब्रजभाषा और अवधी के शब्दों का भी एक कोष तैयार करूँ और उसे प्रकाशित करके उनके सरस और लोकोपयोगी काव्य साहित्य को जनता के जीवन में पहुँचाकर सुख अनुभव करूँ।

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग
श्रावण शुक्ला ७ १९९०

रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी या हिन्दुस्तानी

वह भाषा जो आजकल युक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रदेश, देहली और उसके आसपास के दूसरे प्रांतों के वर्नाक्युलर स्कूलों में आमतौर से पढ़ायी जाती है, और जिसमें कितने ही मासिक, साप्ताहिक और दैनिक अख़बार निकल रहे हैं, कोई एक ख़ास सूरत नहीं रखती। कम से कम वह तीन सूरतों में आसानी से तक़्सीम की जा सकती है। एक वह जिसका नाम हिन्दी है, और जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द ही ज्यादा हैं, दूसरी वह जो उर्दू कहलाती है, और जिसमें अरबी, फ़ारसी और तुर्की के अल्फ़ाज़ भरे हुए हैं, तीसरी वह जो इन दोनों के बीच की भाषा है, और जिसमें सिर्फ़ बोलचाल के वे ही अल्फ़ाज़ आने पाते हैं जो आमलोगों की ज़बान पर हैं, चाहे वे संस्कृत से आये हों, चाहे अरबी या फारसी या तुर्की से। यह हिन्दी और उर्दू की खिचड़ी है। इसे हिन्दुस्तानी कहते हैं। एडविन ग्रीव्स साहब ने अपने 'हिन्दी ग्रामर' की भूमिका में हिन्दुस्तानी की यह व्याख्या की थी—

"हिन्दुस्तानी नाम कुछ यथार्थता के साथ उस प्रकार के साहित्य का दिया जा सकता है जिसे कुछ ऐसे लेखक अपना रहे हैं जिनका शब्दकोष अधिकांश उर्दू है, परन्तु जो अपनी रचनाएँ नागरी लिपि में छपाते हैं।"

Hindustani might with some measure of fitness be used of one class of literature affected by certain writers who employ a vocabulary which is largely Urdu but have the works printed in the Nagari character

आजकल इसकी व्याख्या में थोड़ा अन्तर पड़ रहा है। अब केवल देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली उर्दू ज़बान को हिंदुस्तानी नहीं कहते बल्कि अब तो उसमें अँग्रेज़ी के भी लफ़्ज़ घुल मिल गये हैं। जैसे—

"मैंने कई दफ़े यह आवश्यकता महसूस की कि मेंबर लोग विवादग्रस्त मामलों में अच्छी तरह विचार करके तब वोट दिया करें।"

इसमें 'दफ़े', 'महसूस', 'मामला', और 'तरह' शब्द फ़ारसी या उर्दू के, 'मेंबर' और 'वोट' अँग्रेज़ी के, और बाक़ी सब हिन्दी के हैं।

हमें अपना ध्यान इन तीनों रूपों पर अलग अलग विचार करना है। पहले हिन्दी को लीजिये—

हिन्दी

हिन्दी के प्रथम पुराने कवि, जिनकी कविता अबतक सबसे पुरानी मानी जाती है, अमीर खुसरो हैं। अमीर खुसरो का समय संवत् १३१२ से १३८० तक है। यह वह समय है जब हिन्दुस्तान में मुसलमानी हुकूमत का प्रारंभ हो रहा था। उस वक्त उर्दू का कहीं नामोनिशान भी नहीं था। खुसरो ने अपने समय की आमफ़हम ज़बान में बहुत से दोहे, ठुमरियाँ, पहेलियाँ, दो सख़ुने और ढकोसले कहे हैं। उन्हें देखने से यह साफ़ मालूम होता है कि खुसरो की ज़बान ही हमारी आजकल की हिन्दी है। खुसरो की एक पहेली है—

बीसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना खून किया॥

इसमें और आजकल की हिन्दी में क्या अंतर है?

खुसरो ने अरबी, फ़ारसी और तुर्की शब्दों को हिन्दी में भरने

का सबसे पहला उद्योग किया था। उसके नाम से 'ख़ालिक़ बारी' नाम का एक पद्य कोष भी मिलता है, जिसमें हिन्दी और फारसी के पर्यायवाची शब्द जमा किये गये हैं। यह पुराने ढर्रे के मकतबों (मदरसों) में बहुत दिनों तक पढ़ाई जाती रही है। 'ख़ालिक़ बारी' की बदौलत समझिये या जीवन संघर्ष के कारण, अब तो हिन्दी में मुसलमानी शब्द इतने अधिक भर गये हैं जितने 'ख़ालिक़-बारी' में भी नहीं हैं।

खुसरो की भाषा पर विचार करने से हिन्दी का आविर्भाव विक्रम की छठी सातवीं शताब्दी से इधर का नहीं पड़ता। खुसरो ने उस समय की हिन्दुओं की भाषा का नाम 'हिन्दवी' लिखा है। जैसे—

अरबी बोले आईना, फारसी बोले पाईना।
हिंदवी बोले आरसी आये, मुँह देखे जो इसे बताये॥

इस के बाद जायसी ने अपने समय की भाषा का नाम हिन्दवी लिखा है, जैसे—

अरबी तुर्की हिंदवी, भाषा जेती आहि।
जामें मारग प्रेम का, सबै सराहैं ताहि॥

इससे हिन्दी का पुराना नाम 'हिन्दवी' जान पड़ता है, जिसका अर्थ है हिन्दुओं की भाषा। खुसरो और जायसी दोनों मुसलमान थे, इससे उन्होंने हिन्दुओं की भाषा का एक अलग नाम दिया है, जो उचित ही था। पर आजकल हिन्दी इस अर्थ में नहीं ली जाती। आजकल वह एक स्वतन्त्र भाषा है जिसे हिन्दू मुसलमान और अँग्रेज़ तीनों सीखते और काम में लाते हैं। पहले उसका अर्थ चाहे जो कुछ रहा हो, पर आजकल उसका मतलब सिर्फ़ हिन्दुओं की भाषा से नहीं, पर तमाम हिन्द की ज़बान से है।

आजकल इसकी व्याख्या में थोड़ा अन्तर पड़ रहा है। अब केवल देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली उर्दू ज़बान को हिन्दुस्तानी नहीं कहते, बल्कि अब तो उसमें अँग्रेज़ी के भी लफ़्ज़ घुल मिल गये हैं। जैसे—

"मैंने यह दफ़े यह आवश्यकता महसूस की कि मेंबर लोग विवादग्रस्त मामलों में अच्छी तरह विचार करके तब वोट दिया करें।"

इसमें 'दफ़े', 'महसूस', 'मामलों', और 'तरह' शब्द फ़ारसी या उर्दू के, 'मेंबर' और 'वोट' अँग्रेज़ी के, और बाक़ी सब हिन्दी के हैं।

हमें अपनी ज़बान के तीनों रूपों पर अलग अलग विचार करना है। पहले हिन्दी को लीजिये—

हिन्दी

हिन्दी के सबसे पुराने कवि, जिनकी कविता अबतक सबसे पुरानी मानी जाती है, अमीर ख़ुसरो हैं। अमीर ख़ुसरो का समय सम्वत् १३१२ से १३८० तक है। यह वह समय है जब हिन्दुस्तान में मुसलमानी हुकूमत का आरंभ हो रहा था। उस वक्त उर्दू का यहाँ नामोनिशान भी नहीं था। ख़ुसरो ने अपने समय की आमफ़हम ज़बान में बहुत से दोहे, ठुमरियाँ, पहेलियाँ, दो सख़ुन और ढकोसले कहे हैं। उन्हें देखने से यह साफ़ मालूम होता है कि ख़ुसरो की ज़बान ही हमारी आजकल की हिन्दी है। ख़ुसरो की एक पहेली है—

बीसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना ख़ून किया॥

इसमें और आजकल की हिन्दी में क्या अन्तर है?

ख़ुसरो ने अरबी, फ़ारसी और तुर्की शब्दों को हिन्दी में भरे

का सबसे पहला उद्योग किया था। उसके नाम से 'ख़ालिक़ बारी' नाम का एक पद्य कोष भी मिलता है, जिसमें हिन्दी और फ़ारसी के पर्यायवाची शब्द जमा किये गये हैं। यह पुराने ढर्रे के मकतबों (मदरसों) में बहुत दिनों तक पढ़ाई जाती रही है। 'ख़ालिक़ बारी' की बदौलत समझिये या जीवन संघर्ष के कारण, अब तो हिन्दी में मुसलमानी शब्द इतने अधिक भर गये हैं जितने 'ख़ालिक़ बारी' में भी नहीं हैं।

खुसरो की भाषा पर विचार करने से हिन्दी का आदिकाल विक्रम की छठी सातवीं शताब्दी से इधर का नहीं पड़ता। खुसरो ने उस समय की हिन्दुओं की भाषा का नाम 'हिन्दवी' लिखा है। जैसे—

> अरबी बोले आईना, फ़ारसी बोलें पाईना।
> हिंदवी बोले आरसी आये, मुँह देखे जो इसे बताये॥

इस के बाद जायसी ने अपने समय की भाषा का नाम हिन्दवी लिखा है, जैसे—

> अरबी तुर्की हिंदवी, भाषा जेती आहि।
> जामें मारग प्रेम का, सबै सराहैं ताहि॥

इससे हिन्दी का पुराना नाम 'हिन्दवी' जान पड़ता है, जिसका अर्थ है हिन्दुओं की भाषा। खुसरो और जायसी दोनों मुसलमान थे, इससे उन्होंने हिन्दुओं की भाषा का एक अलग नाम दिया है, जो उचित ही था। पर आजकल हिन्दी इस अर्थ में नहीं ली जाती। आजकल वह एक स्वतन्त्र भाषा है जिसे हिन्दू, मुसलमान और अँग्रेज़ तीनों सीखते और काम में लाते हैं। पहले उसका अर्थ चाहे जो कुछ रहा हो, पर आजकल उसका मतलब सिर्फ़ हिन्दुओं की भाषा से नहीं, पर तमाम हिन्द की ज़बान से है।

हममें से कुछ लोग हिन्दी के कट्टर हिमायती हैं, जो अपनी भाषा में विदेशी शब्दों के आने देने के सख्त विरोधी हैं। मैं समझता हूँ वे अपनी भाषा-सम्बन्धी मौजूदा हालत से वाक़िफ़ कम हैं। हमारी रहन सहन पर मुसलमानी सभ्यता की गहरी छाप पड़ चुकी है इसे वे नहीं देखते। विदेश से आये हुए कितने ही शब्द हमारे घरों में नौकर की तरह हमारी ख़िदमत बजा रहे हैं। उन्हें हम अलग नहीं कर सकते। पता नहीं, वे कब आये और किनके साथ आये। नमूने के लिये 'रोटी' शब्द को लीजिये। यह न मुसलमानों का शब्द है, न हिन्दुओं का। फिर भी हिन्दू मुसलमान किसीकी भी हिम्मत नहीं कि इस अहिन्दू गुलाम को घर से बाहर निकाल दे। यह हमारे घरों में बच्चे से लेकर बुड्ढे तक की ज़बान पर है और इसने जिसको तरह की, उसे ऐसा बेदखल किया कि हमें शक होने लगा है कि हमारे पुरखे रोटी खाते थे या केवल दाल भात और साग पर गुज़र करते थे। छप्पन प्रकार के व्यंजनों में 'रोटी' भी थी या नहीं, यह कौन कह सकता है? हमारे राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त, अशोक, भीम और हनुमान आदि वीरों ने क्या भात खा खाकर ही के इतने करिश्मे दिखलाये थे? यदि वे भी रोटियाँ खाते थे, तो उसका पुराना नाम क्या था?

'रोटी' ही नहीं, 'तवा' भी विदेशी शब्द है। यह फ़ारसी का 'ताबा' है, जो घिस घिसाकर 'तवा' होगया है। जब रोटियाँ रही होंगी तब तवा भी रहा होगा पर 'तवे' ने जिस हिन्दू बरतन को निकाल कर चूल्हे पर क़ब्ज़ा किया, उसका नाम क्या था? यह अब शायद कोई हिन्दीदाँ नहीं जानता। क्या हिन्दुई या हिन्दी के कट्टर हिमायती रोटी और तवे का छोड़ने को तैयार हैं?

'पगड़ी' और 'पेट' भी अनार्य शब्द हैं। पेट तो आजकल दिमाग़ पर चढ़ा हुआ है, और उसने पगड़ी को पैरों पर डाल रक्खा

है। 'पेट' का स्थान यदि 'उदर' को दे दें, तो क्या 'पेट' चल सकता है ?

हमारे घरों में कितने ही ऐसे शब्द हैं जो अपने मुल्क का नाम अभी तक अपने साथ रक्खे हुए हैं। जैसे—

'चीनी'—चीन देश की शक्कर को कहते हैं। पहले लोग बाज़ार में जब इसे ख़रीदने जाते रहे होंगे तब कहते रहे होंगे, 'चीनी शक्कर दो', अब शक्कर उड़ गया, चीनी रह गया।

'मिश्री'—मिश्र देश का निवासी है। मिश्री शक्कर का 'शक्कर' निकल गया, मिश्री बाक़ी रह गया।

'सुरती'—यह पहले सूरती तम्बाकू था। जिसका अर्थ था सूरत शहर (बम्बई प्रांत) से आया हुआ तम्बाकू। तम्बाकू निकल गया, सूरती का 'सुरती' होगया। अब जो तम्बाकू पिया नहीं जाता, बल्कि खाया जाता है, उसे सुरती कहते हैं।

ऊपर मैं कह आया हूँ कि मुसलमानी सभ्यता ने हिन्दू समाज पर अपनी गहरी छाप लगा दी है। ऐसे बहुत से शब्द दिये जा सकते हैं जिनसे इस बात का सबूत मिलेगा। नमूने के लिये कुछ शब्द आगे दिये जाते हैं—

अम्मा—(तुर्की) माँ।

बाबा—(फ़ारसी) पिता। हिन्दुओं में पितामह को भी बाबा कहते हैं। पर ग्रामगीतों में 'बाबा' पिता के अर्थ में आया है।

हमशीरा—(फ़ारसी) बहन, संस्कृत के समचीरा का अपभ्रंश जान पड़ता है।

बालिग़—(अरबी) वयस्क।

कबीर—(अरबी)

गुलाल—(फारसी)

बहुत-सी चीज़ें इस युग में मुसलमानों के साथ आईं। उनके नाम भी ज्यों के त्यों रह गये और शहरों से लेकर गाँवों तक फैल गये। ये हमारी रोज़मर्रा की बोलचाल में ऐसे शामिल हो गये हैं कि इन्हें अलग नहीं कर सकते। जैसे—

पायजामा, इज़ारबन्द, रूमाल, शाल, दुशाला, मोज़ा, कुर्ता, तुमान, जूता, जुर्रा, अचार, रकाबी, तश्तरी, चमचा, साबुन, शीशा, शीशी, फानूस, हुक्का, नैचा, चिलम, सन्दूक इत्यादि।

मुसलमानों ने यहाँ की बहुत सी चीज़ों के नाम अपने रख लिये। वे ऐसे प्रचलित हुए कि अब उनके हिन्दू नाम का पता कठिनता ही से मिल सकता है। जैसे

पिस्ता, बादाम, मुनक्का, शहतूत, बिहीदाना, तूदाना, अंजीर, सेब, बिही, नाशपाती, अनार, मज़दूर, मकान, जल्लाद, सराय, समन्दर, बिस्तर, चादर, तकिया, तबाशीर, बक्स, गुलदुम, दवात, क़लम, स्याही, गुलाब, चमन, मसनद, कुर्सी, मेज़, लगाम, ज़ीन, तंग, कोतल, जहाज़, मस्तूल, बादबान, पर्दा, दालान, शाहज़ादा, शहज़ादी, रसीद, रसद, कारीगर, ताज़ा, तावीज़, प्याला, चाह, तालाब, अदालत, नाप, तौल, बेबाक इत्यादि।

मुसलमानों के बाद पुर्तगीज़ आये। उनके भी कुछ शब्द यहाँ छूटे हुए हैं, जैसे—

अँगरेज़, पिस्तौल, पलटन, कप्तान, कमरा, नीलाम, इंजिनियर, चा, काफ़ी, गोदाम, चाबी, इत्यादि।

अँगरेज़ों के आने पर बहुत से अँगरेज़ी शब्द शामिल होगये जैसे—

कोट, अपील, टिकट, कलक्टर, डाक्टर, टेबिल, पेंसिल, फ़ैशन, बूट,

फाम, बोर्डिंग, डिग्री, ग्लास, फण्ड, रेल, ट्रेन, वारंट, रबर, लालटेन, पतलून, मील, इंच, फुट, वास्केट, कोट, म्युनिसिपैलिटी, मेम्बिराईक, होटल, सोडावाटर, हास्पिटल, बोतल, पास, रजिस्ट्री, नोटिस, समन, स्कूल, कमेटी, फीस, स्लेट, टिन, प्रेस, इन्स्पेक्टर, बेरिस्टर, मास्टर, कान्स्टेबल, वोटर, मोटर, कौंसिल, एसेम्बली, मीटिंग, मजर, फमिली, स्पिरिट याइसिकल, लाइन, बटन, ईंट, निब, पालिश इत्यादि।

ऊपर जितने शब्द दिये गये हैं, वे प्राय सब विदेशी हैं और हमारे घर में रसोईघर से लेकर बैठक तक खुलेआम काम दे रहे हैं। ये हमारे जीवन के ऐसे साथी होगये हैं कि इनको निकालकर इनके स्थान पर अगर हम संस्कृत के नौकर रक्खें, तो एक दिन भी काम चलना मुश्किल हो जायगा। हम लोग 'काका' को घर से निकाल नहीं सकते न 'बाबा' को छोड़ सकते हैं, और लाला और चाचा भी निकाले नहीं जा सकते।

जितने सिले हुये कपड़े हमारे घरों में हैं, उन सब के नाम विदेशी हैं। इससे मालूम होता है कि हमारे यहाँ सिले हुये कपड़े विदेश से आये। यहाँ सिर्फ ओढ़ने का रिवाज रहा होगा। इन कपड़ों के संस्कृत नाम कहाँ से मिलेंगे?

गहने प्राय सब विदेशी हैं। 'बाजूबन्द' की जगह 'अंगद' कहिये तो हिन्दू लोग सुग्रीव के भतीजे तक जा पहुँचेंगे। 'नूपुर' की जगह 'पाजेब' ने ले ली। जितने गहने आजकल हिन्दू स्त्रियाँ पहनती हैं, उनमें से अधिकांश मुसलमानी हैं। क्या पहले हिन्दुओं में अधिक गहने पहनने का रिवाज नहीं था?

मेवों के नाम बिल्कुल ही विदेशी हैं। उनके संस्कृत नाम चाहे जो हों, अब उनका प्रचार नहीं। कोषों की सहायता से उनके पुराने नाम रक्खें तो बाजार में वे चल नहीं सकते।

मिगाइयां के नाम भी विदेशी हैं। हलवा जलेबा, बर्फी, समोसा, सुरमा, खाजा कलाकंद, खस्ता, सभी तो विदेशी हैं।

कामकाज और लेन देन के बहुत से शब्द विदेशी हैं जो ऐसे स्वतंत्र होगये हैं कि उन्हें हटाया नहीं जा सकता जैसे—पुर्जा पता आदि।

बाजे बिलकुल ही विदेशी हैं। ढोल अरब से आया है। अब वह हमारे मंदिरों तक में पहुँच चुका है। बहुत से मन्दिरों में ढोल बजाकर ही ठाकुरजी जगाये जाते हैं।

सबसे अधिक आश्चर्य तो अबीर और गुलाल के लिए है। 'अबीर' अरब का है, और 'गुलाल' फ़ारस का। पर वह हिन्दुस्तान में इतना गहन हुआ कि हमारे एक मुख्य त्योहार होली का वह एक खास अंग होगया और उस व्रजभाषा के कवियों ने ऐसा महत्त्व दिया कि अगर उसे उनकी कविता में से निकाल दिया जाय तो व्रजभाषा की लालिमा ही कम हो जाय। पता नहीं, अबीर-गुलाल के पहले हिन्दुओं में होली का कौन-सा रंग चलता था।

इतने अधिक विदेशी शब्द हमारे घरों में घुसे हुए हैं और वे एक कुटुम्बी की तरह रहने लगे हैं कि पराये नहीं जान पड़ते। वे निकाले नहीं जा सकते। और जब तक वे निकाले नहीं जाते तब तक हिन्दी के कट्टर हिमायतियों का यह दावा कि हिन्दी में संस्कृत के ही शब्द रहने पायें, पूरा नहीं होता।

मुसलमानों के आने से हज़ारों वर्ष पहले शक, हूण और यूनानी आदि जातियाँ इस देश में आ चुकी हैं। यद्यपि अब उनका अस्तित्व यहाँ नहीं है, पर उनके शब्द किसी न किसी पोशाक में उनकी यादगार की तरह बने ही हुए हैं। मेहरा शाकद्वीपी, मिश्र (मिस्रदेशी ब्राह्मण) जाट आदि एक ही शब्द तो हैं। अतएव कोई सबब नहीं कि हम कुछ और शब्दों को भी चाहे वे किसी देश के क्यों न हों और हमारी खिदमत के लिये तैयार हैं अपने घर में जगह न दें। अगर हम परों

उदारता दिखाएँ, तो हिन्दी उर्दू का झगड़ा बड़ी आसानी से ख़तम हो जा सकता है। कुछ मुसलमानी शब्दों के आ जाने से हिन्दी ही को उर्दू करार देकर उसे हिन्दू मुसलमानों के बीच वैमनस्य का एक कारण बना रखने में हमें तो कोई बुद्धिमानी नहीं दिखाई पड़ती। उर्दू के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के बजाय उर्दू को हज़म कर लेना ज्यादा लाभदायक है। अगर हम ब्रजभाषा, अवधी और छत्तीसगढ़ी को हिन्दी मानते हैं तो भाषा की दृष्टि से तो इनकी अपेक्षा उर्दू कहीं अधिक हमारे निकट है। ब्रजभाषा ब्रज की भाषा है, और अवधी अवध में बोली जाती है। इन भाषाओं या बोलियों में पद्य साहित्य उच्च कोटि का है, इसी लोभ से हिन्दीवाले इन्हें अपनाये हुए हैं। भिन्न प्रांतवालों को जब हिन्दी सीखनी पड़ती है, तब प्रचलित हिन्दी के साथ उन्हें ब्रजभाषा और अवधी के शब्द भी रटने पड़ते हैं क्योंकि ब्रजभाषा और अवधी ये दोनों बोलियाँ हिन्दी से उतने ही अन्तर पर हैं जितने अन्तर पर गुजराती, मराठी, मारवाड़ी और बँगला है। इन सबकी अपेक्षा उर्दू कहीं अधिक हिन्दी के निकट है। हिन्दीवाले अभी साहित्य में गरीब हैं, इसमें वे ब्रज और अवध से लाया हुआ धन दिखलाकर किसी तरह अपने मान की रक्षा करते हैं। उर्दू को भी हम इसी तरह अपनालें तो हमारे मान सम्मान की वृद्धि ही होगी। उसमें कोई कमी नहीं आयेगी।

गुजराती के भी दो रूप हैं—एक पारसियों की गुजराती, जिसमें मुसलमानी अल्फ़ाज़ ज्यादा रहते हैं, दूसरे हिन्दुओं की गुजराती जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द अधिक रहते हैं। पर पारसी या हिन्दू किसी के लिये कोई रुकावट नहीं कि वह कौन-सा शब्द इस्तेमाल करे, कौन सा न करे। बँगला में भी ऐसा ही हाल है। बंगाली मुसलमान जो बँगला बोलते या लिखते हैं, उसमें मुसलमानी शब्द ज्यादा होते हैं, और हिन्दू बंगाली जो भाषा बोलते हैं उसमें

फ़ारसी ७५ शब्द संस्कृत के होते हैं। फिर हिन्दी में एक फ़ारसी को जगह क्या कायम है समझ में नहीं आता। उर्दू में इस्तेमाल होनेवाले कुछ ऐसे शब्द हैं जिन्हें हिन्दी में स्वतन्त्रता से ले लेना चाहिये। मैं ने ऐसे शब्दों की एक सूची तैयार की है।

इस शब्द-संग्रह में १७०० से अधिक शब्द हैं। इनमें से तीन चौथाई से अधिक शब्द आमतौर से शहरों और गाँवों में, कहीं असली सूरत में और कहीं-कहीं देहाती बनकर रहते हैं। एक चौथाई से भी कम शब्द ऐसे हैं जिन्हें हिन्दीवालों को ले लेना, उर्दू को हज़म कर लेना और झगड़े को ख़तम कर देना है। इन शब्दों का बिना ज्ञान कोई व्यक्ति हिन्दी का जानकार माना ही नहीं जाना चाहिये।

हिन्दीवालों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपनी संकीर्णता दूर कर दें और ब्रज और अवध के दायरे से बाहर निकलकर अपनी ज़बान को भारतवर्ष भर में व्यापक बनाने का उद्योग करें, गद्य और पद्य दोनों में ऊँचे दर्जे का साहित्य पैदा करें, और रोज़मर्रा की आम बोलचाल में अपने विचार ज़ाहिर करें, जिससे उनके देशवासी उनके विचारों का पूरा लाभ उठा सकें, जैसा कबीर और तुलसीदास ने अपने समय के समाज के लिये किया था।

उर्दू

उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं वह हिन्दुस्तानी का एक रूप है। मुसलमान बादशाहों के लश्करी बाज़ार में जहाँ जुदा जुदा सूबों और क़ौमों के सिपाही सौदा लेने के लिये जमा होते और हिन्दू बनियों की समझ में आने लायक़ हिन्दी में अपनी अपनी मातृभाषा के कुछ शब्दों को मिलाकर बोलते थे उसकी उत्पत्ति हुई

हिन्दुस्तानी कोष में ये सभी शब्द दे दिये गये हैं।

थी ज़रूर, पर उसके तमाम अंग प्रत्यंग हिन्दी हैं । उर्दू फ़ार्सी के बदले उसे 'मुसलमानी हिन्दी' कहा जाता तो अधिक सार्थक होता। ऊपर मैं कह आया हूँ कि गुजराती ज़बान की भीतर ही भीतर दो सूरतें हैं, पर बाहर वह एक है। ठीक यही हाल हिन्दी का है। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि यहाँ हिन्दू-मुसलमानों को लड़ने के लिये या लड़ाने के लिये एक झूठा वहम पैदा रक्खा गया है कि हिन्दी और उर्दू दो ज़बान हैं।

कहा जाता है कि शाहजहाँ बादशाह के ज़माने में उर्दू की उत्पत्ति हुई। यह बात ग़लत है। उर्दू बाज़ार तो मुहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबुद्दीन के लश्कर में भी रहा होगा और उसमें सौदा बेचने और ख़रीदनेवालों के बीच जो कोई बोली भी रही होगी और वह हिन्दी के सिवा दूसरी हो नहीं सकती। क्योंकि इस मुल्क के हिन्दू बनिये लश्कर में साथ रक्खे जाते थे। सिपाहियों को मजबूर होकर बनियों की बोली में सौदा माँगना पड़ता था। उसीमें वे कुछ अपनी ज़बान के शब्द भी मिला देते थे। उस खिचड़ी हिन्दी का एक नया नाम देने की ज़रूरत यदि पड़ी भी हो तो वह 'लश्करी हिन्दी' कहला सकती है। आजकल भी, डेढ़ सौ वर्षों से इस मुल्क में अँग्रेज़ी राज है। हाईस्कूलों और कालेजों में जाइये तो वहाँ की हिन्दी में आपको सैकड़ों अंग्रेज़ी वर्ड (शब्द) काम करते हुए सुनाई पड़ेंगे, मगर उस हिन्दी का कोई अलग नाम नहीं। इसी तरह अरबी, फ़ारसी या तुर्की के कुछ लफ़्ज़ों के आ जाने से हिन्दी का दूसरा नाम क्या होना चाहिये?

आर्यावर्त और ईरान का बहुत पुराना सम्बन्ध है। दोनों देशों में शादी ब्याह तक के प्रमाण पाये जाते हैं। ईरान की पुरानी भाषा में तो वेद के मन्त्र तक ज्यों के त्यों मिलते हैं। पर आजकल की फ़ारसी में भी सैकड़ों संस्कृत के शब्द ईरानी पोशाक पहने हुये मौजूद

है, जो इस बात के सबूत हैं कि फ़ारसी और संस्कृत के बोलनेवाले किसी वक्त एक ही घर में भाई भाई की तरह रह चुके हैं। वक्त ने उन्हें जुदा किया और उनकी ज़बानों को ज़माने ने अलग अलग पोशाक पहना दी। यहाँ फारसी में आमतौर से प्रचलित संस्कृत के कुछ शब्द दिये जाते हैं, जिनके अन्दर किसी ज़माने में ईरान और आर्यावर्त के एकत्र होने का सुन्दर दृश्य अभी तक मौजूद है—

फारसी	संस्कृत
हूर	सूर, सूर्य
माह	मास
तारा	तारा
शब	क्षपा (रात)
जान	प्राण
बाद	वात (हवा)
गरमा	ग्रीष्म
मर्ग	मृत्
दूद	धूम
आब	आप (पानी)
आहार	आहार
गराम	ग्रास (कौर)
गन्दुम	गोधूम (गेहूं)
जौ	यव
माश	माष (उड़द, मूंग)
बिरंज	व्रीहि (धान)
शाली	शाली (धान)
शीर	क्षीर (दूध)
करपास	कर्पास (कपास)

पारसी	संस्कृत
मर्द	मर्त, मनु
खुम	कुम्भ (घड़ा)
चरम	चर्म (चमड़ा)
दार	दारु (लकड़ी)
शाख़	शाखा
दूर	दूर
सफ़ेद	श्वेत
स्याह	श्याम
ज़न	जनी (स्त्री)
नर	नर
गाव	गो
अस्प	अश्व
मेश	मेष (भेड़)
ख़र	खर
उश्तर	उष्ट्र
सग	शुनक (कुत्ता)
शगाल	शृगाल
ख़ूक	शूकर
मगिस	मक्षिका
कुलाग़	काक
यक	एक
दो	द्वि
चहार, चार	चतुर्
पंज	पंच
शश	षट्

फारसी	संस्कृत
हफ्त	सप्त
हश्त	अष्ट
नुह	नव
दह	दश
सद् सत	शत (सौ)
कुलाल	कुलाल (कुम्हार)
जंगल	जङ्गल
शाल	शाल
मारी	मारा (हिंसा)
नाम	नाम
नाल	नाल
जाल	जाल
हलाहिल	हलाहल
मिहर	मिहिर (सूर्य)
काम	कम
वन	वन
गाल	गाल
रोम	रोम, लोम
सुमन (एक खास फूल)	सुमन (फूल)
शाम	श्याम (रम्भा)
अगारह	अगार
चन्दाल	चाण्डाल
अफ़्यून	अहिफेन (अफीम)
आफत	आपत्ति
नीलोफर	नीलोत्पल

फारसी	संस्कृत
खान	खनि (खान)
कुन	कुन
मूश	मूषक
नाफ़	नाभिका
गर्म	घर्म (घाम)
शगुन	शकुन
पालान	प्रयाण, पलायन
दर	द्वार
पुर	पूर्ण
हुक्च	हिक्का (हिचकी)
कोह	क्रोश (कोस)
आमल	आमलक (आँवला)
मुर्दा	मृतक
रज (अलगनी)	रज्जु (रस्सी)
यार	जार
बेव	वधू (बहू)
मै	मद्य (शराब)
कार	कार्य
किरम	कृमि (कीड़े)
दहुल	ढोल (हिन्दी)
तिश्ना (प्यासा)	तृषा, तृष्णा (प्यास)
शकर	शर्करा
आक	अर्क (मदार)
अश्क	अश्रु
गाम	ग्राम (गाँव)

फारसी	संस्कृत
ज़लोक	जलौका (जोंक)
कूज़	कुब्ज (कुबड़ा)
ज़ीरा	जीरक
मूश्न	मूषा (चूहा)
अंकुश	अङ्कुश
सरार	शरीर
माँ	मान मत् (तुलनात्मक)
कशफ	कच्छप
शाना	स्नान
गंदुम	गोधूम
बारिश, बरसात	वर्षा
सफ़ेद	श्वेत्र, श्वेत
मेग	मेघ
सरशफ	सर्षप (सरसों)
मौलसिरी	मौलिश्री, बकुल
पलाश	पलाश (ढाक)
आस्ताँ	स्थान
आराम बन	आराम (उपवन)
इस्तबल	अश्वशाला
इख़्तियार	अधिकार
गरम	घर्म
मह	महा
पार	पर
पारीन	प्राचीन
नाव	नौ, नौका

फारसी	सस्कृत
आस्त , हस्त	अस्थि (हड्डी)
अगोज़ह	हिंग
ईदर	अत्र (इधर)
आदरक	आद्रक (आदी)
आतिश	हुताशन (आग)
बाँग	वाक्
बार	वार
ताब	तप,ताप
बेव	विधवा
बन्द	बन्ध
मादर, माम	मातृ
पिदर, बाब	पितृ (हिन्दी—बाप)
बिरादर	भ्रातृ
पोर	पुत्र
दुख़्तर	दुहिता
दामाद	जामाता
सर	शिर
तारक	तालुक
अब्रू	भ्रु
दन्द	दन्त
गरे	ग्रीवा
बाज़ू	बाहु
दस्त	हस्त
मुश्त	मुष्टि
[illegible]	अंगुष्ट

फ़ारसी	संस्कृत
पुश्त	पृष्ठ
नाफ़	नाभि
सुरीन	श्रोणि
ज़ानू	जानु
पाय	पाद
ख़ून	शोण, शोणित
अब्र	अभ्र (बादल)
बार	भार
बूम	भूमि
कबूतर	कपोत
तपाम	तपस्या
बाद	वात (वायु)
नाक	घ्राण (नाक)
जवान	युवा
मगर मच्छ	मकर मत्स्य
ख़ुद	स्वतः
ख़ुश्क	शुष्क
वशवासा	श्वसश्वस
नाख़ुन	नख
दुश्वार	दुष्कर
अंदर	अन्तर
ज़ात	जात (पैदा हुआ)
बेद	वेत्र
अज़दहा	अजगर
गाया	घाय

फ़ारसी	संस्कृत
गोज़	ढोल (हिन्दी)
शाक	शङ्ग
बदन (शरीर)	वदन (मुँह)
इमरवर	अमर
बन्द	बन्ध
बान	वान्

ये शब्द क्या इस बात के सबूत नहीं हैं कि संस्कृत और फ़ारसी बोलनेवाले एक ही माँ-बाप की सन्तान हैं?

मुसलमान लोग जब हिन्दुस्तान में आये तब इन शब्दों की बदौलत वे हिन्दुओं के लिये नये नहीं थे। हमारे भेदिये—ये शब्द—तो उनके साथ थे ही। उन्हें मिलकर यहाँ की ज़बान सीखनी या बाद थी, ज़बान की लड़ाई लड़ने की उनको ज़रूरत हुई न थी। इसलिए उन्होंने अपने लफ़्ज़ों को हिन्दी व्याकरण के साँचे में ढाल दिया। जैसे—

वकील का बहुवचन हिन्दी में			वकीलों हुआ न कि		वकला
निशान	,,	,,	निशानों	,,	निशानात
मेवा	,,	,,	मेवों	,,	मेवाजात

इत्यादि।

फ़ारसी शब्दों से बहुत सी क्रियाएँ हिन्दी के ढंग पर बन गयी हैं। जैसे—

कबूल से कबूलना
गुज़र से गुज़रना
बदल से बदलना इत्यादि।

बहुत से फ़ारसी शब्दों के साथ होना, करना, लगाना आदि हिन्दी शब्द जोड़कर क्रियाएँ बना ली गयी हैं। जैसे—

खुश होना, ज़िक्र करना, दिल लगाना, इत्यादि।

बहुत से ऐसे नए शब्द बन गये, जिनका धड़ हिन्दी है और सिर फ़ारसी। जैसे—

चिट्ठी रसाँ, समझदार, पान दान, गाड़ीखाना इत्यादि।

दोनों भाषाओं के बहुत से पर्यायवाची शब्द एक साथ होगये। जैसे—

काग़ज़ पत्र, धन दौलत, शादी ब्याह, इत्यादि।

जिस भाषा का लिंग, वचन, क्रिया, कारक, सर्वनाम और अव्यय हिन्दी का है उसे थोड़े से विदेशी शब्दों के मिश्रण से एक अलग नाम क्यों देना चाहिये? यदि—

'यह आन्दोलन देश के लिये बहुत ही लाभदायक है' यह वाक्य हिन्दी का है और—

'यह तहरीक मुल्क के लिये निहायत मुफ़ीद है,' यह जुमला उर्दू का हुआ तो—

'यह एजिटेशन कन्ट्री के लिये मोस्ट बेनेफिशल है।' यह सेंटेंस किस भाषा का कहा जायगा? मैं तो पहले को हिन्दुओं की हिन्दी, दूसरे को मुसलमानी हिन्दी, और तीसरे को अँग्रेज़ी हिन्दी कहूँगा। बंगाल, पंजाब, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और मद्रास में जो हिन्दी बोली जाती है उसमें बहुत से स्थानीय शब्द मिल जाते हैं। केवल उनके कारण से नयी नयी भाषाएँ नहीं ईजाद की जा सकतीं।

देश के लिये यह बड़ी दुर्भाग्य की बात है कि कुछ दिनों से हिन्दू मुसलमानों को मज़हबी लड़ाई के साथ ज़बान की भी लड़ाई छिड़ रही

हिन्दुस्तानी

पुरानी हिन्दी उर्दू और अँग्रेज़ी के मिश्रण से जो एक नयी ज़बान आप से आप बन गया है वह हिन्दुस्तानी के नाम से मशहूर है। बहुत से ऐसे विदेशी शब्द हैं जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दीवालों के पास नहीं हैं। जैसे—'हसरत' शब्द को लीजिये—

दरो दीवार पै हसरत से नज़र करते हैं,

खुश रहो अहले-वतन हम तो सफ़र करते हैं।

'हसरत' के लिये 'लालसा' शब्द का प्रयोग लोग करते हैं, पर 'हसरत' में प्रेम करुणा और आकर्षण का जो भाव है वह 'लालसा' में नहीं है। लालसा में केवल आकर्षण है करुणा नहीं।

इसीप्रकार 'अरमान' शब्द को लीजिये। हिन्दी में इसके लिये ठीक-ठीक अर्थ बतानेवाला कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है। इसी तरह अंग्रेज़ी का 'फ़ीलिंग' (Feeling) शब्द है। कुछ लोग 'अनुभव' को इसका पर्यायवाची बतायेंगे, पर 'अनुभव' 'फ़ीलिंग' की गहराई तक नहीं पहुँचता। 'फ़ीलिंग' में जो तड़प छिपी है, वह 'अनुभव' में नाम मात्र को भी नहीं। हाँ, 'महसूस' में है। अतएव नये भावों को व्यक्त करनेवाले शब्दों को हम अपने घरों में जगह देना ही पड़ेगा।

आजकल का समाज अपनी बोलचाल की ज़बान की एक ऐसी सूरत की ज़रूरत महसूस कर रहा था जिसमें अँग्रेज़ी ख़यालात भी ज़ाहिर हो सकें, वह उसे 'हिन्दुस्तानी' के नाम से हासिल हुई। मगर फिर भी अभी बहुत से लफ़्ज़ों के लिये गुञ्जाइश निकालनी है। जैसे, पेशावरों के शब्द। किसानों के घरों में, खेतों में और खलियानों में जो शब्द काम देते हैं, हिन्दुस्तानी में वे नहीं आने पाते। कुम्हार, लुहार, सुनार, बढ़ई, धोबी, रँगरेज़, तेली, तमोली, जुलाहा, धुनिया, नाई, राज, मोची, चमार, ठठेरा, भड़भूँजा, आतशबाज़, दफ़्तरी,

नालन्द और गराहि जा शब्द काम म लाते ह, हिन्दी, उर्दू
हिन्दुस्तानी, ताना भाषाओं के लोग उन्ह नहीं जानते और न
शब्दो को अपनी भाषा म आने देते हैं। नतीजा यह हुआ है कि अपने
मुल्क के पेशावरो की तरफ कभी हमारा ध्यान भी नहा जाता। हम
जानते हा नहीं कि किसान और कुम्हार को उनके पेशे में कामयाबी
हासिल करने के रास्ते में क्या क्या कठिनाइयाँ मौजूद हैं, और वे कैसे
हटाइ जा सकती हैं। शब्द हो नहीं है, तो विचार धारा कहाँ से पैदा
हो? अतएव जहाँ हम अपनी ज़बान में विदेशी शब्दों को जगह देने जा
रहे हैं वहाँ अपने देहात के ग्रामीण दोस्तों के लिये भी काफ़ी जगह
खाली रखनी चाहिये। हमें पेशावरो के सभी शब्दों की एक सूची
बना लेनी चाहिये और स्कूली रीडरों में और किताबों-कहानियों या
लेखो में उनका उपयोग करना चाहिये। इससे हम अपने ग्रामीण
भाइयो के बहुत नज़दीक पहुँच जायँगे। साथ ही हम देहातवालों को
दुनिया की नयी रोशनी से भी परिचित करा सकेंगे।

मैं ने ग्राम गीतो के दौरे में पेशावरो के हज़ारों शब्द जमा किये
हैं। उनके इस्तेमाल म सबसे बड़ी दिक्कत जो है वह यह है कि
एक ही काम या चीज़ के नाम भिन्न भिन्न ज़िलों म जुदा-जुदा हैं।
इसमे किसी एक ज़िले के शब्द को दूर के दूसरे ज़िलेवाले प्राय न
समझ सकेंगे। इसके लिये यह बहुत ज़रूरी है कि युक्तप्रान्त का
युनिवर्सिटियाँ या हिन्दुस्तानी एकेडेमी कुछ विद्वानों का एक बोर्ड
बना दे जो सब शब्दों को जमा कर के यह निर्णय करे कि
कौन सा शब्द अधिक सरल, अधिक सार्थक और अधिक व्यापक है।
उसे शिक्षित समाज में आने देने के लिये निश्चय कर दें। इससे हिन्दी भाषा का बहुत काम पहुँचेगा और
एक बहुत बड़ी कमी पूरी हो जायगी।

संकेत

अं०	=	अँगरेज़ी भाषा
अ०	=	अरबी भाषा
अनु०	=	अनुकरण
अव्य	=	अव्यय
क्रि०	=	क्रिया
क्रि० वि० अ०	=	क्रिया विशेषण अव्यय
तु०	=	तुरकी भाषा
पु०	=	पुल्लिंग
पुर्त०	=	पुर्तगाली भाषा
फा०	=	फारसी भाषा
बहु०	=	बहुवचन
वि०	=	विशेषण
सं०	=	संस्कृत
सर्व०	=	सर्वनाम
स्त्री०	=	स्त्रीलिंग
हि०	=	हिन्दी

हिन्दुस्तानी कोष

अ—संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का पहला अक्षर। नहीं।

अङ्क—(पु० सं०) चिन्ह। भाग्य। दाग। गोद। नौ तक की गिनती। नाटक का एक खंड। शरीर। मसखा।
—गणित=वह विद्या जिससे संख्याओं का ज्ञान हो, हिसाब।—न=चिन्ह करना। लिखना। —नीय=चिन्ह करने के योग्य। अंकित=चिन्हित। लिखित।

अङ्कुर—(पु० सं०) अँखुआ। डाभ। —ना=डाभ निकलना। अँखुआ फेंकना। अंकुरित=अँखुआया हुआ।

अङ्कुश—(पु० सं०) आँकुस, जिससे हाथी के मस्तक में गोदकर उसे चलाया जाता है।

अँकार—(पु० हि०) रिश्वत। घूस। भेंट।

अङ्ग—(पु० सं०) शरीर। तन। जिस्म। अवयव। भाग। टुकड़ा। भेद। भाँति। पक्ष। सहायक। साधन। प्रिय।
—चालन=शरीर हिलाना-डुलाना।—टाह=देह टूटना।

अङ्गीकार—(पु० सं०) स्वीकार।

अंगूर—(पु० फा०) दाख।

अंजन—(पु० सं०) काजल। सुरमा।

अंजर पंजर—(पु० हि०) पसली।

अंजली—(स्त्री० सं०) दोनों हथेलियों के मिलाने से बनती है।

अजाम—(पु० फा०) अंत। परिणाम।
अंजीर—(पु० फा०) एक प्रकार का दरख्त जो अफ़गानिस्तान, बिलोचिस्तान और कश्मीर में अधिक पाया जाता है।
अंजुमन—(पु० फ़ा०) समिति।
अँटिया—(स्त्री० हि०) अंटी। घास का बंधा हुआ छोटा गट्ठा। अँटियाना=हथेली में रखना। हज़म करना।
अंडबंड—(स्त्री०, अनु०) व्यर्थ का बात। बुरी बात।
अंडस—(स्त्री० हि०) सकट।
अंडाकार—(वि० स०) लम्बाई लिये हुये गोल। अंडाकृति=अंडे की शक्ल।
अंडी—(स्त्री० स०) एरण्ड। रेंडी। एक प्रकार का रेशम।
अँतड़ी—(स्त्री० हि०) आँत। अंत्र=आँत। अंत्रवृद्धि=आँत उतरने का एक रोग।
अंतरंग—(वि० स०) निकट वर्ती। भीतरी।
अंतर—(पु० स०) भेद। मध्य। दूसरा। अलग। हृदय। भीतर। —आत्मा=जीव। अंतराना=अलग करना। भीतर करना।
अंतरा—(पु० स०) अन्तर। नागा। ज्वर की एक क़िस्म।
अन्दरसा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की मिठाई।
अन्दरूनी—(वि० फा०) भीतरी।
अन्दाज़—(पु० फ़ा०) अनुमान। ढंग। भाव। —न=अन्दाज़ से। लगभग। अन्दाज़ा=अनुमान।
अन्देशा—(पु० फ़ा०) चिन्ता। संशय। खटका। हानि। दुविधा।
अन्दोर—(पु० स०) हलचल।
अंबार—(पु० फ़ा०) समूह।
अकड़—(स्त्री० हि०) तनाव। घमंड। ढिठाई। हठ। —ना=ऐंठना। सुन्न होना। तनना। अभिमान करना। अड़ना। मिज़ाज बदलना। —बाई=ऐंठन। —बाज़=

अभिमानी । अकड़ैत = अकड़बाज़ ।

अश—(पु० सं०) हिस्सा ।

अकबक—(पु० हि०) निरर्थक वाक्य । चिन्ता । धको-धकी । होश-हवास । भौचक्का ।

अकबकाना = चकित होना ।

अकस—(पु०, अ०) शत्रुता ।

अकसर—(क्रि० वि० अ०) बहुधा । अकेले ।

अन्दलीब—(अ०) बुलबुल । हज़ार दास्तान ।

अकसीर—(स्त्री० अ०) एक रस जो धातुओं को सोना चाँदी बनाता है । अत्यन्त लाभकारी ।

अक़दस—(अ०) पवित्र । उच्च ।

अक़रबा—(अ०) निकट के । रिश्तेदार । स्वजन ।

अक़साम—(अ०) क़िस्म का बहुवचन । टुकड़े । विभिन्न । सौगंद खाना ।

अक़वाम—(अ०) क़ौम का बहुवचन जातियाँ । क़ौमें ।

अकबर—(अ०) महान् । बहुत बड़ा ।

अक़ीद—(अ०) विश्वास । मत । अक़ीदत = विश्वास भाव ।

अकस्मात—(क्रि० वि० सं०) अचानक । एकाएकी । आप से आप ।

अकाण्ड—(पु०, सं०) [illegible] । [illegible] = [illegible] । —[illegible]

अकाट्य—(वि०) जो न कट सके ।

अकाल—(पु० सं०) कुसमय । दुर्भिक्ष । —कुसुम = असामयिक पुष्प ।

अकाम—(वि० सं०) बिना [illegible] । [illegible] ।

अकाथ—(वि० हि०) वृथा ।

अकिंचन—(वि० सं०) [illegible] । [illegible] । [illegible]

अकेल—(वि० हि०) [illegible]

अकेला—(वि० हि०) [illegible] निराला । [illegible] आप । केवल ।

अक्खड़—(वि॰ हि॰) लड़ने वाला। झगड़ालू। उजड्ड। खरा। —पन=कड़ाई। निःशङ्कता।

अक्टोबर—(पु॰ अं॰) अँगरेज़ी साल का दसवाँ मास, जो ३१ दिन का होता है।

अक्ल—(स्त्री॰ अ॰) बुद्धि। —मंद=बुद्धिमान। (स्त्री॰ अक्लमंदी)।

अक्स—(सं॰ पु॰ अ॰) छाया। अक्सी तसवीर=फ़ोटो।

अखण्ड—(वि॰ सं॰) पूरा। लगातार। निर्विघ्न।

अखरा—(हि॰)। भूसी मिला हुआ जौ का आटा।

अख़लाक़—(अ॰) शिष्टाचार। सद्गुण।

अख़रोट—(पु॰, सं॰ अक्षोट) एक दरख़्त का नाम। यह कई प्रकार के प्रयोगों में आता है।

अख़बार—(पु॰ अ॰) समाचार पत्र। ख़बर की जमा।

अखाड़ा—(पु॰ हि॰) कुश्ती लड़ने का स्थान। साधुओं की मंडली। दरबार। मैदान।

अग्रज—(पु॰ सं॰) सेना।

अगति—(स्त्री॰ सं॰) दुर्गति। मृत्योपरान्त की बुरी दशा।

अगत—(हि॰) महाजनों की बोली जिसका भाव आगे चलने का है।

अगम—(वि॰ पु॰ सं॰ अगम्य) न जाने योग्य। कठिन। दुर्लभ। बहुत। बुद्धि के परे। बहुत गहरा। अगम्य=मुश्किल। अपार। बुद्धि के बाहर।

अगर—(पु॰ सं॰) एक दरख़्त जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है। यदि।

अगरचे—(अव्य॰ फ़ा॰) यद्यपि।

अगला—(वि॰ सं॰ अग्र) सामने का। प्रथम। अगामी। दूसरा। (स्त्री॰ अगली)।

अगवाई—आगे से जाकर लेना।

अगवाड़ा—घर द्वार के सामने की भूमि।

अगवानी—पेशवाई।

अगयार—(अ०) ग़ैर का बहुवचन, दुश्मन। पराया।

अगराज—(अ०) ग़रज़ का बहुवचन। उद्देश्य। मतलब।

अगस्त—(पु० अ०) अगरेज़ी का एक महीना ३१ दिन का, जो जुलाई के बाद पड़ता है।

अगहन—(पु० स० अग्रहायण) एक महीने का नाम। अगहनियाँ=अगहन में जो फ़सल पैदा हो। अगहनी=अगहन में जो तय्यार हो जाय।

अगाऊ—पेशगी। आगे का।

अगाड़ी—भविष्य में। घोड़े की आगेवाली रस्सी।

अगिनबोट—(स्त्री०, स० अग्नि अ० बोट) वह बड़ी नाव जो भाप के द्वारा चलती है।

अगुआ—(पु० स० अग्र) आगे चलने वाला। नेता। रास्ता दिखाने वाला। विवाह ठीक करनेवाला। —ई=सरदारी। —ना=आगे करना। अगेला=हाथों में पहनने का कड़ा।

अग्र—(पु० स०) सिरा। अग्रगामी=अग्रसर।

अग्राह्य—(पु० स०) न लेने के योग्य। त्याज्य।

अग्रिम—(पु० स०) पेशगी।

अगोरना—(क्रि० स० हि०) राह देखना।

अचमा—(पु० हि०) आश्चर्य। अचरज, विस्मय।

अचकन—(पु० हि०) एक प्रकार का लम्बा अंगा।

अचूक—(वि० हि०) जो ख़ाली न जाय। ठीक। अवश्य।

अचेत—(वि० स०) बेहोश। व्याकुल। बेपरवाह। अनजान। मूढ़। —न=जिसको चेत न हो।

अच्छा—(वि०) बढ़िया। (स्त्री० अच्छी)।

अछूत—(वि० हि०) जो छुआ न गया हो। जो काम में न लाया गया हो। नया। पवित्र।

अजगर—(पु० स०) एक बहुत बड़ा और मोटा साँप, जो बड़े

बदे पशुओं को समूचा निगल जाता है। (फा० अज़दहा)।
अजब—(वि० अ०) अद्भुत।
अजय—(ــلــ अ०) तलवार।
अजल—(स्त्री० अ०) मौत।
अजहद—(क्रि० वि० फा०) बहुत अधिक।
अजाब—(पु० अ०) पीड़ा। पाप।
अजमत—(स्त्री० अ०) महानता। अज़ीम=महान।
अजायब—(पु० अ०) अजब का बहुवचन। विचित्र वस्तु।
—खाना=वह घर जिसमें अद्भुत पदार्थ रक्खे जाते हैं।
—घर=अजायब खाना।
अजीज़—(वि० अ०) प्यारा।
अजीब—(वि० अ०) विलक्षण। अनूठा।
अजीर्ण—(पु० स०) अपच।
अटक—(सञ्ञा पु०) अड़चन। संकोच। एक शहर। अनाज।
—ना=ठहरना। फँसना। प्रीति करना। झगड़ना।
अटकाना=ठहराना। फँसाना।
अटकाव=ठहराव। फँसाव।
अटकल—(स्त्री० स०) अनुमान। अन्दाज। तख़मीना।
—ना=अनुमान करना।
—पच्चू=कपोलकल्पित।
—बाज़=अनुमान करनेवाला।
अटपट—(वि० हि०) टेढ़ा। गूढ़। बेठिकान। लड़खड़ाता।
अटपटाना=घबड़ाना। हिचकना। अटपटी=घबड़ाहट। हिचकिचाहट।
अटर्नी—(पु० अ०) एक प्रकार का मुख़्तार।
अटलस—(पु० अ०) नक़्शों की पुस्तक।
अटारी—(स्त्री० हि०) कोठा। अट्टालिका=कोठा। अटा=अट्टालिका।
अटाला—(पु० हि०) ढेर। असबाब। मुहल्ला क़साइयों का।
अठकोसल—(पु० हि०+अ०) पंचायत।
अठखेली—(स्त्री० हि०) कल्लोल। मस्तानी चाल।
अठपहला—(वि० हि०) आठ कोने वाला।

अड़चन—(स्त्री० हि०) रुकावट।

अडबंग—(वि०पु०हि०) अटपट। कठिन। अनोखा। अडबड।

अडवोकेट—(पु०अं०) जो वकील वकालतनामा दाखिल नहीं करता। वकील।

अडूसा—(पु० हि०) एक औषधि।

अड़ोस-पड़ोस—(पु० हि०) क़रीब।

अड्डा—(पु० हि०) ठहरने का स्थान। प्रधान स्थान। चौकठा।

अड्रेस—(स्त्री० अं०) अभिनन्दन पत्र। ठिकाना।

अढ़तिया—(पु० हि०) आढ़त का व्यवसाय करने वाला।

अत:—(क्रि० वि० सं०) इस कारण से। अतएव=इसलिये।

अतर—(पु० हि०) फूलों का सार। —दान=जिसमें इत्र रक्खा जाता है।

अतलस—(स्त्री० अ०) बहुत मुलायम रेशमी वस्त्र।

अताई—(वि० अ०) प्रवीण। धूर्त। बिना पढ़ा लिखा।

अतीक़—(पु० अ०) पुराना। आज़ाद।

अत्तार—(अ०) गंधी, इत्र बेचने वाला।

अतालीक़—(पु० अ०) उस्ताद।

अतवार—(अ०) तौर का बहु वचन। सलीक़ा। ढंग।

अति—(वि० सं०) ज़्यादा।

अतिकाल—(पु० स) विलम्ब।

अतिथि—(पु० सं०) मेहमान। सन्यासी।
—पूजा=मेहमानदारी।
—यज्ञ=अतिथि पूजा।

अतीव—(वि० सं०) अत्यन्त।

अतुल—(वि० सं०) जो तोला या पूछा न जा सके। अपार। बेजोड़। —नीय=जिसका अन्दाज न हो सके। अनुपम।

अता—(अ०) भेंट। देन। बख़शिश।

अत्याचार—(पु० सं०) अन्याय। पाप। पाखंड। अत्याचारी=दुराचारी। ढकोसले बाज़।

बड़े पशुओं को समूचा निगल जाता है। (फा० अज़दहा)।
अजब—(वि० अ०) अद्भुत।
अजब—(ـــــف अ०) तलवार।
अजल—(स्त्री० अ०) मौत।
अजहद—(क्रि० वि० फा०) बहुत अधिक।
अजाय—(पु० अ०) पीड़ा। पाप।
अज़मत—(स्त्री० अ०) महानता।
अज़ीम=महान।
अजायब—(पु० अ०) अजब का बहुवचन। विचित्र वस्तु।
—खाना=वह घर जिसमें अद्भुत पदार्थ रक्खे जाते हैं।
—घर=अजायब खाना।
अज़ीज़—(वि० अ०) प्यारा।
अजीब—(वि० अ०) विलक्षण। अनूठा।
अजीर्ण—(पु० स०) अपच।
अटक—(सज्ञा पु०) अड़चन। संकोच। एक शहर। अकाज।
—ना=ठहरना। फँसना। प्रीति करना। झगड़ना।
अटकाना=ठहराना। फँसाना।
अटकाव=ठहराव। फँसाव।
अटकल—(स्त्री० स०) अनुमान। अंदाज। तखमीना।
—ना=अनुमान करना।
—पच्चू = कपोलकल्पित।
—बाज=अनुमान करनेवाला।
अटपट—(वि० हि०) टेढ़ा। गूढ़। बेठिकाने। लड़खड़ाता।
अटपटाना=घबड़ाना। हिचकना। अटपटी=घबड़ाहट। हिचकिचाहट।
अटरनी—(पु० अ०) एक प्रकार का मुख्तार।
अटलस—(पु० अ०) नक्शों की पुस्तक।
अटारी—(स्त्री० हि०) कोठा।
अट्टालिका=कोठा। अटा= अट्टालिका।
अटाला—(पु० हि०) ढेर। असबाब। मुहल्ला कसाइयों का।
अठखेसल—(पु० हि०+अ०) पंचायत।
अठखेली—(स्त्री० हि०) कल्लोल। मस्तानी चाल।
अठपहला—(वि० हि०) आठ कोने वाला।

अड़चन—(स्त्री० हि०) रुकावट।

अड़बग—(वि०पु०हि०) अटपट। कठिन। अनोखा। ऊबड़खाबड़।

अडवोकेट—(पु०अं०) जो वकील वकालतनामा दाखिल नहीं करता। वकील।

अड़ूसा—(पु० हि०) एक औषधि।

अड़ोस-पड़ोस—(पु० हि०) क़रीब।

अड्डा—(पु० हि०) ठहरने का स्थान। प्रधान स्थान। चौकठा।

अड्रेस—(स्त्री० अं०) अभिनन्दन पत्र। ठिकाना।

अढ़तिया—(पु० हि०) आढ़त का व्यवसाय करने वाला।

अत —(क्रि० नि० स०) इस कारण। अतएव=इसलिये।

अतर—(पु० हि०) फूलों का सार। —दान=जिसमें इत्र रक्खा जाता है।

अतलस—(स्त्री० अ०) बहुत मुलायम रेशमी वस्त्र।

अताई—(वि० अ०) प्रवीण। धूर्त। विना पढ़ा लिखा।

अतीक़—(पु० अ०) पुराना। आज़ाद।

अत्तार—(अ०) गन्धी, इत्र बेचने वाला।

अतालीक़—(पु० अ०) उस्ताद।

अतवार—(अ०) तौर या बहु वचन। तरीक़ा। ढंग।

अति—(वि० स०) ज्यादा।

अतिकाल—(पु० स) विलम्ब।

अतिथि—(पु० स०) मेहमान। सन्यासी।
—पूजा=मेहमानदारी।
—यज्ञ=अतिथि पूजा।

अतीव—(वि० स०) अत्यन्त।

अतुल—(वि० स०) जो तोला या कूता न जा सके। अपार। बेअंदाज। —नीय=जिसका अन्दाज न हो सके। अनुपम।

अता—(अ०) भेंट। देन। बख़शिश।

अत्याचार—(पु० स०) अन्याय। पाप। पाखंड। अत्याचारी=दुराचारी। ढकोसले बाज़।

अत्युक्ति—(स्त्री०, सं०) बढ़ावा। एक अलंकार।

अथ—(अव्य० सं०) किसी वस्तु का आरम्भ। अनन्तर। —च=और भी।

अथाइ—(स्त्री० हि०) बैठने का स्थान। मंडली।

अदाग—(वि० हि०) निष्कलंक। निर्दोष। साफ।

अदना—(वि० अ०) तुच्छ। मामूली। (स्त्री० अदनी)

अदब—(पु०, अ०) क़ायदा

अदवाकर—(क्रि० वि० हि०) टेक बाँधकर।

अदमपैरवी—(स्त्री०, फा०) किसी मुक़दमे में ज़रूरी कार रवाई न करना। अदम सबूत= प्रमाण का न होना। अदम हाज़िरी=अनुपस्थिति।

अदरक—(पु०, हि०) एक पौधा। आदी।

अदहन—(हि०) खौलता हुआ पानी।

अदा—(वि० अ०) दिया हुआ। (संज्ञा, स्त्री०) भाव। ढंग। —ई=चालबाज़।

अदालत—(स्त्री० अ०) न्यायालय। अदालती (वि० अ०) जो अदालत करे।

अदावत—(अ०) दुश्मनी। अदावती=जो दुश्मनी रक्खे।

अदूरदर्शी—(वि० सं०) जो दूर तक न सोचे।

अद्भुत—(वि० सं०) आश्चर्य-जनक। अद्भुतालय=अजायब घर।

अध—(हि०) आधा। अधकचा=अधूरा। अधकपारी=आधे सिर का दर्द। अधखिला=आधा खिला हुआ। अधखुला=आधा खुला हुआ। अधन्ना=दो पैसा। अधपई=एक बाट जो १ पाव का आधा होता है। अधर=बीच। अधमरा=आधा मरा हुआ। अधसेरा=एक बाट, जो दो पौवे का होता है। अधावट=जो आधा औंटा हो। अधि

=आधा हिस्सा। अधढ़ = आधी उम्र का। अधेला = आधा पैसा। अधमुआ = आधा मरा हुआ।

अधाधुन्ध—(क्रि० वि०) अधाधुंध। अंधेर। बेहिसाब।

अधिक—(वि० सं०) विशेष। सिवा। —ता = बहुतायत। —मास = मलमास। —तर = प्राय।

अधिकार—(पु० सं०) प्रभुत्व। हक्र। दावा। शक्ति। ज्ञान कारी। प्रकरण। अधिकारी = मालिक। हक़दार। योग्यता रखने वाला। अधिकृत = अधिकार में आया हुआ।

अधीन—(वि० सं०) मातहत। लाचार।

अधीर—(वि० पु० सं०) घबड़ाया हुआ।

अनक़रीब—(क्रि० वि० अ०) लगभग।

अनधिकार—(सं० पु० सं०) इख़्तियार का न होना। लाचारी। —ता = अधिकार का न होना। अनधिकारी = जिसको अधिकार न हो। अयोग्य।

अनन्नास—(पु०) रामबास की तरह एक पौधा।

अनन्य—(वि० सं०) (स्त्री० अनन्या) एक ही में लीन। —गति = जिसको दूसरा सहारा न हो। —चित्त = जिसका चित्त दूसरी जगह न हो। —ता = एक ही में लगा रहना।

अनमिल—(वि० हि०) बेजोड़। अनमेल = बेजोड़। बिना मिलावट का।

अनमोल—(वि० हि०) अमूल्य। उत्तम।

अनर्थ—(पु० सं०) उलटा मतलब। बिगाड़। पापमार्ग। बेमतलब। —कारी = उलटा मतलब निकालनेवाला। उत्पाती। —दर्शी = बुराई करनेवाला।

अनसुनी—(वि० हि०) बिना सुनी हुई।

अनहोनी—(वि० स्त्री० हि०) असम्भव।

अनाचार—(पु० स०) दुराचार। कुचाल।

अनाज—(पु० हि०) अन्न।

अनाड़ी—(वि० पु० हि०) गँवार। जो चतुर न हो।

अनाथ—(वि० स०) बे मालिक का। लावारिस। जिसका सहायता करने वाला कोई न हो। दुखी। अनाथालय=दुखियों का घर। जहाँ असहाया का पालन पोषण हो।

अनादर—(पु० स०) निरादर। अपमान। —णीय=जो आदर के लायक न हो। बुरा। अनादरित=जिसका आदर न हुआ हो।

अनाप शनाप—(पु० हि०) बकबक। व्यर्थ बकवाद।

अनायास—(क्रि० वि० स०) बिना परिश्रम। अचानक।

अनार—(पु० फ़ा०) दाड़िम।

अनावश्यक—(वि० स०) जिसकी ज़रूरत न हो।—ता=ज़रूरत का न होना।

अनाहूत—(वि० स०) बिना बुलाया हुआ।

अनियमित—(वि० स०) बे क़ायदा। अनिश्चित।

अनिर्वचनीय—(वि० स०) जिसका बयान न हो सके।

अनुकरण—(पु० स०) नक़ल। पीछे आने वाला। अनुकर णीय=नक़ल करने लायक़।

अनुकूल—(वि० स०) मुवाफ़िक़। हितकर।—ता=अविरुद्धता। पक्षपात।

अनुगामिनी—(स्त्री० स०) सतीव। सूखी।

अनुगृहीत—(वि० स०) जिस पर कृपा की गयी हो। कृतज्ञ। अनुग्रह=कृपा। अनुग्राहक=कृपा करनेवाला। उपकारी।

अनुचित—(वि० स०) बुरा।

अनतर—(क्रि० वि० स०) पीछे। लगातार।

अनपढ़—(वि० सं०+हि०) बेपढ़ा।

अनभिज्ञ—(वि० सं०) मूर्ख। नावाक़िफ़। —ता=मूर्खता।

अध्ययन—(पु० सं०) पढ़ाई। अध्यापक=पढ़ानेवाला। अध्यापकी=मुदर्रिसी। अध्यापन=पढ़ाने का कार्य्य। अध्याय=पाठ। अनध्याय=छुट्टी का दिन।

अध्यवसाय—(पु० सं०) लगातार परिश्रम। उत्साह। —यी=परिश्रमी। उत्साही।

अनुनय—(पु० सं०) विनती। मनाना।

अनुप्रास—(पु० सं०) शब्द का अलंकार।

अनुभव—(पु० सं०) वह ज्ञान जो प्रत्यक्ष करने से प्राप्त हो। जो ज्ञान परीक्षा करने पर प्राप्त हो। अनुभवी=अनुभव रखनेवाला। अनुभाव—महिमा। अनुभावी=जिसको अनुभव हो। जिसने सब बातें स्वयं देखी सुनी हों। अनुभूत=जिसका अनुभव हुआ हो। तजरबा किया हुआ। अनुभूति=अनुभव।

अनुमति—(स्त्री० सं०) आज्ञा। सम्मति।

अनुमान—(पु० सं०) अन्दाज़ा। अनुमित=अन्दाज़ा हुआ। अनुमिति=अनुमान। अनुमेय=अनुमान करने लायक़।

अनुमोदन—(पु०, सं०) समर्थन।

अनुरक्त—(वि० सं०) प्रेम से मिला हुआ। लीन।

अनुराग—(पु० सं०) प्रेम। अनुरागी=प्रेमी।

अनुरोध—(पु० सं०) रुकावट। दबाव। सिफ़ारिश।

अनुवाद—(पु०, सं०) दोहराना। तर्जुमा। —क=अनुवाद करने वाला। अनुवादित=अनुवाद किया हुआ।

अनुशीलन—(पु० सं०) मनन। बार-बार अभ्यास।

अनुसन्धान—(पु० सं०)

खाज। कोशिश।—ना = खोजना। सोचना। अनुसन्धि = भीतरी बातचीत।

अनुसरण—(पु० सं०) पीछे चलना। नक़ल।

अनुसार—(क्रि० वि० सं०) समान।

अनूठा—(वि० हि०) अनोखा। अच्छा।—पन = विचित्रता। सुन्दरता।

अनेक—(वि० सं०) बहुत।

अन्न—(पु० सं०) अनाज।—कूट = अन्न का ढेर। एक उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होता है।—दाता = अन्न दान करनेवाला। परवरिश करनेवाला।—पूर्णा = अन्न की अधिष्ठात्री देवी।—प्राशन = पसनी।—मयकोश = स्थूल शरीर।

अन्य—(वि० सं०) दूसरा।—च = और भी।—त = किसी और से। कहीं और से।—त्र = दूसरी जगह।

अन्यथा—(वि० सं०) उलटा। झूठ।

अन्याय—(पु० सं०) अनीति। अंधेर। अन्यायी = अनुचित काम करनेवाला।

अन्योक्ति—(स्त्री० सं०) वह कथन जिसका मतलब कथित वस्तु के सिवा दूसरी वस्तुओं पर घटाया जाय।

अन्वेषक—(वि० सं०) खोजने वाला।

अन्वेषण—(पु० सं०) खोज

अपंग—(वि० हि०) अंगहीन लूला। असमर्थ।

अपकार—(पु० सं०) बुराई

अपकीर्ति—(स्त्री० सं० बदनामी।

अपनाना—(क्रि० हि०) अ वश में करना।

अपभ्रंश—(पु० सं०) पतन बिगाड़। बिगड़ा हुआ श

अपमान—(पु० सं०) अन बेइज़्ज़ती।—अपमानि अनादर किया हुआ।

अपमृत्यु—(पु० सं०) कुसमय मृत्यु।

अपयश—(पु० सं०) बुराई। कलंक।

अपरञ्च—(अव्य० सं०) फिर भी।

अपरम्पार—(वि० हि०) बेहद।

अपराध—(पु० सं०) दोष। भूल। अपराधी=दोषी।

अपरिमित—(वि० सं०) बेहद। बहुत। अपरिमेय=बेअन्दाज़। असंख्य।

अपरेशन—(पु० अं०) चीर-फाड़।

अपर्याप्त—(वि० सं०) जो काफ़ी न हो। अपर्याप्ति=कमी।

अपवाद—(पु० सं०) निन्दा। बुराई। पाप। अपवादी=बुराई करनेवाला।

अपाहिज—(वि० हि०) लूला लँगड़ा। जो काम न कर सके।

अपील—(स्त्री० अं०) निवेदन। फिर विचार के लिये प्रार्थना। अपीलांट=अपील करनेवाला आदमी।

अपूर्ण—(वि० सं०) जो पूरा न हो। असमाप्त।

अपूर्व—(वि० सं०) जो प्रथम न रहा हो। अलौकिक। उत्तम। —ता=अनोखापन। —विधि=उस वस्तु के प्राप्त करने का तरीक़ा जिसका ज्ञान प्रत्यक्ष अनुमान इत्यादि प्रमाणों से न होसके।

अप्रकाशित—(वि० सं०) अँधेरा। गुप्त। जो छापकर प्रचलित न किया गया हो।

अप्राप्य—(वि० सं०) जो प्राप्त न होसके।

अप्रैल—(पु० अं० एप्रिल) अंगरेज़ी माह जो ३० दिन का माना गया है।

अप्सरा—(स्त्री० सं०) वेश्याओं की एक जाति। स्वर्ग की वेश्या।

अफ़ग़ान—(पु० अ०) अफ़ग़ानिस्तान का रहनेवाला।

अफ़जूँ—(पु० फ़ा०) अधिकता।

अफसूँ—(पु०) जादू टोना। मन्त्र-यन्त्र।

अफयून—(स्त्री० फ०) अफीम। अफीमची=अफीम का नशा करने वाला।

अफरीदी—(पु० अ०) पठानों की एक जाति।

अफलातून—(अ०) यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जो अरस्तू का गुरु था।

अफवाह—(स्त्री० अ०) उड़ती खबर। गप्प।

अफज़ल—(अ०) कृपा करने वाला। दान और आशीर्वाद देनेवाला।

अफसर—(पु० अ० आफिसर) प्रधान। हाकिम।

अफसाना—(पु० फा०) क़िस्सा।

अफसुर्दा—(फा०) मुरझाया हुआ। दुःखित।

अफ़सोस—(स्त्री० फा०) शोक। खेद।

अफीडेविट्—(स्त्री० अ० एफीडेविट) शपथ।

अबजरवेटरी—(स्त्री० अ० आबजरवेटरी) वेधशाला।

अबतर—(वि० फा०) बुरा। गिरा हुआ। अबतरी=घटाव। खराबी।

अबरक—(पु० हि०) एक प्रकार की धातु।

अबरी—(संज्ञा स्त्री० फा०) एक प्रकार का चिकना काग़ज़। पीले रंग का पत्थर।

अबलक—(फा०) घोड़े की एक जाति।

अबलखा—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पक्षी।

अबला—(स्त्री० सं०) स्त्री।

अबवाब—(पु० अ०) वह ज़्यादा कर जो सरकार मालगुज़ारी पर लगाती है।

अबा—(पु० अ०) अंगे के बराबर का एक पहनावा।

अबादान—(वि० अ०) बसा हुआ।

अबाबील—(स्त्री० फा०) काले रंग की एक चिड़िया।

अबीर—(पुं० अ०) एक सुगन्ध

जिस को होली पर इस्तेमाल किया जाता है। बुक्का।

अबरु—(स्त्री० फा०) भौं।

अब्बा—(पु० फा) बाप।

अब्बास—(पु० अ०) एक प्रकार का पौधा।

अब्र—(पु० फा०) बादल।

अभिनन्दन—(पु० सं०) आनन्द। प्रशंसा। उत्तेजना। अभिनन्दनीय=प्रशंसा के योग्य। अभिनन्दित=प्रशंसित।

अभिनय—(पु० सं०) स्वाँग। नाटक का खेल।

अभिन्न—(वि० सं०) जो पृथक न हो। मिला हुआ।

अभिप्राय—(पु० सं०) मत लब।

अभिभावक—(वि० सं०) सरपरस्त।

अभिमान—(पु० सं०) गर्व। अभिमानी=गर्व करनेवाला। घमंडी।

अभिषेक—(पु० सं०) तिलकोत्सव। मंगल केलिये कुश या दूब से मंत्र पढ़कर जल छिड़कना।

अभीष्ट—(वि० सं०) चाहा हुआ। पसंद का।

अमचूर—(पु० हि०) कच्चे आम का चूर्ण।

अमजद—(अ०) बड़े बूढ़े। गुरुजन।

अमन—(पु० अ०) चैन।

अमर—(वि० सं०) जो मरे नहीं। देवता।

अमराई—(स्त्री० हि०) आम का बाग़।

अमरूत(द)—(पु० फा०) एक तरह का फल।

अमलदारी—(स्त्री० अ०) अधिकार। रूहेलखंड में एक प्रकार की काश्तकारी।

अमानत—(स्त्री० अ०) धरोहर। —दार=जिसके पास अमानत रक्खी जाय।

अमला—(पु० अ०) काम। व्यवहार।

अमाल—(पु० अ०) हाकिम। —नामा=एक रजिस्टर, जिस में कर्मचारियों की

अफसूँ—(पु०) जादू टोना। मंत्र-यंत्र।

अफ़यून—(स्त्री० फ़ा०) अफीम। अफीमची=अफीम का नशा करने वाला।

अफरीदी—(पु० अ०) पठानों की एक जाति।

अफलातून—(अ०) यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जो अरस्तू का गुरु था।

अफवाह—(स्त्री० अ०) उड़ती खबर। गप्प।

अफज़ल—(अ०) कृपा करने वाला। दान और आशिर्वाद देनेवाला।

अफसर—(पु० अ० आफिसर) प्रधान। हाकिम।

अफसाना—(पु० फ़ा०) क़िस्सा।

अफसुरदा—(फ़ा०) मुर्झाया हुआ। दुखित।

अफसोस—(स्त्री० फ़ा०) शोक। खेद।

अफीडेविट—(स्त्री० अं० एफीडेविट) शपथ।

अबजरवेटरी—(स्त्री० अं० आबजरवेटरी) वेधशाला।

अबतर—(वि० फ़ा०) बुरा। गिरा हुआ। अबतरी=घटाव। खराबी।

अबरक—(पु० हि०) एक प्रकार की धातु।

अबरी—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का चिकना काग़ज़। पीले रंग का पत्थर।

अबलक़—(फ़ा०) घोड़े की एक जाति।

अबलखा—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पक्षी।

अबला—(स्त्री० सं०) स्त्री।

अबवाब—(पु० अ०) वह ज़्यादा कर जो सरकार मालगुज़ारी पर लगाती है।

अबा—(पु० अ०) अंगे के बराबर का एक पहनावा।

अबादान—(वि० अ०) बसा हुआ।

अबाबील—(स्त्री० फ़ा०) का[illegible] रंग की एक चिड़िया।

अबीर—(पु० अ०) एक बुक[illegible]

जिस को हाली पर इस्तेमाल किया जाता है। सुर्मा।

अनरू—(स्त्री० फा०) भौं।

अब्बा—(पु० अ०) बाप।

अब्बास—(पु० अ०) एक प्रकार का पौधा।

अब्र—(पु० फा०) बादल।

अभिनन्दन—(पु० स०) आनन्द। प्रशंसा। उत्तेजना। अभिनन्दनीय=प्रशंसा के योग्य। अभिनन्दित=प्रशंसित।

अभिनय—(पु० स०) स्वांग। नाटक का खेल।

अभिन्न—(वि० स०) जो पृथक न हो। मिला हुआ।

अभिप्राय—(पु० स०) मत लब।

अभिभावक—(वि० स०) सरपरस्त।

अभिमान—(पु० स०) गर्व। अभिमानी=गर्व करनेवाला। घमंडी।

अभिषेक—(पु० स०) तिलकाव। मंगल के लिये कुश या दूब से मंत्र पढ़कर ... ना।

अभीष्ट—(वि० स०) चाहा हुआ। पसन्द का।

अमचूर—(पु० हि०) कच्चे आम का चूर्ण।

अमज़द—(अ०) बड़ा बुजुर्ग। गुरजन।

अमन—(पु० अ०) चैन।

अमर—(वि० स०) जो मरे नहीं। देवता।

अमराई—(स्त्री० हि०) आम का बाग़।

अमरुत(द)—(पु० फा०) एक तरह का फल।

अमलदारी—(स्त्री० अ०) अधिकार। रोज़नामा में एक प्रकार की काश्तकारी।

अमानत—(स्त्री० अ०) धरोहर। —दार=जिसके पास अमानत रक्खी जाय।

अमल—(पु० अ०) काम। व्यवहार।

अमान—(पु० अ०) हाकिम। —नामा=एक रजिस्टर जिसमें कर्मचारियों की सब...

दवाइयाँ दर्ज की जाती हों। कम-पत्र।

अम्मारी—(अ०) अम्बारी। हाथी का हौदा।

अमावट—(स्त्री० हि०) आम के सुखाये रस का रोटा।

अमीन—(पु० अ०) अदालत का एक कर्मचारी।

अमीर—(पु० अ०) सरदार। धनाढ्य। उदार। अफ़ग़ान नरेश की उपाधि।

अमृतबान—(पु० हि०) मिट्टी का रोग़नदार बरतन।

अमोनिया—(पु० अ०) एमो निया, नौसादर।

अमोलक—(वि० हि०) अमूल्य।

अम्मामा—(पु० अ०) मुसल मानों का साफ़ा। अमाम =अम्मामा।

अब्र—(पु० अ०) बादल।

अम्हौरी—(स्त्री० हि०) बहुत छोटी छोटी फुंसियाँ जो गर्मी के दिनों में पसीने के कारण होती हैं।

अयाँ—(वि० अ०) ज़ाहिर। स्पष्ट।

अयानत—(स्त्री०अ०)सहायता।

अय्यार—(अ०) चालाक आदमी। चलता पुर्ज़ा।

अय्याश—(अ०) विलासी। विषयी।

अयाल—(पु० स्त्री०) घोड़े तथा सिंहादि के गर्दन के बाल।

अयि—(अ० सं०) हे।

अयोग्य—(वि० सं०) जो योग्य न हो। नालायक़। नामुना सिब।

अरई—(स्त्री० हि०) हाँकने की छड़ी।

अरक़ नाना—(पु० अ०) एक अरक़ जो पुदीना और सिरका मिलाकर निकाला जाता है। अरक़ बादियान= सौंफ़ का अर्क़।

अरगन—(पु० अं०) ऑर्गन। एक अँगरेज़ी बाजा।

अरगवानी—(पु० फ़ा०) लाल रंग। बैंगनी।

अरगल—(पु० स० अर्गल) ब्योड़ा ।

अरज—(स्त्री० अ० अर्ज़) निवेदन ।

अरथी—(स्त्री० हि०) टिखटी । विमान ।

अरब—(पु० हि०) सौ करोड़ । घोड़ा । एक रेतीला मुल्क ।

अरबी—(वि० फा०) अरब देश का ।

अरमनी—(पु० फा०) आरमेनियाँ देश का निवासी ।

अरमान—(पु० तु०) लालसा ।

अरर—(अव्य० हि०) एक शब्द, जो सदमे की दशा में निकाला जाता है ।

अरवा—(पु० हि०) बिना उबाले हुये धान का चावल ।

अरवी—(पु० हि०) एक कंद ।

अरबाब—(अ०) रब का बहु वचन । मालिक । ईश्वर ।

अरसा—(पु० अ०) समय । देर ।

अरज़ाँ—(फ़ा०) सस्ता । मंदा ।

अरज़—(फ़ा०) चौड़ाई ।

अरहर—(स्त्री० हि०) एक अनाज । तूअर । दाल ।

अराक—(पु० अ०) अरब में एक देश ।

अरस्तू—(पु० यू०) यूनान का एक दार्शनिक विद्वान् ।

अराजक—(वि० स०) जहाँ राजा न हो । —ता=अशांति ।

अरारूट—(पु० अ० ऐरोरूट) एक पौधा, जो दूसरे देश से भारत में आया है ।

अरी—(अ० स्त्री०) हे । सम्बोधन अव्यय ।

अरोचक—(पु० स०) एक रोग जिस में अन्न आदि का स्वाद नहीं मिलता ।

अरोड़ा—(पु० हि०) पंजाब में एक जाति ।

अर्क—(पु० स०) सूर्य । मदार ।

अर्ज़—(पु० अ०) विनती । —दाश्त=निवेदन-पत्र । अर्ज़ी=निवेदन पत्र । अर्ज़ी-दावा=वह प्रार्थना पत्र जो दीवानी या माल के मुहकमे में दिया जाय ।

अर्थ—(पु० सं०) शब्द का अभिप्राय। मतलब। काम। निमित्त। संपत्ति। —सचिव =अर्थ-मंत्री।

अर्थ-शास्त्र—(पु० सं०) वह शास्त्र जिसमें धन की प्राप्ति और रक्षा का ढंग बतलाया गया हो।

अर्थात्—(अव्य० सं०) यानी।

अर्थी—(वि० हिं०) इच्छा रखने वाला। गर्जी। मुद्दई। दास। धनाढ्य।

अर्द्धाङ्गिनी—(स्त्री० सं०) पत्नी।

अर्ल—(अं०) इंगलैंड का एक उपाधि।

अल्टिमेटम—(अं०) अंतिम सूचना।

अर्वाचीन—(वि० सं०) आधुनिक। नया।

अलंकार—(पु० सं०) गहना। शब्द तथा अर्थ की वह युक्ति जिससे काव्य की शोभा हो। अलंकृत=गहना पहना हुआ। सजाया हुआ। अलंकारयुक्त।

अलंग—(पु० हिं०) ओर।

अलकतरा—(पु० हिं०) पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा पदार्थ।

अलग—(वि० हिं०) जुदा।

अलगनी—(स्त्री० हिं०) अरगनी।

अलगरजी—(वि० अ०) बेपरवा।

अलगरज—(अ०) निदान। अन्तिम कथन। भावार्थ। अलग्रिस्मा=अलगारज़।

अलगाना—(क्रि० स० हिं०) अलग करना। दूर करना।

अलगोजा—(पु० अ०) एक प्रकार की बाँसुरी।

अलपाका—(पु० स्पे०) ऊँट के जैसा एक जानवर। अलपाका का ऊन।

अलफ—(पु० अ० अलिफ़) घोड़े का आगे के दोनों पाँव उठाकर पिछली टाँगों के बल खड़ा होना।

अलबत्ता—(अव्य० अ०) बेशक। बहुत ठीक। लेकिन।

अलबम—(पु० फ़ा०) तसवीरें रखने की एक किताब।

अलनेला—(वि॰ हि॰) बनाठना। बनोला। बे परवाह।
अलम—(पु॰ अ॰) दुःख। भंडा।
अलमनक—(पु॰ अं॰) अँगरेज़ी ढग का पत्रा।
अलमस्त—(वि॰ फ़ा॰) मतवाला। बेग़म।
अलमारी—(स्त्री॰ पुर्त॰) एक प्रकार का लम्बा सन्दूक।
अललटप्पू—(वि॰ देश॰) बे ठिकाने का।
अलवान—(पु॰ अ॰) ऊनी चादर।
अलताफ—(अ॰) लुत्फ़ का बहुवचन। कृपा। दया।
अआला—(अ॰) ऊपर।
अलसी—(स्त्री॰ हि॰) तीसी
अलहदा—(वि॰ अ॰) अलग।
अलानिय—(अ॰) डके की चोट। खुल्लमखुल्ला।
अलापना—(क्रि॰ अ॰ हि॰) गाना। तान लगाना।
अलामत—(पु॰ अ॰) निशानी।
अलाव—(पु॰ हि॰) आग का ढेर।
अलावा—(क्रि॰ अ॰)सिवाय।
अलील—(वि॰ अ॰) बीमार।
अलुमीनम—(पु॰ अं॰) एक प्रकार की धातु।
अलोना—(वि॰ हि॰) बिना नमक का। फीका।
अलौकिक—(वि॰ स॰) जो इस लोक में न दिखाई दे। अद्भुत।
अल्पवयस्क—(वि॰ सं॰) थोड़ी उम्र का। अल्पायु=थोड़ी आयुवाला।
अल्लमगल्लम—(पु॰ अनु॰) बकबक।
अल्हड़—(वि॰ हि॰) मनमौजी। बिना अनुभव का। उजड्ड। गँवार। —पन=बेपरवाही। लड़कपन। अनाड़ीपन।
अवकाश—(पु॰ स॰) स्थान। आकाश। अंतर।
अवगुण—(पु॰ स॰) दोष। बुराई।
अवतरण—(पु॰ स॰) नक़ल।
अवतार—(पु॰ स॰) जन्म। शरीर रचना। अवतारी= अलौकिक।

अवध—(पु० हि०) एक देश जिसकी राजधानी अयोध्या थी।

अवनत—(वि० स०) नीचा। पतित। अवनति=हीन दशा। झुकना।

अवयव—(पु० स०) अंग। अंश। अवयवी=अंगी। समूचा।

अवरोध—(पु० स०) रुकावट। घेर लेना। बंद करना। —क=रोकने वाला। अवरोधित=रोका हुआ।

अवलंब—(पु० स०) आधार। —न=सहारा। —ना=अवलंबन करना। अवलंबित=आश्रित। निर्भर।

अवलेह—(पु० स०) चटनी।

अवशिष्ट—(वि० स०) बचा हुआ। अवशेष=बचा हुआ।

अवसर—(पु० स०) समय। फुरसत। —प्राप्त=काम से छुट्टी ले लेनेवाला।

अवस्था—(सं० स्त्री० स०) दशा। समय। उम्र। स्थिति।

अवस्थिति—(स्त्री० स०) स्थिति।

अवहेलना—(पु० सं०) आज्ञा न मानना। अवज्ञा। बेपरवाही।

अवाक्—(वि० हि०) चुप। चकित।

अविनय—(पु० स०) ढिठाई।

अविनीत—(वि० स०) जो विनीत न हो। सरकश। दुष्ट। अविनीता=कुलटा। बदचलन स्त्री।

अविरत—(वि० स०) निरंतर। लगा हुआ।

अविराम—(वि० स०) बिना विश्राम लिए हुए। लगातार।

अविवेक—(पु० स०) अज्ञान। अन्याय। —ता=अज्ञानता। अविवेकी=अज्ञानी। अविचारी। मूर्ख।

अविश्वास—(पु० स०) विश्वास का अभाव। अविश्वसनीय=जो विश्वास योग्य न हो।

अवैतनिक—(वि० स०) जो बिना तनख्वाह के काम करे। ऑनरेरी।

अव्यय—(वि० सं०) जो खर्च न हो। सदा एकरस रहने वाला। परब्रह्म। व्याकरणानुसार एक शब्द। अव्ययीभाव=समास का एक भेद।

अव्यवसाय—(पु० सं०) उद्यम की कमी। अव्यवसायी=उद्यमहीन। आलसी।

अव्यवस्था—(स्त्री० सं०) नियम का न होना। मर्य्यादा का न होना। गड़बड़। अव्यवस्थित=बेमर्यादा। बेठिकाने का। चंचल।

अव्वल—(वि० अ०) पहिला। उत्तम।

अशकुन—(पु० सं०) बुरा शकुन।

अशरफ़ी—(स्त्री० फा०) सोने का एक पुराना सिक्का जो प्रायः १६) का होता था।

अशिया—(अ०) चीज़।

अशराफ—(वि० अ०) शरीफ़। भला मनुष्य। अशरफ़=बहुत भलामानस। बड़ा बुज़ुर्ग।

अशआर—(अ०) बहुत से शेर।

अशख़ास—(अ०) शख़्स का जमा। बहुत से आदमी।

अशांत—(वि० सं०) जो शांत न हो। चंचल। अशांति=चंचलता। हलचल।

अशिक्षित—(वि० सं०) बेपढ़ा लिखा। गँवार।

अशिष्ट—(वि० सं०) असभ्य। बेहूदा। —ता=असभ्यता। ढिठाई।

अश्लील—(वि० सं०) गंदा। —ता=गंदापन।

अश्वमेध—(पु० सं०) एक बड़ा यज्ञ जिसमें दिग्विजय के लिये घोड़ा छोड़ा जाता है।

असंभव—(वि० सं०) जो न हो सके। नामुमकिन।

असास—(अ०) जड़। बुनियाद।

असातीर—(अ०) कहानियाँ। क़िस्से।

अस्प—(पु० फ़ा०) घोड़ा।

अश्क—(फा०) आँसू।

असभ्य—(वि० सं०) गँवार। —ता=गँवारपन।

असमञ्जस—(पु० स०) आगा पीछा । कठिनाई ।

असर—(पु० अ०) प्रभाव । दिन का चौथा पहर ।

असरार—(क्रि० वि० हि०) लगातार ।

असल—(वि० अ०) खरा । शुद्ध । असलियत=बुनियाद । सार । असली =सच्चा । शुद्ध । अस्ल=मूल । बीज ।

अस्लन—(अ०) कदापि ।

असहयोग—(पु० सं०) सरकार के साथ मिलकर काम न करने का सिद्धांत । सर्कारपावलात । मान-मोक्षापरवान ।

असहनशील—(वि० सं०) जिसमें सहन करने की शक्ति न हो । चिड़चिड़ा । —ता= सहने की शक्ति का अभाव । असहिष्णु=जो न सह सके । असह्य=न सहने योग्य ।

असहाय—(वि० सं०) जिसे कोई सहारा न हो । अनाथ ।

असा—(पु० अ०) सोंटा ।

असाढ़—(पु० हि०) वर्ष का चौथा महीना । असाढ़ी=जो फस्ल असाढ़ में बोई जाय ।

असामयिक—(वि० सं०) जो समय पर न हो । बेवक्त ।

असामान्य—(वि० सं०) असाधारण ।

असामी—(पु० अ०) प्राणी । जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो । काश्तकार । देनदार । अपराधी । जिसने किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो ।

असालतन—(क्रि०वि०अ०)स्वयं ।

असीर—(फ़ा) क़ैदी । बन्दी ।

असावधान—(वि० सं०) जो सावधान न हो ।—ता=बेपरवाही । असावधानी=बेखबरी ।

असिस्टेंट—(वि०अ०)सहायक ।

असुर—(पु० सं०) राक्षस । नीच काम करने वाला आदमी ।

असेसमेंट—(अ०) ज़मीन के लगान का बन्दोबस्त ।

असेसर—(पु० अ०) वह आदमी जो फौजदारी के मामले में जज को राय देने के लिये चुना जाता है ।

असोसियेशन—(पु० अ०) समिति।

अस्तबल—(पु० अ०) घुड़साल।

अस्हाब—(अ०) साहब का बहुवचन।

अस्तर—(पु० फा०) नीचे की तह।

अस्तकारी—(स्त्री० फ़ा०) चूने की लिपाई। पलस्तर।

अस्तु—(अव्य० सं०) जो हो। और। अच्छा।

अस्तुरा—(पु० फा०) बाल बनाने का छुरा।

अस्त्र—(पु० सं०) फेंककर चलाया जाने वाला हथियार।

अस्त्रचिकित्सा—(स्त्री० सं०) वैद्यक-शास्त्र का वह हिस्सा जिसमें चीरफाड़ का ढंग बतलाया गया हो। जर्राही।

अस्थि—(स्त्री० सं०) हड्डी। —संचय=मसान के बाद की एक क्रिया, जिसमें जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र की जाती हैं।

अस्थिर—(वि० सं०) जो स्थिर न हो। जिसका कुछ ठीक न हो।

अस्पताल—(पु० अं०) हौस्पिटल। दवाख़ाना।

अस्वाभाविक—(वि० सं०) जो स्वाभाविक न हो, बनावटी।

अस्वीकार—(सं०, पु० सं०) इन्कार। अस्वीकृत=नामंजूर किया हुआ।

अहक—(पु० हि०) इच्छा।

अहकाम—(पु० अ०) नियम। आज्ञायें।

अहबाब—(पु० अ०) हबीब का बहुवचन। मित्रगण।

अहतमाल—(अ०) ख़तरा।

अहसन—(अ०) बहुत नेक।

अहक़र—(अ०) अति तुच्छ।

अहल—(अ०) घर के लोग। मालिक। योग्य।

अय्याम—(अ०) यौम का बहुवचन। दिन। रोज़।

अहद—(पु० अ०) प्रतिज्ञा। —नामा=प्रतिज्ञापत्र। सुलह-नामा।

आँसू—(पु० हि०) आँख के भीतर का पानी।

आइन्दा—(वि० फा०) आने वाला। आगे। फिर।

आइन—(पु० फा०) नियम। क़ानून।

आइना—(पु० फा०) दर्पण।

आउंस—(पु० अं०) एक अँग रेज़ी पैमाना। यह दो प्रकार का होता है एक ठोस वस्तुओं के तौलने का, दूसरा द्रव पदार्थों के नापने का।

आउट—(वि० अं०) खेल में हारा हुआ। बाहर।

आक़बत—(स्त्री० अ०) मरने के पीछे की दशा।

आकर—(पु० सं०) खानि। ख़ज़ाना।

आकर्ण—(वि० सं०) कान तक फैला हुआ।

आकर्षक—(वि० सं०) खींचने वाला। खिंचाव। आकर्षण शक्ति=खींचनेवाली शक्ति। आकर्षित=खींचा हुआ।

आकस्मिक—(वि० सं०) जो बिना किसी कारण के हो। अचानक होनेवाला।

आकांक्षा—(स्त्री० सं०) इच्छा। आकांक्षी=इच्छा करनेवाला।

आक़ा—(पु० अ०) मालिक। धनी।

आकार—(पु० सं०) स्वरूप। सूरत। क़द। बनावट। निशान। चेष्टा। बुलावा।

आकाश—(पु० सं०) आसमान। वह स्थान जहाँ हवा के अति रिक्त कुछ भी न हो। शून्य स्थान। —कुसुम=आकाश का फूल। अनहोनी बात। —गंगा=बहुत से छोटे छोटे तारों का एक विस्तृत समूह, जो आकाश में उत्तर दक्षिण फैला है। —वृत्ति=अनि श्चित जीविका।

आक़िल—(वि० अ०) बुद्धिमान। आक़िला=बुद्धिमती स्त्री।

आकुल—(वि० सं०) घबराया हुआ। कातर। व्याकुल —ता=घबराहट।

आकृति—(स्त्री० सं०) बनावट

आकृष्ट—(वि० सं०) खींचा हुआ।

आक्रमण—(पु० सं०) हमला। घेरना। आक्रांत=जिस पर आक्रमण किया गया हो। घिरा हुआ। विवश।

आक्षेप—(पु० सं०) दोष लगाना। निंदा। —क=फेंकनेवाला। निन्दक।

आक्साइड—(पु० अं०) मोरचा।

आक्सिजन—(पु० अं०) एक प्रकार की गैस।

आख्ता—(वि० फा०) बधिया।

आख़िर—(वि० फ़ा०) अंतिम। नतीजा। ख़ैर। —कार=अंत में। आख़िरी=सबसे पिछला।

आख़िरत—(अ०) परिणाम। अंजाम। क़यामत।

आखेट—(पु० सं०) शिकार।

आख़ोर—(पु० फ़ा०) कूड़ा-करकट। सड़ी-गली चीज़।

आख्यान—(पु० सं०) वृत्तान्त। कथा। उपन्यास का एक भेद। —क=बयान। कहानी। पूर्व वृत्तांत। आख्यायिका=क़िस्सा। उपदेशप्रद कल्पित कथा।

आगंतुक—(वि० सं०) जो आवे। आगत=आया हुआ।

आग—(स्त्री० हि०) तेज। जलन। दाह। अग्नि।

आगा—(तु०) मालिक। साहब। प्रतिष्ठित। बड़ा भाई।

आगाज़—(फा०) प्रारम्भ। शुरू।

आगत स्वागत—(पु० सं०) आदर सत्कार।

आगम—(पु० सं०) अवाई। आनेवाला समय। होनहार। —न=अवाई। प्राप्ति। —सोच=आगे का भला बुरा सोचनेवाला। —वक्ता=भविष्यवक्ता। —विद्या=भविष्य की बात बताना।

आगापीछा—(पु० हि०) हिचक। नतीजा।

आगार—(पु० सं०) घर। जगह। भंडार।

आगाह—(फा०) परिचित । खबरदार ।

आघात—(पु० स०) ठोकर । मार । चोट ।

आचमन—(पु० स०) शुद्धि के लिये मुँह में जल लेना ।

आचरण—(पु० स०) चाल चलन । व्यवहार ।

आचार—(पु० स०) चलन । चरित्र । शील । सफाई । —वान=सफाई से रहने वाला । आचारी=आचार वान ।

आचार्य—(पु० स०) गुरु । वेद पढ़ानेवाला । पूज्य । अध्यापक । वेद का भाष्यकार । आचार्या=आचार्य की स्त्री ।

आज—(क्रि० वि० हि०) जो दिनबीत रहा है । इन दिनों । —कल=इन दिनों ।

आजन्म—(क्रि० वि० स०) जीवन भर ।

आज़माइश—(स्त्री० फ़ा०) परख । आज़माना=परखना । आज़मूदा=आज़माया हुआ ।

आजा—(पु० हि०) पितामह । दादा ।

आज़ाद—(वि० फ़ा०) स्वतंत्र । बेपरवाह । स्वाधीन । निर्भय । उद्धत । आज़ादी=स्वाधीनता ।

आज़ार—(पु० फ़ा०) रोग ।

आज़मा—(फा०) आज़माने वाला । परीक्षा करनेवाला ।

आज़मद—(फ़ा०) लालची । लोभी ।

आजिज़—(वि० अ०) हैरान तंग । आजिज़ी=दीनता ।

आजीवन—(क्रि० वि० स०) ज़िन्दगी भर ।

आजीविका—(स्त्री०स०) रोज़ी ।

आज़ुर्दगी—(स्त्री० फा०) र आज़ुर्दा=दुःखी ।

आज्ञा—(स्त्री० स०) हुक्म अनुमति । —कारी=हुक्म माननेवाला । दास।—पत्र हुक्मनामा । —पालन आज्ञानुसार काम कर

—भंग=आज्ञा न मानना।
—बुर्दार=फ़र्माबरदार।

आटा—(पु० हि०) पिसान।

आटोक्रैट—(अ०) निरंकुश राजा या स्वेच्छाचारी शासक। आटोक्रैसी=स्वेच्छाचारिता।

आडम्बर—(पु० सं०) तड़क भड़क। ढोंग। आडम्बरी=आडम्बर करनेवाला।

आड़—(स्त्री० हि०) परदा।

आड़ा—(पु० हि०) एक भारी दार काष्ठ। शहतीर। तिर्छा।

आढ़त—(स्त्री० हि०) किसी व्यापारी का माल रख कर कुछ कमीशन लेकर उसको बिकवा देने का कार्य। जहाँ आढ़त का माल रहता हो।

आतंक—(पु० सं०) रोब। भय।

आततायी—(पु० सं०) आग लगानेवाला। विष देनेवाला। जो शस्त्र लेकर मारने को तैयार हो। धन हरनेवाला। स्त्री हरनेवाला।

आतशक—(स्त्री० फ़ा०) गर्मी का रोग।

आतशज़नी—(स्त्री० फ़ा०) आग लगाने का काम। आतशदान=अँगीठी। आतश परस्त=अग्नि की पूजा करने वाला। पारसी। आतशबाज़=आतशबाज़ी बनानेवाला। आतशबाज़ी=बारूद के बने हुए खिलौना के जलने का दृश्य। आतिश=आग। तेज। गुस्सा।

आत्मगौरव—(पु० सं०) अपने की आदरता। आत्मज्ञ=जो अपने को जान गया हो। आत्मजिज्ञासा=अपने को जानने की इच्छा। आत्मजिज्ञासु=अपने को जानने की इच्छा रखने वाला।

आत्मत्याग—(पु० सं०) दूसरों के हितार्थ अपना स्वार्थ छोड़ना। आत्मनिवेदन=अपने आप को अपने इष्ट देव पर चढ़ा देना। आत्मरक्षक=अपनी रक्षा करने वाला।

आत्मविद्या—(स्त्री० सं०) ब्रह्म-विद्या।

आत्मश्लाघा—(पु० स०) अपनी तारीफ।

आत्महत्या—(स्त्री० स०) अपने को मार डालना। अपने को अपने ही से दुःख देना। आत्मा को दुखी रखना।

आत्मानुभव—(पु० स०) अपना तजरबा।

आत्माभिमान—(पु० स०) मानापमान का ध्यान। आत्माभिमानी=जिसको अपने मानापमान का ध्यान हो।

आत्मावलम्बी—(पु० स०) जो किसी कार्य्य के लिये दूसरे की सहायता का भरोसा न रक्खे।

आत्मिक—(वि० स०) आत्मा-सम्बन्धी। अपना। मानसिक। आत्मीय=अपना। रिश्तेदार। आत्मीयता=मैत्री।

आत्मोत्सर्ग—(पु० स०) परोपकार के लिये अपने को दुःख में डालना।

आदत—(स्त्री० अ०) स्वभाव। टेव।

आदम—(पु० अ०) अरबी लेखकों के अनुसार मनुष्यों का आदि पिता। आदम की सन्तान।—आद=आदम की सन्तान। मनुष्य। आदमी=आदम की सन्तान। मनुष्य। आदमियत=इन्सानियत। मानवता।

आदमी—(फा०) आदम की सन्तान।

आदर—(पु० सं०) सत्कार।—णीय=आदर करने के योग्य।

आदर्श—(पु० स०) दर्पण। टीका। नमूना।

आदान प्रदान—(पु० स०) लेना देना।

आदि—(वि० स०) प्रथम आरम्भ। इत्यादि। वगैरह।

आदिम—(वि० स०) पहले का

आदिल—(वि० फा०) न्यायी

आदी—(वि० अ०) अभ्यस्त।

आदेश—(पु० स०) आज्ञा उपदेश।

आद्यंत—(स०) आदि से अन्त

आद्योपांत=शुरू से आख़िर तक।

आधा—(वि० हि०) किसी चीज़ के दो बराबर भागों में से एक।

आधार—(पु० सं०) सहारा। पात्र। मूल।

आधासीसी—(स्त्री० हि०) आधे सिर की पीड़ा।

आधिपत्य—(पु० सं०) अधिकार।

आधिभौतिक—(वि० सं०) जीव या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त।

आधुनिक—(वि० सं०) हाल का। नया।

आध्यात्मिक—(वि० सं०) आत्मा सम्बन्धी।

आनंद—(पु० सं०) प्रसन्नता। सुख। आनन्दित=सुखी।

आनतान—(स्त्री० हि०) बे सिर पैर की बात।

आनन फानन—(क्रि० वि० अ०) झटपट।

आनबान—(स्त्री० हि०) ठाटबाट। ठसक।

आनर—(पु० अं०) प्रतिष्ठा। आनरेबुल=माननीय।

आनरेरी—(वि० अं०) अवैतनिक।

आना—(पु० हि०) चार पैसा। प्रारम्भ होना। किसी भाव का उत्पन्न होना।

आनाकानी—(स्त्री० हि०) हीला हवाला।

आनुषंगिक—(वि० सं०) बड़े काम के पहले में हो जाने वाला कार्य्य।

आन्वीक्षिकी—(स्त्री० सं०) आत्मविद्या। तर्कविद्या।

आप—(सर्व० हि०) स्वयं।

आपत्काल—(पु० सं०) विपत्ति। कुसमय। आपत्ति=दुःख। संकट। कष्ट का समय। दोषारोपण। एतराज़। आपद्=आपत्ति। विघ्न। आपदा=दुःख। संकट। जीविका का कष्ट। आपद्धर्म=वह धर्म

व्यापार की वस्तु जो दूसरे देशों से अपने देश में आवे। —रफ्त = आना जाना।

आमना सामना—(पु० हि०) मुक़ाबला।

आमने सामने—(क्रि० वि० हि०) एक दूसरे के समक्ष।

आमरण—(क्रि० वि० सं०) मृत्यु समय तक।

आमवात—(पु० सं०) एक रोग जिसमें आँव गिरता है और जोड़ों में पीड़ा तथा पैर में सूजन हो जाती है।

आमातिसार—(पु० सं०) आँव। मुरड़े के दस्त।

आमादा—(वि० फा०) तत्पर। तैयार।

आमाल—(पु० अ०) करनी।

आमालनामा—(पु० अ०) वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चालचलन और कार्य करने की योग्यता आदि का विवरण रहता है।

आमाशय—(पु० सं०) पेट के भीतर का वह थैला जिसमें खाये हुये पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमास—(फा०) सूजन। वरम।

आमाहल्दी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह होती है।

आमिल—(पु० अ०) काम करनेवाला। कर्त्तव्यपरायण। कर्मचारी। हाकिम। सिद्ध

आमीन—(वि० अ०) तथास्तु। भगवान ऐसा ही करे।

आमूदा—(फा०) सजा हुआ। आरास्ता।

आमेज—(वि० फा०) मिला हुआ। आमेजिश = मिलावट।

आमोख्ता—(पु० फ़ा०) उद्धरणी।

आमोद—(पु० सं०) आनन्द। दिलबहलाव। —प्रमोद = भोग विलास। आमोदित = प्रसन्न।

आय—(स्त्री० सं०) आमदनी।

आयत—(वि० सं०) विस्तृत। (अ०) कुरान का वाक्य।
आयद—(वि० अ०) लगाया हुआ।
आयव्यय—(पु० सं०) जमाख़र्च। आमदनी और ख़र्च।
आया—(क्रि० अ० हि०) आना का भूतकालिक रूप।
आयात—(पु० सं०) वह वस्तु या माल जो व्यापार के लिये विदेश से अपने देश में लाया या मँगाया गया हो।
आयास—(पु० सं०) मेहनत।
आयु—(स्त्री० सं०) उम्र।
आयुध—(पु० सं०) हथियार।
आयुर्वेद—(पु० सं०) चिकित्सा शास्त्र।
आयुष्मान—(वि० सं०) चिर जीवी।
आयुष्य—(पु० सं०) उम्र।
आयोजन—(पु० सं०) प्रबन्ध। उद्योग। सामान।
आयोजित—(वि० सं०) ठीक किया हुआ।
आरम्भ—(पु० सं०) उत्थान।
आर्केस्ट्रा—(पु० अं०) थियेटर आदि में बैठकर बाजा बजाने वालों का दल।
आरजा—(पु० अ०) बीमारी।
आरजू—(स्त्री० फा०) इच्छा। विनय। —मंद=इच्छुक।
आरिज—(अं०) उन्नतिशील। प्रगतिशील।
आरती—(स्त्री० हि०) किसी मूर्ति के ऊपर दीपक घुमाना।
आरपार—(पु० हि०) यह तट और वह तट।
आरफ़नेज—(पु० अं०) अनाथालय।
आरव—(पु० सं०) शब्द। आहट।
आरसी—(स्त्री० हि०) दर्पण। एक गहना जिसको स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।
आरा—(पु० सं०) लोहे की दाँतीदार एक पटरी जिससे रेतकर लकड़ी चीरी जाती है। सुतारी।
आराइश—(स्त्री० फा०) सजा

त। सुसज्जित। आरास्ता=सँवारा हुआ।

आराज़ी—(स्त्री० अ०) भूमि। खेत।

आरिफ़—(अ०) महात्मा। ईश्वर भक्त।

आराधन—(पु० सं०) पूजा।

आराधक—पूजा करनेवाला।

आराधना=पूजा।

आराध्य=पूजनीय।

आराम—(पु० सं०) बाग। (फा०) चैन। सेहत।

आरामकुर्सी—(स्त्री० फा०) एक प्रकार की लम्बी कुर्सी, जिस पर आदमी बैठा हुआ आराम से लेट भी सकता है।

आरी—(स्त्री० हि०) लकड़ी चीरने का एक औज़ार। लोहे का एक कील जो बैल हाँकने के पैने की नोक में लगी रहती है। सुतारी।

आरूढ़—(वि० सं०) चढ़ा हुआ। स्थिर।

आरोप—(पु० सं०) लगाना। रोपना। झूठी कल्पना।

आर्क—(अं०) मेहराब।

आर्केआलोजिकल—(अं०) पुरातत्त्व सम्बन्धी।

आर्ट—(पु० अं०) दस्तकारी। कलाकौशल।

आर्टिकिल—(स्त्री० अं०) लेख। वस्तु।

आर्टिकिल्स आफ़ एसोसियेशन—(पु० अं०) किसी सभा या व्यापारिक कम्पनी या सम्मिलित पूँजी से चलनेवाली कम्पनी की नियमावली।

आह्लाद—(पु० सं०) आनन्द। आह्लादित=आनन्दित।

आह्वान—(पु० सं०) बुलाना। तलबनामा।

आर्टिलरी—(स्त्री० अं०) तोपखाना।

आर्टिस्ट—(पु० अं०) वह जो किसी कला में, विशेषकर ललित कला में कुशल हो।

आर्डर—(पु० अं०) माँग। श्रेणि। सिलसिला। आज्ञा।

आर्डरी—(वि० अ०) आर्डर सम्बन्धी। आर्डर का।

आर्डिनरी—(वि० अ०) मामूली।

आर्डिनेंस—(पु० अ०) अस्थायी व्यवस्था या क़ानून।

आर्थोडाक्स—(वि० अ०) कट्टर। सनातनी।

आर्म—(पु० अ०) हथियार।

आर्म पुलिस—(स्त्री० अ०) हथियारबन्द पुलिस।

आर्मर्डकार—(पु० अ०) बख़्तर बन्द गाड़ी।

आर्मी—(स्त्री० अं०) फ़ौज। सेना।

आर्त्त—(वि० सं०) पीड़ित। दुखी। अस्वस्थ।—नाद = दुःख-सूचक शब्द। —स्वर = दुःख सूचक शब्द। आर्त्ति = पीड़ा। दुःख।

आर्थिक—(वि० सं०) धन सम्बन्धी।

आर्य्य—(वि० सं०) श्रेष्ठ। बड़ा। मान्य। —समाज = श्रेष्ठ समाज, जिसके संस्थापक स्वामी दयानन्द थे।

आर्य्या—(स्त्री० सं०) दादी।

आर्य्यावर्त्त—(पु० सं०) आर्यों का देश। उत्तरी भारत जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर है।

आलंकारिक—(वि० सं०) अलंकार युक्त। अलंकार जानने वाला।

आल—(पु० सं०) हरताल। (फा०) आलरंग। शोभा। एक प्रकार की मदिरा। (अ०) सन्तान। विशेषकर बेटी की औलाद।

आलपीन—(स्त्री० पुर्त०) एक घुंडीदार सूई जिसे अँगरेजी में पिन कहते हैं।

आलम—(पु० अ०) दुनिया। अवस्था। बड़ी जमात।

आलमनक—(पु० पुर्त०) पचांग।

आलमारी—(स्त्री०) आलमारी।

आलस—(वि० सं०) सुस्ती। आलसी = सुस्त। आलस्य = सुस्ती।

आलाइश—(स्त्री० फ़ा०) गंदी वस्तु । घाव का गंदा खून पीबादि । पेट के भीतर की अतड़ी आदि ।

आलात—(अ०) औज़ार । हथियार लोहे का ।

आलाप—(पु० स०) बातचीत । —क = बातचीत करनेवाला।

आलिंगन—(पु० स०) गले से लगाना ।

आलिम—(वि० अ०) पंडित । गुनी ।

आलीजाह—(वि० अ०) ऊँचे दर्जे का । आलीइज़्ज़त = महिमामय । बड़े मरतबे का आदमी ।

आलीशान—(वि० अ०) भड़कीला । विशाल ।

आलू—(पु० हि०) एक प्रकार का कंद ।

आलूचा—(पु० फ़ा०) एक पेड़ । आलूबुखारा = आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल ।

आलूदा—(फ़ा०) लिपटा हुआ । लिपटा हुआ ।

आलूशफ़तालू—(पु० हि०+ फ़ा०) लड़कों का एक खेल ।

आलोक—(पु० स०) प्रकाश । चमक । आलोचना = गुणदोष निरूपण । आलोचित = विचार किया हुआ ।

आल्हा—(पु० देश०) १ महोबों के एक छंद का नाम जिस वीर छंद भी कहते हैं । महोबे के एक पुरुष का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था । बहुत लम्बा चौड़ा बयान ।

आवभगत—(पु० हि०) आदर-सत्कार ।

आवरण—(पु० स०) ढकना । बेठन । परदा । अज्ञान । —पत्र = कवर ।

आवदा—(वि० फा०) लाया हुआ । कृपा पात्र ।

आवश्यक—(वि० स०) ज़रूरी । काम का । —ता = ज़रूरत । मतलब । आवश्यकीय = ज़रूरी ।

आवागमन—(पु० हि० स०)

आना जाना । जन्म और मरण ।

आवाज—(पु० फ़ा०) ध्वनि। बोली । चीज़ों या सौदा बेचनेवालों की पुकार । आवाज़ा=ताना ।

आवाजाही—(स्त्री० हि०) आना जाना ।

आवारा—(फा०) चरित्रहीन। निकम्मा ।

आवारगी—(स्त्री० फ़ा०) आवारापन । आवारा= निकम्मा । उठल्लू । आवारा-गर्द=निकम्मा । आवारागर्दी =व्यर्थ इधर उधर घूमना । बदमाशी ।

आवाहन—(पु० स०) मन्त्र द्वारा किसी देवता को बुलाने का कार्य । बुलाना ।

आविर्भाव—(पु० स०) प्रकाश । उत्पत्ति । आविर्भूत=प्रकटित । उत्पन्न ।

आविष्कर्त्ता—(वि० स०) आविष्कार करनेवाला । आविष्कार=ईजाद । किसी तत्त्व का सर्वप्रथम ज्ञान प्राप्त करना । आविष्करण=आविष्कार । आविष्कृत=प्रकटित । पता लगाया हुआ ।

आवृत्त—(वि० स०) छिपा हुआ । लपेटा हुआ । घिरा हुआ ।

आवृत्ति—(स्त्री० स०) बार बार किसी बात का अभ्यास । पाठ करना ।

आवेग—(पु० स०) झोंक ।

आवेदक—(वि० स०) निवेदन करनेवाला । आवेदन= निवेदन । आवेदन-पत्र= अर्ज़ी ।

आवेश—(पु० स०) प्रवेश । झोंक ।

आशंका—(स्त्री० स०) डर । सन्देह ।

आशकार—(फा०) प्रकट । ज़ाहिर । खुला होना ।

आशना—(फ़ा०) जिससे जान-पहचान हो । प्रेमी । प्रेम-पात्र । —ई=जान पहचान । प्रेम । अनुचित सम्बन्ध ।

आशय—(पु० सं०) मतलब। इच्छा। आधार।

आशा—(स्त्री० स०) अप्राप्त के पाने की इच्छा और थोड़ा बहुत निश्चय।

आशिक—(पु० अ०) प्रेम करने वाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आशिक़ाना=आशक़ों की तरह का।

आशियाँ, आशियाना—(पु० फ़ा०) घोंसला। झोपड़ा।

आशुफ़्ता—(फ़ा०) परेशान। —आशुफ़्तगी=परेशानी। हाल बेहाल।

आश्चर्य्य—(पु० सं०) अचम्भा। विस्मय। अचरज।

आश्रम—(पु० सं०) तपोवन। कुटी या मठ। रहने की जगह। आश्रमी=आश्रम सम्बन्धी। आश्रम में रहने वाला।

आश्वास—(पु० सं०) तसल्ली। आश्वासन=दिलासा। आशा प्रदान। —नीय=दिलासा देने योग्य।

आश्विन—(पु० सं०) क्वार का महीना।

आषाढ़—(पु० सं०) ज्येष्ठ मास के पश्चात और श्रावण के पूर्व का महीना। आषाढ़ी=आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

आस—(स्त्री० हि०) उम्मेद। लालसा। सहारा।

आस—(स्त्री० फ़ा०) आटा पीसने की चक्की।

आसक्त—(पु० हि०) सुस्ती।

आसक्त—(वि० सं०) लीन। मोहित। आसक्ति=लीनता। चाह।

आसन—(पु० सं०) बैठक। टिकना। निवास। साधुओं का डेरा या निवास-स्थान। आसनी=छोटा आसन।

आसन्न—(वि० सं०) निकट आया हुआ। —भूत=वह भूतकाल जो वर्तमान से मिला हुआ हो।

आसपास—(क्रि० वि० हि०) चारोंओर। क़रीब।

आसमान—(पु० फा०) आकाश।

आसमानी—(फा०) नीला रंग। आतशबाज़ी की एक किस्म।

आसरा—(पु० हि०) सहारा। भरोसा।

आसव—(पु० सं०) मद्य जो भपके से न चुआई जाय। औषध का एक भेद। अर्क़।

आसाइश—(पु० फा०) आराम। सुख। समृद्धि।

आसान—(वि० फा०) सीधा। सहल। आसानी=सरलता।

आसार—(पु० अ०) निशान।

आसी—(अ०) शोकिस। वैद्य। तबीब।

आसूदगी—(स्त्री० फा०) सन्ताप। आसूदा=सतुष्ट। भरापूरा। बेफिक्र। निश्चिन्त।

आसेब=(फा०) दुःख। धक्का। खतरा।

आस्तिक—(वि० सं०) वेद ईश्वर और परलोकादि पर विश्वास करनेवाला। ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला। —पन=आस्तिकता। आस्तिक्य=वेद ईश्वर और परलोक पर विश्वास।

आस्तीन—(स्त्री० फा०) बाँही।

आह—(अव्य० हि०) पीड़ा, शोक, दुःख, ग्लानि-सूचक अव्यय।

आहट—(स्त्री० हि०) खटका।

आहत—(वि० सं०) चोट खाया हुआ।

आहन—(पु० फा०) लोहा।

आहार—(पु० सं०) भोजन। —विहार=खाना पीना सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन सहन।

आहिस्ता—(क्रि० वि० फा०) धीरे धीरे।

आहुति—(स्त्री० सं०) हवन। हवन में डालने की सामग्री।

आहू—(पु० फा०) मृग।

आहूत—(वि० सं०) बुलाया हुआ।

इ—वर्णमाला में स्वर का तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालू है।

इंक—(स्त्री० अ०) स्याही। —टेबुल=छापेखाने में स्याही देने की चौकी। —मैन=छापेखाने में स्याही देनेवाला मनुष्य। —रोलर=छापेखाने में स्याही देने का बेलन।

इंग्लिश—(वि० अ०) अँगरेज़ी। इंगलिस्तान = इंगलैण्ड। इंगलिस्तानी=इंगलैण्ड देश का।

इंगित—(पु० सं०) इशारा।

इंच—(स्त्री० अ०) एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। बहुत थोड़ा।

इंजन—(पु० अ०) कल। भाप या बिजली से चलनेवाला यंत्र। रेल के ट्रेन में वह गाड़ी जो सबसे आगे होती है और भाप के ज़ोर से सब गाड़ियों को खींचती है।

इंजीनियर—(पु० अ०) यंत्र की विद्या जाननेवाला। शिल्प कर्मी। वह अफ़सर जिसकी देखभाल में सरकारी सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं।

इंजील—(स्त्री० यू०) ईसाइयों की धर्म पुस्तक।

इंट्रेंस—(पु० अ०) दरवाज़ा। अंगरेज़ी स्कूलों का एक दर्जा।

इंडस्ट्रियल—(वि० अ०) उद्योग धंधा सम्बन्धी।

इंडस्ट्री—(स्त्री० अ०) उद्योग धंधा। शिल्प।

इंडिया—(पु० अ०) भारतवर्ष।

इंडेक्स—(पु० अ०) पुस्तक के विषयों की सूची। विषयानुक्रमणिका।

इंडेण्ट—(पु० अ०) माल मँगाने वाले के पास भेजी जानेवाली माल की वह सूची, जो किसी व्यापारी के पास माल की माँग के साथ भेजी जाती है।

इड़ोर्स—(क्रि० स० अ०) हुंडी या चेक आदि पर रुपये देने या पाने के सबंध में हस्ताक्षर करना।

इंतक़ाल—(पु० अ०) मौत। एक जगह से दूसरी जगह जाना। किसी सम्पत्ति का एक के अधिकार में से दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतज़ाम—(पु० अ०) प्रबन्ध।

इंतज़ार—(पु० अ०) रास्ता देखना। प्रतीक्षा।

इंतहा—(पु० अ०) अंत।

इंद्र—(वि० स०) ऐश्वर्यवान। श्रेष्ठ।

इंद्रजाल—(पु० स०) जादूगरी। इंद्रजाली = जादूगर।

इंद्रधनुष—(पु० स०) सात रंगों का बना हुआ एक अर्द्ध वृत्त, जो वर्षाकाल में सूर्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है।

इंद्रिय—(स्त्री० स०) वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। —निग्रह = इंद्रियों का दबाना।

इंधन—(पु० स०) जलाने की सामग्री।

इंसाफ़—(पु० अ०) न्याय।

इंस्टिट्यूट—(स्त्री० अ०) सभा।

इंस्ट्रूमेंट—(पु० अ०) औज़ार। साधन।

इंस्पेक्टर—(पु० अं०) निरीक्षक।

इकट्ठा—(वि० हि०) जमा।

इकतारा—(पु० हि०) एक बाजा, जिसमें एक ही तार होता है।

इकतीस—(वि० हि०) तीस और एक।

इक़दाम—(पु० अ०) किसी अप-राध के करने की तैयारी। इरादा।

इक़ामत—(स्त्री० अ०) स्थिर होना। एक स्थान पर रहना। बसना।

इक़बाल—(पु० अ०) भाग्य। ऐश्वर्य। भाग्योदय होना। सम्पन्न होना।

इक़्तिदा—(स्त्री० अ०) पैरवी करना।

इक़तिसाम—(पु० अ०) तक़्सीम करना। आपस में बाँट लेना।

इकराम—(पु० अ०) दान। आदर।

इक़रार—(पु० अ०) प्रतिज्ञा। कोई काम करने की स्वीकृति।

इकलौता—(पु० हि०) वह लड़का जो अपने माँ बाप का अकेला हो।

इक्का—(वि० स० एक) अकेला। एक प्रकार की दो पहिये की घोड़ा गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है। ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की एक ही बूटी हो।

इक्का दुक्का—(वि० हि०) अकेला दुकेला।

इक्षुप्रमेह—(पु० स०) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ मधु या शक्कर आती है।

इख़फ़ाये वारदात—(पु० फ़ा०) क़ानून में किसी पुरुष का किसी ऐसी घटना का छिपाना जिसका प्रकट करना नियमानुसार उसका कर्तव्य हो।

इख़लास—(पु० अ०) मित्रता। प्रेम। सम्बन्ध।

इख़्तिताम—(क्रि० स० अ०) पूरा करना।

इख़्तियार—(पु० अ०) अधिकार। अधिकार क्षेत्र। क़ाबू। प्रभुत्व।

इख़राजात—(पु० फ़ा०) अनेक व्यय।

इख़्तिलाफ़—(पु० अ०) विरोध। अन्तर। बिगाड़।

इच्छा—(स्त्री० स०) लालसा।

इच्छित—(वि० स०) चाहा हुआ। इच्छुक = चाहनेवाला।

इजराय—(पु० अ०) जारी करना। काम में लाना।

इजलास—(पु० अ०) बैठक। कचहरी।

इजतिराब—(पु० अ०) घबराहट। बेक़रारी। चिन्ता।

इज़हार—(पु० अ०) ज़ाहिर करना। गवाही।

इजाज़त—(स्त्री० अ०) आज्ञा। मंज़ूरी।

इज़ार—(स्त्री० अ०) पायजामा। सूथना। —बंद = कमरबंद।
इज़ारदार, इज़ारेदार—(वि० फ़ा०) अधिकारी।
इज़ारा—(पु० अ०) किसी पदार्थ को किराये पर देना। ठेका। अधिकार।
इज़्ज़त—(स्त्री० अ०) मान। आदर। —दार = माननीय।
इटालियन—(पु० अ०) एक प्रकार का कपड़ा जो पहले पहल इटली से आया था।
इटैलिक—(पु० अ०) एक प्रकार का छापा या टाइप जिसमें अक्षर तिरछे होते हैं।
इठलाना—(क्रि० अ० हि०) इतराना। नख़रा करना।
इतना—(वि० हि०) इस क़दर।
इतमाम—(पु० अ०) इन्तज़ाम।
इतमीनान—(पु० अ०) विश्वास। इतमीनानी = विश्वासपात्र।
इतराना—(क्रि० अ० हि०) घमंड करना। ठसक दिखाना इतराहट = घमंड।
इतवार—(पु० प्रा०) रविवार।
इताअत—(स्त्री० अ०) तावेदारी।
इत्तिहाद—(पु० अ०) एक होना। मित्रता। संगठन।
इति—(अव्य० सं०) समाप्ति सूचक अव्यय।
इतिवृत्त—(पु० सं०) पुरानी कथा। कहानी।
इतिहास—(पु० सं०) बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे सम्बन्ध रखनेवाले पुरुषों का कालक्रम से वर्णन। वह पुस्तक जिसमें बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और भूत पुरुषों का वर्णन हो।
इत्तफ़ाक़—(पु० अ०) मेल। एका।
इत्तफ़ाक़न—(क्रि० वि० अ०) अचानक। इत्तफ़ाक़िया = आकस्मिक।
इत्तला—(स्त्री० अ०) ख़बर।
इत्तिहाम—(पु० अ०) दोष।
इत्यादि—(अव्य० सं०) इसी प्रकार। वग़ैरह।
इत्र—(पु० अ०) अतर। —फ़रोश = इत्र बेचनेवाला।

इधर—(क्रि० वि० हि०) इस ओर। आसपास। चारोंओर।

इनकम—(स्त्री० अ०) आमदनी।
—टैक्स=आमदनी पर महसूल।

इनकार—(पु० अ०) नकारना। नहीं करना।

इनफामर—(पु० अ०) गोइन्दा। भेदिया।

इनफ्लुएंजा—(पु० अ०) सरदी का बुखार।

इन्स्टिट्यूशन—(पु० अ०) तरह। समान। महत्व।

इन्टरनेशनल—(वि० अ०) सब राष्ट्रीय।।

इन्टरमीडियेट—(वि० अ०) बीच का। मध्यम।

इन्टरव्यू—(पु० अ०) भेंट। मुलाक़ात। वार्तालाप।

इन्तकाल—(अ०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

इन्तखाब—(पु० अ०) निर्वाचन। चुनाव। पसन्द करना।।

इन्तजाम—(अ०) प्रबन्ध। व्यवस्था। बन्दोबस्त।

इन्तजार—(अ०) रास्ता जोहना। प्रतीक्षा करना।

इन्तशार—(पु० अ०) फैलना। बखेरना।

इन्तहा—(अ०) अन्त। सामो ल्लंघन। अति। परिणाम।

इन्दराज—(अ०) दर्ज होना। दाखिल होना।

इन्वाइस—(पु० अ०) बीजक। चलान का काग़ज़।

इन्श्योरेंस—(पु० अ०) बीमा।

इन्क्लाब—(अ०) क्रान्ति। परिवर्तन।

इन्क्सार—(अ०) नम्रता। आजिज़ी।

इन्सान—(पु० अ०) आदमी।
इन्सानियत=आदमियत। सज्जनता।

इन्साफ—(अ०) न्याय। उचित निर्णय।

इन्सालवेंट—(वि० अ०) दिवा लिया।

इनाम—(पु० अ०) पुरस्कार।

इनायत—(स्त्री० अ०) दया। एहसान।

इनेगिने—(वि० हि०) कुछ। चुने चुनाये।

इफरात—(स्त्री० अ०) अधिकता। कसरत।

इफलास—(पु० अ०) ग़रीबी।

इबरत—(अ०) शिक्षा लेना।

इबरायनामा—(पु० फ़ा०) त्यागपत्र।

इबरानी—(वि० अ०) यहूदी।

इब्न—(अ०) पुत्र। बेटा।

इबलीस—(पु० अ०) शैतान।

इबादत—(स्त्री० अ०) पूजा। आराधना।

इबारत—(स्त्री० अ०) लेख। लेखन शैली।

इब्तिदा—(स्त्री० अ०) आरम्भ। जन्म। निकास।

इमकान—(पु० अ०) शक्ति। काबू।

इमदाद—(स्त्री० अ०) मदद। इमदादी=मदद पानेवाला। वह मदरसा जिसको सरकार से द्रव्य की कुछ सहायता मिलती है।

इमरती—(स्त्री० हि०) एक मिठाई।

इमरोज—(फ़ा०) आज का दिन। आज।

इमला—(अ०) लिखने का अभ्यास।

इमली—(स्त्री० हि०) एक बड़ा पेड़।

इमसाल—(फा०) अब की साल। इस साल।

इमाम—(पु० अ०)। अगुआ। पुरोहित। मुसलमानों का धार्मिक कृत्य करानेवाला आदमी। अली के बेटों की उपाधि।

इमामदस्ता—(पु० फा०) एक प्रकार का लोहे या पीतल का खलबट्टा।

इम्तियाज—(अ०) विवेचन। भेद-बुद्धि। तमीज़ करना।

इम्तिहान—(अ०) परीक्षा। आज़माइश।

इमामबाड़ा—(पु०अ०+हि०) वह हाता जिसमें शिया लोग

ताजिया रखते और उसे दफ़न करते हैं।

इमारत—(स्त्री० अ०) बड़ा और पक्का मकान।

इम्पीरियल—(वि० अं०) राजकीय। शाही।

इम्पीरियल गवर्नमेंट—(स्त्री० अं०) साम्राज्य सरकार। बड़ा सरकार।

इम्पीरियल प्रेफरेन्स—(पु० अं०) साम्राज्य का बनी वस्तुओं का प्रशस्तता देना।

इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स—(स्त्री० अं०) वह सेना जो भारतीय रजवाड़े भारत सरकार की सहायतार्थ अपने यहाँ रखते हैं और जिसकी देखभाल ब्रिटिश अफ़सर करते हैं।

इम्पोर्ट—(पु० अं०) वह माल जो व्यापार के लिये विदेश से अपने देश में मँगाया गया हो।

इयत्ता—(स्त्री० सं०) सीमा।

इरशाद—(अ०) हिदायत करना। आज्ञा और अनुमति देना। मार्ग बताना।

इराक़ी—(वि० अ०) इराक़ देश का। घोड़े की एक जाति।

इरादा—(पु० अ०) विचार।

इरतकाब—(पु० अ०) एक करना। कोई अपराध करना।

इर्दगिर्द—(क्रि० वि० फा०) चारोंओर। आसपास।

इरसाल—(क्रि०स०अ०) भेजना। पत्र भेजना।

इलज़ाम—(पु० अ०) दोष। अभियोग।

इलहाक़—(पु० अ०) सम्बन्ध। किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु के साथ मिला देने का काय।

इलहाक़दार—(पु० अ०) वह मनुष्य जिसके साथ बन्दोबस्त के वक्त मालगुज़ारी अदा करने का इक़रार-नामा हो। नम्बरदार।

इलहाम—(पु० अ०) ईश्वर का शब्द। देव वाणी।

इल्ला—(अ०) नहीं तो। अन्यथा।

इलाक़ा—(पु० अ०) सम्बन्ध। राज्य।

इलाज—(पु० अ०) दवा। चिकित्सा। तदबीर।

इलायची—(स्त्री० हि०) एक पौधा जिसमें इलायची नाम का फल लगता है। जो मसालों में पड़ता है।

इलाही—(पु० अ०) ईश्वर। खुदा।

इलाहीगज़—(पु० अ०) अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज़ जो ४१ अंगुल (३३$\frac{1}{2}$ इंच) का होता है, और जो अब तक इमारत आदि नापने के काम आता है।

इलेक्ट्रो—(वि० अं०) बिजली द्वारा तैयार किया हुआ।

इल्तिजा—(स्त्री० अ०) प्रार्थना।

इल्तिमास—(अ०) निवेदन। खोज। तलाश।

इल्म—(पु० अ०) विद्या।

इल्लत—(स्त्री० अ०) रोग। दोष। कारण।

इल्ली—(स्त्री०) च्यूँटी आदि के पहला रूप जो अंडे से निकलने के उपरान्त तुरत होता है।

इशरत—(स्त्री० अ०) सुख। भोग। विलास।

इशारा—(पु० अ०) सकेत। गर्भित कथन।

इश्क—(पु० अ०) मुहब्बत। प्रेम।

इश्कपेचाँ—(पु० अ०) एक प्रकार की बेल जिसकी पत्तियाँ बाल की तरह बारीक होती हैं।

इशफाक—(अ०) मिहरबानी करना। दया।

इश्तिहार—(पु० अ०) विज्ञापन। एलान।

इश्तियालक—(स्त्री० अ०) भड़काना।

इष्ट—(वि० सं०) चाहा हुआ।

इष्टदेव—(पु० सं०) पूज्य देवता।

इसपज—(पु० अं० स्पंज) मुर्दा बादल।

इसपात—(पु० हि०) एक प्रकार का कड़ा लोहा।

इसपिरिट—(स्त्री० अ० स्पिरिट) किसी वस्तु का सत। एक प्रकार की खालिस शराब।

इस्पेशल—(वि० अ० स्पेशल) खास।

इसरार—(पु० अ०) हठ। आग्रह। ताकीद।

इसलाम—(पु० अ०) मुसलमानी धर्म।

इसलाह—(पु० अ०) संशोधन।

इस्तहकाम—(वि० अ०) मज़बूती। दृढ़ता।

इस्तिखारा—(अ०) परमात्मा से मंगल-कामना। भविष्य ज्ञानेच्छा।

इस्तिकबाल—(अ०) स्वागत करना। अगवानी करना।

इस्तिकलाल—(अ०) धैर्य। दृढ़ता। किसी वस्तु को कम समझना।

इस्तमरारी—(वि० अ०) सब दिन रहने वाला। नित्य।

इस्तिंजा—(पु० अ०) पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से इंद्रिय में लगी हुई पेशाब की बूँदों को सुखाने की क्रिया।

इस्तिरी—(स्त्री० हि०) धोबी का एक औज़ार जिससे वह धोने के पीछे कपड़े की तह को जमा कर उसकी शिकनें मिटाता है।

इस्तीफा—(पु० अ०) त्याग पत्र।

इस्तेदाद—(स्त्री० अ०) लियाकत।

इस्तेमाल—(पु० अ०) उपयोग।

इस्म—(पु० अ०) नाम।

इहाता—(पु० अ०) चहारदीवारी के बीच की भूमि। घेरना।

इहसान—(अ०) कृतज्ञता। —मंद=कृतज्ञ। आभारी।

इहकाम—(अ०) मज़बूत करना।

इहतियात—(स्त्री० अ०) सावधानी। बचाव।

इहतिमाम—(अ०) प्रबन्ध। कोशिश। परिश्रम।

ई—हिन्दी-वर्णमाला का चौथा अक्षर। इसके उच्चारण का स्थान तालु है।

ईंगुर—(पु० हि०) एक खनिज पदार्थ। हिन्दू सौभाग्यवती स्त्रियाँ शोभा के लिये इसकी बिन्दी माथे पर लगाती हैं।

ईंट—(स्त्री० हि०) साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लम्बा टुकड़ा जो पजावे में पकाया जाता है।

ईंधन—(पु० हि०) जलावन।

ईख—(स्त्री० हि०) शर जाति की एक घास जिसके डंठल में मीठा रस भरा रहता है। इसी रस से गुड़ और चीनी बनती है।

ईज़ा—(स्त्री० अ०) दुःख। पीड़ा।

ईजाद—(स्त्री० अ०) आविष्कार। नया निर्माण।

ईथर—(पु० अ०) एक प्रकार का अति सूक्ष्म और लचीला पदार्थ जो समस्त शून्य में व्याप्त है। एक रासायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहल और गंधक के तेज़ाब से बनता है।

ईद—(स्त्री० अ०) मुसलमानों का एक त्यौहार।

ईमन—(पु० फ़ा०) एक रागिनी। —कल्यान=एक मिश्रित राग का नाम।

ईमान—(पु० अ०) विश्वास। अच्छी नीयत। —दार= विश्वास पात्र। सच्चा।

ईरान—(पु० फ़ा०) फ़ारस देश।

ईर्षा—(स्त्री० हि०) डाह। —लु =ईर्षा करने वाला। ईर्ष्या =ईर्षा।

ईशान—(पु० स०) पूरब और उत्तर के बीच का कोना।

ईश्वर—(पु० स०) मालिक। भगवान। ईश्वरीय=ईश्वर संबंधी। ईश्वर का।

ईसवी—(वि० फ़ा०) ईसा से संबंध रखने वाला।

ईसा—(पु० अ०) ईसाई धर्म के आचार्य। —ई=ईसा को माननेवाला।

ईस्ट—(पु० अ०) पूर्व दिशा।

ईस्टर—(अ०) एक अंग्रेज़ी त्यौहार।

उ

उ—हिन्दी-वर्णमाला का पाँचवा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

उँगली—(स्त्री० हि०) हथेली के छोरों से निकले हुये फलियों के शक्ल के पाँच अवयव जो वस्तुओं को ग्रहण करते हैं।

उँचा—(स्त्री० हि०) अदवान। उँचना=अदवान तानना। उचन कसना।

उँचाई—(स्त्री० हि०) ऊँचापन। बड़प्पन।

उउ—(स्त्री० हि०) सीला बीनना।

उऋण—(वि० स०) ऋणरहित।

उकड़ूँ—(पु० हि०) घुटने मोड़कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें दोनों तलवे ज़मीन पर पूरे बैठे हैं, और चूतड़ एड़ियों से लगे रहते हैं।

उकताना—(क्रि० हि०) ऊबना। घबराना।

उकसना—(क्रि० हि०) उभरना। निकलना। सीवन का खुलना। उकसाना=ऊपर को उठाना। उत्तेजित करना। हटा देना। खसकना।

उकाब—(पु० अ०) गरुड़।

उकेलना—(क्रि० हि०) उचाड़ना। उधेड़ना।

उक्लैदिस—(यू०) रेखागणित। ज्यूमेटरी।

उखड़ना—(क्रि० हि०) खुदना। जोड़ से हट जाना। ग्राहक का भड़क जाना। उठ जाना। हटना। टूट जाना। सीवन का खुलना।

उखाड़—(पु० हि०) वह युक्ति जिससे कोई पेंच रद्द

किया जाता है। —ना = किसी जमी, गड़ी या पैठी हुई वस्तु को स्थान से अलग करना। भरमाना। तितर बितर कर देना। हटाना। नष्ट करना।

उगना—(क्रि० हि०) निकलना। जमना। उपजना।

उगलना—(क्रि० हि०) कै करना। मुँह में गई वस्तु को बाहर थूक देना। पचाया माल विवश होकर वापस करना। किसी बात को पेट में न रखना। विवश होकर कोई भेद खोल देना।

उगाल—(पु० हि०) थूक। —दान = पीकदान।

उगाहना—(क्रि० हि०) वसूल करना। उगाही = रुपया पैसा वसूल करने का काम। जमीन का लगान। एक प्रकार का रुपये का लेन-देन।

उचकना—(क्रि० हि०) ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल एड़ी उठाकर खड़ा होना। कूदना। उचक्का = उचककर वस्तु ले भागनेवाला आदमी। ठग। बदमाश।

उचटना—(क्रि० हि०) अलग होना। हटना।

उचित—(वि० हि०) योग्य। वाजिब।

उच्छ्वास—(पु० हि०) ऊपर को खींची हुई साँस।

उच्छृंखल—(वि० स०) क्रमविहीन। मनमाना काम करने वाला। अक्खड़।

उजड्ड—(वि० हि०) असभ्य। गँवार। जिसे बुरा काम करने में कोई आगा पीछा न हो।

उजबक—(हि०) उजड्ड। तातारियों की एक जाति।

उजरत—(पु० अ०) मजदूरी। भाड़ा।

उजलत—(स्त्री० अ०) उतावली।

उजागर—(वि० हि०) प्रकाशित। प्रसिद्ध।

उजाड़—(पु० हि०) उजड़ा हुआ। शून्य स्थान।

उजाला—(पु० हि०) प्रकाश।

उज्ज्वल—(पु० स०) प्रकाशमान। स्वच्छ। बेदाग। —ता= चमक। स्वच्छता। सफ़ेदी।

उज्र—(पु० अ०) बाधा। —दारी=किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करने की दरख्वास्त दी हो।

उझकना—(क्रि० हि०) उछलना।

उटंग—(वि० हि०) वह कपड़ा जो पहनने में ऊँचा या छोटा हो।

उठँगन—(पु० हि०) आड़। बैठने में पीठ को सहारा देनेवाला वस्तु। उठँगना=टेक लगाना। लेटना। उठँगाना= भिड़ाना या बन्द करना। भिड़ाना।

उठना—(क्रि० हि०) ऊँचा होना।

उठल्लू—(वि० हि०) आवारा।

उड़ाका—(पु० हि०) उड़नेवाला।

उड़ासना—(क्रि० हि०) बिस्तर उठाना। किसी को स्थान से हटाना।

उड़िया—(वि० हि०) उड़ीसा देश का रहनेवाला।

उडक्ट—(पु० अ०) छपाई के काम में आनेवाला एक प्रकार का ठप्पा।

उड़ेलना—(क्रि० हि०) ढालना। किसी द्रव पदार्थ को गिराना या फेंकना।

उढ़काना—(क्रि० हि०) भिड़ाना।

उढ़रना—(क्रि० हि०) विवाहिता स्त्री का किसी अन्य पुरुष के साथ निकल जाना। उढ़री=वह स्त्री जिसे कोई निकाल ले गया हो।

उतराई—(स्त्री० हि०) नदी के पार उतरने का महसूल। नाव आदि पर से उतरने का स्थान।

उतराना—(क्रि० हि०) पानी के ऊपर आना। प्रकट होना।

उतान—(वि० हि०) चित।

उतार—(पु० हि०) ढालुवाँ।

उतारना—(क्रि० हि०) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। खींचना (चित्र)। लेख की प्रतिलिपि लेना।

उतारा—(पु० हि०) डेरा डालने का काम। पड़ाव। नदीपार करने की क्रिया।

उतारू—(वि० हि०) तैयार।

उतावला—(वि० हि०) जल्दबाज। घबड़ाया हुआ। उतावली = जल्दी। चंचलता।

उत्कंठा—(स्त्री० सं०) लालसा। उत्कंठित = उत्सुक।

उत्कट—(वि० सं०) विकट। प्रबल।

उत्कर्ष—(पु० सं०) बड़ाई उत्तमता। —ता = श्रेष्ठता। बड़ाई। समृद्धि।

उत्कृष्ट—(वि० सं०) उत्तम। —ता = बड़प्पन।

उत्कोच—(पु० सं०) रिशवत।

उत्तप्त—(वि० सं०) खूब तपा हुआ। दुःखी। क्रोधित।

उत्तम—(वि० सं०) सब से अच्छा।

उत्तमता—(स्त्री० सं०) श्रेष्ठता। भलाई।

उत्तर—(पु० सं०) दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। जवाब। बदला।

उत्तर कोशल—(पु० सं०) अयोध्या के आसपास का देश।

उत्तर-दाता—(पु० हि०) ज़िम्मेदार। उत्तरदायित्व = ज़िम्मेदारी। उत्तरदायी = उत्तर देने वाला।

उत्तरा खंड—(पु० सं०) हिमालय के पास का उत्तरी भाग।

उत्तराधिकार—(पु० सं०) विरासत। उत्तराधिकारी = वह जो किसी के मरने के बाद उसकी सम्पत्ति का मालिक हो।

उत्तरायण—(पु० सं०) वह छः मास का समय जिसके बीच सूर्य मकर रेखा से चल कर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है।

उत्तरार्द्ध—(पु० सं०) पिछला आधा।

उज्ज्वल—(पु० म०) प्रकाशमान। स्वच्छ। बेदाग। —ता= चमक। स्वच्छता। सफ़ेदी।

उज्र—(पु० अ०) बाधा। —दारी= किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करने की दरख्वास्त दी हो।

उझकना—(क्रि० हि०) उछलना।

उटंग—(वि० हि०) वह कपड़ा जो पहनने में ऊँचा या छोटा हो।

उठँगन—(पु० हि०) आड़। बैठने में पीठ का सहारा देनेवाला वस्तु। उठँगना= टेक लगाना। लेटना। उठँगाना= भिड़ाना या बन्द करना। भिड़ाना।

उठना—(क्रि० हि०) ऊँचा होना। उठाना। किसी को स्थान से हटाना।

उठल्लू—(वि० हि०) आवारा।

उड़ाका—(पु० हि०) उड़नेवाला।

उड़ासना—(क्रि० हि०) बिस्तर

उड़िया—(वि० हि०) उड़ीसा देश का रहनेवाला।

उडप्ट—(पु० अ०) छपाई के काम में आनेवाला एक प्रकार का ठप्पा।

उड़ेलना—(क्रि० हि०) ढालना। किसी द्रव पदार्थ को गिराना या फेंकना।

उढ़काना—(क्रि० हि०) भिड़ाना।

उढ़रना—(क्रि० हि०) विवाहिता स्त्री का किसी अन्य पुरुष के साथ निकल जाना। उढ़री= वह स्त्री जिसे कोई निकाल ले गया हो।

उतराई—(स्त्री० हि०) नदी के पार उतरने का महसूल। नाव आदि पर से उतरने का स्थान।

उतराना—(क्रि० हि०) पानी के ऊपर आना। प्रकट होना।

उतान—(वि० हि०) चित।

उतार—(पु० हि०) ढालुवाँ।

उतारना—(क्रि० हि०) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। खींचना (चित्र)। लेख की प्रतिलिपि लेना।

उतारा—(पु० हि०) डेरा डालने का स्थान। पड़ाव। नदीपार करने की क्रिया।

उतारू—(वि० हि०) तैयार।

उतावला—(वि० हि०) जल्दबाज। घबराया हुआ। उतावली = जल्दी। चपलता।

उत्कंठा—(स्त्री० सं०) लालसा। उत्कंठित = उत्सुक।

उत्कट—(वि० सं०) विकट। प्रबल।

उत्कर्ष—(पु० सं०) बड़ाई उत्तमता। —ता = श्रेष्ठता। बड़ाई। समृद्धि।

उत्कृष्ट—(वि० सं०) उत्तम। —ता = बड़प्पन।

उत्कोच—(पु० सं०) रिशवत।

उत्तप्त—(वि० सं०) खूब तपा हुआ। दुखी। क्रोधित।

उत्तम—(वि० सं०) सब से अच्छा।

उत्तमता—(स्त्री० सं०) श्रेष्ठता। भलाई।

उत्तर—(पु० सं०) दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। जवाब। बदला।

उत्तर कोशल—(पु० सं०) अयोध्या के आसपास का देश।

उत्तर दाता—(पु० हि०) ज़िम्मेदार। उत्तरदायित्व = ज़िम्मेदारी। उत्तरदायी = उत्तर देने वाला।

उत्तरा खण्ड—(पु० सं०) हिमालय के पास का उत्तरी भाग।

उत्तराधिकार—(पु० सं०) मिरासत। उत्तराधिकारी = वह जो किसी के मरने के बाद उसकी सम्पत्ति का मालिक हो।

उत्तरायण—(पु० सं०) वह छ मास का समय जिसके बीच सूर्य मकर रेखा से चल कर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है।

उत्तरार्द्ध—(पु० सं०) पिछला आधा।

उत्तरीय—(पु० सं०) उत्तर दिशा का।

उत्तरोत्तर—(क्रि० वि० सं०) एक के पाछे एक। दिनोंदिन।

उत्तान—(वि० सं०) चित्त। सीधा।

उत्ताप—(पु० सं०) गर्मी। कष्ट। दुःख। क्षोभ।

उत्तीर्ण—(वि० सं०) पार गया हुआ। मुक्त। पासशुद।

उत्तेजक—(वि० सं०) उभाड़ने वाला। वेगों का तीव्र करने वाला। उत्तेजन=बढ़ावा। उत्तेजना=बढ़ावा।

उत्थान—(पु० सं०) उठान। बढ़ती।

उत्पत्ति—(स्त्री० सं०) पैदाइश। सृष्टि। आरम्भ। उत्पन्न=पैदा।

उत्पात—(पु० सं०) उपद्रव। अशान्ति। दंगा। उत्पाती=उत्पात मचाने वाला।

उत्पादक—(वि० सं०) उत्पन्न करने वाला। उत्पादन=उत्पन्न करना। उत्पादित=उत्पन्न किया हुआ।

उत्पीडन—(पु० सं०) दबाना। पीड़ा देना।

उत्सर्ग—(पु० सं०) त्याग। न्योछावर।

उत्सव—(पु० सं०) धूम-धाम. जलसा। मंगल समय।

उत्साह—(पु० सं०) उमंग। साहस। उत्साही=उमंग वाला।

उत्सुक—(वि० सं०) अत्यन्त इच्छुक। चाही हुई बात में देर न सहकर उसके उद्योग में तय्यार। —ता=आकुल इच्छा।

उथल-पुथल—(पु० हि०) उलट-पुलट।

उदंत—(वि० सं०) जिसके दांत न जमे हों।

उदू—(पु० अ०) दुश्मन। वैरी। शत्रु।

उदूल—(अ०) अवज्ञा करना। फिर जाना।

उदय—(पु० सं०) ऊपर आना।

उदर—(पु० सं०) पेट। मध्य। भीतर का भाग। —ज्वाला = जठराग्नि। भूख।

उदरना—(क्रि० हि०) फटना। नष्ट होना।

उदार—(वि० सं०) दाता। बड़ा। ऊँचे दिल का। सरल। अनुकूल। —चरित = जिसका चरित्र उदार हो। —चेता जिसका चित्त उदार हो। —ता = दानशीलता। उच्च विचार। उदाराशय = जिसका उद्देश्य उच्च हो।

उदारना—(क्रि० हि०) फाड़ना। गिराना।

उदास—(वि० सं०) विरक्त। झगड़े से अलग। दुःखी। उदासी = त्यागी पुरुष। नानक पंथी साधुओं का एक भेद। खिन्नता। उदासीन = जिसका चित्त हट गया हो। निष्पक्ष। रूखा। उदासीनता = त्याग। उदासी।

उदाहरण—(पु० सं०) दृष्टांत। मिसाल।

उदित—(वि० सं०) जो उदय हुआ हो। प्रकट। उज्ज्वल। प्रसन्न। कथित।

उदूलहुक्मी—(स्त्री० अ०) आज्ञा न मानना।

उद्गार—(पु० सं०) उबाल। किसी के विरुद्ध बहुत दिन से मन में रक्खी हुई बात को एकबारगी कहना।

उद्घाटन—(पु० सं०) खोलना। प्रकट करना।

उद्दंड—(वि० सं०) अक्खड़।

उद्देश्य—(वि० सं०) लक्ष्य।

उद्देश—(पु० सं०) अभिलाषा। मतलब। कारण। अनुसंधान।

उद्धत—(वि० सं०) उग्र। प्रगल्भ। —पन = उग्रता।

उद्धरण—(पु० सं०) किसी पुस्तक या लेख के किसी अंश को दूसरी पुस्तक या लेख में ज्यों का त्यों रखना।

उद्धार—(पु० सं०) मुक्ति। सुधार।

उद्धृत—(वि० सं०) उद्दंड।

उद्भव—(पु० स०) उत्पत्ति। बढ़ता। उद्भावना=कल्पना। उत्पत्ति।

उद्यत—(वि० स०) तैयार। उतारू।

उद्यम—(पु० स०) मेहनत। काम। उद्यमी=काम करने वाला। उद्योगी। उद्योग= कोशिश। कामधंधा। उद्योगी=उद्योग करनेवाला। मेहनती।

उद्यान—(पु० स०) बगीचा।

उद्विग्न—(वि० स०) घबराया हुआ। —ता=घबराहट।

उधड़ना—(क्रि० हि०) खुलना। बिखरना।

उधराना—(क्रि० हि०) ऊधम मचाना।

उधार—(पु० हि०) कर्ज़।

उधेड़ना—(क्रि० हि०) उचाड़ना। सिलाई खोलना। बिगराना।

उधेड़-बुन—(पु० हि०) सोच विचार। युक्ति बाँधना।

उन्नत—(वि० स०) ऊँचा। बढ़ा हुआ। बड़ा। उन्नति= ऊँचाई। बढ़ती।

उन्नावी—(वि० अ०) कालापन लिये हुये लाल।

उन्स—(अ०) मुहब्बत। प्यार। लगन।

उपक्रम—(पु० स०) प्रथमारंभ। —ण=आरम्भ। तैयारी। उपक्रमणिका = भूमिका। किसी पुस्तक के शुरू में दी हुई विषय सूची।

उपग्रह—(पु० स०) छोटा ग्रह।

उपचार—(पु० स०) प्रयोग। द्रव्य। सेवा। —क=दवा करनेवाला।

उपज—(पु० हि०) उत्पत्ति। पैदावार। उपजाऊ=ऊर्वर।

उपटना—(क्रि० हि०) निशान पड़ना। उखड़ना।

उपत्यका—(स्त्री० स०) तराई। घाटी।

उपदंश—(पु० स०) गरमी। आतशक।

उपद्रव—(पु० स०) उत्पात। हलचल। दंगा। गड़बड़।

उपालंभ—(पु० सं०) शिकायत। निंदा।

उपेक्षा—(स्त्री० सं०) उदासी नता। तिरस्कार। उपेक्षक= उपेक्षा करनेवाला। घृणा करनेवाला। उपेक्षणीय=घृणा योग्य। त्यागने योग्य। उपेक्षित=जिसकी उपेक्षा की गई हो।

उपोद्घात—(पु० सं०) प्रस्तावना।

उफ—(अव्य० अ०) आह। अफसोस।

उफक—(पु० अ०) क्षितिज।

उफतादा—(वि० फ़ा०) परती पड़ा हुआ (खेत)।

उफतादगी—(फ़ा०) नम्रता। शील। आजिज़ी।

उफनना—(क्रि० अ०) उबलना। उफान=उबाल।

उबकना—(क्रि० हि०) कै करना। उबकाई=कै।

उबटन—(पु० हि०) बटना। शरीर पर मलने के लिये पिसा हुआ सरसों। उबटना=उबटन मलना।

उबरना—(क्रि० हि०) उद्धार पाना। शेष रहना। उबरा= बचा हुआ। जिसका उद्धार हुआ हो।

उबलना—(क्रि० हि०) ऊपर की ओर आना। उमड़ना।

उबहा—(स्त्री० हि०) पानी निकालने की डोरी।

उबहना—हथियार खींचना। पानी फेंकना।

उबाल—(पु० हि०) उफान। जोश। —ना=खौलाना। जोश देना।

उभड़ना—(क्रि० हि०) किसी सतह का आसपास की सतह से ऊँचा होना। खुलना। बढ़ना। वृद्धि को प्राप्त होना। उभाड़ना=उकसाना। उत्तेजित करना।

उमंग—(स्त्री० हि०) चित्त का उभाड़। अधिकता। जोश।

उमदा—(वि० अ०) उत्तम।

उमर—(स्त्री० अ०) अवस्था। जीवन का समय। उम्र=उमर।
उमूम—(अ०) साधारण।
उमरा—(पु० अ०) अमीर का बहुवचन। सरदार। —व=सरदार।
उमस—(स्त्री० हि०) गरमी।
उम्मेदवार—(पु० फ़ा०) आशा करने वाला। नौकरी पाने की आशा करने वाला। काम सीखने के लिये और नौकरी पाने की आशा से किसी आफ़िस में बिना वेतन काम करने वाला मनुष्य। प्रार्थी। उम्मेदवारी=आशा। उम्मेद=आशा। भरोसा। उम्मीद=आशा।
उम्दा—(वि० अ०) अच्छा। बढ़िया।
उम्मत—(स्त्री० अ०) जमायत। समाज। फिरक़ा। सतान। पैरोकार।
उरद—(पु० हि०) एक प्रकार का जिसके बीज की दाल होती है। (स्त्री० उरदी) छोटा उरद।
उरूज—(पु० अ०) बढ़ती।
उर्दू—(स्त्री० पु०) वह हिन्दी जिसमें अरबी फारसी भाषा के शब्द अधिक मिले हों और जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय। (फा०) बाद शाही लश्कर के बाजार की बोली।
उर्दू बाजार—(हि०) लश्कर का बाज़ार।
उर्फ़—(पु० अ०) पुकारने का दूसरा नाम।
उर्वरा—(पु० स०) उपजाऊ भूमि।
उर्स—(पु० अ०) मुसलमानी मतानुसार किसी फ़क़ीर के मरने के दिन का कृत्य। मुसलमान साधुओं की निर्वाण तिथि।
उलचना—(क्रि० हि०) उलीचना। पानी फेंकना।
उलझन—(पु० हि०) अटकाव। गाँठ। पेंच। चिंता। उल-

झना=फँसना। उलझाव=अन्काव। झगड़ा। चक्कर। उलझेड़ा=अटकाव। बखेड़ा। खींचातानी।

उलटना—(क्रि० हि०) ऊपर नीचे होना। औंधा होना।

उलटना-पलटना—(क्रि० हि०) नीचे ऊपर करना। अदल बदल करना। और का और करना। उलट-पलट=हेर फेर। गड़बड़ी। उलट-फेर=परिवर्तन। अदल-बदल। उलटा=औंधा। उलटा पुलटा, उलटा-पलटा=इधर का उधर। बे सिर-पैर का।

उलटी—(स्त्री० हि०) वमन। उलटे=बे ठिकाने।

उलथा—(पु० हि०) उलटा। करवट बदलना।

उल्फत—(स्त्री० अ०) प्रेम। प्रीति।

उलरना—(क्रि० हि०) कूदना। नीचे ऊपर होना।

उलहना—(क्रि० हि०) उमड़ना। हुलसना।

उलार—(वि० हि०) जो पीछे की ओर झुका हो। —ना=नीचे ऊपर फेंकना।

उलारा—(पु० हि०) वह पद जो चौताल के अन्त में गाया जाता है।

उलाहना—(पु० हि०) किसी की भूल को उससे दुःख-पूर्वक जताना। शिकायत।

उल्का—(स्त्री० स०) तारा टूटना या लूक टूटना। —पात=तारा टूटना। उत्पात।

उल्लंघन—(पु० स०) लाँघना। न मानना।

उल्लेख—(पु० स०) लिखना। वर्णन। —नीय=लिखने योग्य।

उश्शाक—(पु० अ०) आशिक का बहुवचन।

उशारा—(पु० अ०) एक पेड़ जिसकी जड़ रक्त-शोधक होती है।

उषा—(स्त्री० स०) प्रभात। अरुणोदय की लालिमा। —काल=प्रभात।

उष्ण—(वि० स०) गरम। पुर-
जोश। —कटिबंध=पृथ्वी
का वह भाग जो कर्क और
मकर रेखाओं के बीच में
पड़ता है। —ता=गरमी।
उष्मा=गरमी। धूप।

उसनना—(क्रि० हि०) चावल
उबालना। पकाना।

उसूल—(पु० अ०) सिद्धांत

उस्तरा—(पु०फा०) उस्तुरा।

उस्ताद—(पु० फ़ा०) गुरु। मा
उस्तादी=मास्टरी। चतुर
विज्ञता। चालाकी। उस्त
=गुरुआनी। चालाक स्त्री

उहदा—(पु० अ०) पद। रुतबा

उहार—(पु० फा०) परदा।

ऊ

ऊ—हिन्दी-वर्णमाला का छठाँ
स्वर।

ऊँघ—(स्त्री० हि०) झपकी।
—ना=झपकी लेना।

ऊँचा—(वि० हि०) उठा हुआ।
श्रेष्ठ। ऊँचे=ऊपर की ओर।

ऊँटकटारा—(पु० हि०) एक
कँटीली झाड़ी जिसको ऊँट
बड़े चाव से खाते हैं।

ऊँहूँ—(अव्य० देश०) नहीं।

ऊआबाई—(वि० हि०) अटबट।

ऊकना—(क्रि० हि०) चूकना।
छोड़ देना।

ऊख—(पु० हि०) गन्ना।

ऊखल—(पु० हि०) काठ या पत्थर
का बना हुआ एक गहरा बरतन
जिसमें धानादि रखकर मूसल
से कूटा जाता है।

ऊजड़—(वि० हि०) उजड़ा
हुआ। बिना बस्ती का।

ऊटपटाँग—(वि० हि०) अटपट।
व्यर्थ।

ऊत—(वि० अ०) गँवार।

ऊद—(स्त्री अ०) अगर की लकड़ी
जो जलाने पर सुगन्ध देती
है। ऊदी=ऊद का रंग।

ऊदबिलाव—(पु० हि०) नेवले
के आकार का एक जंतु।

भना=फँसना। उलझाव=झगड़ा। झगड़ा। चक्कर। उलझेड़ा=झटझाव। बखेड़ा। खींचातानी।

उलटना—(क्रि० हि०) ऊपर नीचे होना। औंधा होना।

उलटना पलटना—(क्रि० हि०) नीचे ऊपर करना। अदबड करना। और का और करना। उलट-पलट=हेर फेर। गड़बड़ी। उलट-फेर=परिवर्तन। अदल-बदल। उलटा=औंधा। उलट पुलट, उलटा पलटा=इधर का उधर। बे सिर-पैर का।

उलटी—(स्त्री० हि०) वमन। उलटे=बे ठिकाने।

उलथा—(पु० हि०) उलटा। करवट बदलना।

उलफत—(स्त्री० अ०) प्रेम। प्रीति।

उलरना—(क्रि० हि०) कूदना। नीचे ऊपर होना।

उलहना—(क्रि० हि०) उमड़ना। हुलसना।

उलार—(वि० हि०) जो पीछे की ओर झुका हो। —ना=नीचे ऊपर फेंकना।

उलारा—(पु० हि०) वह पद जो चौताल के अन्त में गाया जाता है।

उलाहना—(पु० हि०) किसी की भूल को उसे दुःखपूर्वक जताना। शिकायत।

उल्का—(स्त्री० सं०) तारा टूटना या लूक टूटना। —पात=तारा टूटना। उत्पात।

उल्लंघन—(पु० सं०) लाँघना। न मानना।

उल्लेख—(पु० सं०) लिखना। वर्णन। —नीय=लिखने योग्य।

उश्शाक—(पु० अ०) आशिक का बहुवचन।

उशबा—(पु० अ०) एक पेड़ जिसकी जड़ रक्त-शोधक होती है।

उषा—(स्त्री० सं०) प्रभात। अरुणोदय की लालिमा। —काल=प्रभात।

उष्ण—(वि० सं०) गरम। पुर-सीला। —कटिबंध=पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है। —ता=गरमी। उष्मा=गरमी। धूप।

उसनना—(क्रि० हि०) चावल उबालना। पकाना।

उसूल—(पु० अ०) सिद्धांत।

उस्तरा—(पु०फा०) उस्तुरा। छुरा।

उस्ताद—(पु० फा०) गुरु। मास्टर। उस्तादी=मास्टरी। चतुराई। विज्ञता। चालाकी। उस्तानी=गुरुआनी। चालाक स्त्री।

उहदा—(पु० अ०) पद। रुतबा।

उहार—(पु० फा०) परदा।

ऊ

ऊ—हिन्दी-वर्णमाला का छठा स्वर।

ऊँघ—(स्त्री० हि०) झपकी। —ना=झपकी लेना।

ऊँचा—(वि० हि०) उठा हुआ। श्रेष्ठ। ऊँचे=ऊपर की ओर।

ऊँट-कटारा—(पु० हि०) एक कँटीली झाड़ी जिसको ऊँट बड़े चाव से खाते हैं।

ऊँहूँ—(अव्य० दश०) नहीं।

ऊआबाई—(वि० हि०) अंडबंड।

ऊकना—(क्रि० हि०) चूकना। छोड़ देना।

ऊख—(पु० हि०) गन्ना।

ऊखल—(पु० हि०) काठ या पत्थर का बना हुआ एक गहरा बरतन जिसमें धानादि रखकर मूसल से कूटा जाता है।

ऊजड़—(वि० हि०) उजड़ा हुआ। बिना बस्ती का।

ऊटपटाँग—(वि० हि०) अटपट। व्यर्थ।

ऊत—(वि० अ०) गँवार।

ऊद—(स्त्री अ०) अगर की लकड़ी जो जलाने पर सुगन्ध देती है। ऊदी=ऊद का रंग।

ऊदबिलाव—(पु० हि०) नेवले के आकार का एक जन्तु।

ऊदा—(वि०अ०) बैंगनी रंग का।

ऊधम—(पु० हि०) उपद्रव। दंगा फसाद। ऊधमी = ऊधम करनेवाला। फसादी।

ऊन—(पु० हि०) भेड़ बकरी आदि का रोयाँ।

ऊपर—(क्रि० स्त्री० हि०) ऊँचे स्थान में। आधार पर। उच्च श्रेणी में पहले। अधिक।

ऊब—(स्त्री० हि०) घबराहट। —ना = घबराना।

ऊमी—(स्त्री० हि०) जौ या गेहूँ की हरी बाली।

ऊलजलूल—(वि० हि०) बे सिर पैर का। अनाड़ी। बे अदब।

ऊहापोह—(पु० सं०) सोच विचार।

ऋ

ऋ—हिन्दी वर्णमाला का सातवाँ स्वर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ऋग्वेद—(पु० सं०) चार वेदों में से एक।

ऋण—(पु० सं०) कर्ज़। ऋणी = कर्ज़दार। उपकार मानने वाला। —ग्रस्त = कर्ज़दार। —शोधन = कर्ज़ चुकाना।

ऋतु—(स्त्री० सं०) मौसम। —काल = रजोदर्शन के उपरात के १६ दिन जिनमें स्त्रियाँ गर्भ धारण के योग्य होती हैं। —चर्या = ऋतुओं के अनुसार आहार विहार की व्यवस्था। —दान = गर्भाधान। —मती = रजस्वला। जिसका ऋतुकाल हो।

ऋतुराज—(पु०सं०) वसंत ऋतु।

ऋत्विज—(पु० सं०) यज्ञ करने वाला।

ऋद्धि—(स्त्री०सं०) धन। लक्ष्मी।

ऋद्धि सिद्धि—(स्त्री० सं०) समृद्धि और सफलता।

ऋषि—(पु० सं०) वेद मंत्रों का प्रकाश करनेवाला।

ए

ए—हिन्दी-वर्णमाला का आठवाँ स्वर। इसका उच्चारण कंठ और तालु से होता है।

एंजिन—(पु० अं०) इंजन।

ऍड़ावेंड़ा—(वि०हि०) अंड-बंड। सीधे तिरछे।

ऍंड़ी—(पु० हि०) पैर का पिछला हिस्सा।

एक—(वि० स०) इकाइयों में सब से छोटी और पहली संख्या। अकेला। कोई। एकही प्रकार का।

एकछत्र—(वि० स०) निष्कंटक।

एक्ज़ीक्यूटिव—(वि० अं०) प्रबन्ध विषयक। प्रबन्ध करने वाला। —आफ़िसर=नियमों का पालन करनेवाला राज कर्मचारी। —कमेटी=प्रबंध कारिणी समिति।

एकटक—(स्त्री० हि०) टकटकी।

एकड़—(पु० अं०) पृथ्वी की एक ३२ बिस्वे के बराबर। एकड़।

एकतरफ़ा—(वि० फ़ा०) एक ओर का। जिसमें पक्षपात किया गया हो। एक रुख़ा।

एकता—(स्त्री० स०) मेल।

एकतारा—(पु० हि०) एक तार का सितार या बाजा।

एकदेशीय—(वि० स०) एक देश का।

एकफ़र्दा—(वि० फ़ा०) एक फ़सला।

एकबारगी—(वि०फ़ा०) बिलकुल। एक ही दफ़े में। अचानक।

एकबाल—(पु० अ०) प्रताप। भाग्य। स्वीकार।

एकरंगा—(वि० हि०) समान।

एकरस—(वि० हि०) एक ढंग का। समान।

एकरार—(पु० अ०) स्वीकार। वादा।

एकलौता—(वि० हि०) अपने माँ बाप का एक ही लड़का।

एकसत्तावाद—(पु० स० एकाधिपत्य का सिद्धान्त।

एक्साँ—(वि० फ़ा०) बराबर। हमवार।

एकहरा—(वि० हि०) एक परत का।

एकांत—(वि० स०) अत्यन्त। अलग। —ता=अकेलापन। —वास=अकेले में रहना। सब से न्यारे रहना। —वासी अकेले में रहने वाला। निर्जन स्थान में रहने वाला। —स्वरूप=असंग। एकांतिक=जो एक ही स्थल के लिये हो।

एका—(स्त्री० स०) मेल। —ई इका*।

एकाएक—(वि० हि०) अचानक। एकाएकी=अकस्मात्।

एकाकार—(पु० स०) एकमय होना।

एकाकी—(वि० हि०) अकेला।

एकाग्र—(वि० स०) चंचलता रहित। —चित्त=जिसका ध्यान बँधा हो। —ता=चित्त का स्थिर होना।

एकात्मता—(स्त्री० स०) एकता। एकमय होना।

एकादशी—(स्त्री० स०) ग्यारहवीं तिथि।

एकाधिपत्य—(पु० स०) एक व्यक्ति के हाथ में पूर्ण अधिकार।

एकीकरण—(पु० सं०) मिला कर एक करना।

एकेडेमी—(स्त्री० अ०) शिक्षालय। वह सभा या समाज जो शिल्पकला या विज्ञान की उन्नति के लिये स्थापित हुआ हो।

एक्का—(वि० हि०) अकेला। ताश का पत्ता जिसमें एक ही बूटी होती है।

एक्सचेंज—(पु० अ०) बदला। वह स्थान जहाँ नगर के व्यापारी और महाजन परस्पर लेन-देन या क्रय विक्रय के लिये इकट्ठे होते हैं।

एक्सपर्ट—(पु० अ०) विशेषज्ञ।

एक्सपोर्ट—(अ०) निकला हुआ। बाहर भेजना। निर्यात।

एक्सप्लोसिव—(पु०, अ०)

भभक उठनेवाला पदार्थ। गंधक, बारूद आदि।

एक्साइज़—(पु० अ०) महसूल। चुंगी।

एग्ज़ामिनेशन—(पु० अ०) परीक्षा। इम्तिहान।

एग्ज़िबिट—(पु० अ०) प्रदर्शनी आदि में दिखाई जाने वाली वस्तु। वह वस्तु जो अदालत में प्रमाण स्वरूप दिखाई जाय।

एग्ज़िबिशन—(पु० अ०) प्रदर्शनी। नुमाइश।

एगानगी—(स्त्री० फ़ा०) एका। मित्रता।

एजुकेशन—(पु० अ०) शिक्षा। तालीम।

एजुकेशनल—(वि० अ०) शिक्षा सम्बन्धी।

एजेंट—(पु० अ०) मुख्तार। वह आदमी जो किसी कोठी, कारखाने या व्यापारी की ओर से माल बेचने या खरीदने के लिये नियुक्त हो। वह अफ़सर जो अँगरेज़ सरकार की ओर [illegible] धि के रूप से किसी देशी राज्य में रहता हो।

एजेंट-गवर्नर-जनरल—(पु० अ०) वह राजपुरुष या अफ़सर जो बड़े लाट के प्रतिनिधि रूप से कुछ देशी रियासतों की राजनीतिक दृष्टि से देख भाल करता हो।

एजेंडा—(पु० अ०) किसी सभा का कार्य-क्रम।

एजेंसी—(स्त्री० अ०) आढ़त। वह स्थान जहाँ एजेंट या गुमाश्ते किसी कम्पनी या कारखाने के लिये माल खरीदते हों। वह स्थान जहाँ सरकार या बड़े लाट का प्रतिनिधि रहता हो या उसका कार्य्यालय हो। वह प्रांत जो राजनीतिक दृष्टि से एजेंट के अधिकार में हो।

एडीकांग—(पु० अं०) सेनापति का सहायक कर्मचारी।

एड्रेस—(पु० अ०) पता। चिट्ठी पहुँचने का ठिकाना। अभिनन्दन पत्र।

एतक़ाद—(पु० अ०) विश्वास।
एतदाद—(अ०) गिनना। शुमार करना।
एतराज—(अ०) आपत्ति।
एतमाद—(अ०) किसी पर भरोसा करना। विश्राम करना।
एतदाल—(पु० अ०) बराबरी।
एतबार—(पु० अ०) विश्वास।
एन्डोर्स—(पु० अ०) हुंडी पर दस्तख़त करना। सकारना।
एनामेल—(पु० अ०) एक प्रकार का लेप जो धातुओं आदि की वस्तुओं पर लगाया जाता है। यह कई रंगों का होता है और सूखने पर बड़ा मज़बूत और चमकदार होता है।
एतराज़—(पु० अ०) आपत्ति।
एप्रूवर—(पु० अ०) इक़बाली गवाह। सरकारी गवाह।
एफिडेविट—(पु० अ०) शपथ। हलफ़। हलफ़नामा।
एमिग्रेशन—(पु० अ०) एक देश से दूसरे देश या राज्य में बसने जाना।
एम्बुलेंस—(पु० अ०) मैदानी अस्पताल। एक प्रकार की गाड़ी जिसमें घायलों या बीमारों को लेटाकर अस्पताल पहुँचाते हैं।
एम्बुलेंस कार—(पु० अ०) अस्पताल में घायलों या बीमारों को ले जाने वाली मोटर।
एरोप्लेन—(पु० अ०) वायुयान। हवाई जहाज़।
एलकोहल—(पु० अ०) एक प्रसिद्ध मादक तरल पदार्थ। फूल-शराब।
एलची—(पु० तु०) राजदूत।
एलार्म—(पु० अ०) विपद् या ख़तरे का सूचक शब्द या संकेत। —बेल=ख़तरे का घंटा। —चेन=ख़तरे की ज़ंजीर।
एलेक्टर—(पु० अ०) मताधिकार प्राप्त मनुष्य। निर्वाचक।
एलेक्टरेट—(पु० अ०) उन लोगों का समूह जिन्हें वोट देने का अधिकार हो।

एलेक्टेड—(वि० अ०) चुना हुआ। निर्वाचित।

एलेक्शन—(पु० अ०) निर्वाचन। चुनाव।

एल्डरमैन—(पु० अ०) म्युनिसिपल कारपोरेशन का सदस्य।

एवं—(वि० सं०) ऐसा ही।

एवज़—(पु० अ०) बदला। परिवर्तन। एवज़ी=स्थानापन्न आदमी।

एवेन्यू—(पु० अ०) कुञ्ज। रास्ता।

एशिया—(पु०) एक महाद्वीप, जिसमें भारत, फ़ारस, चीन, ब्रह्म आदि अनेक देश सम्मिलित हैं। —ई=एशिया का। —ई रूम=एशिया का एक देश। —ई रूस=एशिया का एक देश।

एसिड—(पु० अ०) तेज़ाब।

एसेंब्ली—(स्त्री० अ०) सभा। परिषद्। मजलिस। समूह। जमाव।

एसेन्स—(पु० अ०) पुष्प-सार। अतर। अरक। सुगंधि।

एस्पराण्टो—(स्त्री० अ०) यूरोप में प्रचलित एक नवीन कल्पित भाषा।

एस्टिमेट—(पु० अ०) अंदाज़। अनुमान।

एहतमाम—(पु० अ०) प्रबन्ध। बाँध।

एहतियात—(स्त्री० अ०) सावधानी। बचाव। परहेज़।

एहसान—(पु० अ०) निहोरा। —मंद=निहोरा मानने वाला। कृतज्ञ।

ऐ—हिन्दी-वर्णमाला का नवाँ स्वर। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है।

ऐं—(अव्य० हि०) एक अव्यय जिससे आश्चर्य सूचित होता है। जैसे क्या कहा? फिर तो कहो!

ऐंचना—(क्रि० हि०) खींचना। अपने ज़िम्मे लेना।

ऐंचाताना—(वि० हि०) जिसकी पुतली ताकने में दूसरी ओर को खिंचती है। ऐंचातानी = खींचा-खींची।

ऐंठ—(पु० हि०) अहंकार की चेष्टा। घमंड। विरोध। —न = घुमाव। पेंच। ऐंठा = रस्सी बटने का एक यंत्र। ऐंठू = अकड़बाज़। ठर्रा। ऐंड = गर्व। ऐंडदार = ठसकवाला। शानदार। ऐंड़ा = टेढ़ा।

ऐक्ट—(पु० अं०) क़ानून। नाट्यकला। ऐक्टर = नाटक का कोई पात्र।

ऐक्टिंग—(स्त्री० अं०) रूपाभिनय। चरित्राभिनय।

ऐक्ट्रेस—(स्त्री० अं०) अभिनेत्री। रंगमंच पर अभिनय करने वाली स्त्री।

ऐक्य—(पु० सं०) मेल।

ऐजन—(अव्य० अ०) तथा।

ऐटेस्टिंग आफिसर—वोट लिखे जाने के समय साक्षी स्वरूप उपस्थित रहनेवाला अफ़सर।

ऐडवोकेट—(पु० अं०) अदालत में किसी का पक्ष लेकर बोलने वाला। —जनरल = सरकारी वकील जो हाईकोर्ट में सरकार का पक्ष लेकर बोलता है।

ऐडमिनिस्ट्रेटर—(पु० अं०) वह जिसके अधीन किसी राज्य या बड़ी ज़मींदारी का प्रबन्ध हो।

ऐडमिनिस्ट्रेशन—(पु० अं०) प्रबन्ध। व्यवस्था। शासन। राज्य।

ऐडमिरल—(पु० अ०) जल सेनापति।

ऐडवाइजर—(पु० अ०) सलाह देनेवाला।

ऐडवाइजरी—(स्त्री अ०) सलाह देनेवाली।

ऐडिश्नल—(वि० अ०) अतिरिक्त।

ऐमेचर—(पु० अ०) शौकीन।

ऐतिहासिक—(वि० स०) इतिहास सम्बन्धी। जो इतिहास जानता हो।

ऐन—(पु०) ठीक। बिल्कुल।

ऐनक—(स्त्री० अ०) चश्मा।

ऐब—(पु० अ०) दोष। कलंक। ऐबी=खोटा। दुष्ट। विशेषत काना।—जोई=दोष निकालना।

ऐयाम—(पु० अ०) दिन। वक्त। मौसम।

ऐयार—(पु० अ) चालाक। धोखेबाज़। ऐयारी=चालाकी। धोखेबाज़ी।

ऐयाश—(वि० अ०) विषयी। ऐयाशी=भोग विलास।

ऐरा-गैरा—(वि० अ०) बेगाना। इधर उधर का।

ऐराव—(पु० अ०) शतरंज में बादशाह को किश्त बचाने के लिये किसी मोहरे को बीच में डाल देना।

ऐरिस्टोक्रैसी—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की सरकार। सरदारतन्त्र। कुलीन समाज।

ऐश—(पु० अ०) आराम। भोगविलास।

ऐश्वर्य्य—(पु० स०) धन सम्पत्ति। अधिकार। —वान=वैभवशाली।

ऐसा—(वि० हि०) इस प्रकार का। ऐसे=इस ढंग से।

ओ—हिन्दी-वर्णमाला का दसवाँ स्वर। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कंठ है।

ओंकार—(पु० सं०) "ओ" शब्द।

ओंठ—(पु० हि०) लब, होंठ।

ओखली—(स्त्री० हि०) काँडी।

ओगरना—(क्रि० हि०) निचुड़ना। ओगारना = कूआँ साफ़ करना।

ओछा—(वि० हि०) बुरा। हलका। छोटा। —पन= नीचता। क्षुद्रता। —ई= छोटापन।

ओज—(पु० सं०) बल। उजाला। कविता का एक सर्वोत्तम गुण जिससे सुनने वाले के चित्त में आवेश उत्पन्न हो। —स्विता=तेज। प्रभाव। —स्वी=तेजवान। प्रतापी।

ओझा—(पु० हि०) ब्राह्मणों की एक जाति। भूतप्रेत झाड़ने वाला। —ई=झाड़-फूँक। —इन=ओझा की स्त्री।

ओट—(स्त्री० हि०) आड़। शरण। एक प्रकार का वृक्ष।

ओटना—(क्रि० हि०) कपास को चरखी में दबाकर रूई और बिनौलों को अलग करना। बार बार कहना। ओटनी= कपास ओटने की चरखी। बेलनी। ओटा=कपास ओटनेवाला आदमी। परदे की दीवार। जाँत के पास पिसनहारियों के बैठने का चबूतरा। सोनारोंका एक औज़ार।

ओठँगना—(क्रि० हि०) सहारा लेना। टेक लगाना।

ओढ़ना—(क्रि० हि०) कपड़े या किसी वस्तु से देह ढकना। अपने सिर लेना। ओढ़नी= उपरेनी।

ओढ़र—(पु० हि०) बहाना।

के याम की मज़दूरी ।
ओसाना=दाँये हुये गल्ले को हवा में उड़ाना जिससे दाना और भूसा अलग हो जाय ।
ओसारा—(पु० हि०) दालान । सायबान ।
ओह—(अव्य० हि०) आश्चर्य सूचक शब्द । दुःख-सूचक शब्द । बेपरवाही का सूचक शब्द ।
ओहदा—(पु० अ०) पद । ओहदेदार=पदाधिकारी। हाकिम ।
ओहार—(पु० हि०) परदा ।
ओहो—(अव्य० स० अहो) आश्चर्य सूचक शब्द । आनन्द-सूचक शब्द ।

औ

औ—हिन्दी-वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर । इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है ।
औंघा—(स्त्री० हि०) हलकी नींद ।
औंड—(पु० हि०) गड्ढा खोदने वाला ।
औंधना—(क्रि० हि०) उलट जाना । औंधा=उलटा । औंधाना=उलट देना ।
औंस—(पु० अ०) आउंस । एक अंगरेज़ी तौल ।
औकात—(पु० बहु०) समय । हैसियत ।
औघड़—(पु० हि०) अघोरी । मनमौजी ।
औचक—(क्रि० वि० हि०) अचानक । औचट=अचानक ।
औज—(अ०) ऊँचाई ।
औज़ार—(पु० अ०) हथियार ।
औटना—(क्रि० हि०) दूध या किसी पतली चीज़ को आग पर रखकर धीरे धीरे गाढ़ा करना । खौलाना ।
औदार्य—(पु० सं०) उदारता

औद्योगिक—(वि० सं०) उद्योग सम्बन्धी। धंधे-सम्बन्धी।

औपनिवेशिक—(पु० सं०) उपनिवेश सम्बन्धी।

औपन्यासिक—(वि० सं०) उपन्यास में वर्णन करने योग्य। विलक्षण।

और—(अव्य० हिं०) संयोजक अव्यय। दूसरा। अधिक।

औरत—(स्त्री० अ०) स्त्री। पत्नी।

औरस—(पु० सं०) अपनी खास धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र।

औरेब—(पु० हिं०) तिरछी चाल। कपड़े की तिरछी काट। उलझन। चाल की बात।

औलाद—(स्त्री० अ०) संतान। नस्ल।

औलिया—(पु० अ०) पहुँचे हुये फकीर।

औषध—(स्त्री० सं०) दवा।

औसत—(पु० अ०) बराबर का पड़ता। साधारण।

औसाफ—(अ०) वस्फ का बहुवचन। सद्गुण।

क

क—हिन्दी-वर्णमाला का पहला व्यंजन। इसका उच्चारण कंठ से होता है।

कंकड़—(पु० हिं०) एक खनिज पदार्थ जिसमें चूना और चिकनी मिट्टी का अंश मिला होता है। पत्थर का छोटा टुकड़ा। कंकड़ी=छोटा कंकड़। कण। कंकड़ीला=कंकड़ मिला हुआ।

कंकण—(पु० सं०) कंगन। कंगना।

कंकरीट—(स्त्री० अं० कांक्रीट) बजरी।

कंकाल—(पु० सं०) ठठरी।

कँगनी—(स्त्री० हिं०) छोटा कँगना। दाँतेदार चक्कर। एक अन्न का नाम।

कँगला—(वि० हिं०) कंगाल। दरिद्र। भुक्खड़।

कसरचेटिव—(वि० अ०) पुरानी लकीर का फकीर। इंगलैंड देश के पार्लामेंट में वह राजनैतिक दल जो निर्धारित राज्य प्रणाली में कोई परिवर्तन या प्रजातंत्र सिद्धान्तों का प्रसार नहीं चाहता।

कसमट—(पु० अ०) कई एक बाजों का एक साथ मिलाकर बजाना। या कई एक गवैयों का मिलकर गाना-बजाना।

कई—(वि० हि०) अनेक।

ककड़ी—(स्त्री० हि०) जमीन पर फैलनेवाली एक बेल जिसमें लम्बे-लम्बे फल लगते हैं।

ककनी—(स्त्री हि०) दन्दानेदार चक्कर। एक मिठाई।

कगार—(पु० हि०) किनारा। मेंड़। कगार=ऊँचा किनारा। नदी का करारा। ऊँचा टीला।

कचकच—(पु० हि०) बकवाद।

कचनार—(पु० हि०) एक छोटा पेड़।

कचर कचर—(पु० हि०) कच्चे फल के खाने का शब्द। बकवाद।

कचर कूट—(पु० हि०) खूब पीटना। मारकूट।

कचरना—(क्रि० हि०) पैर से कुचलना। खूब खाना।

कचरा—(पु० हि०) ककड़ी। सेमल का डोंड। रद्दी चीज। रुई का बिनौला जो धुनने पर अलग कर दिया जाता है। कचरी=ककड़ी की जाति की एक बेल जो खेतों में फैलती है। कचरी या कच्चे पेंहटे के सुखाये हुए टुकड़े।

कचवाँसी—(स्त्री० हि०) खेत नापने का एक मान।

कचहरी—(स्त्री० हि०) सभा बैठक। दरबार। अदालत। दफ्तर।

कचारना—(क्रि० अनु०) कपड़ों को पटककर धोना।

कचालू—(पु० हि०) एक प्रकार की घाट। कमरख, अमरूद खीरे ककड़ी आदि के छोटे

छोटे टुकड़े जिनमें नमक मिर्च मिली रहती है।

कचूमर—(पु० हि०) कचूमर। गूदा।

कचौरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की पूरी जिसमें उरद आदि की पीठी भरी जाती है।

कच्चा—(वि० हि०) जो पका न हो। कमज़ोर। जो क़ायदे के मुताबिक़ न हो। गीली मिट्टी का बना हुआ। जिसे अभ्यास न हो। दूर दूर पड़ा हुआ तागे का डोभ। —असामी=वह असामी जो किसी खेत को दो ही एक फ़सल जोतने के लिये ले। जो अपना वादा पूरा न करता हो। जो अपनी बात पर दृढ़ न रहे। —कागज़=एक प्रकार का कागज़ जो घोटा हुआ नहीं होता। जिस दस्तावेज़ की रजिस्टरी न हुई हो। —काम=झूठा काम। —घड़ा=जो आवें में पकाया न गया हो। सेवर घड़ा। —चिट्ठा=पूरा और ठीक ठीक ब्यौरा। —जोड़=कच्चा टाँका। —तागा=कता हुआ तागा जो बटा न हुआ हो। —माल=वह रेशमी कपड़ा जिस पर कलफ़ न किया गया हो। झूठा गोटा पट्ठा। —शोरा=वह शोरा जो उबाली हुई नोनी मिट्टी के खारे पानी में जम जाता है। —हाथ=वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। (स्त्री० कची) कच्ची कली=मुसर्यंधी कली। कच्ची बही=वह बही जिसमें किसी दुकान या कारख़ाने का ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो। कच्ची मिती=पक्की मिती के पहले आनेवाली मिती। कच्ची रसोई=केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। कच्ची रोकड़=जिसमें प्रतिदिन के आय-व्यय का कच्चा हिसाब दर्ज रहता है। कच्ची सिलाई=दूर दूर पड़ा हुआ

टाँका। किताबों की वह सिलाई जिसमें सब फरमे एक साथ हाशिये पर से सी दिये जाते हैं। कच्चे बच्चे = बहुत से लड़के बाले।

कच्ची कुर्की—(स्त्री० हि०) वह कुर्की जो प्राय महाजन मुकदमें के फैसला होने के पहले कराते हैं।

कच्छप—(पु० स०) कछुआ। एक अवतार।

कछनी—(स्त्री० हि०) घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती।

कछार—(पु० हि०) समुद्र या नदी के किनारे की भूमि जो तर और नीची होती है।

कछुआ—(पु० हि०) एक जल जंतु जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह की खोपड़ी होती है।

कज—(पु० फा०) टेढ़ापन। दोष।

कजली—(स्त्री० हि०) कालिख। एक प्रकार का गीत।

कजा—(स्त्री० अ०) मौत।

कज़ाक—(पु० तु०) लुटेरा। कज़ाकी = लुटेरापन। छल कपट। कज़िया = झगड़ा। कज़्ज़ाक = डाकू। चालाक। कज़्ज़ाकी = डाकूपन।

कटक—(पु० स०) सेना।

कटकटाना—(क्रि० हि०) दाँत पीसना।

कटघरा—(पु० हि०) काठ का घर। बड़ा भारी पिंजड़ा।

कटती—(स्त्री० हि०) बिक्री। घटना। समय का बीतना। एक संख्या का दूसरी संख्या के साथ ऐसा भाग खाना कि शेष न बचे। चलती गाड़ी में से माल चोरी होना।

कटनी—(स्त्री० हि०) काटने का का औज़ार। कटपीस = नये कपड़ों का वह टुकड़ा जो थान बड़ा होने के कारण उसमें से काट लिया जाता है। कटाई = काटने का काम। फ़सल काटने की मज़दूरी।

कटरा—(स्त्री० हि०) छोटा

चौराह बाज़ार। भैंस का नर बच्चा।

कटहल—(पु० हि०) एक सदा बहार घना पेड़, जो भारत में प्राय सभी स्थानों में जहाँ गर्मी पड़ती है, होता है। जिसके फल बहुत बड़े बड़े होते हैं। फल के अन्दर गुठली होती है। भीतर में रेशे की कपरियों में कोये होते हैं, जो पकने पर बहुत मीठे होते हैं। कच्चे की तरकारी बनती है।

कटाकटी—(स्त्री० हि०) मार काट।

कटाक्ष—(पु० सं०) तिरछी नज़र।

कटार—(पु० हि०) एक बालिश्त का छोटा सा हथियार। कटारी=छोटा कटार।

कटि—(स्त्री० सं०) कमर। —बंध =कमरबन्द। गरमी सरदी के विचार से किये हुये पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक। —बद्ध=कमर बाँधे हुये। तैयार। —सूत्र=सूत की करधनी।

कटीला—(वि० हि०) काट करने वाला। गहरा असर करने वाला। मोहित करनेवाला। कांटेदार। नुकीला।

कटोरदान—(पु० हि०) पीतल का एक ढकनदार बर्तन। कटोरा=धातु का प्याला। कटोरी=छोटा कटोरा।

कटौती—(स्त्री० हि०) किसी रकम का देते हुये उसमें से कुछ अंश हक़ धर्मार्थ निकाल लेना। कमीशन।

कट्टर—(वि० हि०) कट्टा। अंध विश्वासी। हठी।

कट्टा—(वि० हि०) मोटा ताज़ा। बलवान।

कट्ठा—(पु० हि०) ज़मीन की एक नाप जो ५ हाथ ४ अंगुल की होती है।

कठिन—(वि० सं०) सख़्त। मुश्किल। सख्त। —ता= सख़्ता। कठोरता। दृढ़ता। कठिनाई=सख़्ती। कठोर=

सख़्त। निर्दय। बेरहम। कठोरता = सख़्ती।

कठुला—(पु० हि०) गले की माला जो बच्चों को पहनाई जाती है। हार।

कठौत—(स्त्री० हि०) छोटा कठौता। कठौता = काठ का बना हुआ एक बड़ा बर्तन। कठौती = छोटा कठौता।

कड़क—(स्त्री० हि०) तड़प। —ना = गड़गड़ाना। चिटकने का शब्द होना। फटना। आवाज़ के साथ टूटना।

कड़खा—(पु० हि०) वीरों को उत्तेजित करनेवाले युद्ध के गीत। आल्हा। कड़खैत = भाट। कड़खा गानेवाला पुरुष।

कड़वी—(वि० हि०) कटु। तीखी।

कड़ा—(पु० हि०) हाथ या पाँव में पहनने का गहना। कठोर। सख़्त। रूखा। उग्र। कसा हुआ। तेज़। दुष्कर। तेज़ असर डालनेवाला। बुरा लगनेवाला। कड़क।—का किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। उपवास। —तोन = चौड़े मुँह की बन्दूक। छोटी बन्दूक जिसका नाम झाँका भी है। —ई = सख़्ती।

कड़ाहा—(पु० हि०) लोहे का बहुत बड़ा गोल बर्तन। कड़ाही = छोटा कड़ाहा।

कड़ी—(स्त्री० हि०) ज़ंजीर या सिकड़ी की लड़ी का एक छल्ला। कठोर।

कड़ुआ तेल—(पु० हि०) सरसों का तेल। कड़ुआहट = कड़ुवा-हट = कटु आपन।

कढ़ी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का सालन।

कण—(पु० सं०) ज़र्रा।

कतई—(वि० अ०) नितांत। बिलकुल।

कतराना—(स्त्री० हि०) किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना।

कत—(अ०) बस। क़त्त्रत समास।

कतरा—(पु० अ०) बूँद।

कतरी—(स्त्री॰ हि॰) कोल्हू का पाट जिस पर बैठकर तेली बैल को हाँकता है।

कतल—(पु॰ अ॰) हत्या। क़त्ल आम = सर्वसाधारण का वध।

कतवार—(पु॰ हि॰) कूड़ा करकट।

कता—(स्त्री॰ अ॰) बनावट। ढंग। कपड़े की काट छाँट।

कतार—(स्त्री॰ अ॰) पंक्ति। समूह।

कतारा—(पु॰ हि॰) एक प्रकार की लाल रंग की ऊख जो बहुत लम्बी होती है।

कतिपय—(वि॰ सं॰) कई एक। कुछ।

कतोनी—(स्त्री॰ हि॰) कातने की क्रिया या भाव। कातने की मज़दूरी। निरर्थक और तुच्छ काम।

कत्थई—(वि॰ हि॰) खैर के रंग का। कत्था = खैर के पेड़ की लकड़ियों को उबालकर निकाला हुआ रस।

कत्थक—(पु॰ हि॰) नाचने गाने बजानेवाली एक जाति। कथक = कथा कहनेवाला। कथक्कड़ = बहुत कथा कहने वाला। कथन = कहना। कथनीय = कहने योग्य। निंदनीय। कथा = बात। चर्चा। समाचार। वाद विवाद। कथानक = कथा। छोटी कथा। कथा प्रबन्ध = कथा की गठन या बन्दिश। कथा प्रसंग = अनेक प्रकार की बातचीत। कथावार्ता-अनेक प्रकार की बात चीत। कथित = कहा हुआ। कथोपकथन = बातचीत। वाद विवाद।

कत्ल—(अ॰) हत्या। मार डालना।

कत्लआम—(पु॰ अ॰) सब लोगों की वह हत्या जो बिना किसी छोटे बड़े अपराधी या निरपराध का विचार किये की जाय।

कदंब—(पु॰ सं॰) कदम का पेड़। —क = समूह।

कद—(पु॰ अ॰) ऊँचाई।

कदम—(पु० अ०) पैर। चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अन्तर। घोड़े की एक चाल। —गाह=पैर रखने का स्थान। दुड्डी।

कदर—(स्त्री० अ०) मान। प्रतिष्ठा।—दान=कदर करने वाला। —दानी=गुण ग्राहकता।

कदामत—(स्त्री० अ०) प्राची नता। सनातन। क़दीम= पुराना।

कद—(पु० फा०) घर गाँव।

कदीम—(पु० अ०) पुराना। प्राचीन।

कदूरत—(पु० अ०) रंजिश। मैल।

कद्दू—(पु० फ़ा०) लौकी।

कनकटा—(वि० हि०) जिसका कान कटा हो। कनकटी= कान के पीछे का एक रोग।

कनकनाना—(अ० हि०) सूरन आदि वस्तुओं के स्पर्श से मुख हाथादि अंगों में एक प्रकार की चुनचुनाहट मालूम होना। चुनचुनाहट उत्पन्न करना। नागवार मालूम होना। चौकन्ना होना। रोमांचित होना।

कनकूत—(पु० हि०) बँटाई का एक ढंग जिसमें खेत में खड़ी फ़सल का अनुमान किया जाता है।

कनकौवा—(पु० हि०) गुड्डी।

कनखजूरा—(पु० हि०) गोजर।

कनटोप—(पु० हि०) कानों को ढकनेवाली टोपी। कनपटी=कान और आँख के बीच का स्थान। कनफटा= गोरखनाथ के अनुयायी योगी जो कानों को फड़वाकर उनमें बिल्लौर, मिट्टी, लकड़ी आदि की मुद्रायें पहनते हैं। कनफुँका=कान फूँकनेवाला गुरु। कनफुसका=कान में धीरे से बात कहनेवाला। चुगलख़ोर। कनफुसकी= कानाफूसी। कनरसिया= कान का जो रसिया हो। संगीत प्रिय।

कनवास—(पु० अ०) एक मोटा कपड़ा जिससे नावों के पाल और जूते आदि बनते हैं।

कनवासर, कनवैसर—(पु० अ०) वह जो 'वोट' 'आर्डर' माँगता या संग्रह करता हो।

कनवासिंग, कनवैसिंग—(स्त्री० अ०) वोट पाने के लिये उद्योग करना।

कनवोकेशन—(स्त्री० अ०) यूनीवर्सिटी का वह सालाना जलसा जिसमें परीक्षा में उत्तीर्ण ग्रेजुएटों को डिपलोमा आदि दिये जाते हैं।

कनस्तर—(पु० अ० कनिस्टर) टीन का चौखूँटा पीपा जिसमें घी तेल आदि रक्खा जाता है।

कनात—(स्त्री० तु०) मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी को घेरकर आड़ करते हैं।

कनाश्रन—(अ०) सन्ताप। सम।

कन्द—(स्त्री० फ़ा०) सफ़ेद शक्कर।

कनिष्ठ—(वि० स०) उमर में छोटा। कनिष्ठा=सब से छोटी। कनिष्ठिका=कानी उँगली।

कनी—(स्त्री० हि०) छोटा टुकड़ा। हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा। चावल के छोटे-छोटे टुकड़े।

कनीज़—(फ़ा०) बाँदी। चेरी। लौंडी।

कनीनिका—(स्त्री० स०) आँख की पुतली का तारा। कन्या।

कनेर—(पु० हि०) एक फूल का नाम।

कनौजिया—(वि० हि०) कन्नौज-निवासी। जिसके पूर्वज कन्नौज के रहनेवाले रहे हों या कन्नौज से आये हों।

कनौती—(स्त्री० हि०) पशुओं के कान या उनके कानों की नोक। कानों के उठाने या उठाये रखने का ढंग।

कन्नौज—(पु० हि०) फर्रुख़ाबाद ज़िले का एक नगर।

कन्या—(स्त्री० स०) लड़की। पुत्री। बारह राशियों में से छठीं राशि। —दान=विवाह

में वर को कन्या देने की रीति। —धन=स्त्री धन। —राशी=जिसके जन्म के समय चन्द्रमा कन्या-राशि में हो। चौपट। निकम्मा।

कन्याकुमारी—(स्त्री०) रास कुमारी।

कन्सरवेंसी—(स्त्री० अ०) सरकारी निरीक्षण या देख रेख।

कन्सरवेटर—(पु० अ०) निरीक्षक। देख-रेख करनेवाला।

कन्सरवेटिव—(पु० अ०) वह जो प्रजा-सत्तात्मक शासन प्रणाली का विरोधी हो। टोरी।

कपट—(पु० सं०) छल। छिपाव। —ना=धीरे से निकाल लेना। कपटी=धोखेबाज़। धान की फसल को नष्ट करनेवाला एक कीड़ा। तमाखू के पौधों में लगनेवाला एक रोग। —वेश=छद्म वेश।

कपाट—(पु० सं०) किवाड़।

कपाल—(पु० सं०) खोपड़ी। मस्तक। भाग्य। —क्रिया=मृतक-संस्कार के अन्तर्गत एक काम जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस से फाड़ देते हैं।

कपास—(स्त्री० हि०) एक पौधा जिसके ढेंढ से रुई निकलती है।

कपूत—(पु० हि०) बुरा लड़का।

कपूर—(पु० हि०) एक सफ़ेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो हवा में उड़ जाता है।

कपोल—(पु० सं०) गाल।

कपोल-कल्पना—(स्त्री० सं०) बनावटी बात। कपोल-कल्पित=बनावटी।

कप्तान—(पु० अ० कैप्टेन) जहाज़ या सेना का अफसर। दल का नायक।

कफ—(पु० अ०) कमीज़ या कुर्ते की आस्तीन के आगे की वह दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगाते हैं। (अ०) लोहे का वह अर्द्ध चन्द्राकार टुकड़ा जिससे ठोककर चकमक से आग निकालते हैं। (सं०) शरीर के तीन तत्वों में से

एक तत्व। जैसे वात, पित्त, कफ।

कफगीर—(पु० फा०) हथेली की तरह की लम्बी डाँडी की करछी जिससे दाल, घी आदि का झाग निकालते हैं।

कफन—(पु० अ०) वह कपड़ा जिसमें मुरदा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है। —खसोट=कंजूस। कफन खसोटी=इधर-उधर से भले या बुरे ढंग से धनोपार्जन करने की वृत्ति। कफनी=मुरदे या फकीरों के गले में डालनेवाला कपड़ा।

कफस—(पु० अ०) पिंजरा। दरबा। कैदखाना। बहुत तंग और संकुचित जगह।

कबंध—(पु० सं०) बिना सिर का धड़।

कब—(वि० हि०) किस समय। कदापि नहीं।

कबड्डी—(स्त्री० हि०) लड़कों के एक खेल का नाम।

कबजा—( )काबू।

कब्र—(स्त्री० अ०) कब्र। —स्तान=कब्र की जगह। मुर्दा गाड़नेवाला गड्ढा। —गाह=कब्रस्तान।

कबरा—(वि० हि०) चितला।

कब्ल—(क्रि० वि० अ०) पहले। पेश्तर।

कब्ज—(अ०) मुशगी। पेट का दर्द।

कबा—(पु० अ०) एक प्रकार का पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लम्बा और कुछ ढीला होता है।

कबाड़—(पु० हि०) रद्दी चीज़। कबाड़ा=व्यर्थ की बात। कबाड़िया=टूटी-फूटी सड़ी गली चीज़ें बेचनेवाला आदमी। तुच्छ व्यवसाय करनेवाला पुरुष।

कबाब—(पु० अ०) सीखों पर भूना हुआ मांस।

कबाब चीनी—(स्त्री० अ०) मिर्च की जाति की एक लिपटनेवाली झाड़ी।

कबाला—(पु० अ०) वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में चला जाय।

कबाहत—(स्त्री० अ०) मुश्किल। झंझट।

कबीर—(पु० अ०) गुरजन। बड़ा बुजुर्ग। एक प्रसिद्ध संत का नाम। एक प्रकार का गीत या पद जो होली में गाया जाता है। —पंथी = कबीर का मतानुयायी।

कबीला—(स्त्री० अ०) स्त्री।

कबुलवाना—(स० हि०) स्वीकार करवाना। क़बूल = स्वीकार। कबूलना = स्वीकार करना। कबूलियत = वह दस्तावेज़ जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका या पट्टा देनेवाले को लिख दे।

कबूतर—(पु० फा०) एक पक्षी। कबूतरी = कबूतर की मादा। नाचनेवाली। सुन्दर स्त्री (बाज़ारू)।

कबूद—(वि० फा०) आसमानी।

कब्र—(अ०) मुर्दा गाड़ने का गढ़ा।

कब्ज—(पु० अ०) पकड़। दस्त का साफ़ न होना। क़ब्ज़ा = अधिकार। मूँठ। क़ब्ज़ादार = वह अधिकारी जिसका कब्ज़ा हो। दखीलकार असामी। क़ब्ज़ियत = पाखाना का साफ़ न आना। क़ाबिज़ = अधिकार करने वाला। कब्ज़ करनेवाली वस्तु। मलिद। क़ब्ज़ा = आबू। अधिकार।

कब्जुलवसूल—(पु० फा०) वह कागज़ जिस पर वेतन पाने-वालों की भरपाई लिखी हो।

कभी—(वि० हि०) किसी समय। —कभी कभी = बाज़ बाज़ दिन। कभी के = बहुत पहले ही।

कमगर—(पु० फ़ा०) कमान-साज़। हड्डियों को बैठाने-वाला। चितेरा। कमनैत = कमान चलानेवाला।

कमचा—(पु० फ़ा०) बढ़ई का कमान की तरह का एक टेढ़ा औज़ार।

कमंडल—(पु० स०) सन्यासियों का जलपात्र। कमंडली= साधु। पाखंडी।

कमंद—(पु० फ़ा०) रेशम, सूत या चमड़े की फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर डाकू आदि ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

...म—(वि० फ़ा०) थोड़ा। बुरा। —असल=दोगला। —तर=छोटा। —तरीन= बहुत छोटा।

...ख़ाब—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का मोटा और नरम रेशमी कपड़ा जिस पर कला... बत्तू के बेलबूटे बने होते हैं।

...ची—(स्त्री० तु०) तीली। ...तली लचदार छड़ी। काठा। ...धनुष।

...—(वि० फ़ा०) दुर्बल।

...—(फ़ा०) बहुत कम। ...न्यून।

...—(स्त्री० फ़ा०) कमी।

थोड़ा। —कमतर (फ़ा०) बहुत कम। अति न्यून।

कमनीय—(वि० स०) सुन्दर।

कमबख़्त—(वि० फ़ा०) अभागा। कमबख़्ती=अभाग्य।

कमयाब—(वि० फ़ा०) दुलभ।

कमर—(स्त्री० फ़ा०) कटि। —तोड़=कुश्ती का एक पेंच। —बंद=पटुका। पेटी। इज़ारबंद। —बस्ता= तैयार। हथियारबंद।

क़मर—(पु० फ़ा०) चाँद।

कमरख—(पु० हि०) एक पेड़ का नाम।

कमरा—(पु० लै० कैमेरा) कोठरी। फ़ोटोग्राफ़ी का एक औज़ार। कम्बल। कमरी= कमली। कमरी अँगरखा= छोटा अँगरखा।

कमल—(पु० स०) एक प्रसिद्ध फूल।

कमसमझी—(स्त्री० फ़ा०) मूर्खता।

कमसरियट—(पु० अ०) फ़ौज के मोदीख़ाने का मुहकमा।

कमसिन—(वि० फा०) कम उम्र का।

कमर्शल—(वि० अ०) व्यापार सम्बन्धी। व्यापारिक।

कमाण्डर—(पु० अ० कमैंडर) कमान अफ़सर। —इन चीफ़=प्रधान सेनापति।

कमाई—(स्त्री० हि०) कमाया हुआ धन। कमाऊ=कमाने वाला। कमाना=कामकाज करके रुपया पैदा करना। कमासुत=कमाने वाला उद्यमी। कमेरा=काम करने वाला आदमी।

कमान—(स्त्री० फा०) धनुष। मेहराब। —अफ़सर=कमानियर। कमानी=लोहे की तीली तार अथवा इसी प्रकार की कोई लचीली वस्तु जो इस प्रकार बैठाई हो कि दाब पड़ने से न्व जाय और फिर अपनी जगह पर आ जाय। कमानीदार=जिसमें कमानी लगी हो।

कमाल—(पु० अ०) परिपूर्णता। चतुरता। अनोखा कार्य। कबीर के पुत्र का नाम।

कमिटी—(स्त्री० अ०) सभा। समिति।

कमिश्नर—(पु० अ०) माल का बहुत बड़ा अफ़सर जिसके अधिकार में कई ज़िले हों।

कमिश्नरी—(स्त्री० अ०) वह भूभाग जो किसी कमिश्नर के प्रबन्धाधीन हो। डिवीज़न। कमिश्नर की कचहरी। कमिश्नर का काम या पद।

कमी—(स्त्री० फा०) न्यूनता। नुक़सान।

कमीज़—(स्त्री० अ०) एक प्रकार का कुर्ता। जिसमें कली और चौबगले नहीं होते। क़मीस=कमीज़।

कमीना—(वि० फा०) नीच। —पन=नीचता।

कमीशन—(पु० अ०) कुछ चुने हुये विद्वानों की वह समिति जो कुछ समय के लिये किसी गूढ़ विषय पर विचार करने के लिये नियत की जाती है।

कोई ऐसी सभा जो किसी कार्य की जाँच के लिये नियत की जाय। किसी दूर रहने-वाले आदमी की गवाही लेने के लिये एक या अधिक वकीलों का नियत होना। दलाली।

कमेटी—(स्त्री० अ० कमिटी) समिति।

कमोड—(पु० अ०) एक प्रकार का अँगरेज़ी ढंग का पात्र जिसमें पाख़ाना फिरते हैं। गमला।

[क]ोरा—(पु० हि०) मिट्टी का एक बरतन। कसोरा। कमोरी=मटका।

[कम्यु]निक—(पु० अ०) सरकारी विज्ञप्ति या सूचना।

[कम्यु]निज़म—(पु० अ०) वह [सि]द्धान्त जिसमें सम्पत्ति का [अ]धिकार समाज का माना [जा]ता है, व्यक्ति विशेष का [नह]ीं।

[कम्युनिस्]ट—(पु० अ०) कम्यु[निज़म के सिद्धान्त को] मानने वाला।

[...]निज़म के सिद्धान्त के माननेवाला।

कय—(स्त्री० अ०) वमन। उल्टी।

कयास—(पु० अ०) अनुमान। ध्यान।

कर—(पु० स०) हाथ। माल-गुज़ारी। टैक्स।

करई—(स्त्री० हि०) पानी रखने का एक बर्तन।

करक—(पु० स०) रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा। रुक-रुककर जलन के साथ पेशाब का रोग। —ना=तड़कना। सालना।

करकच—(पु० हि०) एक प्रकार का नमक जो समुद्र के पानी से निकाला जाता है।

करकट—(पु० हि०) कूड़ा।

करगह—(पु० फा०) वह नीची जगह जिसमें जुलाहे पैर लटकाकर बैठते हैं, और कपड़ा बुनते हैं। जुलाहों का कपड़ा बुनने का यंत्र।

जुलाहों का कारखाना। करघा=करगह।

करछुला—(पु॰ हि॰) कलछा। भड़भूँजा की बड़ी कलछी।

करतल—(पु॰ सं॰) हाथ का गदोरा। करतला=हथेली। ताली। करताल=दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। लकड़ी काँसे आदि का एक बाजा। मँजीरा।

करद—(वि॰ सं॰) मालगुज़ार। टैक्स देनेवाला।

करदा—(पु॰ हि॰) बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा। किसी वस्तु के बिकने के समय उसमें मिले हुये कूड़े करकट या उसी तरह दाम कम करके या माल अधिक देकर पूरा करना। कटौती। बदाई।

करधनी—(स्त्री॰ हि॰) सोने या चाँदी का कमर में पहनने का एक गहना।

करनफूल—(पु॰ हि॰) स्त्रियों के कान में पहनने का सोने चाँदी का एक गहना।

करनाटक—(पु॰ हि॰) मद्रास प्रांत का एक भाग। करनाटकी=करनाटक का निवासी। कलाबाज़। जादूगर।

करनी—(स्त्री॰ हि॰) कृतक्रिया। एक औज़ार। करनी।

करनैल—(पु॰ अं॰ कर्नल) फौज का बड़ा अफसर।

करबला—(स्त्री॰ अ॰) अरब का वह उजाड़ मैदान जहाँ हुसैन मारे गये थे। जहाँ ताज़िये दफ़न किये जायँ। जहाँ पानी न मिले।

करम—(पु॰ सं॰ कर्म) काम। भाग्य। (अ॰) मिहरबानी। उदारता।

करमकल्ला—(पु॰ अ॰+हि॰) पातगोभी।

करवट—(स्त्री॰ हि॰) हाथ के बल लेटने की मुद्रा।

करवा—(पु॰ हि॰) मिट्टी का छोटा बरतन।

करशमा—(पु॰ फ़ा॰) चमत्कार।

कराइत—(पु॰ हि॰) एक प्रकार का काला साँप।

कराइन—(पु० हि०) छप्पर के उपर का फूस।

कराइ—(स्त्री० हि०) दाल का छिलका। कालापन।

करावत—(स्त्री० अ०) समीपता। सम्बन्ध।

कराबा—(पु० अ०) काँच का छोटे मुँह का बड़ा पात्र।

करामात—(स्त्री० अ०) चमत्कार।

करार—(पु० अ०) ठहराव। वादा।

करारा—(पु० हि०) नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने। ऊँचा किनारा। खूब सेंका हुआ। —पन = कड़ाई। कराल = जिसके बड़े दाँत हों। डरावनी शक्ल का। ऊँचा। दाँतों का एक रोग। कराला = डरावनी।

कराह—(पु० हि०) पीड़ा का शब्द। —ना = पीड़ा का शब्द मुँह से निकालना।

कराही—(स्त्री० हि०) कड़ाही।

करीना—(पु० अ०) ढंग। तरतीब। रीति। व्यवहार।

करीब—क्रि० वि० अ०) समीप। लगभग।

करीम—(अ०) दयालु। क्षमा करनेवाला।

करुण—(पु० सं०) न्यायुक्त शाप। करुणा = दया। शाप। करुणानिधान = दयालु। करुणानिधि = दयालु। करुणामय = दयालु।

करेंमी—(वि० अ०) हाथों हाथ चलनेवाला। नोट।

करेप—(स्त्री० अ० क्रेप) एक झीना रेशमी कपड़ा।

करेउआ—(पु० हि०) एक कँटीली बेल।

करेला—(पु० हि०) एक तरकारी।

करोड़—(वि० हि०) सौ लाख की संख्या।

करोदना—(क्रि० हि०) खरोचना। करोना = खुरचना। करोनी = पके हुये दूध या दही का वह भाग जो

खल में चिपका रह जाता है और खुरचन से निकलता है। खुरचन नाम की मिठाई।

करौंदा—(पु० हि०) एक छोटी कटीली झाड़ी जो जंगलों में होती है।

कर्क—(पु० सं०) बारह राशियों में से चौथी राशि।

कर्कश—(पु० सं०) कठोर। तेज़। अधिक। क्रूर। —ता=कठोरता। कर्कशा=झगड़ा करने वाली स्त्री।

कर्ज़—(पु० अ०) ऋण। उधार।

कर्ज़ख़्वाह—(पु० अ०+फा०) वह जो किसी से कर्ज़ लेना चाहता हो।

कर्ण—(पु० सं०) कान। —कटु=कान को अप्रिय। —वेध=कनछेदन।

कर्णधार—(पु० सं०) मल्लाह। पतवार थामनेवाला। माँझी। पतवार।

कर्त्तव्य—(वि० सं०) करने योग्य। उचित कर्म। —मूढ़, —विमूढ़=जो कर्तव्य स्थिर न कर सके। भौचक्का।

कर्त्ता=करनेवाला। रचनेवाला। कर्तार=करनेवाला। विधाता।

कर्नल—(पु० अं०) एक फौजी अफ़सर।

कराबा—(फा०) सुराही। शराब का शीशा।

क़ुर्ब—(अ०) नज़दीकी। आस पास के।

क़ुर्बान—(अ०) बलिदान होना। क़ुर्बानी=बलिदान।

कर्म—(पु० सं०) कार्य्य। भाग्य। मृतक संस्कार। —काण्ड=यज्ञादि कर्म। यज्ञादि कर्मों के विधानवाला शास्त्र। —काण्डी=यज्ञादि कर्म करानेवाला। —क्षेत्र=कार्य्य करने का स्थान। —चारी=कार्य्य कर्त्ता। अमला। —ठ=काम में चतुर। कर्मनिष्ठ। —णा=कर्म से। —निष्ठ=क्रियावान। —योग=चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र विहित कर्म। —रेख=कर्म की रेखा।

—वाद=मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान माना गया है। कर्मयोग। —विपाक=पूर्व जन्म के किये हुए शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल। —शील=कर्मवान। उद्योगी। —शूर=उद्योगी। —संन्यास=कर्म का त्याग। कर्म के फल का त्याग। —साक्षी=जो कर्मों का देखनेवाला हो। —हीन=जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। अभागा। कर्मी=कर्म करनेवाला। फल की इच्छा से यज्ञादि कर्म करनेवाला। कर्मेंद्रिय=काम करनेवाली इंद्रिय।

करी—(पु० हि०) जुलाहों का सूत फैलाकर तानने का काम। कड़ा। कठिन। —ना कड़ा होना।

कर्रा—(फा०) बदनामी। एक शाक।

कलंक—(पु० सं०) दाग। चन्द्रमा पर काला दाग। बदनामी। ऐब। कलंकित=जिसे कलंक लगा हो। कलंकी=दागी।

कलंडर—(पु० अ० कैलेन्डर) वह अँगरेज़ी यत्री या तिथिपत्र जिसका प्रारम्भ पहली जनवरी से होता है।

कलंदर—(पु० अ०) एक प्रकार का मुसलमान साधु जो संसार से विरक्त होता है। रीछ और बन्दर नचानेवाला।

कल—(पु० सं०) सुंदर। आनेवाला दिन। बीता हुआ दिन। यंत्र। पेंच। बन्दूक। चैन। आराम।

कलई—(स्त्री० अ०) राँगा। मुलम्मा। —गर=कलई करनेवाला। —दार=जिस पर कलई की गई हो। चूना।

कलक—(पु० अ० क़लक़) बेचैनी। दुःख। कलकानि=हैरानी। बेक़रारी।

कलकल—(पु० सं०) झरने के जल गिरने का शब्द। शोर। झगड़ा।

कलक्टर—(पु० अ० कलेक्टर) वह हाकिम, जिसके अधिकार में ज़िले का प्रबन्ध होता है। कलक्टरी=ज़िले में माल के मुहक़मे की कचहरी। कलक्टर का पद।

कलछा—(पु० हि०) बड़ी कलछी। कलछा=बड़ा डाँडी का वह चम्मच जिससे बट लोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं। कलछुल=कलछी। कलछुला=लोहे का लम्बा छड़ जिसके सिर पर पर कटोरा सा लगा रहता है। इससे भाड़ में से बालू निकालकर भड़भूँजे दाना भूनते हैं।

कलत्र—(पु० स०) स्त्री।

कलदार—(वि० हि०) पेंचदार। सरकारी रुपया।

कलफ—(पु० फा०) ख़िज़ाब। कलफ=पके चावल वा अरारोट आदि की पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनको कड़ा और बराबर करने के लिये लगाते हैं।

कलपना—(क्रि० स० कल्पना) विलाप करना। कलपाना=दुखी करना।

कलम—(स्त्री० फ़ा०) लेखनी। किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैवन्द लगाने के लिये काटी जाय। वह पौधा जो कलम लगाकर तैयार किया गया हो। —तराश=कलम बनाने की छुरी। —दान=काठ का एक पतला लम्बा सन्दूक़ जिसमें कलम दवात, पेंसिल, चाक़ू आदि रखने के ख़ाने बने रहते हैं। —बंद=लिखित। लिख लेना।

कलमलाना—(क्रि० अ०) कुल-बुलाना।

कलमा—(पु० अ०) वाक्य। "लाइलाह इल्लिल्लाह मुहम्मद उर् रसूलिल्लाह।"

कलमी—(वि० फ़ा०) लिखा हुआ। जो कलम लगाने से

उत्पन्न हुआ हो। —शोरा = साफ़ किया हुआ शोरा।
कलश—(पु० स०) घड़ा। कलशी = गगरी।
कलह—(पु० स०) झगड़ा। —कारी = झगड़ालू। —प्रिय = नारद। —प्रिया = झगड़ालू स्त्री। —कलही = झगड़ालू।
कलाँ—(वि० फ़ा०) बड़ा।
कला—(स्त्री० स०) अंश। चंद्रमा का सोलहवाँ भाग। सूर्य्य का बारहवाँ भाग। किसी कार्य्य को भली भाँति करने का कौशल। तेज। शोभा। ज्योति। खेल। छल। बहाना। ढंग। यंत्र। —धर = चंद्रमा। —नाथ = चंद्रमा। —निधि = चंद्रमा। —बाज़ = नट क्रिया करनेवाला। —बाज़ी = सिर नीचे करके उलट जाना। —वंत = संगीत-कला में निपुण व्यक्ति। नट। —वती = जिसमें कला हो। शोभावाली। —कौशल = दस्तकारी। शिल्प।
कलाजंग—(पु० हि०) कुश्ती का एक पेंच।
कलाप—(पु० स०) मोर की पूँछ। मोर की बोली। कलापी = मोर।
कलाबत्तू—(पु० तु०) सोने चाँदी का तार।
कलाम—(पु० अ०) वाक्य। वचन। एतराज़।
कलि—(पु०स०) चार युगों में से चौथा युग। —कर्म = युद्ध। —काल = कलियुग। —प्रिय = झगड़ालू। —मल = पाप। —युगी = बुरे युग का।
कलिया—(पु० अ०) पकाया हुआ मांस।
कलियाना—(अ० हि०) कली लगना। कली = बिना खिला फूल।
कलीन—(पु० अ०) योद्धा।
कलीसा—(फ़ा०) ईसाई और यहूदियों का मन्दिर। गिरजा-घर।

कलूटा—(वि० हि०) काला।
कलेऊ—(पु० हि०) जलपान। कलेवा = जलपान।
कलेक्टर—(पु० अ०) ज़िले का बड़ा हाकिम।
कलेजा—(पु० हि०) प्राणियों का एक भीतरी अवयव। छाती। साहस। कलेजी = कलेजे का मांस।
कलेवर—(पु० सं०) शरीर। ढाँचा।
कलोर—(स्त्री० हि०) जो गाय बरदाई या ब्याई न हो।
कलोल—(पु० हि०) क्रीड़ा। —ना = क्रीड़ा करना।
कलौंजी—(पु० हि०) एक पौधा। एक प्रकार की तरकारी।
कल्टीवेशन—(अ०) खेती।
कल्पतरु—(पु० सं०) कल्पवृक्ष। पुराणानुसार देवलोक का एक कल्पवृक्ष जो समुद्र-मथन करने के समय समुद्र से निकला हुआ और चौदह रत्नों में माना जाता है।
कल्पना—(स्त्री० सं०) रचना। अनुमान। भावना। मनगढ़ंत बात। कल्पित = मनमाना।
कल्पवास—(पु० सं०) माघ के महीने भर गंगातट पर संयम के साथ रहना।
कल्पांत—(पु० सं०) प्रलय। नित्य।
कल्मष—(पु० सं०) पाप। मैल। मवाद।
कल्याण—(पु० सं०) मंगल। कल्याणी = कल्याण करने वाली।
कल्ला—(पु० हि०) अंकुर।
कल्लोल—(पु० सं०) पानी की लहर। मौज। कल्लोलिनी = कल्लोल करनेवाली नदी।
कवच—(पु० सं०) लोहे की कड़ियों के जाल का बना हुआ पहनावा जिसको योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे।
कवर—(पु० हि०) ग्रास। (अ०) पुस्तकों के ऊपर का वह कागज़ जिस पर नाम

आदि छपा रहता है। लिफ़ाफ़ा।

कबरी—(स्त्री० सं०) चोटी।

कव्वाल—(पु० अ०) क़व्वाली गानेवाला।

क़ुव्वत—(पु० अ०) शक्ति। ताक़त। —वाला=(अ०) क़ुव्वतवाला।

क़वायद—(स्त्री० अ०) नियम। व्याकरण। सेना के युद्ध करने के नियम। लड़नेवाले सिपाहियों के युद्ध नियमों के अभ्यास की क्रिया।

क़वानीन—(पु० अ०) क़ानून का जमा।

कवि—(पु० सं०) काव्य करनेवाला। शुक्राचार्य। —ता=काव्य। —त्त=कविता। दण्डक के अन्तर्गत ३१ अक्षरों का एक छन्द। —त्व=काव्य-रचना-शक्ति। काव्य का गुण। —पुत्र=शुक्राचार्य। —राज=श्रेष्ठ कवि। भाट। बंगाली वैद्यों की एक उपाधि।

कश —(स्त्री० फ़ा०) खींचातानी। भीड़। आगा पीछा।

कशिश—(पु० फ़ा०) खिंचाव।

कशीदा—(पु० फ़ा०) तागे भरकर कपड़े में निकाले हुए बेलबूटे।

कश्ती—(स्त्री० फ़ा०) नौका।

कश्मीर—(पु० सं०) पंजाब के उत्तर हिमालय से घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश। कश्मीरी=कश्मीर का। कश्मीर देश का भाषा।

कषाय—(वि० सं०) कसैला। गेरू रंग का रँगा हुआ कपड़ा।

कष्ट—(पु० सं०) तकलीफ़। संकट। —कल्पना=विचारों का घुमाव फिराव। —साध्य=मुश्किल से होनेवाला।

कसक—(स्त्री० हिं०) पुराना पीर। टीसना। हमदर्दी। —ना=दर्द करना।

कसकुट—(पु० हिं०) एक मिली हुई धातु जो ताँबे और जस्ते के बराबर भाग से मिलाकर बनाई जाती है।

कसब—(क्रि० अ०) कमाना। कसाई का काम।

कसब—(पु० अ०) पेशा। छिनाला। कसबी=वेश्या। व्यभिचारिणी स्त्री।

क़सबा—(पु० अ०) बड़ा गाँव। —ती=क़सबे का। क़सबे का रहनेवाला।

क़सम—(स्त्री० अ०) शपथ।

कसमसाना—(क्रि० अनु०) कुलबुलाना। घबराना। आगा पीछा करना। कसमसाहट=बेचैनी।

कसर—(स्त्री० अ०) कमी। बैर। घाटा।

कसरत—(स्त्री० अ०) व्यायाम। अधिकता। कसरती=कसरत करनेवाला।

कसरवानी—(पु० हि०) बनियों की एक जाति। कसरहट्टा=कसेरों का बाज़ार।

क़साई—(पु० अ०) वधिक। गोघातक। निर्दय।

कसाला—(पु० हि०) कष्ट। कठिन।

कसाव—(पु० हि०) कसैलापन।

कसी—(स्त्री० हि०) पृथ्वी नापने की एक रस्सी जो दो क़दम या ४६¼ इंच की होती है। एक पौधा।

क़सीदा—(पु० अ०) उर्दू या फ़ारसी भाषा की एक प्रकार की कविता।

क़सीर—(पु० अ०) भूल करने वाला। कोताही करनेवाला।

कसीस—(पु० हि०) लोहे का एक प्रकार का विकार जो खानों में मिलता है।

क़सूर—(पु० अ०) अपराध। —मन्द=दोषी। —वार=अपराधी।

कसेरु—(पु० हि०) एक प्रकार के मोथे की जड़।

कसैली—(स्त्री० हि०) सुपारी।

कसौटी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है। परीक्षा।

कस्टम ड्यूटी—(स्त्री० अ०) कर। महसूल। चुंगी।

कस्टम हाउस—(पु० अ०) वह स्थान जहाँ विदेश से आने जाने वाले माल का महसूल देना पड़ता है।

कस्तूरी—(पु० हि०) एक सुगंधित द्रव्य जो हिरन की नाभि से पैदा होता है। —मृग=वह हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

क़स्द—(पु० अ०) इरादा।

क़स्साब—(पु० अ०) क़साई।

कस्सी—(स्त्री० हि०) मालियों का छोटा फावड़ा। ज़मीन की एक नाप जो दो क़दम के बराबर होती है।

क़हक़हा—(पु० अ०) ज़ोर की हँसी।

क़हक़हादीवार—(पु० फ़ा०) चीन की दीवार।

क़हत—(पु० अ०) दुर्भिक्ष। —साली=दुर्भिक्ष का समय।

क़हर—(पु० अ०) विपत्ति। भयंकर।

कहरवा—(पु० हि०) पाँच मात्राओं का एक ताल। दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है।

कहलवाना—(स० हि०) सन्देश भेजना।

कहवा—(पु० अ०) एक पेड़ का बीज।

काँइयाँ—(वि० अनु०) धूर्त।

काउंसिल—(स्त्री० अ०) व्यवस्थापिका सभा।

काँख—(स्त्री० हि०) बग़ल।

काँखना—(क्रि० अनु०) किसी श्रम या पीड़ा से ऊँह, आँह आदि शब्द मुँह से निकालना।

काँखासोती—(स्त्री० हि०) जनेऊ की तरह दुपट्टा डालने का ढंग।

काँगड़ी—(स्त्री० हि०) एक छोटी अँगीठी जिसे कश्मीरी लोग गले में लटकाये रहते हैं।

काँगरू—(पु० अ० कांगरू) एक पशु जो आस्ट्रेलिया महाद्वीप में होता है।

कांग्रेस—(स्त्री० अ०) वह महा सभा जिसमें भिन्न भिन्न स्थानों के प्रतिनिधि एकत्र होकर किसी सार्वजनिक वा विद्या सम्बन्धी विषय पर विचार करते हैं।

कांग्रेसमेन—(पु० अ०) वह जो कांग्रेस का सदस्य हो।

काँच—(स्त्री० हि०) गुदेंद्रिय के भीतर का भाग।

काञ्ची—(स्त्री० सं०) करधनी।

कांजी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का खट्टा रस जो बहु प्रकार से बनाया जाता है। मट्ठे और दही का पानी।

काँजीहाउस—(स्त्री० अ० काइन हाउस) वह मकान जहाँ खेती आदि को हानि पहुँचानेवाले चौपाये बन्द किये जाते हैं। मवेशीख़ाना। फाँद।

काँटा—(पु० हि०) कण्टक। साँग। काँटा जो मैना आदि पक्षियों के गले में निकलता है। लोहे का बड़ी कील चाहे वह झुका हो या सीधा हो। मछली पकड़ने की झुकी हुई अँकुड़ी या कँटिया। . झुकी हुई अँकुड़ियों का जिसे कुएँ में डालकर गिरे बरतन निकाले जाते हैं। या कील की तरह कोई नु-वस्तु। एक झुका हुआ का काँटा जिसमें तागे फँसाकर पटवार या गुहने का काम करते हैं। सुई जो लोहे की तराज़ू पीठ पर होता है जिससे दोनों पलड़ों के बराबर होने की सूचना मिलती है। वह लोहे की तराजू जिसकी डाँडी पर काँटा होता है। नाक में पहनने की लौंग। पंजे के आकार की धातु का बना हुआ एक औज़ार जिससे अंग्रेज़ लोग खाना खाते हैं। लकड़ी का एक ढाँचा जिससे किसान घास भूसा उठाते हैं। सूजा। घड़ी की सूई।

काण्ड—(पु० सं०) किसी ग्रन्थ

का वह हिस्सा जिसमें एक पूरा समूह हो।

काँड़ना—(क्रि० हि०) कुचलना। कूटना। लात लगाना। काँड़ी=ओखली या वह गड्ढा जिसमें धानादि डालकर मूसल से कूटते हैं। भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी या पत्थर का टुकड़ा जिसमें धान कूटने के लिये गड्ढा बना रहता है। हाथी [illegible] एक रोग जिसमें उसके पैर के तलवे में एक गहरा घाव हो जाता है और उसका चलना फिरना बंद हो जाता है।

कांति—(स्त्री० सं०) प्रभा। आभा। चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक।

काँखना—(क्रि० हि०) गाना।

काँदा—(पु० हि०) प्याज़।

काँय काँय—(पु० अनु०) कौए का शब्द। काँव-काँव=कौए का शब्द।

काँवर—(स्त्री० हि०) बहँगी।

कासल—(पु० अ०) चमत्कार।

काँसा—(पु० हि०) एक मिश्रित धातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है।

कान्स्टेबल—(पु० अं०) पुलीस का सिपाही।

कान्स्टिट्युएन्सी—(स्त्री० अं०) निर्वाचक-संघ।

काई—(स्त्री० हि०) जल या सील में होनेवाली एक प्रकार की महीन घास।

काकातुआ—(पु० हि०) एक प्रकार का बड़ा तोता जो प्रायः सफ़ेद रंग का होता है।

काकुल—(फ़ा०) अलक। लट।

काग़ज़—(पु० अ०) सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं। समाचार पत्र। काग़ज़ात =काग़ज़ पत्र। काग़ज़ी=जिसका काग़ज़ की तरह पतला छिलका हो। काग़ज़ बेचने वाला।

काग़ज़ी बादाम—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का बढ़िया बादाम

कागजी सबूत—(पु० अ०) लिखित प्रमाण।

काछ—(पु० हि०) पेड़ू और जाँघ के जोड़ पर का तथा उससे कुछ नीचे तक का स्थान। लाँग। —ना=कमर में लपेटे हुये वस्त्र के लटकने भाग का जाँघों पर से लेजाकर पीछे कसकर बाँधना। —नी=कछनी।

काछी—(पु० हि०) तरकारी बोने और बेचनेवाला।

काजी—(पु० अ०) मुसलमानी राज का न्यायाध्यक्ष।

काजू—(पु० हि०) एक मेवा।

काट—(स्त्री० हि०) काटने का ढंग। घाव। चालबाजी। तेल घी का तलछट। —न—कतरन। —ना=शस्त्रादि की धार धँसाकर किसी चीज़ के खण्ड करना। घाव करना। किसी भाग को अलग करना। वध करना। कतरना। छाँटना। समय बिताना। दूर से करना। कलम की लकीर से किसी लिखावट को रद्द करना। एक संख्या का दूसरी संख्या के साथ ऐसा भाग लगाना कि शेष न बचे। ताश की गड्डी को इस प्रकार फेंटना कि उस का पहले का लगा हुआ क्रम न बिगड़े। क़ैद भोगना। डसना। किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर के किसी भाग से लग कर खुजली लिये हुये जलन और छरछराहट पैदा करना।

काटन—(पु० अ०) कपास। रुई। सूती कपड़ा। रुई का कपड़ा।

काठ—(पु० हि०) लकड़ी। जलाने की लकड़ी। शहतीर।

काठ कबाड़—(पु० हि०) लकड़ियों आदि के टूटे-फूटे और निकम्मे टुकड़े।

काठमाडू—(पु० हि०) नैपाल की राजधानी।

काठियावाड़—(पु०हि०) भारतवर्ष का प्रान्त जो अब गुजरात देश का पश्चिमी भाग है।

काठी—(स्त्री० हि०) घोड़ों की पीठ पर कसने की एक ज़ीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है। ऊँट की पीठ पर रखने की एक गद्दी जिसके नीचे काठ रहता है। शरीर की गठन।

काढ़ना—(क्रि०हि०) निकालना। चित्रित करना। उधार लेना। काढ़ा=औषधियों को पानी में उबाल या औटाकर बनाया हुआ अर्क।

[का]तना—(क्रि० हि०) रुई से सूत कातना।

[कातर]—(वि० सं०) अधीर। [ड]रा हुआ। डरपोक। दुखित। [कोल्ह]ू में लकड़ी का वह तख्ता [जि]स पर हाँकनेवाला बैठता [है] और जो कोल्हू की कमर [में ल]गा हुआ उसके चारों [ओर] घूमता है। इसी में बैल [जोते] जाते हैं। —ता= [कातर]ता। दुख की व्याकुल[ता]। [ड]रपोकपन।

[कातिब—( ]पु० अ०) लेखक।

कातिल—(वि० अ०) मार डालने वाला। हत्यारा।

कान—(पु० हि०) सुनने की इंद्रिय।

क़ानून—(पु० अ०) राज्य में शांति रखने का नियम। —गो=माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के उन काग़ज़ों की जाँच करता है जिनमें खेतों और उनके लगानादि का हिसाब किताब रहता है। —दाँ=क़ानून जाननेवाला। क़ानूनिया=क़ानून जानने वाला। हुज्जती। क़ानूनी=जो क़ानून माने। अदालती। नियमानुकूल। तकरार करने वाला।

कानूनन्—(वि० अ०) कानून के अनुसार।

कान्यकुब्ज—(पु० सं०) प्राचीन समय का एक प्रान्त जो आजकल के कन्नौज के आस पास था। कान्यकुब्ज देश का निवासी। कान्यकुब्ज देश का ब्राह्मण।

कान्शन्स—(अ०) अक़्ल। बुद्धि।
कान्सल—(पु० अ०) वाणिज्य दूत। राजदूत।
कान्सोलेट—(पु० अ०) दूता वास।
कान्फिडेंस—(अ०) विश्वास।
कान्स्टिट्यूशन—(पु० अ०) किसी देश की सरकार का व्यवस्थित रूप। व्यवस्था।
कान्स्पिरेसी—(स्त्री० अ०) षड्यन्त्र। साजिश।
कापर प्लेट—(पु० अ०) छापे खाने में काम आनेवाला ताँबे की चद्दर का एक टुकड़ा जिस पर अक्षर खुदे होते हैं।
कापालिक—(पु० सं०) शैव मतानुसार एक तान्त्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिये रहते हैं। एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर की त्वचा रूखी, कठोर काली या लाल होकर फट जाती है। दर्द भी करती है।
कापी—(स्त्री० अ०) नक़ल। लिखने की सादी पुस्तक।
—राइट=क़ानून के अनुसार वह स्वत्व जो ग्रन्थकार या प्रकाशक को प्राप्त होता है।
कापीनवीस—(पु० अ० फ़ा०) लेखक। कापी लिखनेवाला।
कापुरुष—(पु० सं०) कायर।
काफ़िया—(पु० अ०) तुक।
काफ़िर—(वि० अ०) मुसलमानों के कथनानुसार उनसे भिन्न धर्म का माननेवाला। ईश्वर को न माननेवाला। निर्दय। बुरा। क़ाफ़िर देश का रहने वाला।
क़ाफ़िला—(पु० अ०) यात्रियों का समूह जो तीर्थ व्यापारा दि के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है।
काफ़ी—(पु० अ०) क़हवा।
काफ़ी—(वि० अ०) मतलब भर के लिये।
काफ़ूर—(पु० फ़ा०) कपूर।
काबा—(पु० अ०) अरब में मक्के शहर का एक स्थान।
क़ाबिज—(वि० अ०) जिसका किसी वस्तु पर अधिकार हो।

काबिल—(वि० अ०) योग्य। विद्वान्। काबिलीयत = योग्यता। विद्वत्ता।

काबुल—(पु० हि०) एक नदी। अफ़गानिस्तान की राजधानी। काबुली = काबुल का।

काबू—(पु० तु०) अधिकार। वश।

काम—(पु० सं०) इच्छा। मनोरथ। कामदेव। वह जो किया जाय। प्रयोजन। गरज। उपयोग। रोजगार। कारीगरी। बेलबूटा या नक्काशी जो कारीगरी से तय्यार हो। —चलाऊ = जिससे किसी प्रकार काम निकल सके। —चोर = काम से जी चुराने वाला। —दानी = वह कपड़ा जिसमें सलमे सितारे के बेल बूटे बने हों। —दार = कारिंदा। —देव = स्त्री पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला एक पौराणिक देवता, जिसकी स्त्री रति, साथी वसंत, वाहन कोकिल और फूलों का धनुष बाण है। धीरई। —धाम = कामरूप। —धेनु = एक गाय जो समुद्र के मथन से निकली थी। वशिष्ठ की नन्दिनी नाम की गाय। दान के लिये सोने की बनाई हुई गाय। —ना = मनोरथ। —याब = सफल। —याबी = सफलता। —शास्त्र = वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री पुरुष के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो। (अ०) कामा = एक विराम। कामातुर = काम के वेग से व्याकुल। कामिनी = कामवती स्त्री। एक पेड़। कामी = विषयी। कामुक = इच्छा करनेवाला। विषयी। कामोद्दीपक = काम का उद्दीपन करनेवाला। कामोद्दीपन = सहवास की इच्छा का उत्तेजन।

कामत—(पु० अ०) कद।

कामनवल्थ—(

कामन सभा—(स्त्री० अं० हि०) ब्रिटिश पार्लमेण्ट का वह शाखा या सभा जिसमें जन साधारण के निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं। हाउस आफ़ कामन्स।

कामर्स—(पु० अं०) व्यापार। कारोबार। लेन देन।

कॉमेडियन—(पु० अं०) आदिरस या हास्य रस का अभिनेता। सुखांत नाटक लिखनेवाला।

कॉमेडी—(स्त्री० अं०) सुखांत। नाटक।

कामरेड—(पु० अं०) सहयोगी। साथी।

कायदा—(पु० अ०) नियम। चाल। विधान। क्रम।

कायफल—(पु० हि०) एक वृक्ष।

कायम—(वि० अ०) ठहरा हुआ। मुक़र्रर। —मुकाम = एवजी।

कायर—(वि० हि०) डरपोक। —ता = डरपोकपन।

कायल—(वि० अ०) जो दूसरे की बात की यथार्थता को स्वीकार कर ले।

काया—(पु० सं०) शरीर। —पलट = हेर फेर। परिवर्तन।

कार—(पु० फ़ा०) काम। —करदा = तजरबेकार। —कुन = प्रबन्धकर्ता। कारिन्दा। —ख़ाना = जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाय। —गर = असर करनेवाला। उपयोगी। —गुज़ार = काम को अच्छी तरह करनेवाला। —गुज़ारी = कर्तव्य पालन। होशियारी। कर्मण्यता। —नी = करनेवाला। —परदाज़ = काम करनेवाला। प्रबन्धकर्ता। —परदाज़ी = दूसरे का काम करने की वृत्ति। कार्यपटुता। —बार = कामकाज। —बारी = कामकाजी। —रवाई = काम। कार्यतत्परता। चाल। —वाँ = यात्रियों का झुण्ड जो एक देश से दूसरे देश की यात्रा करता है। —साज़ = काम बनानेवाला।

—साज़ी=काम पूरा उतारने की युक्ति। चालबाज़ी। —स्तानी=कारस्वाई। चाल बाज़ी। कारी=करनेवाला। कारीगर=शिल्पकार। कारीगरी=निर्माण कला। मना हर रचना। कारागार (सं०) =क़ैदख़ाना। कारागृह= क़ैदख़ाना। कारावास=क़ैद। कारिन्दा=कर्मचारी। कार= (अं०) मोटर गाड़ी।

कारचोबी—(वि० फ़ा०) ज़र दोज़ी का। क़सीदा।

कारटून—(पु० अं०) वह उप हासपूर्ण कल्पित बेढंगे चित्र जिनसे किसी घटना या व्यक्ति के सबन्ध में किसी गूढ़ रहस्य का ज्ञान होता है।

कारट्रिज—(पु० अं०) कारतूस।

कारण—(पु० सं०) सबब। प्रमाण।

कारतूस—(पु० पुर्त०) एक लम्बी नली जिसमें गोली छुरी और बारूद भरी रहती है और जिसके एक सिरे पर टो लगी रहती है।

कारनिस—(स्त्री० अं०) दीवा की कँगनी।

कारपेंटर—(पु० अं०) बढ़ई।

कारपोरल—(पु० अं०) पलटन का छोटा अफ़सर। जमादार।

कारपोरेशन—(पु० अं०) बड़े शहरों की म्युनिसिपैलिटी।

कारेस्पाडेंट—(पु० अं०) सवाददाता।

कारेस्पाडेंस—(पु० अं०) पत्र-व्यवहार।

कारबन—(पु० अं०) रसायन शास्त्रानुसार एक तत्त्व। कोयला। कारबोनिक=कार-बन से मिला हुआ।

कारबोलिक—(वि० अं०) अलकतरा सम्बन्धी। एक सार पदार्थ जो कोयले के तेल या अलकतरे से निकाला जाता है।

कारीगर—(फ़ा०) काम करने वाला। हुनर जाननेवाला।

कारुणिक—(वि० सं०) दयालु। कारुण्य=दया।

कारूँ—(पु० अ०) हज़रत मूसा का चचेरा भाइ । बड़ा मालदार ।

कारूरा—(पु० अ०) शीशी जिसमें रोगी का मूत्र वैद्य को दिखाने के लिये रक्खा जाता है ।

कारोनर—(पु० अ०) वह अफ्सर जिसका काम जूरी की सहायता से दंगा फसाद या हत्या-सम्बन्धी मामलों की जाँच करना है । कारोनेशन= राज्यतिलक । राज्याभिषेक ।

कार्क—(पु० अ०) एक प्रकार की बहुत ही हल्की लकड़ी की छाल जिसकी डाटें बोतलों में लगाइ जाती हैं । काग ।

कार्ड—(पु० अ०) मोटा कागज़ । छोटे तथा मोटे कागज़ पर लिखा हुआ खुला पत्र । पते का कागज़ ।

कार्तिक—(पु० स०) एक चान्द्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है ।

कार्य्य—(पु० स०) काम । —कर्ता=कर्मचारी । कार्य्याधिकारी=अफ्सर । कार्य्याध्यक्ष=अफ़सर । कार्य्यालय =दफ़्तर ।

काल—(पु० स०) समय । नाश का समय । यमराज । नियत समय । अवसर । अकाल । —कूट = एक प्रकार का अत्यन्त भयङ्कर विष । —कोठरी=जेलख़ाने की एक बहुत तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें क़ैद तनहाईवाले क़ैदी रक्खे जाते हैं । —क्षेप =समय बिताना । —चक्र =समय का हेर फेर । —ज्ञान=समय की पहचान । मृत्यु का समय जान लेना । —निशा=अँधेरी भयावनी रात ।

कालम—(पु० अ०) पुस्तक या अख़बार के पृष्ठ की चौड़ाई में किये हुये विभागों में से एक ।

कालर—(अ०) पट्टा जो गले में लगाया जाता है ।

कालरा—(पु० अं०) हैज़ा या विशूचिका नामक रोग।

काला—(वि० स०) स्याह। बुरा। —कलूटा = बहुत काला। —चोर = बड़ा चोर। बुरे से बुरा आदमी। —आरा = एक प्रकार का आरा जो रंग में स्याह होता है। एक प्रकार का धान जिसके चावल बहुत दिनों तक रह सकते हैं। —तिल = काले रंग का तिल। —बीत = जिसका समय बीत गया हो। —पानी = देश निकाले का दंड। एंडमन और नीकोबार आदि द्वीप। —भुजंग = बहुत काला। काले साँप जैसा।

कालिंजर—(पु० स०) एक पर्वत जो बांदे से ३० मील पूरब की ओर है।

कालिंदी—(स्त्री० स०) यमुना नदी।

कालिक—(अं०) पेट की मरोड़।

कालिब—(पु० अ०) साँचा। शरीर। बदन।

कालीन—(पु० अ०) गलीचा।

कालेज—(अं०) अमरेजी विद्यालय।

कालोनियल—(वि० अं०) औपनिवेशिक।

कालोनी—(स्त्री० अं०) उपनिवेश।

काल्पनिक—(पु० स०) कवि। दार्शनिक।

कावा—(पु० फा०) घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।

काव्य—(पु० स०) कविता।

कास—(पु० हिं०) एक प्रकार की घास।

काश—(फा०) ईश्वर करे ऐसा हो।

काशान—(पु० फा०) झोपड़ा। छोटा घर।

काश्त—(स्त्री० फा०) खेती। —कार = किसान। —कारी = किसानी।

काश्मीर—(पु० स०) एक देश का नाम। —काश्मीरा = एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

काश्मीरी=कश्मीर देश का। कश्मीर देश निवासी।
काषाय—(वि० सं०) कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। गेरुआ वस्त्र।
कासिद—(पु० अ०) हरकारा। दूत। क़स्द करनेवाला। सीधी राह चलनेवाला।
कास्केट—(पु० अं०) पेटी। सन्दूकची। डिब्बा।
कास्टिक—(वि० अं०) एक प्रकार का तेज़ाब।
कास्टिंग वोट—(पु० अं०) किसी सभा या परिषद् के सभापति का वोट।
काहकशां—(पु० फा०) आकाश गंगा।
काहिल—(वि० अ०) आलसी। काहिली=सुस्ती।
काही—(वि० हि०) घास के रंग का। एक रंग जो कालापन लिये हुये हरा होता है।
किंकर—(पु० सं०) दास।
किंकर्तव्यविमूढ़—(वि० सं०) घबराया हुआ।
किंकिणी—(स्त्री० सं०) करधनी।
किंगिरी—(स्त्री० हि०) छोटी सारंगी।
किंतु—(अव्य० सं०) लेकिन। बल्कि।
किंवदंती—(स्त्री० सं०) अफ़वाह।
किंवा—(अव्य० सं०) या। अथवा।
किचकिच—(स्त्री० अनु०) व्यर्थ की बकवाद। झगड़ा। किच किचाना=दाँत पीसना। दाँत पर दाँत रखकर दबाना।
किता—(पु० अ०) काट-छाँट। संख्या। विस्तार का एक भाग। प्रदेश।
किताब—(स्त्री० अ०) पुस्तक। रजिस्टर। —त (अ०) लिखना।
किधर—(क्रि० हि०) किस तरफ़।
किनका—(पु० हि०) छोटा दाना। खुद्दी।
किनारा—(पु० फा०) तट। कछार। किनारी=सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो

काड़ों के किनारे पर लगाया जाता है।

किफ़ायत—(स्त्री० अ०) धन खर्च। बचत। किफ़ायती = बचत करनेवाला।

क़िबला—(पु० अ०) मक्का। पूज्य व्यक्ति। पिता। —गाह, गाही = पिता। —नुमा = पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यन्त्र।

क़िमारख़ाना—(पु० अ०) जुआघर। क़िमारबाज़ी = जुए का खेल। क़िमार = जुआ।

क़िमाम—(पु० अ०) सर्ज। गंजीफे का एक रंग जिसे ताज भी कहते हैं।

कियारी—(स्त्री० हि०) क्यारी।

किरच—(स्त्री० हि०) एक सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है।

किरण—(पु० सं०) किरन। रोशनी की लकीर।

किरम—(फ़ा०) कृमि। कीड़ा।

किरमिज़ी—(त्रि० हि०) किरमिज़ के रंग का।

किरांची—(स्त्री० अ०) दो या चार पहियों की गाड़ी जो माल असबाब ढोने के काम में आती है। मालगाड़ी का डब्बा।

किराया—(पु० अ०) भाड़ा। किरायेदार = जो किसी की कोई वस्तु भाड़े पर ले।

किरासिन—(पु० अं० केरोसन) मिट्टी का तेल।

किलनी—(स्त्री० हि०) एक बहुत ही छोटा कीड़ा जो पशुओं के लगता है।

क़िला—(पु० अ०) गढ़। —बन्दी = दुर्ग निर्माण। व्यूह-रचना। शतरंज में बादशाह को सुरक्षित घर में रखना।

किलोमीटर—(पु० अं०) दूरी की एक माप।

क़िल्लत—(स्त्री० अ०) कमी। संकोच।

किवाड़—(पु० हि०) कपाट।

किशमिश—(पु० फ़ा०) सुखाई हुई छोटी दाख। किश-

मिशी = किशमिश का। किशमिश के रंग का।

किशोर—(वि० स०) ११ वर्ष से १५ वर्ष तक की अवस्था का। पुत्र। —क = छोटा बालक।

किश्त—(स्त्री० फ़ा०) शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना।

किश्तवार—(पु० फा०) पटवारियों का एक कागज़ जिसमें खेतों का नम्बर, रकबा आदि दर्ज रहता है।

किश्ती—(स्त्री० फ़ा०) नाव। —नुमा = नाव के आकार का।

किस—(सर्व० हि०) 'कौन' का वह रूप जो उस विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

किसबत—(स्त्री० अ०) एक थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे कंघी आदि रखते हैं।

किसमिस—(पु० फ़ा० किशमिश) किशमिश।

किसान—(पु० हि०) खेतिहर। किसानी = कृषि।

किसी—(सर्व० हि०) "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगाने से पहले प्राप्त होता है।

किस्त—(स्त्री० अ०) ऋण या देन चुकाने का वह ढंग जिसमें सब रुपया एक बारगी न दे दिया जाय बल्कि उसके कई भाग करके प्रत्येक भाग के चुकाने के लिये अलग अलग समय निश्चित किया जाय। —बन्दी = थोड़ा थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग। —वार = क़िस्त क़िस्त करके। हर किस्त पर।

क़िस्मत—(स्त्री० अ०) भाग्य। कमिश्नरी। —वर = भाग्यवाला।

किस्सा—(पु० अ०) कहानी। समाचार। झगड़ा।

की—(अ०) वह पुस्तक जिसमें किसी पुस्तक के कठिन शब्दों के अर्थ या उनकी व्याख्या की गई हो। कुंजी।

कीच—(पु० हि०) कीचड़। —ड़ = गीली मिट्टी।

कीट—(पु० सं०) कीड़ा। जमी हुई मैल।

कीमत—(पु० अ०) दाम। कीमती=अधिक दामों का।

कीमा—(पु० अ०) बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त (खाने के लिये)।

कीमिया—(स्त्री० फा०) रसायन। —गर=रसायन बनाने वाला।

कीमुख्त—(पु० अ०) गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

कीर्त्तन—(पु० सं०) कथन। कृष्ण लीला-सम्बन्धी भजन और कथा आदि। कीर्त्तनिया =कीर्त्तन करने वाला।

कीर्त्ति—(स्त्री० सं०) बड़ाई।

कीर्त्ति स्तंभ—(पु० सं०) वह स्तंभ जो किसी की कीर्त्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय।

कील—(स्त्री० सं०) काँटा। नाक में पहनने का एक छोटा-सा आभूषण जिसका आकार लौंग के समान होता है। मुँहासे की कील। जाँते के बीचोबीच का एक खूँटा जिसके आधार पर वह गड़ा रहता है। वह खूँटी जिस पर कुम्हार का चाक घूमता है। —ना=मेख जड़ना। किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके। वश में करना। कीला=बड़ी कील। कीली= किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील या डंडा जिस पर वह चक्र घूमता है।

कीस—(अ०) थैली।

कुँआँ—(पु० हि०) कुँआ। कूप। कुँइयाँ=छोटा कुँआ।

कुँआरा—(वि० हि०) बिन ब्याहा।

कुँई—(स्त्री० हि०) कुमुदिनी।

कुंकुम—(पु० सं०) केसर। लाल रंग की बुकनी जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं।

कुंज—(पु० सं० फा०) वह स्थान जिसके चारोंओर घनी लता छाई हो।

कुंजगली—(स्त्री० हि०) बगीचों में लता से छाया हुआ पथ। पतली तंग गली।

कुंजड़ा—(पु० हि०) एक जाति जो अब तरकारी बेचती है।

कुंजा—(पु० अ०) पुरवा। सुराही।

कुंजी—(स्त्री० हि०) चाभी। टीका।

कुंठित—(वि० सं०) जिसका धार तेज़ न हो। मंद।

कुंड—(पु० सं०) पानी को रोक रखने के लिये पक्का गढ़ा। खेत में वह गहरी रेखा जो हल जोतने से पड़ जाती है।

कुँडमुँदनी—(स्त्री० हि०) कुल खेत बो चुकने पर अंतिम खेत बोना।

कुंडल—(पु० सं०) मुरकी। पहिये के आकार का एक आभूषण जिसे गोरखनाथ के अनुयायी चिरफटे कानों में पहनते हैं। रस्सी आदि का गोल फंदा। कुंडलाकार=गोल। कुंडलिनी=तंत्र और उसके अनुयायी हठ-योग के अनुसार एक कल्पित वस्तु जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी की जड़ के नीचे मानी गई है। कुंडलिया=एक मात्रिक छन्द।

कुंडा—(पु० हि०) मटका। दरवाज़े की चौखट में लगा हुआ कोंढ़ा जिसमें साकल फँसाई जाती है।

कुंजा—(अव्य०,फा०) कहाँ? किस जगह?

कुतब—(अ०) एक बार लिखना। लिखी हुई चीज़।

कुंद—(पु० सं०) जूही की तरह का एक पौधा। इसमें सफ़ेद फूल लगते हैं। —न=बहुत अच्छे और साफ़ सोने का पतला पत्तर। बढ़िया सोना। स्वच्छ। नीरोग। (फा०) मन्द।

कुँदरू—(पु० हि०) एक बेल

जिसमें चार पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं।

कुंदा—(पु० फा०) लक्कड़। लकड़ी का टुकड़ा जिस पर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते हैं। बंदूक में वह पिछला लकड़ी का तिकोना भाग जिसमें घोड़ा और नली आदि जड़ी होती है और जो बन्दूक चलाने की ओर होता है। वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। मूँठ। लकड़ी की बड़ी मोगरी। कुश्ती का एक पेच। कुश्ती में एक प्रकार का आघात।

कुंदी—(स्त्री० हि०) धुले या रँग हुये कपड़ों की तह करके उनकी सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उन्हें लकड़ी की मोगरी से कूटने की क्रिया। खूब मारना।

कुँवर—(पु० हि०) पुत्र। राजपुत्र। कुँवरि=कुमारी। राजकन्या। कुँवारा=बिन ब्याहा।

कुँहड़ा—(पु० हि०) कुम्हड़ा एक फल है।

कुआर—(पु० हि०) आश्विन का महीना। कुआरा=कुआर का।

कुकड़ी—(स्त्री० हि०) कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा। सुलझी।

कुकराधाँ—(पु० हि०) छोटा पौधा।

कुकर्म—(पु० सं०) बुरा काम। कुकर्मी=पापी।

कुकुर—(पु० सं०) कुत्ता। —खाँसी=वह खाँसी जिसमें कफ न गिरे। खाँसी। —दंता =जिसके मुख में कुकुरदंत हो।

कुकुरौंछी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं के बदन पर लगती है।

कुगति—(स्त्री० सं०) दुर्दशा।

कुच—(पु० सं०) छाती। स्तन।

कुचकुचाना—(क्रि० अनु०) थोड़ा कुचलना।

कुचक्र—(पु० सं०) षड्यंत्र।

कुचलना—(क्रि॰ हि॰) पाँव से दबाना।

कुचला—(पु॰ हि॰) एक प्रकार का वृक्ष और उसका बीज।

कुचाल—(स्त्री॰ हि॰) बुरा चाल चलन। दुष्टता। कुचालिया=कुचाली। दुष्टता करनेवाला।

कुजाति—(स्त्री॰ स॰) नीच जाति।

कुज्जा—(पु॰ फ़ा॰) मिट्टी का प्याला। मिस्री की बनी गोल डली।

कुटना—(पु॰ हि॰) चुग़लख़ोर। स्त्रियों का दलाल। —पन=कुटनी का काम। झगड़ा लगाने का काम। कुटनी=दूती। इधर उधर की लगानेवाली। (स॰) कुट्टनी=कुटनी।

कुटनहारी—(स्त्री हि॰) धान कूटने का काम करनेवाली स्त्री। कुटाई=कूटने का काम। कूटने की मजदूरी। कुटौनी=धान कूटने का काम। धान कूटने की मज़दूरी।

कुटिया—(स्त्री॰ हि॰) छोटी झोंपड़ी। कुटी=कुटिया। कुटीर=कुटी।

कुटिल—(वि॰ स॰) टेढ़ा। दग़ाबाज़। शठ। —कीट=साँप। —ता=टेढ़ापन। खोटाई। —पन=कुटिलता।

कुटुम्ब—(पु॰ स॰) परिवार। कुटुम्बी=परिवार वाला। कुटुम्ब के लोग।

कुटेव—(स्त्री॰ हि॰) बुरी आदत।

कुट्टी—(स्त्री॰ हि॰) छोटे गँड़ासे से बारीक कटा हुआ चारा। लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे एक दूसरे से मित्रता तोड़ने के लिये दाँतों पर नाख़ून लगा के उच्चारण करते हैं। मैत्री-भंग।

कुठला—(पु॰ हि॰) अनाज रखने का मिट्टी का एक बड़ा बरतन। चूने की भट्टी।

कुठाँव—(स्त्री॰ हि॰) बुरी जगह।

कुड़कुड़ाना—(क्रि॰ अनु॰) मन ही मन कुढ़ना।

कुड़कुड़ी—(स्त्री॰ अनु॰) घोड़े का एक रोग।

कुडौल—(वि॰ हि॰) बेढंगा।

कुढंग—(पु॰ हि॰) बुरा ढंग। कुढंगा=बुरी चाल का। बेढंगा।

कुढ़ना—(स्त्री॰ अ॰) भीतर ही भीतर क्रोध करना। जलना। मसोसना।

कुतरना—(क्रि॰ हि॰) दाँत से छोटा-सा टुकड़ा काट लेना।

कुतर्क—(पु॰ सं॰) बकवाद। कुतर्की=बकवाद करनेवाला।

कुतर—(अ॰) व्यास, जो परिध के दो भाग करता है।

कुतिया—(स्त्री॰ हि॰) कुत्ती। कुत्ता=कुक्कुर।

कुतुब—(पु॰ अ॰) ध्रुवतारा। किताब का जमा। —ख़ाना =पुस्तकालय। —फ़रोश= किताब बेचनेवाला। —नुमा =दिग्दर्शन यन्त्र। कुतबा =(अ॰) एक बार लिखना। लिखी हुई चीज़।

कुतूहल—(पु॰ सं॰) उत्कंठा। कौतुक। खिलवाड़। अचंभा।

कुत्सा—(स्त्री॰ सं॰) निन्दा। कुत्सित=निंदित। अधम।

कुथरू—(पु॰ हि॰) आँख का एक रोग।

कुदकना—(क्रि॰ हि॰) कूदना। कुदक्का=उछल-कूद।

कुदरत—(स्त्री॰ अ॰) शक्ति। प्रकृति। कारीगरी। कुदरती=प्राकृतिक। दैवी।

कुदूरत —(पु॰ फा॰) मलिनता। हृदय का मैल।

कुदान—(पु॰ सं॰) कुपात्र को दान। कूदने की क्रिया। कूदने का स्थान।

कुदिन—(पु॰ सं॰) आपत्ति का समय।

कुदृष्टि—(स्त्री॰सं॰) बुरी नज़र।

कुनकुना—(वि॰ हि॰) आधा गर्म पानी।

कुनबा—(पु॰ हि॰) परिवार। ख़ान्दान।

कुनबी—(पु॰ हि॰) हिन्दुओं की एक जाति।

कुनाई—(स्त्री० हि०) बुरादा।
कुनैन—(पु० अं० क्विनिन) एक ओषधि।
कुपंथ—(पु० हि०) बुरा रास्ता। कुचाल। बुरा मत। कुपथ = कुपथ।
कुपथ्य—(पु०स०) बद-परहेजी।
कुपाठ—(पु० स०) बुरी सलाह।
कुपात्र—(वि० स०) अयोग्य।
कुपित—(वि० स०) क्रोधित। नाराज़।
कुप्पा—(पु० हि०) चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का एक बड़ा बरतन। (स्त्री०) कुप्पी।
कुफ्र—(पु० अ०) मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत या वाक्य।
कुफ़्ल—(अ०) ताला।
कुबड़ा—(पु० हि०) जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई हो। (स्त्री०) कुबड़ी।
कुबुद्धि—(वि० स०) मूर्खता। बुरी सलाह।
कुबेला—(स्त्री० स०) बुरा समय।
कुमंत्रणा—(स्त्री० स०) बुरी सलाह।
कुमक—(स्त्री० तु०) सहायता। पक्षपात। कुमकी = कुमक से सम्बन्ध रखनेवाला।
कुमकुम—(पु० हि०) केशर। कुमकुमा।
कुमरी—स्त्री० अ०) पडुक की जाति की एक चिड़िया। पिंडुकी।
कुमार—(पु० स०) पाँच वर्ष की आयु का बालक। पुत्र। युवराज। युवावस्था या उससे प्रथम की अवस्थावाला पुरुष।
कुमारिका—(स्त्री० स०) कुमारी। कुमारी = १२ वर्ष तक की अवस्था की कन्या।
कुमेरु—(पु० स०) दक्षिणी ध्रुव।
कुम्मैत—(पु० तु० कुमेत) घोड़े का एक रंग जो स्याही लिये लाल होता है।

कुम्हड़ा—(पु० हि०) एक फैलने वाली बेल। कुम्हड़े का फल।

कुम्हलाना—(क्रि० हि०) ताज़गी का जाता रहना।

कुम्हार—(पु० हि०) मिट्टी के बर्तन बनाने वाली जाति। मिट्टी का बर्तन बनानेवाला आदमी।

कुरता—(पु० तु०) एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है। कुरती=स्त्रियों का एक पहनावा जो कमुही की तरह का होता है।

कुरबान—(वि० अ०) बलिदान। कुरबानी=बलि।

कुरसी—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की चौकी जिसके पाये कुछ ऊँचे होते हैं, और जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिये पटरा या इसी प्रकार की और कोई चीज़ लगी रहती है।

कुरसीनामा—(पु० फ़ा०) वंश वृक्ष।

कुरान—(पु० अ०) अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसलमानों का धर्मग्रन्थ है।

कुराह—(स्त्री० फ़ा०) खराब रास्ता। कुराही=बदचलन। दुराचारी।

कुरिया—(स्त्री० हि०) मँड़ई।

कुरीति—(स्त्री० सं०) बुरी रीति। कुचाल।

कुरुई—(स्त्री० हि०) मौनी। मूँज की बनी छोटी डलिया।

कुरुख—(वि० सं० फ़ा०) नाराज़।

कुरूप—(वि० सं०) बदसूरत। बेढंगा। —ता=बदसूरती।

कुरेदना—(क्रि० हि०) खरोंचना।

कुर्क—(वि० तु०) ज़ब्त। —अमीन=वह सरकारी कर्मचारी जो जायदाद की कुर्की करता है। —नामा=ज़ब्ती का परवाना। कुर्की=देन चुकाने या भागे हुये अपराधी को अदालत में हाजिर कराने

के लिये कर्जदार या अपराधी की जायदाद का सरकार द्वारा ज़ब्त किया जाना।

कुर्मी—(पु० हि०) कुनबी।

कुलंग—(पु० फा०) एक पक्षी। मुर्गा।

कुलंजन—(पु० स०) पान की जड़ या डंठल।

कुल—(पु० स०) वंश। जाति। समूह। —कटर=अपनी कुचाल से अपने वंश को दुखी करनेवाला आदमी। —कलंक=वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला। —तारन=कुल को पवित्र करनेवाला। —देव=कुल का प्राचीन देवता। —पति=घर का मालिक। अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। वह ऋषि जो दस हज़ार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे। महंत। —पूज्य=जो कुल का पूज्य हो। —वधू—कुलवती स्त्री। —वंत=कुलीन। —वान=कुलीन। कुलांगार=कुल नाशक।

कुलकुल—(पु० अ०) सुराही में से पानी उँडेलते समय का शब्द।

कुलक्षण—(पु० स०) बुरा लक्षण। बदचलनी।

कुलटा—(स्त्री० स०) व्यभिचारिणी।

कुलफा—(पु० फ़ा० खुर्फा) एक प्रकार का साग।

कुलफी—(स्त्री० हि०) बर्फ़ जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शर्बत।

कुलबुलाना—(क्रि० अनु०) बहुत से छोटे छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना डोलना। धीरे धीरे हिलना डोलना। चंचल होना। कुलबुलाहट=धीरे धीरे हिलने डोलने का भाव।

कुलह—(स्त्री० फ़ा०) टोपी। शिकारी चिड़ियों की आँख पर का ढकन। कुलहा=टोपी। शिकारी चिड़ियों की

आँख ढकने की अँधियारी। कुनही=कनटोप।
कुलाग—(फ़ा०) जङ्गली कौआ।
कुलाबा—(पु० अ०) लोहे का ज़ंजीरा जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है।
कुलाह—(पु० स०) भूरे रंग का घोड़ा। (स्त्री० फा०) एक प्रकार की ऊँची टोपी जो फारस और अफ़ग़ानिस्तान आदि में पहनी जाती है।
कुली—(पु० तु०) बोझ ढोने वाला।
कुलीन—(वि० स०) अच्छे घराने का। पवित्र।
कुल्ला—(पु० हि०) (स्त्री० कुल्ली) मुख को साफ़ करने के लिये उसमें पानी लेकर इधर उधर हिलाकर फेंकने की क्रिया। उतना पानी जितना एक बार मुँह में लिया जाय।
कुल्हड़—(स्त्री० हि०) पुरवा। कुल्हिया=छोटा पुरवा।
कुल्हाड़ा—(पु० हि०) एक औज़ार जिससे बढ़ई आदि पेड़ काटते हैं। टाँगा। कुल्हाड़ी=टाँगी।
कु—(स०) बुरा। —वाक्य=गाली। —वासना=बुरी इच्छा। —विचार=बुरा विचार। —शासन=बुरा प्रबन्ध। —संग=बुरा साथ। —संगति=बुरों का संग। —संस्कार=बुरा संस्कार। —समय=बुरा समय। संकट का समय। —साइत=बुरी साइत।
कुश—(पु० स०) काँस की तरह की एक घास।
कुशन—(पु० अ०) मोटा गद्दा। तकिया।
कुशल—(वि० स०) चतुर। श्रेष्ठ। पुण्यशील। मंगल। ख़ैरियत। —क्षेम=राज़ी ख़ुशी। —ता=चतुराई। योग्यता। —प्रश्न=किसी का कुशल मंगल पूछना। कुशलता=कुशल-समाचार।
कुशाग्र—(वि० स०) तेज़।
कुशादगी—(स्त्री० फ़ा०)

फैलाव । कुशादा=खुला हुआ । विस्तृत ।

कुशासन—(पु० स०) कुश का बना हुआ आसन ।

कुश्ता—(पु० फ़ा०) भस्म ।

कुश्ती—(स्त्री० फ़ा०) मल्लयुद्ध । —बाज़=पहलवान ।

कुष्ठ—(पु० स०) कोढ़ ।

कुसी—(स्त्री०हि०) हलका फाल ।

कुसुम—(पु०स०) कुसुम । केसर । कुसुमी=कुसुम के रंग का ।

कुसुम—(स०) फूल । —बाण=कामदेव । —शर=कामदेव । कुसुमाञ्जलि=फूल से भरी हुई अंजली । पुष्पांजलि । न्याय का एक ग्रन्थ । कुसुमाकर=बसंत । वाटिका । कुसुमायुध=कामदेव । कुसुमावलि=फूलों का गुच्छा । कुसुमित=फूला हुआ ।

कुहकना—(क्रि० अ० हि०) पक्षी का मधुर स्वर में बोलना ।

कुहनी—(स्त्री० स०) हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी ।

कुहर—(पु० स०) गड्ढा । सुराख़ ।

कुहरा—(पु० हि०) वायु में जल के अत्यन्त सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंढ पाकर वायु में मिली हुई भाप के जमने से उत्पन्न होता है । कुहासा=कुहरा ।

कुहराम—(पु० अ० क़हर-आम) हाहाकार ।

कुहाना—(क्रि० हि०) नाराज़ होना ।

कूस—(फ़ा०) गली । कूचा ।

कूँड़—(स्त्री० हि०) हल जोतने से बनी हुई रेखा । सिर को बचाने के लिये लोहे की एक ऊँची टोपी । कूँड़ा=पानी रखने का मिट्टी का गहरा बर्तन । गमला । रोशनी करने की एक प्रकार की बड़ी हाँड़ी जिसको डोल भी कहते हैं । कूँड़ी=पथरी । छोटी नाँद । कांड के बीच का वह गड्ढा जिसमें जाठ रहती है ।

कूद—(स्त्री० हि०) जल में होने

वाला कमल की तरह का एक फूल।

कूए—(स्त्री०) गली। कूचा।

कूकर—(पु० हि०) कुत्ता।

कूच—(पु० तु०) रवानगी।

कूचा—(पु० फा०) छोटा रास्ता। झाड़ू।

कूज—(स्त्री० हि०) ध्वनि। —ना=कोमल और मधुर शब्द करना। कूजित=ध्वनित।

कूजा—(पु० फा० कूज़ा) पुरवा। मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई मिसरी।

कूट—(पु० सं०) पहाड़ की ऊँची चोटी। गूढ़ भेद। —नीति=दाँव पेंच की नीति या चाल। —युद्ध=धोखे की लड़ाई। —स्थ=छिपा हुआ। अविनाशी। अचल। आला दर्जे का।

कूटू—(पु० हि०) एक प्रकार का पौधा। फाफर।

कूड़ा—(पु० हि०) ज़मीन पर पड़ी हुई गर्द। बेकाम चीज़। —खाना=जहाँ कूड़ा फेंका जाता है।

कूढ़—(पु० हि०) हल का वह भाग जिसके एक सिरे पर मुठिया और दूसरे पर खोंपी होती है। (वि०) मूर्ख। —मग्ज़=मंद बुद्धि।

कूच—(फा०) गमन। रवाना होना।

कूचा—(फा०) गली।

कून—(फा०) गुदा। मलद्वार।

कूदना—(क्रि० हि०) फाँदना। जान बूझकर ऊपर से नीचे की ओर गिरना। किसी काम या बात के बीच में सहसा आ मिलना या दख़ल देना। क्रम भङ्ग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना। अत्यन्त प्रसन्न होना। बढ़-बढ़कर बातें करना।

कूप—(पु० सं०) कुआँ।

कूपन—(पु० अं०) मनीआर्डर फ़ार्म का वह भाग जिस पर रुपया भेजने वाला कुछ समाचारादि लिख सकता है।

कूप मंडूक—(पु० सं०) कुएँ का मेढक। वह आदमी जो अपना स्थान छोड़कर कहीं बाहर न गया हो या बाहरी संसार की जिसको कुछ भी ख़बर न हो।

कूबड़—(पु० हि०) पीठ का टेढ़ापन। किसी चीज़ का टेढ़ापन।

कूल्हा—(पु० हि०) कोख के नीचे कमर में पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।

कूवत—(स्त्री० अ०) ज़ोर।

कृत—(वि० सं०) किया हुआ। रचित। —कर्मा=कामयाब। —कार्य=कामयाब। —कृत्य=कृतार्थ। —घ्न=नमकहराम। —घ्नी=कृतघ्न। —ज्ञ=एहसान मानने वाला। —ज्ञता=निहोरा मानना। —युग=सतयुग। —विद्य=जिसे विद्या का अभ्यास हो। कृतांजलि=हाथ जोड़े हुये। कृतांत=अंत करने वाला। यम। कृतात्मा=महात्मा। कृतार्थ=सफल-मनोरथ। संतुष्ट। कृति=करतूत। कार्य। कृती=पुण्यात्मा। साधु। कुशल। कृत्य=कर्तव्य कर्म। कृत्याकृत्य=भला और बुरा काम। कृत्रिम=बनावटी। कृदंत=वह शब्द जो धातु में कृत प्रत्यय लगाने से बने।

कृत्तिका—(स्त्री०सं०) एक नक्षत्र।

कृपण—(पु० सं०) कंजूस। नीच।

कृपया—(क्रि० वि० सं०) कृपा करके।

कृपा—(स्त्री० सं०) दया। क्षमा। कृपा पात्र=कृपा का अधिकारी। कृपायतन=कृपा का भवन। कृपालु=दयालु।

कृपाण—(पु० सं०) तलवार। कटार।

कृमि—(पु० सं०) छोटा कीड़ा।

कृश—(वि० सं०) दुबला-पतला। छोटा। —ता=दुबलापन। कमी। —त्व=दुबलापन। कमी। कृशित=दुर्बल।

कृशानु—(पु० स०) अग्नि।

कृपक—(पु० स०) किसान। कृषि=खेती। कृषिकार=किसान।

कृष्ण—(वि० स०) काला। नीला या आसमानी। यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो देवकी के गर्भ से उत्पन्न हुये थे। —पक्ष=अँधियारा पक्ष। —सखा=अर्जुन। —सार=काला मृग। कृष्णाष्टमी=जिस दिन कृष्णचन्द्र का जन्म हुआ था। कृष्णा=द्रौपदी। कृष्णाजिन=काले मृग का चमड़ा।

केँचुआ—(पु० हि०) एक बरसाती कीड़ा जो एक बालिश्त या इससे कुछ और लंबा होता है। इसके तन में हड्डी नहीं होती। केँचुए के आकार का सफ़ेद कीड़ा जो पेट से मल द्वारा बाहर निकलता है।

केँचुल—(स्त्री० हि०) साँप के शरीर पर की खोल।

केन्द्र—(पु० स०) मध्य। नाभि। बीच का स्थान।

केकड़ा—(पु० हि०) पानी का एक कीड़ा जिसके आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं।

केका—(स्त्री० स०) मोर की बोली। केकी=मोर।

केतकी—(स्त्री० स०) एक प्रकार का छोटा झाड़ या पौधा।

कदली—(पु० सं०) केले का पेड़।

केमरा—(पु० अं०) फोटो खींचने का यंत्र।

केराना—(क्रि० हि०) सूप में अन्न रखकर उसे हिला-हिला कर बड़ और छोटे दाने अलग करना। नमक मसाला हल्दी आदि चीज़ें जो नित्य के व्यवहार में आतीं और पंसारियों के यहाँ मिलती हैं।

केरानी—(पु० अ० क्रिश्चियन) वह मनुष्य जिसके माता पिता में से कोई एक युरोपियन और दूसरा हिन्दुस्तानी हो। क्लर्क।

केराव—(पु० हि०) मटर

केरोसिन—(पु० अं०) मिट्टी का तेल।

केला—(पु० हि०) एक प्रकार का पेड़। केले का फल।

केलि—(स्त्री० सं०) खेल। मैथुन। हँसी।

केवट—(पु० हि०) क्षत्रिय पिता और वैश्या माता से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति।

केवटी दाल—(स्त्री० हि०) दो या अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दाल।

केवड़ा—(पु० हि०) सफ़ेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। एक पेड़ जो हरद्वार के जंगलों और बरमा में होता है।

केवल—(वि० सं०) अकेला। शुद्ध। उत्तम। सिर्फ़।

केशव—(पु० सं०) कृष्ण का एक नाम।

केस—(पु० अं०) मुक़दमा। हाजत। घटना।

केसर—(पु० सं०) एक प्रकार के फूल की पंखड़ियाँ जानवरों की गर्दन पर के बाल। केसरिया=केसर के रंग का। केसरी=सिंह।

कैंची—(स्त्री० तु०) कतरनी।

कैंड़ा—(पु० हि०) पैमाना। चाल। चालबाज़ी।

कैंप—(पु० अं०) छावनी। पड़ाव।

कैटलग—(पु० अं०) सूचीपत्र। फ़ेहरिस्त।

कैथ—(पु० हि०) एक कँटीला पेड़ जो बेल के पेड़ के सामान होता है। कैथी=एक पुरानी लिपि जो नागरी से मिलती जुलती है। प्राय कायस्थ लोग इसमें लिखते हैं।

कैद—(स्त्री० अ०) बन्धन। दंड। कारावास। —क= काग़ज़ की पट्टी जिसमें किसी एक विषय या व्यक्ति से संबंध रखनेवाले कागज़ादि रक्खे जाते हैं। —खाना=कारागार। जेलखाना। —तनहाई=काल‌कोठरी। —महज़

=सादी कैद । —सख्त= कड़ी क़ैद । क़ैदी=बन्दी ।

कैप—(स्त्री० अ०) टोपी ।

कैपिटल—(पु० अ०) धन । पूँजी । राजधानी ।

कैपिटलिस्ट—(पु० अ०) पूँजीपति ।

कैफ—(पु० अ०) नशा । कैफी=मतवाला । नशेबाज़ ।

कैफ़ियत—(स्त्री० अ०) समाचार । विवरण ।

कैबिनेट—(स्त्री० अ०) मुख्य मन्त्रियों की वह विशेष सभा जो किसी एकान्त स्थान में बैठ कर राज्य प्रबन्ध पर विचार करे । मन्त्रिमंडल । लकड़ी का बना हुआ सामान । फोटो का एक आकार जो कार्ड साइज का दूना होता है ।

कैरट—(पु० अ०) करात । एक प्रकार का मान ।

कैलंडर—(पु० अ०) अँगरेजी तिथि पत्र या पचांग। सूची । रजिस्टर ।

कैलास—(पु० सं०) हिमालय की एक चोटी का नाम ।

कैवल्य—(पु० सं०) मुक्ति ।

कैश—(पु० अं०) रुपया-पैसा । नगदी । (वि०) जिसका दाम नगद लिया गया हो । —बॉक्स=रुपये रखने का छोटा सन्दूक ।

कैशियर—(पु० अ०) खजांची ।

कैस—(अ०) लैला के प्रेमी मजनूँ का नाम ।

कैसर—(पु० सं० सीज़र) सम्राट् । जर्मनी के सम्राट् की उपाधि ।

कैसा—(वि० हि०) किस प्रकार का ।

कोंकण—(पु० सं०) दक्षिण भारत का एक प्रदेश ।

कोंचना—(क्रि० हि०) चुभाना ।

कोंचा—(पु० हि०) बहेलियों की वह लम्बी लग्गी जिसके पतले सिरे पर वे लासा लगाये रहते हैं और जिससे वृक्ष पर बैठे हुए पक्षी को कोंचकर फँसा लेते हैं ।

कौंछ—(पु० हि०) स्त्रियों के अंचल का एक कोना।

कौंढा—(पु० हि०) धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें जंजीर या और कोई वस्तु अटकाई जाती है।

कौंपर—(पु० हि०) छोटा अध पका आम।

कौंहड़ा—(पु० हि०) कुम्हड़ा। कोंहड़ौरी=कुम्हड़े की या पेठे की बनाई हुई बरी।

कोआ—(पु० हि०) रेशम के कीड़े का घर। टसर नामक रेशम का कीड़ा। महुए का पका फल। कटहल के पके हुये बीज।

कोइरी—(पु० हि०) एक जाति। जो तरकारी बोती है।

कोइली—(स्त्री० हि०) वह कच्चा आम जिसमें किसी प्रकार का आघात लगने से एक काला सा दाग पड़ जाता है।

कोई—(सर्व०) एक भी (मनुष्य)।

कोका—(पु० अ०) दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिससे थाकेन निकलती है। (पु०) धाय की सन्तान। कोकेन=कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की गंधहीन और सफ़ेद रंग की औषधि। कोक-शास्त्र=रति करने की क्रिया बतानेवाला शास्त्र जिसे कोक पण्डित ने बनाया था।

कोकिल—(स्त्री० स०) कोयल। कोकिला=कोयल।

कोच—(पु० अ०) गद्देदार बढ़िया पलँग, बेंच या आराम कुर्सी। —ना=धँसाना। —क=(प्रा०) छोटा।

कोचमैन—(पु० अ०) घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोच बक्स—(पु० अ०) घोड़ा गाड़ी में वह ऊँचा स्थान जिसपर हाँकनेवाला बैठता है। कोचवान=घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोचीन—(पु० हि०) मद्रास प्रान्त की एक देशी रियासत

जो ग्राण्डकोर राज्य के उत्तर में है।

कोट—(पु० स०) क़िला। राज मन्दिर। (अ०) अँगरेज़ी ढंग का एक पहनावा जो कमीज़ के ऊपर पहना जाता है। —पाल=क़िले की रक्षा करनेवाला। कोतवाल।

कोटर—(पु० स०) पेड़ का खोखला भाग।

कोटि—(स्त्री० स०) धनुष का सिरा। कमान का गोशा। श्रेणी। (वि०) करोड़। —श=करोड़ों।

कोटेशन—(पु० अ०) लेख या वाक्य का उद्धृत अंश। सीसे का ढला हुआ चौकोर पोला टुकड़ा जो कम्पोज़ करने में खाली स्थान भरने के काम में आता है।

कोठरी—(स्त्री० हि०) छोटा कमरा। कोठा=बड़ी कोठरी। भंडार। अटारी। पेट। गर्भाशय। घर। कोठार=भंडार। कोठारी=भंडारी। कोठी=हवेली। बँगला। बड़ी दूकान जिसमें थोक की बिक्री होती हो। भंडार। कोठीवाल=महाजन। बड़ा। व्यापारी।

कोड—(पु० अ०) संकेत। विधान। किसी विषय के प्रयोग के नियम आदि का संग्रह। क़ानून।

कोड़ा—(पु० हि०) चाबुक।

कोड़ी—(स्त्री० अ०) बीस का समूह।

कोढ़—(पु० हि०) एक प्रकार का रक्त और त्वचा सम्बन्धी रोग। कोढ़ी=कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

कोण—(पु० स०) कोना।

कोतल—(पु० फ़ा०) जलूसी घोड़ा। (वि०) खाली।

कोतल गारद (पु० अ० कार्टर गार्ड) छावनी का वह प्रधान स्थान जहाँ हर समय गारद रहती है।

कोतवाल—(पु० स० कोट पाल) पुलिस का इन्स्पेक्टर।

कोंछ—(पु० हि०) स्त्रियों के अंचल का एक कोना।

कोंढ़ा—(पु० हि०) धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें जंजीर या और कोई वस्तु अटकाई जाती है।

कोंपर—(पु० हि०) छोटा अध पका आम।

कोंहड़ा—(पु० हि०) कुम्हड़ा। कोंहड़ौरी=कुम्हड़े की या पेठे की बनाई हुई बरी।

कोआ—(पु० हि०) रेशम के कीड़े का घर। टसर नामक रेशम का कीड़ा। महुए का पका फल। कटहल के पके हुये बीज।

कोइरी—(पु० हि०) एक जाति। जो तरकारी बोती है।

कोइली—(स्त्री० हि०) वह कच्चा आम जिसमें किसी प्रकार का आघात लगने से एक काला सा दाग पड़ जाता है।

कोई—(सव०) एक भी (मनुष्य)।

कोका—(पु० अ०) दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिससे कोकेन निकलती है। (तु०) धाय की सन्तान। कोकेन=कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की गन्धहीन और सफेद रंग की औषधि। कोक-शास्त्र=रति करने की क्रिया बतानेवाला शास्त्र जिसे कोक पण्डित ने बनाया था।

कोकिल—(स्त्री० स०) कोयल। कोकिला=कोयल।

कोच—(पु० अ०) गद्देदार बढ़िया पलँग, बेंच या आराम कुर्सी। —ना=धँसाना। —क=(फ़ा०) छोटा।

कोचमैन—(पु० अ०) घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोच बक्स—(पु० अ०) घोड़ा गाड़ी में वह ऊँचा स्थान जिसपर हाँकनेवाला बैठता है। कोचवान=घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोचीन—(पु० हि०) मद्रास प्रान्त की एक देशी रियासत

कोरम—(पु० अ०) कार्य निर्वाहक-सदस्य सख्या । निश्चित सख्या।

कोरमा—(पु० तु०) अधिक घी में भुना हुआ एक प्रकार का मांस जिसमें जल का अश या शोरबा बिल्कुल नहीं होता ।

कोरस—(अ०) कइयों का मिलकर एक स्वर में गाना बजाना ।

कोरा—(वि० हि०) जिसका व्यवहार न हुआ हो । कपड़ा या मिट्टी का बर्तन जिससे जल का स्पर्श न हुआ हो । सादा । खाली । बेदाग । मूर्ख । धनहीन । केवल । —पन = नवीनता ।

कोरी—(पु० हि०) हिंदू जुलाहा । वस्तुओं का समूह । जो काम में न लाई गई हो । सादी ।

कोर्ट—(पु० अ०) अदालत । —आफ वॉर्ड्स=वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा किसी अनाथ, विधवा या अयोग्य मनुष्य की भारी जायदाद का प्रबन्ध होता है । —इन्स्पेक्टर = पुलीस का वह कर्मचारी जो पुलीस की ओर से फौजदारी अदालतों में मुकद्दमों की पैरवी करता है । —फीस = अदालती रसूम । —मार्शल = फौजी अदालत जिसमें सेना के नियमों का भंग करनेवाले, सेना छोड़कर भागनेवाले तथा बागी सिपाहियों का विचार होता है । —शिप = एक पाश्चात्य प्रथा जिसके अनुसार पुरुष किसी स्त्री को अपने साथ विवाह करने के लिये उद्यत और अनुकूल करता है ।

कोर्स—(पु० अ०) पाठ्यक्रम । पाठ्य पुस्तक ।

कोषाध्यक्ष—(पु० स०) खज़ाची ।

कोला—(अ०) अफ्रिका के गर्म प्रदेशों में होनेवाला एक पेड़ ।

कोतह—(वि० फा०) छोटा। —गरदन = जिसकी गरदन छोटी हो। कोताह = छोटा। कोताही = कमी।

कोथला—(पु० हि०) बड़ा थैला। पेट। कोथली = रुपये आदि रखने की एक प्रकार की लंबी पतली थैली जिसे लोग कमर में बाँधकर रखते हैं। गँजिया।

कोना—(पु० हि०) गोशा। कुनाला सिरा।

कोप—(पु० सं०) क्रोध।

कोफ्त—(पु० फा०) रंज। परेशानी।

कोफ्ता—(पु० फा०) कूटे हुये मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

कोया—(पु० फा०) मेंगनी। झुरमुट।

कोमल—(वि० सं०) मुलायम। सुकुमार। सुंदर। —ता = नरमी। मधुरता।

कोयर—(पु० हि०) सागपात। यह हरा चारा जो मवेशी आदि को दिया जाता है।

कोयल—(स्त्री० हि०) कोकिला।

कोयला—(पु० हि०) वह जला हुआ अंश जो जली हुई लकड़ी के अंगारों को बुझाने से बचता है।

कोया—(पु० हि०) आँख का डेला। आँख का कोना।

कोर—(स्त्री० हि०) किनारा। कोना। (फा०) पलटन। सैन्य दल।

कोरकसर—(स्त्री० हि०+फा०) ऐब और कमी। अधिकता या न्यूनता।

कोरट—(पु० अं० कोर्ट आफ वार्ड्स) कोर्ट आफ वार्ड्स। किसी जायदाद का कोर्ट आफ वार्ड्स के प्रबन्ध में आना या लिया जाना।

कोरना—(क्रि० हि०) लकड़ी आदि में कोर निकालना। नक्काशी करना।

कोरनिश—(पु०) झुक-झुककर सलाम करना।

कुल देवता स्थापित किये जाते हैं।

कोहा—(पु० हि०) मिट्टी का बरतन। खोपड़ी के आकार का मिट्टी का बर्तन।

कोहान—(पु० फ़ा०) ऊँट की पीठ पर का कूबड़।

कोहिस्तान—(पु० फ़ा०) पहाड़ी देश।

कौंची—(स्त्री० हि०) बाँस की पतली टहनी।

कौंट—(पु० अ०) युरोप के सामन्तों या बड़े बड़े जमींदारों की उपाधि।

कौंसल—(पु० अ०) बैरिस्टर। एडवोकेट।

कौंसलर—(पु० अ०) परामर्श दाता।

कौंसिल—(अ०) विचार-सभा।

कौच—(स्त्री० अ०) मोटे गद्दे का अँगरेज़ी पलँग या बेंच।

कौटुम्बिक—(वि० स०) कुटुम्ब का। परिवारवाला।

कौड़ी—(स्त्री० हि०) समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह हड्डी के एक ढाँचे के अन्दर रहता है। कौड़ा=बड़ी कौड़ी। कौड़ियाला=कौड़ी के रंग का।

कौड़िल्ला—(पु० हि०) मछली पकड़कर खानेवाली एक चिड़िया।

कौड़ेना—(पु० हि०) कसेरों का लोहे का एक औज़ार।

कौतुक—(पु० स०) कुतूहल। दिल्लगी। खेल। तमाशा। कौतुकी=कौतुक करनेवाला। खेल। तमाशा करनेवाला। कौतूहल=कौतुक।

कौथ—(स्त्री० हि०) कौन सी तिथि। कौन सम्बन्ध। कौथा=किस संख्या का।

कौम—(स्त्री० अ०) जाति।

कौमियत—(स्त्री० अ०) जाती-यता।

कौमी—(वि० अ०) जातीय।

कौर—(पु० हि०) निवाला।

कौरना—(क्रि० हि०) सेंकना।

कौलज—(पु० यू० कूलज) वायु शूल। कॉलिक पेन।

कोलाहल—(पु० स०) शोर।

कोलिया—(स्त्री० हि०) तंग रास्ता।

कोविद—(वि० स०) पंडित।

कोश—(पु० स०) खजाना। डिब्बा। डिक्शनरी। —कार=शब्द कोश बनानेवाला। —वृद्धि=अंड-वृद्धि का रोग। कोशाधिप, कोशाधिपति=खजानची—कोशाधीश=भंडारी। कोष=कोश।

कोशल—(पु० स०) सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों पर का देश। कोशल।

कोशिश—(पु० फ़ा०) प्रयत्न।

कोष्ठ—(पु० स०) पेट का भीतरी हिस्सा। कोठा। —क=किसी प्रकार की दीवार। किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से घर हों। लिखने में एक प्रकार का चिह्नों का जोड़ा जिसके भीतर कुछ वाक्य या अंक आदि लिखे जाते हैं। (अं०) ब्रैकेट। —बद्ध=पेट में मल का रुकना। —शुद्धि=पेट का मल-रहित और बिलकुल साफ़ हो जाना।

कोस—(पु० हि०) दूर की एक नाप। जो २८२० गज़ की मानी जाती है।

कोसना—(क्रि० हि०) शाप के रूप में गालियाँ देना।

कोसा—(पु० हि०) एक प्रकार का रेशम जो मध्य भारत में अधिक होता है। मिट्टी का बड़ा दीया। कोसिया=मिट्टी का छोटा कसोरा। चूना रखने की कुँड़ी।

कोह—(फ़ा०) पहाड़।

कोहकन—(फ़ा०) फरहाद। पहाड़ खोदनेवाला।

कोहकाफ़—(पु० फ़ा०) योरप और एशिया के बीच का पहाड़। परिस्तान।

कोहनूर—(पु० फ़ा०) एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध हीरा।

कोहबर—(पु० हि०) वह स्थान या घर जहाँ विवाह के समय

क्राउन प्रिंस—(पु० अ०) युव राज।

क्रिकेट—(अ०) गेंद का एक खेल।

क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट—(पु० अ०) खुफिया महकमा। पुलिस। सी० आई० डी०।

क्रिमिनल प्रोसीजर कोड—(पु० अ०) दंड विधान। ज़ाब्ता फौजदारी।

क्रिया—(स्त्री० स०) चेष्टा। अनुष्ठान। श्राद्धादि कर्म। प्रेत कर्म। उपाय। —निष्ट= स्नान, सन्ध्या,तपस्यादि नित्य कर्म करनेवाला। —वान कर्मनिष्ठ।

क्रिस्टल—(पु० अ०) बिल्लौर। शोरे आदि का जमा हुआ रवादार टुकड़ा।

क्रिस्टान—(पु० अ०) "क्रिस्तान =ईसाई। क्रिस्तानी= ईसाई मतानुसार।

क्रीडा—(स्त्री० स०) कल्लोल।

क्रीत—(वि० स०) क्रय किया हुआ। —दास=ज़रख़रीद गुलाम।

क्रीम—(अ०) मलाई।

क्रूज़र—(पु० अ०) तेज़ चलने वाला हथियारबन्द जहाज़। रक्षक जहाज़।

क्रूर—(वि० स०) निर्दय। —कर्मा=क्रूर काम करने वाला। —ता=कठोरता। दुष्टता।

क्रूस—(पु० अ० क्रास) ईसाइयों का एक प्रकार का धर्म-चिह्न।

क्रेडिट—(पु० अ०) बाज़ार में साख मर्यादा, जिसके कारण मनुष्य लेनदेन कर सकता है। साख।

क्रेता—(पु० स०) मोल लेने-वाला।

क्रेन—(अ०) बोझा उठानेवाली चोंचनुमा मशीन।

क्रोडपत्र—(पु० स०) अतिरिक्त पत्र। सप्लीमेंट।

क्रोध—(पु० स०) गुस्सा।

कौल—(पु० सं०) वाममार्गी।
कौल—(पु० तु० करावल) सेना की छावनी का मध्य भाग। (अ०) कथन। प्रतिज्ञा।
कौवाल—(पु० अ०) मुसल मानों में गवैयों की एक जाति जो क़ौवाली गाती है। क़ौवाली=एक प्रकार का गाना जो पीरों की मज़ार या सूफ़ियों की मजलिसों में होता है।
कौशल—(पु० सं०) कुशलता। चतुराई। कौशल देश का निवासी। कौशल्या=राम चन्द्र की माता।
कौस—(अ०) कमान। परिधि का टुकड़ा।
कौसकुज़ा—(अ०) इन्द्र धनुष।
क्यों—(क्रि० वि० हि०) किस कारण ? किस भाँति।
क्रन्दन—(पु० सं०) रोना।
क्रम—(पु० सं०) शैली। सिल सिला। —श=सिलसिले वार। धीरे धीरे। क्रमागत=क्रमशः किसी रूप को प्राप्त। परंपरागत। क्रमानुसार=क्रमशः।
क्रय—(पु० सं०) मोल लेना। क्रयी=मोल लेनेवाला। क्रय्य=जो बिक्री के लिये रक्खा जाय।
क्रांति—(स्त्री० सं०) खगोल में वह कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है। फेर फार। —मंडल=वह वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है। —वृत्त=सूर्य का मार्ग। इन्क़िलाब।
क्राइस्ट—(पु० अ०) ईसामसीह।
क्राउन—(पु० अ०) राजमुकुट। छापे के काग़ज़ की एक नाप जो १५ इंच चौड़ा और बीस इंच लम्बा होता है। राजा।
क्राउन कालोनी—(स्त्री० अ०) वह उपनिवेश जो किसी राज्य के अधीन हो।

सूँघने से आदमी बेहोश हो जाता है।

क्वचित—(क्रि० वि० सं०) शायद ही कोई।

क्वारन्टाइन—(पु० अ०) वह स्थान जहाँ प्लेग या दूसरी छूतवाली बीमारी के दिनों में रेल या जहाज के यात्री कुछ दिनों के लिये सरकार की ओर से रोक कर रक्खे जाते हैं।

क्वारापन—(पु०) कुमारपन। क्वारा =जिसका विवाह न हुआ हो।

क्वार्टर—(पु० अ०) बस्ती। बाड़ा। डेरा। मुकाम।

क्वेश्चन—(पु० अ०) प्रश्न। सवाल।

क्वेश्चन पेपर—(पु० अ०) परीक्षा पत्र। प्रश्न-पत्र।

क्वाड्रेट—(पु० अ०) छापे में सीसे का ढला हुआ चौकोर टुकड़ा जो कम्पोज़ करने में खाली जगह आदि भरने के काम में आता है।

क्वाथ—(पु० सं०) काढ़ा।

क्वार्टर मास्टर—(पु० अ०) एक फ़ौजी अफसर जिसका काम सैनिकों के लिये स्थान, भोजन और वस्त्र आदि आवश्यक सामग्रियों का प्रबन्ध करना होता है। जहाज़ का एक अफ़सर जो रंगीन झंडी, लालटेन या अन्य संकेत दिखलाकर मल्लाहों को जहाज़ चलाने में सहायता देता और उन्हें समुद्र की गहराई और दिशा आदि बतलाता है।

क्विाड्रा—(पु० अ०) कुबेर।

क्षतव्य—(वि० सं०) क्षमा करने के योग्य।

क्षण—(सं०) पल। —प्रभा= बिजली। —भंगुर=अनित्य। क्षणिक=क्षणभंगुर।

क्षत—(वि० सं०) घाव। फोड़ा। आघात पहुँचाना।

क्षति—(स्त्री० सं०) हानि। नाश।

क्षत्र—(पु० सं०) बल। राष्ट्र। धन। क्षत्रिय=हिन्दुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। राजा। बल। क्षात्र=क्षत्रियों का।

क्रोधित=क्रुद्ध । क्रोधी=क्रोध करनेवाला ।

क्लच—(अ०) मोटर के रोकने का एक पुरज़ा ।

क्लब—(पु० अ०) साहित्य, विज्ञान, राजनीति आदि सार्वजनिक विषयों पर विचार करने अथवा आमोद प्रमोद के लिये सघटित की हुई कुछ लोगों की समिति । मनोविनोद की जगह ।

क्लर्क—(पु० अ०) मुंशी । लेखक ।

क्लान्त—(वि० स०) थका हुआ । क्लान्ति=परिश्रम ।

क्लाउन—(पु० अ०) सरकस आदि का मसखरा ।

क्लाक—(स्त्री० अ०) बड़ी घड़ी जो लकड़ी आदि के चौखटों में जड़ी होती है । दीवार पर की घड़ी ।

क्लाक टावर—(पु० अ०) घंटा घर ।

क्लाथ—(अ०) कपड़ा ।

क्लारनेट—(पु० अ०) एक प्रकार का अँगरेज़ी बाजा जो मुँह से बजाया जाता है ।

क्लारेट—(पु० अ०) एक प्रकार की विलायती शराब ।

क्लास—(पु० अ०) दरजा ।

क्लिप—(स्त्री० अ०) चपेजनुमा एक कमानी जिसमें चिट्ठियाँ कागजादि को एकत्र करके इस लिए लगाया जाता है कि वे सब इधर उधर न होने पावें । पकड़ने की चिमटी ।

क्लियर—(क्रि० अ०) साफ़ करना ।

क्लिशित—(वि० स०) क्लेश पाया हुआ । क्लिष्ट=दुखी । कठिन । —कल्पना=बहुत घुमा फिरा कर लगाया हुआ अर्थ ।

क्लीव—(पु० स०) नामर्द । डरपोक ।

क्लीन—(क्रि० अ०) दाग़ ।

क्लेश—(पु० स०) दुख ।

क्लैव्य—(पु० स०) नपुंसकता ।

क्लोरोफार्म—(पु० अ०) एक प्रसिद्ध सरल औषधि जिसके

सूँघने से आदमी बेहोश हो जाता है।

क्वचित—(क्रि० वि० सं०) शायद ही कोई।

क्वारंटाइन—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ प्लेग या दूसरी छूतवाली बीमारी के दिनों में रेल या जहाज़ के यात्री कुछ दिनों के लिये सरकार की ओर से रोक कर रक्खे जाते हैं।

क्वारापन—(पु०) कुमारपन। क्वारा=जिसका विवाह न हुआ हो।

क्वार्टर—(पु० अं०) बस्ती। बाड़ा। डेरा। मुकाम।

क्वेश्चन—(पु० अं०) प्रश्न। सवाल।

क्वेश्चन पेपर—(पु० अं०) परीक्षा पत्र। प्रश्न पत्र।

क्वाइन—(पु० अं०) छापे में सीसे का ढला हुआ चौकोर टुकड़ा जो कम्पोज़ करने में खाली लाइन आदि भरने के काम में आता है।

क्वाथ—(पु० सं०) काढ़ा।

क्वार्टर मास्टर—(पु० अं०) एक फ़ौजी अफ़सर जिसका काम सैनिकों के लिये स्थान, भोजन और वस्त्र आदि आवश्यक सामग्रियों का प्रबन्ध करना होता है। जहाज़ का एक अफ़सर जो रंगीन झण्डों, लालटेनों या अन्य संकेत दिखलाकर मल्लाहों को जहाज़ चलाने में सहायता देता और वह समुद्र की गहराई और दिशा आदि बतलाता है।

क्विनाइन—(पु० अं०) कुनैन।

क्षतव्य—(वि० सं०) क्षमा [illegible] के योग्य।

क्षण—(सं०) पल। —[illegible] बिजली। —भंगुर [illegible] क्षणिक=[illegible]।

क्षत—(वि० सं०) [illegible] आघात [illegible]

क्षति—(स्त्री० सं०) [illegible]

क्षत्र—(पु० सं०) [illegible] धन। [illegible]

क्षय—(पु० स०) प्रलय। नाश। रोग। क्षत।

क्षार—(पु० स०) नमक। सज्जी। शोरा।

क्षीण—(पु० स०) दुबला। —ता=कमजोरी। दुबलापन। सूक्ष्मता।

क्षीर—(पु० स०) दूध।

क्षुद्र—(पु० स०) नीच। कमीना। —ता=नीचता। ओछापन। क्षुद्राशय=कमीना।

क्षुद्र घंटिका—(स्त्री० स०) घुँघुरूदार करधनी।

क्षुधा—(स्त्री० स०) भूख। —तुर=भूखा। क्षुधित=भूखा।

क्षुब्ध—(त्रि० स०) चंचल। व्याकुल। भयभीत।

क्षेत्र—(पु० स०) खेत। समतल भूमि। उत्पत्ति स्थान। पुण्य स्थान। —फल=रकबा।

क्षेपक—(त्रि० स०) मिलाया हुआ।

क्षेम—(पु० स०) कल्याण। सुख।

क्षेमेंद्र—(पु० स०) काश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत-कवि, ग्रंथ-कार और इतिहासकार।

क्षोभ—(पु० सं०) घबराहट। रंज। क्रोध।

ख—हिन्दी वर्ण माला में कवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है।

खँखारना—(क्रि० हि०) खाँसना।

खङ्ग—(पु० हि०) तलवार।

खँगना—(क्रि० हि०) कम होना।

खँगारना—(क्रि० हि०) धोना।

खँचाना—(क्रि० हि०) अंकित करना।

खंजन—(पु० सं०) एक प्रसिद्ध पक्षी।

खंजर—(पु० फ्रा०) कटार।

खँजरी—(स्त्री० हि०) डफली की तरह का एक छोटा बाजा।

खंड—(पु० सं०) भाग। —काव्य=वह काव्य जिसमें 'काव्य' के सम्पूर्ण अलंकार या लक्षण न हों, बल्कि कुछ ही हों। —प्रलय=वह प्रलय जो एक चतुर्युगी या ब्रह्मा का एक दिन बीत जाने प — —हर=टूटे या गिरे हुये मकान का अवशिष्ट भाग। खंडित=टूटा हुआ। अपूर्ण।

खंडन—(पु० सं०) टुकड़े-टुकड़े करना। खंडनीय=तोड़ने फोड़ने लायक।

खँडपूरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की भरी हुई पूरी जिसके अन्दर मेवे और मसाले के साथ चीनी भरी जाती है।

खंता—(पु० हि०) वह औजार जिससे जमीन आदि खोदी जाती है।

खंदक—(स्त्री० अ०) शहर या क़िले के चारों ओर खोदी हुई खाईं। बड़ा गड्ढा।

खन्द—(फा०) हँसी।

खंभ—(पु० हि०) खंभा। सहारा। खंभा=स्तंभ।

खाँदगी—(फा०) शिक्षा। पढ़ाई।

ख्वाँदा—(फा०) साक्षर। पढ़ित।

खूँखार—(फा०) खूनी। खूँरेज=खूनी।

खखार—(सं० पु० अनु०) कफ। —ना=खाँसना।
खगोल—(पु० सं०) आकाश मंडल। —विद्या=ज्योतिष।
खग्रास=पूरा ग्रहण।
खचाखच—(क्रि० वि० अनु०) बहुत भरा हुआ।
खच्चर—(पु० हि०) गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।
खटना—(क्रि० अ०) कमाना। कड़ी मेहनत करना।
खटमल—(पु० हि०) खटकीड़ा।
खटमिट्ठा—(पु० हि०) कुछ खट्टा और कुछ मीठा।
खटाई—(स्त्री० हि०) खट्टापन। खटास=खट्टापन। खट्टा=कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का गुण।
खटिक—(पु० हि०) हिन्दुओं के अन्तर्गत एक जाति जिसका काम फल तरकारी आदि बोना और बेचना है।
खटिया—(स्त्री० हि०) छोटी चारपाई। खटोलना=खटोला=छोटी चारपाई।
खड़ंजा—(पु० हि०) ईंटों की खड़ी चुनाई।
खड़बड़ी—(स्त्री० हि०) उलट फेर। हलचल।
खड़भड़ल—(पु० हि०) गड़बड़।
खड़ा—(वि० हि०) ऊपर को उठा हुआ। ठहरा हुआ। प्रस्तुत। तैयार। प्रारम्भ। स्थापित। पूरा। ठहरा हुआ।
खड़ाऊँ—(स्त्री० हि०) काठ की पादुकी।
खड़िया—(स्त्री० हि०) सफ़ेद मिट्टी।
खड़ी बोली—(स्त्री० हि०) हिन्दी भाषा।
खड्ड—(पु० हि०) गड्ढा।
खत—(पु० अ०) चिट्ठी। लिखावट। रेखा। दाढ़ी के के बाल।
खतना—(हि० अ०) मुसलमानों की एक रस्म जिसमें उनके लिंग के अगले भाग का चमड़ा

हुआ धमड़ा काट लिया जाता है।

खतम—(त्रि० फा०) पूर्ण।

खतरा—(अ०) भय। खदेशा।

खतरानी—(स्त्री० हि०) खत्री जाति की स्त्री।

खता—(स्त्री० अ०) अपराध। धोखा। भूल। —वार= अपराधी।

खतियौनी—(स्त्री० हि०) खाता खतियाने का काम। वह कागज़ जिसमें पटवारी असामी का रक़बा और लगान आदि दर्ज करता है।

खतम—(अ०) शरीर। अन्त।

खत्ता—(पु० हि०) गड्ढा। अन्न रखने का स्थान।

खत्री—(पु० हि०) हिन्दुओं में क्षत्रियों के अन्तगत एक जाति जो अधिकतर पंजाब में बसती है। क्षत्रिय।

खदशा—(पु० अ०) डर।

खदान—(स्त्री० हि०) वह गड्ढा जिसे खोदकर उसके अन्दर से कोइ पदार्थ निकाला जाय।

खदीव—(पु० अ०) मिस्र के बादशाह की उपाधि।

खदेरना—(स० हि०) दौड़ाना।

खपची—(स्त्री० तु० कमची) कमठा। कबाब भूनने की सीख। बाँस की पतली कमी।

खपड़ा—(पु० हि०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मकान की छाजन पर रखने के काम आता है। खपड़ी=मिट्टी की वह हँड़िया जिसमें भँड़भूजे दाना भूनते हैं। खपरैल= खपड़े से छाई हुई छत।

खप्पर—(पु० हि०) तसले के आकार का मिट्टी का पात्र।

खफकान—(अ०) पागलपन। दिल की बीमारी।

खफगी—(स्त्री० फा०) अप्रसन्नता। क्रोध। खफा= नाराज़। क्रुद्ध।

खफीफ—(वि० अ०) थोड़ा। क्षुद्र। लज्जित।

खबर—(स्त्री० अ०) समाचार। सूचना। सँदेशा। सुधि।

खखार—(सं० पु० अनु०) कफ। —ना=खाँसना।

खगोल—(पु० सं०) आकाश मंडल। —विद्या=ज्योतिष। खग्रास=पूरा ग्रहण।

खचाखच—(क्रि० वि० अनु०) बहुत भरा हुआ।

खच्चर—(पु० हि०) गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।

खटना—(क्रि० अ०) कमाना। कड़ी मेहनत करना।

खटमल—(पु० हि०) खटकीड़ा।

खटमिट्ठा—(पु० हि०) कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

खटाई—(स्त्री० हि०) खट्टापन। खटास=खट्टापन। खट्टा=कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का गुण।

खटिक—(पु० हि०) हिन्दुओं के अन्तर्गत एक जाति जिसका काम फल तरकारी आदि बोना और बेचना है।

खटिया—(स्त्री० हि०) छोटी चारपाई। खटोलना=खटोला =छोटी चारपाई।

खड़ंजा—(पु० हि०) ईंटों की खड़ी चुनाई।

खड़बड़ी—(स्त्री० हि०) उलट फेर। हलचल।

खड़मंडल—(पु० हि०) गड़बड़।

खड़ा—(वि० हि०) ऊपर को उठा हुआ। ठहरा हुआ। प्रस्तुत। तैयार। आरम्भ। स्थापित। पूरा। ठहरा हुआ।

खड़ाऊँ—(स्त्री० हि०) काठ की पादुकी।

खड़िया—(स्त्री० हि०) सफ़ेद मिट्टी।

खड़ी बोली—(स्त्री० हि०) हिन्दी भाषा।

खड्ड—(पु० हि०) गड्ढा।

खत—(पु० अ०) चिट्ठी। लिखावट। रेखा। दाढ़ी के के बाल।

खतना—(हि० अ०) मुसलमानों की एक रस्म जिसमें उनके लिंग के अगले भाग का बढ़ा

हुआ चमड़ा काट दिया जाता है।

खतम—(वि० फा०) पूर्ण।

ख़तरा—(अ०) भय। अंदेशा।

खतरानी—(स्त्री० हि०) खत्री जाति की स्त्री।

खता—(स्त्री० अ०) अपराध। धोखा। भूल। —वार= अपराधी।

खतियौनी—(स्त्री० हि०) खाता खतियाने का काम। वह कागज़ जिसमें पटवारी असामी का रकबा और लगान आदि दर्ज करता है।

खत्म—(अ०) अखीर। अन्त।

खत्ता—(पु० हि०) गड्ढा। अन्न रखने का स्थान।

खत्री—(पु० हि०) हिन्दुओं में क्षत्रियों के अन्तर्गत एक जाति जो अधिकतर पंजाब में बसती है। क्षत्रिय।

खदशा—(पु० अ०) डर।

खदान—(स्त्री० हि०) वह गड्ढा जिसे खोदकर उसके अन्दर से कोई पदार्थ निकाला जाय।

खदीव—(पु० फ़ा०) मिस्र के बादशाह की उपाधि।

खदेरना—(स० हि०) दौड़ाना।

खपची—(स्त्री० तु० कमची) कमच। कबाब भूनने की सीख। बाँस की पतली छड़ी।

खपड़ा—(पु० हि०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मकान की छाजन पर रखने के काम आता है। खपड़ी=मिट्टी की वह हँडिया जिसमें भँड़भूजे दाना भूनते हैं। खपरैल=खपड़े से छाई हुई छत।

खप्पर—(पु० हि०) तसले के आकार का मिट्टी का पात्र।

खफकान—(अ०) पागलपन। दिल की बीमारी।

खफगी—(स्त्री० फा०) अप्रसन्नता। क्रोध। खफा=नाराज़। क्रुद्ध।

खफीफ—(वि० अ०) थोड़ा। क्षुद्र। लज्जित।

खबर—(स्त्री० अ०) समाचार। सूचना। सँदेसा। सुधि।

पता। —गीरी=देख रेख। सहानुभूति और सहायता। —दार=होशियार।

खबीस—(पु० अ०) शैतान। जो दुष्ट और भयंकर हो।

खब्त—(पु० अ०) पागलपन। खब्ती=सनकी।

खम—(पु० फ़ा०) टेढ़ापन। —ठोंकना=ताल ठोंकना।

खमी—(अ०) उबाल। उफ़नना। आटे का फूलना।

खमीरा—(पु० अ०) खमीरा तम्बाकू। चाशनी या शहद में पकाकर बनाई हुई औषधि।

खयानत—(स्त्री० अ०) धरोहर रक्खी हुई वस्तु न देना या कम देना। चोरी या बेईमानी।

खयाल—(पु० फ़ा०) ध्यान। गौर।

खर—(पु० सं०) गधा। खच्चर। घास।

खरका—(पु० हि०) तिनका जिससे दाँत कुरेदते हैं।

खरखशा—(पु० फ़ा०) झगड़ा। भय। झंझट।

खरगोश—(पु० फ़ा०) खरहा।

खरचना—(क्रि० फ़ा० ख़र्च) व्यय करना। बरतना।

खरबूज़ा—(पु० फ़ा० ख़र्बुज़ा) एक फल।

खरमिटाव—(पु० हि०) जल पान।

खरहरा—(पु० हि०) घोड़े का बदन साफ़ करने का पंखा।

खरहा—(पु० हि०) खरगोश।

खरा—(वि० हि०) तेज़। अच्छा। सेंककर कड़ा किया हुआ। जो व्यवहार में सच्चा और ईमानदार हो। स्पष्ट वक्ता। —पन=सत्यता।

खराद—(पु० अ० ख़रात फ़ा० ख़र्राद) एक औज़ार जिस पर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है। —ना=खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ़ और सुडौल करना।

खराब—(वि० अ०) बुरा। दुर्दशाग्रस्त। पतित। ख़राबी =दोष। दुर्दशा। गन्दगी। खराबा=उजड़ा हुआ मकान। खरा बात = शराबखाना। ख़ुशदिलों का अड्डा।

खरायँध—(स्त्री० हि०) पेशाब की बदबू।

खरोश—(स्त्री० फा०) खरोंच।

खरीता—(पु० अ०) थैली। जेब। वह बड़ा लिफाफ़ा जिसमें किसी बड़े अधिकारी आदि की ओर से मातहत के नाम आज्ञापत्र आदि भेजे जायँ।

ख़रीद—(स्त्री० फ़ा०) मोल लेना। ख़रीदी हुई चीज़। —ना=मोल लेना। खरीदार=ग्राहक। इच्छुक।

ख़रीफ़—(स्त्री० अ०) जो फसल आषाढ़ से आधे अगहन के बीच में काटी जाय।

खर्च—(पु० अ० खच) व्यय। ख़र्चा=ख़र्च। खर्चीला=ख़ूब ख़र्च करनेवाला। खरीच= खर्चीला।

खर्रा—(पु० अनु०) वह लम्बा या बड़ा कागज़ जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो।

खल—(वि० स०) क्रूर। नीच। दुष्ट। खरल।

खलक—(पु० अ०) दुनिया। —त=सृष्टि। भीड़।

खलना—(अ० हि०) बुरा लगना।

खलल—(पु० अ०) रोक। बाधा।

खलास—(वि० अ०) मुक्त। ख़तम।

खलत—(अ०) मिल जाना। मिलना।

खलियान—(पु० हि०) खेतों के पास वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखती, माँडी और ओसाई जाती है।

खलियाना—(क्रि० हि०) खाल उतारना।

खलिश—(पु० फा) चुभना। तड़प।

खली—(स्त्री० स० खलि) तेल

निकाल लेने पर तेलहन की बची हुई सीठी।

खलीक—(अ०) सज्जन। मुरवत वाला।

खलीज—(स्त्री० अ०) खाड़ी।

खलीफा—(पु० अ०) अधिकारी। कोई बूढ़ा व्यक्ति। खुराट।

खलील—(अ०) सच्चा दोस्त।

खवास—(पु० अ०) राजाओं और रईसों आदि का खिदमतगार।

खस—(पु० स०) एक घास।

खसकना—(क्रि० अनु०) धीरे धीरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। खसकाना=हटाना। गुप्त रूप से कोई चीज़ हटाना या देना।

खसखस—(स्त्री० स०) पोस्ते का दाना।

खसखसी—(वि० हि०) खसखस की तरह का। बहुत छोटा।

खसम—(पु० अ०) पति।

खसरा—(पु० अ०) पटवारी का एक कागज़ जिसमें प्रत्येक खेत का नम्बर, रकबा आदि लिखा रहता है। किसी हिसाब किताब का कच्चा चिट्ठा।

खसलत—(स्त्री० अ०) स्वभाव।

खसीस—(वि० अ०) कंजूस।

खसोट—(स्त्री० हि०) बलपूर्वक लेना या छीनना। —ना= नोचना। छीनना।

खस्ता—(वि० फा० ख़स्त) भुरभुरा। ख़राब। घायल।

खस्सी—(पु० अ०) बकरा। बधिया। नपुंसक।

खाँग—(पु० हि०) काँटा। वह काँटा जो तीतर मुर्ग आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है। गैंडे के मुँह पर का सींग। जङ्गली सुअर का वह दाँत जो मुँह के बाहर काँटे की तरह निकला रहता है। खुर-वाले पशुओं का एक रोग जिसमें उनके खुरों में घाव हो जाता है।

खोंचना—(क्रि० स० हि०) अंकित करना। लकीर-आदि लिखना। खोंचा=पतली टहनी आदि का बना बड़ा टोकरा। बड़ा पिंजड़ा।

खोंड़—(स्त्री० हि०) कच्ची शक्कर।

खोंसना—(क्रि० स० हि०) लिफाफे में बन्द करना।

खाँवाँ—(पु० हि०) अधिक चौड़ी खाई।

खाँसना—(क्रि० हि०) गले और श्वास की नलियों में लगे हुये कफ को बाहर फेंकने के लिये झटके के साथ निकालना। खाँसी।

खाक—(स्त्री० फा०) मिट्टी। तुच्छ। कुछ नहीं। खाकी= मिट्टी के रंग का। एक प्रकार के वैष्णव साधु जो तमाम शरीर में राख लगाया करते हैं। मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय जो खाकी शाह का अनुयायी है। —सार= धूपपदार्थ। तुच्छ।

खाका—(पु० फा०) ढाँचा। चित्र।

खाज—(स्त्री० हि०) खुजली।

खाजा—(पु० हि०) एक प्रकार की मिठाई।

खातमा—(पु० फ़ा०) अन्त। मृत्यु।

खाता—(पु० हि०) बखार। वह बही या किताब जिसमें प्रत्येक असामी या व्यापारी आदि का हिसाब मितीवार ब्योरेवार लिखा हो। विभाग।

खातिम—(अ०) खतम करने वाला।

खातिर—(स्त्री० अ०) सम्मान। —ख़ाह = इच्छानुसार। —जमा=सन्तोष। —दारी =सम्मान। खातिरी= सम्मान। तसल्ली।

खातून—(तु० स्त्री०) भद्र महिला।

खाद—(स्त्री० हि०) गोबर। मैला वगैरह।

खादिम—(पु० अ०) नौकर।

खादी—(वि० हि०) हाथ से

फते हुये सूत या हाथ से बुना हुआ कपड़ा।

खान—(पु०) सरदार। रईस।

खानकाह—(स्त्री० फ़ा०) मुसलमान साधुओं या धर्मशिष्यों के रहने का स्थान।

खानखानाँ—(पु० फ़ा० खाने खानान) सरदारों का सरदार। —खान=(फ़ा०) सरदार। रईस। अमीर।

खानगी—(वि० फ़ा०) आपस का। वेश्या।

खानजादा—(पु० फा०) अमीर का पुत्र।

खानदान—(० फ़ा०) वंश। खानदानी=अच्छे कुल का।

खानदेश—(पु०) बम्बई प्रान्त का एक देश।

खान पान—(पु० स०) खाना पीना।

खानबहादुर—(पु० फा०) एक खिताब जो भारत सरकार की ओर से मुसलमानों को दिया जाता है।

खानसामा—(पु० फ़ा०) मुसलमानों और अँगरेज़ों का भोजन बनानेवाला।

खाना—(फ़ा०) घर। मकान। —खराब=चौपट करने वाला। आवारा। —जंगी=आपस की लड़ाई। —ज़ाद=घर में पैदा या पाला पोसा हुआ। —तलाशी=किसी खोई छिपी या अनजानी चीज़ के लिये मकान के अन्दर छानबीन करना। —दारी=गृहस्थी। —पूरी=नक़्शा भरना। —बदोश=जिसका घर ही कंधे पर हो अर्थात् जिसका घरबार न हो। —शुमारी=किसी गाँव या नगर आदि के मकानों की गिनती का काम।

खानि—(स्त्री हि०) उपजने की जगह।

खाम—(वि० फ़ा०) कच्चा। जिसे तजरबा न हो। खामी=कच्चापन। नातजरबेकारी।

खामोश—(वि० फ़ा०) चुप।
खामोशी=चुप्पी।
खाया—(पु० फ़ा०) अंडकोश।
खार—(पु० हि०) सज्जी। लोनी। धूल।
खार—(पु० फ़ा०) काँटा। डाह।
खारिज—(वि० अ०) बाहर किया हुआ। भिन्न। जिसकी सुनाई न हो।
खारिश—(स्त्री० फ़ा०) खुजली।
खारिश्त=खारिश।
खारुआँ—(पु० हि०) खाल से बना हुआ एक प्रकार का रंग जिसमें मोटे कपड़े रँग जाते हैं।
खाल—(स्त्री० हि०) चमड़ा।
खालसा—(वि० अ०) जिस पर केवल एक का अधिकार हो। सरकारी। खालिस। शुद्ध।
खाला—(स्त्री अ०) माता की बहिन। मौसी।
खालिक—(पु० अ०) बनाने वाला।
खालिस—(अ०) विशुद्ध। जिसमें मेल न हो।
खाविन्द—(पु० फ़ा०) पति। मालिक।
खास—(वि० अ०) विशेष। निज का। स्वयं। —कलम=प्राइवेट सेक्रेटरी। निज का मुंशी। —गी=निज का। —तराश=वह नाई जो राजा के बाल बनाया करता हो। —दान=पानदान। —बरदार=वह सिपाही जो राजा की सवारी के साथ साथ सवारी के ठीक आगे आगे चलता है। —बाज़ार=वह बाज़ार जो राजा के महल के सामने हो और जहाँ से राजा वस्तुयें मोल लेता हो।
खासीयत—(स्त्री० अ०) स्वभाव। गुण। ख़ास्सा=स्वभाव।
खाहिश—(स्त्री० फ़ा०) इच्छा।
खिंचना—(क्रि० हि०) घसीटना। आकर्षित होना। चित्रित होना। रुकना। उदासीन

होना। खिचवाना="खींचना" का प्रेरणार्थक रूप। खिचाई=खींचना। खींचने की मज़दूरी। खिचाव=आकर्षण।

खिचड़ी—(स्त्री० हि०) दाल और चावल एक में मिलाकर पकाया हुआ। विवाह की एक रस्म जिसे 'भात' भी कहते हैं। मिला हुआ। गड़बड़।

खिजलाना—(क्रि० हि०) झुँझलाना।

खिजाँ—(स्त्री० फा०) पतझड़ की ऋतु। अवनति का समय।

खिज़ाब—(पु० अ०) सफ़ेद बालों को काला करने की औषधि।

खिझना—(क्रि० अ० हि०) खीजना। खिझाना=चिढ़ाना।

खिड़की—(स्त्री० हि०) झरोखा।

खिताब—(पु० अ०) उपाधि।

खित्ता—(पु० अ०) देश।

खिदमत—(स्त्री० फ़ा०) सेवा। —गार=सेवक। —गारी=सेवकाई। खिदमती=खिदमत करनेवाला।

खिन्न—(वि० सं०) उदासीन। अप्रसन्न। दीन हीन।

खियाना—(क्रि० हि०) घिस जाना।

खिरदमन्द—(फ़ा०) बुद्धिमान। अक्लमन्द।

खिरनी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का ऊँचा और छतनार सदाबहार पेड़। इस वृक्ष का फल।

खिरमन—(फा०) खलियान।

खिराज—(पु० अ०) मालगुज़ारी।

खिलअत—(स्त्री० अ०) वह वस्त्रादि जो किसी बड़े राजा या बादशाह की ओर से सम्मान-सूचनार्थ किसी को दिया जाता है।

खिलक़त—(स्त्री० अ०) संसार। भीड़।

खिलना—(क्रि० वि० हि०) विकसित होना। प्रसन्न होना। शोभित होना।

पोच से फट जाना। अलग-अलग हो जाना।

खिलवत—(स्त्री० अ०) एकान्त। —खाना=एकान्त स्थान।

खिलाई—(स्त्री० हि०) खिलाने का काम। खिलाना=भोजन कराना। खेल कराना।

खिलाफ—(वि० अ०) विरुद्ध। —त=(अ०) तमाम इस लामी राज्यों का सम्राट्। मुसलमानों के धार्मिक अगुवा का पद।

खिलाल—(स्त्री० हि०) पूरी बाज़ी की हार।

खिलौना—(पु० हि०) बालकों के खेलने की चीज़।

खिल्ली—(स्त्री० हि) हँसी।

खिसकना—(क्रि० अ०) चुपके से चल देना।

खिसारा—(पु० फ़ा०) घाटा।

खिसिआना—(क्रि० हि०) लजाना। रिसियाना। खिसिआहट=खिसियाना।

खींचतान—(स्त्री० हि०) खींचाखींची। खींचना=घसीटना। आकर्षित करना। अर्क चुआना।

खीज़—(स्त्री० हि०) झुँझलाहट। —ना=दुःखी और क्रुद्ध होना।

खीर—(स्त्री० हि०) दूध में पकाया हुआ चावल। —मोहन=छेने की बनी हुई एक प्रकार की बँगला मिठाई।

खीरा—(पु० हि०) बरसात में होनेवाला ककड़ी की जाति का एक फल।

खील—(स्त्री० हि०) लावा। कील। —ना=कील लगाना। खीला=काँटा।

खीली—(स्त्री० हि०) पान का बीड़ा।

खीस—(वि० हि०) नष्ट। दाँत निकालना।

खीसा—(पु० फा०) थैला। जेब।

खुआर—(वि० फा०) खराब। बेइज्जत। खुआरी=खराबी। अनादर।

खुगीर—(पु० फा०) नमदा। ज़ीन।

खुजलाना—(क्रि० हि०) सह लाना। खुजलाहट=खुजली। खुजली=खुजलाहट।

खुट्टी—(स्त्री० हि०) घाव पर जमी हुई पपड़ी।

खुड्डी, खुडढा—(स्त्री० हि०) पाखाने में पैर रखने के पाय दान। पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतबा—(अ०) भाषण। स्तोत्र।

खुद—(अव्य० फा०) स्वयं। —काश्त=वह ज़मीन जिस का मालिक स्वयं जोते बोये पर सीर न हो। —कुशी= आत्महत्या। —गरज़= स्वार्थी।—मुख्तार=स्वतंत्र। —राय=स्वेच्छाचारी। खुदी =अहंकार। अभिमान। —बखुद (फ़ा०) आप ही आप।

खुदना—(क्रि० हि०) खोदा जाना। खुदाई=खोदने का काम। खोदने की मज़दूरी।

खुदरा—(पु० हि०) फुटकर चीज़।

खुदा—(पु० फा०) ईश्वर। —ई=ईश्वरता। —वन्द =ईश्वर। मालिक। हुजूर।

खुद्दाम—(अ०) खादिम का बहुवचन। नौकर लोग।

खुनकी (स्त्री० फा०) सरदी। खुनुक=(फा०) सर्द। ठण्डा। खुश।

खुफिया—(अ०) पोशीदा।

खुमखाना—(फ़ा०) शराबखाना।

खुमारी—(स्त्री० अ० खुमार), नशा। वह दशा जो नशा उतरने के समय होती है। वह दशा जो रात भर जागने से होती है।

खुर—(पु० सं०) सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप जो बीच से फटी होती है।

खुरखुरा—(वि० हि०) जो चिकना न हो।

खुरचन—(स्त्री० हि०) जो वस्तु खुरचकर निकाली जाय। खुरचना=करोना। खुरचनी

=खुरचने या करोने का एक औज़ार। कसेरों के बर्तन छीलने का औज़ार।

खुरचाल—(स्त्री० हि०) पाजीपन। खुरचाली=पाजी।

खुरपा—(पु० हि०) घास छीलने का औज़ार।

खुर्रम—(फ़ा०) प्रसन्नचित्त।

खुरमा—(पु० अ०) एक प्रकार का पकवान।

खुरशेद—(फ़ा०) सूर्य्य।

खुराक—(पु० फ़ा०) भोजन। खुराकी=वह नक़द दाम जो खुराक के लिए दिया जाय।

ाफ़ात—(स्त्री० अ०) बेहूदी बात। गाली गलौज।

सान—(पु० फ़ा०) फ़ारस श का एक बड़ा सूबा।

-(स्त्री० हि०) टाप का द।

(वि० फ़ा०) छोटा। बीन=सूक्ष्म दर्शक यंत्र। फ़रोश=छोटी मोटी फुटकर बेचनेवाला। =नष्ट भ्रष्ट। समाप्त।

खुर्राट—(वि० हि०) बूढ़ा। अनुभवी। चालाक।

खुलना—(क्रि० हि०) बंधन का छूटना। किसी क्रम का चलना या जारी होना। किसी कारख़ाना, दूकान, दफ़्तर या और किसी कार्य्यालय या नित्य का कार्य्य आरम्भ होना। किसी सवारी का रवाना हो जाना जिस पर बहुत से आदमी एक साथ बैठें। किसी गुप्त या गूढ़ बात का प्रकट हो जाना। भेद बताना। खुला =बन्धन-रहित। खुल्लम-खुल्ला=खुले आम। खुलासा=सारांश। खुला हुआ। बिना रुकावट का। साफ़-साफ़।

खुश—(वि० फ़ा०) प्रसन्न। अच्छा। —क़िस्मत=भाग्यवान। —क़िस्मती=सौभाग्य। —नवीस=सुलेखक अर्थात् सुन्दर अक्षर लिखनेवाला।

अच्छी खबर। —दिल=सदा प्रसन्न रहनेवाला। हँसोड़। —नवीस=खुशखत। —नवीसी=सुन्दर अक्षर लिखने की कला। —नसीब=भाग्यवान। —नसीबी—भाग्य। —नुमा=सुन्दर। —बू=सुगंधि। —बूदार=सुगंधित। —रंग=जिसका रंग बढ़िया हो। —हाल=सुखी। —हाली=आराम चैन। खुशी=प्रसन्नता। —नूद—(फा०) राज़ी। रज़ामंद। —गवार=मीठी चीज़। भली बात जो अच्छी लगे।

खुशामद—(स्त्री० फा०) चापलूसी। खुशामदी=चापलूस। सब प्रकार का काम करने वाला। खुशामदी टट्टू=भारी खुशामदी।

खुश्क—(वि० फा०) सूखा। रूखे स्वभाव का। केवल। खुश्की=रूखापन। —साली=सूखा। कहत। —मिज़ाज=रूखे स्वभाव का।

खूँख़ार—(वि० फा०) खून पीने वाला। भयंकर। निर्दय।

खूँट—(पु० हि०) कान की मैल।

खूँटा—(पु० हि०) बड़ी मेख।

खूँदार—(फा०) खून गिराने वाला। खूनी।

खूँरेज़—(फा०) खून गिराने वाला। खूनी।

खून—(पु० फा०) रक्त। वध। —खराबी=मारकाट। एक प्रकार की वार्निश जो लकड़ी पर की जाती है। खूनी=हत्यारा। अत्याचारी।

खूब—(वि० फा०) अच्छा। अच्छी तरह से। खूबी=भलाई। गुण। —रूई (फा०)=माशूकी। —सूरत=सुन्दर। खूबसूरती=सुन्दरता।

खूबानी—(स्त्री० फा०) एक प्रकार का मेवा जिसे ज़र्दालू भी कहते हैं।

खूसट—(पु० हि०) उल्लू। मनहूस। बुड्ढा। प्रचीस।

खेड़ा—(पु० हि०) छोटा गाँव।

खेत—(पु० हि०) जोतने बोने की ज़मीन। खेतिहर=किसान। खेती=किसानी। खेत में बोई हुई फ़सल। खेती-बारी=किसानी। लड़ाई की जगह।

खेद—(पु० स०) दुःख। थका वट।

खेदना—(क्रि० हि०) भगाना। पीछा करना। खेदा=किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। शिकार।

खेना—(क्रि० हि०)नाव चलाना। बिताना।

खेप—(स्त्री० हि०) एक बार का बोझा। गाड़ी नाव आदि की एकबार की यात्रा।

खेमटा—(पु० हि०) एक प्रकार का गीत।

खेमा—(पु० अ०) डेरा।

खेल—(पु० हि०) मनबहलाव। बहुत हलका या तुच्छ काम। किसी प्रकार का अभिनय। तमाशा, स्वाँग या करतब आदि। कोई अद्भुत कार्य्य। —वाड़=खेल। खेलवाड़ी। —खेलनेवाला। कौतुक-प्रिय। खेलाड़ी=खेलनेवाला। तमाशा करनेवाला।

खेवट—((पु० हि०) पटवारी का एक कागज़ जिसमें हर एक पट्टेदार के हिस्से की तादाद और मालगुज़ारी का विवरण लिखा रहता है।

खेस—(पु० हि०) बहुत मोटे देशी सूत की बनी हुई एक प्रकार की बहुत लम्बी चादर।

खेसारी—(स्त्री० हि०) मटर। लतरी।

खेह—(स्त्री० हि०) राख।

खैबर—(पु० हि०) भारत और अफ़ग़ानिस्तान के बीच की एक घाटी का नाम।

खैयाम—(अ०) फ़ारसी का एक

प्रसिद्ध कवि। खेमा गाड़ने वाला।

खैर—(पु० हि०) कत्था। (फा०) अच्छा। —ख्वाह= भलाई चाहनेवाला। —ख्वाही=भलाई सोचना। खैरा=खैर के रंग का।

खैरात—(अ०) दान देना। —मक़्दम=(अ०)स्वागत।

खैरियत—(स्त्री० फा०) कुशल क्षेम। भलाई।

खोंखना—(क्रि० अनु०) खाँसना।

खोंची—(स्त्री० हि०) चुटकी।

खोडर—(पु० हि०) पेड़ का भीतरी पोला भाग।

खोंता—(पु० हि०) घोंसला।

खोंसना—(क्रि० स० हि०) अटकाना।

खोई—(स्त्री० हि०) ऊख के गडों के वे टुकड़े जो रस निकल जाने पर कोल्हू में शेष रह जाते हैं। कम्बल की घोघी।

खोखला—(वि० हि०) पोली जगह। बड़ा छेद।

खोज—(स्त्री० हि०) तलाश। निशान। गाड़ी के पहिये का लीक अथवा पैर आदि का चिह्न। खोजी=खोजनेवाला।

खोजा—(पु० फा० ख़्वाजा) वह नपुंसक व्यक्ति जो मुसलमानी हरमों में द्वार-रक्षक या सेवक की भाँति रहता है। सेवक। सरदार।

खोदना—(क्रि० हि०) गड्ढा करना। छेदना। उभाड़ना। खोदनी=खोदने का छोटा औज़ार। खोद विनोद=छेड़-छाड़। खोदाई =खोदने का काम। खोदने की मज़दूरी। कड़ी वस्तु पर किसी नोकदार वस्तु से अक्षर, चिह्न, बेल-बूटे आदि बनाने का काम।

खोना—(क्रि० हि०) गँवाना। भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ आना। ख़राब करना।

खोन्चा—(पु० फा० ख़्वान्चा) वह बड़ी परात या थाल जिसमें मिठाई और खाने

पीने की वस्तुयें भरी रहती हैं। वह थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई बेचते हैं।

खोपड़ा—(पु० हि०) कपाल। सिर। गरी। नारियल। खोपड़ी=कपाल। सिर।

खोभार—(पु० हि०) गड्ढा जिसमें कूड़ा-कर्कट फेंका जाय।

खोया—(पु० हि०) खोवा। ईंट पाथने का गारा।

खोरा—(पु० हि०) कटोरा। आबखोरा। खोरिया=छोटा कटोरा।

खोराक—(स्त्री० फा०) भोजन सामग्री। खाने की मात्रा। खोराकी=अधिक भोजन-करनेवाला।

खोल—(पु० स०) गिलाफ़।

खोलना—(क्रि० स० हि०) रुकावट या परदा दूर करना। बंधन तोड़ना। किसी क्रम को चलाना या जारी करना। किसी कारख़ाने, दूकान, दफ़्तर का दैनिक ... देना। किसी गुप्त या गूढ़ बात को प्रकट कर देना।

खोली—(स्त्री० फा०) गिलाफ़। तकिये आदि के ऊपर चढ़ाने की थैली।

खौफ़—(पु० अ०) डर।

खौलना—(क्रि० हि०) उबलना।

ख्यात—(वि० स०) प्रसिद्ध। ख्याति=प्रसिद्धि।

ख्याल—(पु० अ०) ध्यान। अनुमान। विचार। आदर। एक विशेष प्रकार का गान। लावनी गाने का एक ढंग।

ख्वाजा—(पु० फ़ा०) मालिक। सरदार। कोई प्रसिद्ध पुरुष। ऊँचे दरजे का मुसलमान फकीर। रनिवास का नपुंसक भृत्य। —सरा=(फ़ा०) मुसलमानी ज़माने में घरों में काम करनेवाला वह गुलाम जिसका लिङ्ग काट डाला गया हो।

ख्वान—(पु० फ़ा०) थाल।

ख्वाब—(पु० फा०) स्वप्न।

ख़्वार—(वि० फ़ा०) ख़राब। तिरस्कृत। ख़्वारी=ख़राबी। अनादर।

ख़्वास्तगार—(पु० फ़ा०) चाहने वाला। ख़्वाहाँ=चाहनेवाला।

ख़्वाहिश=इच्छा। ख़्वाहिशमंद=इच्छुक।

ख़्वाह—(अव्य० फ़ा०) या।

ख़्वाहमख़्वाह—(फ़ा०) ज़रूर।

ग

ग—हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है।

गंज—(पु० हि०) ख़ज़ाना। ढेर। समूह। वह आबादी जहाँ वनिये बसाये जाते हैं। गंजा=गंज रोग। जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। गंजी=शकरकंद।

गँजिया—(हि०) सूत की बनी हुई रुपया रखने की जालीदार थैली।

गंजीफ़ा—(पु० फ़ा०) एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गँजेड़ी—(वि० हि०) गाँजा पीने वाला।

गँठकटा—(पु० हि०) गिरहकट। गँठजोड़ा=गँठबन्धन। गँठबन्धन=विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं।

गँडरा—(पु० हि०) मूँज की तरह की एक घास।

गँडासा—(पु० हि०) चौपायों के खाने के लिये चारे या घास के टुकड़े काटने का औज़ार।

गँडेरी—(स्त्री० हि०) ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा जो चूसने या कोल्हू में पेरने के लिये काटा जाता है।

गदगी—(स्त्री० फ़ा०) मैलापन। अशुद्धता। दुर्गन्ध। गदा=मैला। नापाक। घृणित।
गदुम—(पु० फा०) गेहूँ।
गध—(स्त्री० हि०) महक। सुगध। —क=एक खनिज पदार्थ गधक-वटी=एक औषध या गोली। गधाना=दुर्गन्ध करना।
गधर्व—(पु० सं०) देवताओं का एक भेद जो गाने का काम करते हैं। —नगर=नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश में या स्थल में दृष्टि-दोष से दिखाई पड़ता है। मिथ्या भ्रम। —विवाह=आठ प्रकार के विवाहों में से एक।
गधाविरोजा—(पु० हि०) चीड़ नामक वृक्ष का गोंद जो फारस से आता है।
गधी—(पु० हि०) सुगधित तेल और इत्र बेचनेवाला। गधिया नामक घास। गधिया नामक कीड़ा।
गभीर—(वि० स०) घोर। शात।
गँवई—(स्त्री० हि०) छोटा गाँव। गँवर दल=गँवारों का समूह। गँवार=ग्रामीण। मूर्ख। अनाड़ी।
गँमीला—(वि० हि०) बुनावट में खूब कसा हुआ।
गुजाइश—(फ़ा०) समाई।
गोइन्दा—(फा०) कहनेवाला। जासूस।
गऊ—(स्त्री० हि०) गाय।
गगन—(पु० स०) आकाश। —भेदी=बहुत ऊँचा।
गगरा—(पु० हि०) कलसा। गगरी=कलसी।
गच—(अ० अनु०) पक्का फर्श। पक्की छत। —कारी=चूने सुरखी का काम।
गज—(पु० स०) हाथी।
गज—(पु० फा०) लम्बाई नापने की एक माप जो ३ फुट की होती है। —इलाही=अकबरी गज़ जो ४१ अगुल का होता है।

गजक—(पु० फा० कज़क) चाट। तिलपपड़ी। नाश्ता। चटपटी चीज़।

गजट—(पु० अ० गज़ेट) अखबार। वह विशेष सामयिक पत्र जो भारतीय सरकार अथवा प्रान्तीय सरकारों द्वारा प्रकाशित होता है और जिसमें बड़े बड़े अफसरों की नियुक्ति, नये क़ानूनों के मसौदे और भिन्न भिन्न सरकारी विभागों के सम्बन्ध की विशेष और सर्वसाधारण के जानने योग्य बातें प्रकाशित की जाती हैं।

ग़ज़नवी—(वि० फा०) ग़ज़नी नगर का रहनेवाला। ग़ज़नी =अफ़ग़ानिस्तान के एक नगर का नाम।

गजपुट—(पु० स०) धातुओं के फूँकने की एक रीति।

ग़ज़ब—(पु० अ०) कोप। आपत्ति। अंधेर।

गजर—(पु० हि०) पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द। घंटे का वह शब्द जो प्रातःकाल ४ बजे होता है।

गजर बजर—(पु० अनु०) घाल मेल।

गजरा—(पु० हि०) माला।

ग़ज़ल—(स्त्री० फा०) फ़ारसी और उर्दू में शृंगार रस की एक कविता।

गज़ी—(पु० फा०) गाढ़ा।

गटकना—(क्रि० हि०) खाना। गटगट=किसी पदार्थ को कई बार करके निगलने या घूँट घूँट पीने में गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

गट पट—(स्त्री० अनु०) मिलावट। सहवास।

गटापारचा—(पु० मला०) एक प्रकार का गोंद जो कई ऐसे वृक्षों से निकलता है जिनमें सफ़ेद दूध रहता है।

गट्टा—(पु० हि०) हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ। नैचे के नीचे की वह गाँठ जहाँ दोनों नै मिलती

है और जो फरशी या टुकड़े के मुँह पर रहती है। एक प्रकार की मिठाई।

गट्टर—(पु० हि०) बड़ी गठरी। गट्ठा=गट्टर। बड़ी गठरी। प्याज या लहसुन की गाँठ। कट्ठा।

गठबंधन—(पु० हि०) विवाह में एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्रों के छोर को परस्पर मिलाकर गाँठ बाँधते हैं। गठकटा=गिरहकट। गठरी=बड़ी पोटली। संचित धन। गठित=गठा हुआ। गठिया=दुरजी। छोटी गठरी। कोरे कपड़े के थानों की बँधी हुई बड़ी गठरी। एक रोग। गठियाना=गाँठ देना। गाँठ में रखना। गठीला=गाँठवाला। मज़बूत।

गड़गड़ाहट—(स्त्री० हि०) कड़क।

गड़प—(स्त्री० अनु० फ्रा० गर्वान) पानी, कीचड़ आदि में किसी वस्तु के सहसा समाने का शब्द। —ना=निगलना।

गड़बड़—(वि० हि०) गोलमाल। गड़बड़ा=गड्ढा। गड़बड़ाना=क्रम भ्रष्ट होना। बिगड़ना। गड़बड़ी=गोलमाल।

गडरिया—(पु० हि०) भेड़ पालने वाली जाति। (सं०) गड्डरिक।

गड़ही—(पु० हि०) गड्ढा। छोटा गड्ढा।

गड़ाप—(पु० फ्रा० ग़र्क़ आब) पानी आदि में डूबने का शब्द।

गड़ारी—(स्त्री० हि०) जिस पर रस्सी चढ़ाकर पानी खींचते हैं। —दार=जिस पर गढे या धारियाँ पड़ी हों। घेरदार।

गड्ड—(पु० हि०) एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हो। गड्डी=एक ही आकार की ऐसी

वस्तुओं या का ढेर जो सबके ऊपर रक्खी हों। ढेर।

गढ़त—(वि० हि०) बनावटी। बनावटी बात। मनगढ़त=कपोल कल्पित।

गढ़—(पु० हि०) क़िला। गढ़ी=छोटा क़िला। क़िले या कोट के ढंग का मज़बूत मकान।

गढ़न—(स्त्री० हि०) बनावट। गढ़ना=पीटना। ठोंक ठाँक कर सुडौल करना। बात बनाना। पीटना।

गढ़ाई—(स्त्री० हि०) गढ़ने की मज़दूरी। गढ़ाना=बनवाना।

गण—(पु० सं०) समूह। श्रेणी। छंदशास्त्र में तीन वर्णों का समूह। —ना=शुमार। हिसाब। संख्या। गण्य=गिने जाने योग्य।

गणिका—(स्त्री० सं०) वेश्या।

गणित—(पु० सं०) हिसाब। —ज्ञ=हिसाबी। ज्योतिषी।

गत—(वि० सं०) गया हुआ। सितार आदि के स्वर का क्रम बद्ध मिलान।

गतका—(पु० हि०) लकड़ी का एक डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है।

गताक्ष—(वि० सं०) पिछला अंक।

गति—(स्त्री० सं०) चाल। हरकत। दशा। सहारा। चाल। ढंग। मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की उत्तम दशा। ताल और स्वर के अनुसार अंग संचालन।

गदर—(पु० अ०) हलचल। बगावत।

गदराना—(क्रि० अ० अनु०) (फल आदि का) पकने पर होना। जवानी में अंग का भरना।

गदला—(वि० फा० गंदा) मटमैला।

गदा—(स्त्री० सं०) एक प्राचीन अस्त्र का नाम जो लोहे का होता था। —(प्रा०)

भिखारी। फ़क़ीर। —ई=भीख माँगना।

गद्गद—(वि० स०) अत्यधिक प्रसन्न।

गद्दा—(वि० हि०) भारी लोपक आदि। घास, पयाल, रुई आदि मुलायम चीज़ों से भरा हुआ बिछौना। गद्दी=छोटा गद्दा। वह कपड़ा जो घोड़े, ऊँट आदि पर रखने के लिये डाला जाता है। किसी बड़े अधिकारी का पद। किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य की शिष्य परंपरा। हाथ या पैर की हथेली।

गद्य—(पु० स०) वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या और स्थानादि का कोई नियम न हो।

गनी—(वि० अ०) धनी। (अ०) गनी=पाट या सन की रस्सियों का बुना हुआ मोटा खुरदरा कपड़ा।

गनीम—(पु० अ०) डाकू। वैरी। —त=लूट का माल। मुफ्त का माल। सन्तोष की बात।

गनोरिया—(पु० लै०) सुज़ाक।

गन्ना—(पु० हि०) ईख।

गपोड़ा—(पु० हि०) मिथ्या बात। गपोड़ेबाज़ी=झूठ-मूठ की बकवाद। गप। गप्पी=गप्प मारनेवाला। झूठा।

गप—(स्त्री० फा०) अफ़वाह। कल्पित बात।

गफ—(वि० हि०) घना।

गफलत—(स्त्री० अ०) असावधानी। बेख़बरी। भूल।

गबन—(पु० अ०) ख़यानत।

गबरू—(वि० फा० खूबरू) उभड़ती जवानी का। भोला-भाला।

गबरून—(पु० फ़ा० गश्ररून) चारख़ाने की तरह का एक मोटा कपड़ा।

गब्बर—(वि० हि०) घमंडी। मट्ठर।

गब्र—(पु० फ़ा०) पारसी।

गमक—(पु० स०) तबले की गम्भीर आवाज़।
ग़म—(पु० अ०) शोक। चिन्ता। —ख़ोर = सहनशील। —गीन = उदास। —नाक = दुःखभरा। ग़मी = शोक समय। मृत्यु। —ख़्वार = मित्र। दोस्त। —ज़ा = कदाच। —गुसार = दुःख दूर करनेवाला। हमदर्द।
गमला—(पु० हि०) मिट्टी या धातु आदि का बना हुआ एक पात्र जिसमें फूलों के पेड़ और पौधे लगाते हैं।
गम्मत—(स्त्री० मराठी) हँसी दिल्लगी। मौज।
गर—(फ़ा०) अगर।
गरक़ाब—(पु० अ०) निमग्न।
गरगज—(पु० हि०) बुर्ज।
ग़रज़—(स्त्री० अ०) आशय। ज़रूरत। इच्छा। निदान। अस्तु। —मन्द = ज़रूरत वाला। इच्छुक। ग़रज़ी = ग़रज़वाला। चाहनेवाला।
गरजना—(क्रि० हि०) बहुत गम्भीर शब्द करना। चट कना।
गरदन—(स्त्री० फ़ा०) ग्रीवा। गरदनियाँ = गरदन पकड़कर।
गरदा—(पु० फ़ा० गर्द) धूल।
गरदानना—(क्रि० फ़ा० गरदान) शब्दों का रूप साधना। गिनना।
गरबा—(पु० गु०) एक प्रकार का गीत जो गुजराती स्त्रियाँ गाती हैं।
गरम—(वि० फ़ा०) जलता हुआ। तीक्ष्ण। तेज़। जिसका गुण उष्ण हो। जोश से भरा हुआ। गरमाई = गरमी। गरमा-गरमी = जोश। गरमाना = गरम पड़ना। उमंग पर आना। क्रोध करना। कुछ देर लगातार परिश्रम करने पर घोड़े आदि पशुओं का तेज़ी पर आना। गरमाहट = गरमी। गरमी = जलन। तेज़ी। क्रोध। जोश। ग्रीष्म ऋतु। आतशक।
ग़रारा—(अ० ग़रारा) कंठ में

पानी डालकर ग़र ग़र शब्द करके कुल्ली करना।
ग़रीब—(वि० अ०) नम्र। दरिद्र। —निवाज़=दीनों पर दया करनेवाला। —परवर=ग़रीबों का पालनेवाला। ग़रीबामऊ=ग़रीबों के योग्य। मामूली। ग़रीबी=दीनता। दरिद्रता।
गरुड़—(पु० स०) उकाब पक्षी।
ग़रूर—(पु० अ०) घमंड।
गरेबान—(पु० फ़ा०) गला। कालर।
गरोह—(पु० फा०) झुंड।
गर्जन—(पु० स०) गरजना।
गर्त—(पु० स०) गड्ढा दरार।
गर्दभ—(पु० स०) गधा।
गर्दिश—(स्त्री० फा०) घुमाव।
ग़बन—(फा०) छल से धन लेना।
गर्भ—(पु० स०) हमल। जो गर्भ में हो। गर्भाधान=मनुष्य के सोलह संस्कारों में से एक। पहला संस्कार गर्भधारण। गर्भाशय=बच्चादान। गर्भिणी=गर्भवती। गर्भित=पूर्ण।
गर्म—(फ़ा०) तेज़। उष्ण।
गर्भांक—(पु० स०) नाटक का एक अंश जिसमें केवल एक दृश्य होता है।
गर्ल—(स्त्री० अ०) लड़की। युवती।
गर्लस्स्कूल—(पु० अ०) कन्या-विद्यालय।
गर्व—(पु० स०) अहंकार। गर्वीला=घमंडी।
गलका—(पु० हि०) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों के अगले भाग में होता है और बहुत कष्ट देता है।
ग़लत—(वि० अ०) अशुद्ध। असत्य। ग़लती=भूल-चूक।
गल तकिया—(स्त्री० हि०) छोटा गोल और मुलायम तकिया जो गालों के नीचे रक्खा जाता है। गल मुच्छा=गलगुच्छा।
ग़लतफ़हमी—(स्त्री० अ० फ़ा०)

भूल से कुछ का कुछ समझना। भ्रम।

गलता—(पु० अ०) एक प्रकार का बहुत चमकीला और गफ़ कपड़ा जिसका ताना रेशम का और बाना सूत का होता है। मकान की कार्निस।

गलतान—(वि० फा०) चक्कर मारता हुआ।

गलना—(क्रि० हि०) पिघलना। बदन सूखना। अत्यधिक सरदी के कारण हाथ पैर का ठिठुरना। बेकाम होना। गलाना=किसी वस्तु को नरम गीला या द्रव करना। नरम करना। लय कराना। गलित=गला हुआ। गलित कुष्ठ=आठ प्रकार के कुष्ठों में से एक। गलित यौवना=ढलती जवानी की स्त्री।

गलथा—(अ०) धींगाधींगी। आक्रमण। हल्ला।

ग्लानि—(स्त्री० सं०) पछतावा। खेद। दुःख।

गलियारा—(पु० हि०) पतली या छोटी तंग गली।

गलीचा—(पु० फा०) क़ालीन।

गलीज़—(वि० अ०) मैला। नापाक।

गल्प—(स्त्री० हि०) छोटी छोटी कहानियाँ।

गल्ला—(पु० अ०) अन्न। —फ़रोश=अनाज का व्यापारी। गल्ला=(फ़ा०) पशुओं का झुंड।

गवर्नमेंट—(स्त्री० अ०) राज्य। शासक मंडल। गवर्नर=शासक। गवर्नर जेनरल=बड़े लाट। गवर्नरी=अधिकार।

गवाक्ष—(पु० सं०) झरोखा।

गँवाना—(क्रि० हि०) खोना।

गवारा—(वि० फा०) अंगीकार। मंज़ूर।

गवाह—(पु० फा०) वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। साक्षी। गवाही=साक्षी का प्रमाण।

गवेषणा—(स्त्री० सं०) खोज

गवैया—(वि० हि०) गानेवाला।
गश—(पु० अ०) बेहोशी। मूर्च्छा।
गश्त—(पु० फा०) दौरा। गश्ती = घूमनेवाला।
गसना—(क्रि० हि०) जकड़ना। बुनावट में बाने का कसना। गसीला = जकड़ा हुआ। गफ़।
गहन—(वि० सं०) गंभीर। दुर्गम। कठिन। निबिड़। गहना = बंधक। पकड़ना। आभूषण।
गहरा—(वि० हि०) जो ज़मीन के अन्दर दूर तक चला गया हो। बहुत अधिक। मज़बूत। गाढ़ा।
गह्वर—(पु० सं०) बिल। गुफा। गुप्त स्थान।
गाँठना—(क्रि० स० हि०) गूँथना।
गाँज—(पु० फा० गंज) राशि। डंठल, घास, लकड़ी आदि का वह ढेर जो तले ऊपर रखकर लगाया गया हो। —ना = राशि लगाना। घास लकड़ी, डंठल आदि को तले ऊपर रखकर ढेर लगाना।
गाँजा—(पु० हि०) भाँग की जाति का एक पौधा।
गाँठ—(स्त्री० हि०) गिरह। गठरी। घास का जोड़। पोर। गुत्थी। गट्ठा। —कट = गिरहकट। ठग। —गोभी = गोभी का एक भेद। —दार = गँठीला। —ना = गाँठ लगाना। मरम्मत करना। मिलाना। तरतीब देना। वश में करना। वश में करना।
गाँडर—(स्त्री० हि०) मूँज की तरह की एक घास।
गांडीव—(पु० सं०) अर्जुन के धनुष का नाम।
गांधार—(पु० सं०) क़ंदहार। सिन्धु नदी के पश्चिम का देश जो पेशावर से लेकर कंधार तक माना जाता था।
गाँधी—(स्त्री० सं०) हरे रंग का एक छोटा कीड़ा जो वर्षाकाल

में धान के खेतों में अधिक होता है।

गाम्भीर्य—(पु० स०) गभीरता। स्थिरता। धीरता। जटिलता।

गाँवँ, गाँव—(पु० हि०) छोटी बस्ती।

गाइड—(पु० अ०) पथ प्रदर्शक।

गाउन—(पु० अ०) एक प्रकार का लम्बा ढीला पहनावा जो प्राय यारप अमेरिका आदि देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। एक तरह का चोगा।

गाऊघप्प—(वि० हि०) हमामार। खाप।

गाज़ी—(पु० अ०) मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्मार्थ विधर्मियों से युद्ध करे। बहादुर। —मियाँ=बाले मियाँ।

गाज़ीमर्द—(पु०अ०+फा०) वह जो बहुत बड़ा वीर हो।

गाडा—(पु० हि०) छोटी गाड़ी। (स्त्री०) गाड़ी। —खाना= वह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रक्खी जाती हैं। —वान= गाड़ी हाँकनेवाला। कोच-वान।

गाती—(स्त्री० हि०) चद्दर या अँगोछा जिसे शरीर के चारों ओर लपेटकर गले में बाँधते हैं।

गाथा—(स्त्री० स०) स्तुति। एक प्रकार की प्राचीन भाषा जिसमें संस्कृत के साथ कहीं कहीं पाली भाषा के विकृत शब्द भी मिले रहते हैं। श्लोक। गीत। कथा। पार-सियों के धर्म-ग्रन्थ का एक भेद।

गाद—(स्त्री० हि०) तलछट। कीट। गाढ़ी चीज़।

गादर—(वि० हि०) सुस्त।

गादा—(पु० हि०) अधपका अन्न। कच्ची फसल। हरा महुआ।

गान—(पु० स०) गीत। गाना। =अलापना। मधुर ध्वनि करना। बखान करना। प्रशंसा करना। गाने की चीज़।

गाफिल—(वि० अ०) बेखबर। असावधान।

गाय—(स्त्री० हि०) सींगवाला एक मादा चौपाया जिसके नर को बैल या साँड कहते हैं। दीन मनुष्य। —गोठ=गोशाला।

गायक—(पु० सं०) गानेवाला।

गायत्री—(स्त्री० हि०) एक वैदिक छद का नाम। एक पवित्र मत्र का नाम।

गायब—(वि० अ०) गुप्त। गायबाना=गुप्त रीति से। पीठ पीछे।

गारत—(वि० अ०) नष्ट।

गारद—(स्त्री० अ० गार्ड) सिपाहियों का कुण्ड जो एक अफसर के मातहत हो। पहरा।

गारना—(क्रि० हि०) निचोड़ना।

गार्ड—(पु० अ०) रक्षक। निरीक्षक।

गॉर्डन—(पु० अ०) बाग। —पार्टी=वह भोज जो नगर के बाहर किसी बाग़-बगीचे

गाल—(पु० हि०) कपोल।

गालिब—(वि० अ०) जीतने वाला। बलशाली।

गावजबान—(स्त्री० फा०) एक बूटी जो फारस देश में होती है।

गावतकिया—(पु० फा०) मसनद।

गावदी—(वि० हि०) नासमझ। मूढ़।

गावदुम—(वि० फा०) चढ़ा उतार।

गाही—(स्त्री० हि०) पाँच वस्तु का समूह।

गिच पिच—(वि० हि०) एक में मिला जुला।

गिजा—(स्त्री० अ०) भोजन।

गिटपिट—(स्त्री० हि०) निरथक शब्द।

गिट्टक—(स्त्री० हि०) चिलम के अन्दर रखने का ककड़। गिट्टी=गेरू या पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े जो प्राय सड़क, नींव, छत इत्यादि पर बिछाकर कूटे जाते हैं।

गिड़गिड़ाना—(क्रि॰ हि॰) ज़रूरत से ज्यादा विनीत और नम्र होकर प्रार्थना करना । गिड़गिड़ाहट=विनती ।

गिद्ध—(पु॰ हि॰) एक प्रकार का मांसाहारी पक्षी ।

गिनती—(स्त्री॰ हि॰) गणना । संख्या । हाज़िरी । १ से १०० तक अंक । गिनना=गणना करना । हिसाब लगाना । गिनाना=गिनने का काम दूसरे से कराना ।

गिनी—(स्त्री॰ अं॰) सोने का एक सिक्का जिसका व्यवहार इङ्गलैण्ड में होता था ।

गिरगिट—(पु॰ हि॰) गिर्गिदान । छिपकली की शक्ल का एक जानवर ।

गिरजा—(पु॰ पुर्त॰ इग्रिजिया) ईसाइयों का प्रार्थना मन्दिर ।

गिरना—(क्रि॰ हि॰) किसी स्थान का खड़ा न रह सकना या ज़मीन पर पड़ जाना । अवनति ।

गिरनार—(पु॰ हि॰) गुजरात में एक पर्वत । पुराणों में इसको रैवतक पर्वत कहते हैं ।

गिरफ़्त—(स्त्री॰ फ़ा॰) पकड़ । गिरफ़्तार=जो पकड़ा, क़ैद किया या बाँधा गया हो ।

गिरमिट—(पु॰ अं॰ गिमलेट) बड़ा बरमा ।

गरेबान—(फ़ा॰) कालर । गला ।

गिरिया—(फ़ा॰) रोना । शोक ।

गिरवी—(वि॰ फ़ा॰) बन्धक । —दार=जिसके यहाँ कोई वस्तु बन्धक रक्खी हो । —नामा=रेहननामा ।

गिरह—(फ़ा॰) गाँठ ।

गराँ—(वि॰ फ़ा॰) महँगा । भारी । अप्रिय । गिरानी=मँहगी । अकाल । अभाव ।

गिरा—(स्त्री॰ सं॰) भाषा । —मी=(फ़ा॰) बुजुर्ग ।

गिरि—(पु॰ सं॰) पर्वत । पहाड़ ।

गिरदाब—(फ़ा॰) भँवर ।

गिर्द—(फ़ा॰) चक्कर गोल ।

गिर्दावर—(पु॰ फ़ा॰) घूमने

वाला। घूम घूमकर काम की जाँच करनेवाला।

गिरफ़ार—(फ़ा०) पकड़ा हुआ। कसा हुआ।

गिल—(स्त्री० फा०) मिट्टी। गारा।

गिलट—(पु० अ० गिल्ट) सोना चढ़ाने का काम। एक प्रकार की बहुत हल्की और कम मूल्य की धातु।

गिलटी—(स्त्री० हि०) छोटी गाँठ जो शरीर के अन्दर सन्धि स्थान में रहती है।

गिलम—(स्त्री० फा०) ऊन का बना हुआ नरम और चिकना क़ालीन।

गिलहरी—(स्त्री० हि०) एक जानवर।

गिला—(पु० फ़ा०) उलहना। शिकायत।

गिलाफ़—(पु० अ०) खोल। म्यान।

गिलास—(पु० अ० ग्लास) पानी पीने का एक बरतन।

गिलोय—( ) गुरुचि।

गिलोरी—(स्त्री० हि०) एक या कई पानों का बीड़ा।

गीत—(पु० सं०) गाने की चीज़।

गीती—(फ़ा०) संसार। दुनिया।

गीता—(स्त्री० सं०) भगवद् गीता।

गीदड़—(पु० हि०) सियार।

गीदी—(वि० फा०) डरपोक।

गीजना—(क्रि० अ० हि०) परचना।

गीर—(फा०) वाला।

गीला—(वि० हि०) भीगा हुआ। —पन=नमी।

गुचा—(पु० अ०) कली।

गुज—(स्त्री० हि०) गुंजार। आनन्द ध्वनि। —न= भनभनाहट। —ना=भौंरों का भनभनाना। गुंजा= घुंघची। गुंजायमान=गूंजता हुआ। गुंजार=भौंरों की गूंज।

गुजाइश—(पु० फा०) अँटने की जगह। समाई।

गुजान—(वि० फ़ा०)

गुंडा—(वि० हि०) पापी। छैला। —पन=बदमाशी। गुंदई=गुण्डापन।

गुफ़्गू—(फ़ा०) बातचीत। गुफ़्तार।

गुफ़्तार—(फ़ा०) बातचीत। गुफ़्तार।

गुबज—(पु० फा० गुम्बद) देवालयों की गोल छत। —दार=जिस पर गुम्बज हो।

गुच्ची—(स्त्री० हि०) भूमि में बना हुआ बहुत छोटा गड्ढा। जिसे गोली या गुल्ली डंडा खेलते समय बनाते हैं।

गुच्छ, गुच्छक—(पु० सं०) गुच्छा।

गुज़र—(पु० फ़ा०) निकास। पहुँच। निर्वाह। —गाह=रास्ता। —ना=बीतना। किसी स्थान से होकर आना या जाना निर्वाह होना। —बसर=निर्वाह। गुज़रान। =गुज़र। गुज़रना=बीता हुआ। गुज़ारना=बिताना।

गुज़ारा=गुज़रा। वृत्ति जो किसी का जीवन निर्वाह के लिये दी जाय। गुज़ार=अदा करना।

गुजरात—(पु० हि०) भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त का एक देश जो राजपूताने के आगे पड़ता है। गुजराती=गुजरात देश की भाषा। छोटी इलायची

गुज़ारिश—(स्त्री० फा०) निवेदन।

गुझिया—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पकवान।

गुटका—(पु० हि०) छोटे आकार की पुस्तक।

गुट्ट—(पु० हि०) समूह।

गुठली—(स्त्री० हि०) किसी फल का बीज।

गुड ईवनिंग—(स्त्री० अ०) शाम के समय का अँगरेज़ी सलाम।

गुड नाइट—(स्त्री० अ०) रात के समय का अँगरेज़ी सलाम।

गुड बाई—(स्त्री० अ०) किसी से विदा होते समय कहा जानेवाला अँगरेज़ी सलाम।

गुड मार्निंग—(पु० अ०) किसी से मिलने या विदा होते समय कहा जानेवाला अँग रेज़ी सलाम।

गुडया—(पु० हि०) कच्चा आम जो दबाकर शीरे में डाला गया हो।

गुड—(पु० हि०) कड़ाह में गाढ़ा पकाकर जमाया हुआ ऊख का रस जो कतरे, बट्टी या भेली के रूप में होता है।

गुड़गुड़—(पु० हि०) वह शब्द जो गले में वायु के घुसने और बुल्बुला छूटने से होता है। गुड़गुड़ाना=गुड़-गुड़ शब्द होना। हुक्का पीना। गुड़ गुड़ाहट=गुड़-गुड़ शब्द। गुड़ गुड़ी=फ़रशी।

गुड़हर—(पु० हि०) अड़हुल का पेड़ या फूल।

गुड़िया—(स्त्री० हि०) कपड़े की बनी हुई पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं। गुड्डा।

गुण—(पु० सं०) सिफ़त। निपुणता। हुनर। असर। अच्छा स्वभाव। विशेषता। —कर=लाभदायक। —कारक=लाभदायक। —कारी=लाभदायक। —ग्राहक=गुण की क़दर करने वाला मनुष्य। —ग्राही=गुणियों का आदर करने वाला। —ज्ञ=गुण का जानने वाला। गुणी। —ज्ञता=गुण की जानकारी। —वत=गुणी। —वती=गुण वाली। —वाचक=जो गुण को प्रगट करे। —वान=गुणी। —सागर=गुणों से भरा। गुणाढ्य=बहुत गुणों वाला। गुणातीत=गुणों से परे। गुणानुवाद=प्रशंसा। गुणी=गुणवाला। निपुण मनुष्य।

गुणा—(पु० हि०) ज़रब। गुणक=जिससे किसी अंक को गुणा करें या ज़रब दें। गुणनफल=गुणा करने या ज़रब देने से जो फल आवे। गुणांक=वह अंक जिसको

गुणा करना हो। गुणित = गुणा किया हुआ। गुणक = वह अंक जिससे गुणा करें।

गुत्थम गुत्था—(पु० हि०) उलझाव। भिड़न्त।

गुदगुदी—(स्त्री० हि०) वह सुरसुराहट या मीठी खुजली या खाज, जो कांखें आदि नाजुक स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। गुदगुदाना = गुदगुदी पैदा करना।

गुदाज—(वि० फा०) गूदेदार।

गुदुरी—(स्त्री० हि०) मटर की फली।

गुनगुनाना—(क्रि० हि०) गुन-गुन शब्द करना। अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनाह—(पु० फा०) पाप। दोष। गुनाही = पापी। दोषी। गुनाहगार = पापी। दोषी। —गारी = अपराध।

गुना—(पु० हि०) गुण। बार।

गुपचुप—(क्रि० वि० हि०) छिपा कर। एक प्रकार की मिठाई।

गुप्त—(वि० सं०) छिपा हुआ। गूढ़। वैश्यों के नाम के साथ व्यवहार होने का एक पदवी। —चर = भेदिया। —दान = जिस दान को सिर्फ दाता ही जाने।

गुफा—(स्त्री० हि०) कन्दरा।

गुफ्तगू—(स्त्री० फा०) बातचीत।

गुबरैला—(पु० हि०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो गोबर और मल आदि खाता और इकट्ठा करता है।

गुबार—(पु० अ०) धूल। मन में दबा हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष।

गुब्बारा—(पु० हि०) वह थैली या उसके आकार की और कोई चीज़ जिसके अन्दर गर्म हवा या हवा से हलकी किसी प्रकार की भाप आदि भरकर आकाश में उड़ाते हैं।

गुम—(पु० फा०) गायब। अप्रसिद्ध। खोया हुआ। —नाम = अप्रसिद्ध।

गुमटी—(स्त्री० फा०) गुंबद।

गुमर—(पु० फा०) अभिमान। गुबार।

गुमराह—(वि० फ़ा०) भूला हुआ।

गुमान—(फ़ा०) सन्देह। शक। घमंड।

गुमाश्ता—(पु० फ़ा०) मुनीम। —गीरी=गुमाश्ते का पद। गुमाश्ते का काम।

गुर—(पु० हि०) मूलमन्त्र।युक्ति।

गुरगा—(पु० हि०) नौकर। लड़का।

गुरगाबी—(पु० फा०) मुंडा जूता।

गुरदा—(पु० फ़ा०) रीढ़दार जीवों के अन्दर का एक अंग जो कलेजे के निकट होता है। हिम्मत।

गुरिया—(स्त्री० हि०) माला का दाना।

गुरु—(त्रि० सं०) आचार्य। शिक्षक। बड़ा। भारी। कठिनता से पकने या पचनेवाला। —आई=गुरु का धर्म। चालाकी। —कुल=गुरु, आचार्य्य या शिक्षक के रहने का वह स्थान जहां वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो। —जन=बड़े लोग। —ता भारीपन। महत्व। गुरुआई। —त्व=भारीपन। बड़प्पन। —त्वकेन्द्र=किसी पदार्थ में वह बिन्दु जिस पर समस्त वस्तु का भार एकत्रित हुआ और कार्य्य करता हुआ मान सकते हैं। —त्वाकर्षण = वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुयें पृथ्वी पर गिरती हैं। —दक्षिणा = आचार्य्य की भेंट। —द्वारा = गुरु का स्थान। —भाई = दो या दो से अधिक ऐसे पुरुष जिनमें से प्रत्येक का गुरु वही हो जो दूसरे का। —मुख=जिसने गुरु से मन्त्र लिया हो। —मुखी=गुरु नानक की चलाई हुई एक प्रकार की लिपि जो पंजाब

में प्रचलित है। —वार= बृहस्पति का दिन।

गुरेरना—(क्रि० हि०) घूरना।

गुर्रा—(पु० हि०) वह रस्सा जिससे धुनियाँ धनुही का फरहा कसते हैं।

गुर्राना—(क्रि० हि०) क्रोध या अभिमान के कारण भारी और कर्कश स्वर से बोलना।

गुर्री—(स्त्री० हि०) भुने हुये जौ।

गुरूब—(अ०) अस्त होना।

गुरूर=घमंड। दम्भ।

गुल—(पु० फा०) फूल। छाप। दीपकादि में बत्ती का वह अंश जो बिलकुल जल जाता है। कहा। —कंद=मिश्री या चीनी में मिली हुई कमल या गुलाब के फूलों की पंखड़ियाँ जो धूप की गरमी से पकाई जाती हैं। —कारी=किसी प्रकार के बेल बूटे या फूल पत्ती इत्यादि बनाने, तराशने या काढ़ने का काम। —खैरू=एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं। —ज़ार=वाटिका। —तराश=वह कैंची जिससे चिराग़ का गुल काटते हैं। वह कैंची जिससे माली लोग बाग़ के पौधों को कतरते या छाँटते हैं। बाग़ के पौधों को काटने या छाँटनेवाला माली। संग तराशों का वह औज़ार जिससे वे पत्थरों पर फूल पत्तियाँ बनाते हैं। —दस्ता=फूल का गुच्छा। —दाउदी=एक प्रकार का छोटा पौधा। —दान=गुलदस्ता रखने का पात्र। नार=अनार का फूल। —बकावली = एक प्रकार का फूल। —मेंहदी=एक प्रकार का पौधा। —लाला=एक प्रकार का पौधा। —शकरी=चीनी और गुलाब के फूल से बनी हुई एक मिठाई। —शन=फुलवारी। —शब्बो=लहसुन से मिलता जुलता एक प्रकार का छोटा पौधा जिसको रजनी गंधा या सुगंधरा कहते हैं। —सम=

सोनारों का नक्काशी करने का एक औज़ार जिससे फूल आदि बनाते हैं। —सौसन=एक प्रकार का फूल जो इसके आसमानी रंग का होता है। —हज़ारा=एक प्रकार का गेंदा। गुलाब=एक झाड़ या कटीला पौधा जिसमें बहुत सुन्दर और सुगंधित फूल लगते हैं। गुलाब जल। गुलाब पाश = झारी के आकार का एक प्रकार का लंबा पात्र। गुलाबी=गुलाब के रंग का। हलका। गुले राना=सुन्दर फूल। —चीन =एक प्रकार का वृक्ष जो कलम से लगाया जाता है और बारहों महीने फूलता है। सम्भवतः चीन देश से यह आया है। —क़न्द (फा०) =गुलाब के फूलों से बनी एक मीठी दवा। —गपाड़ा =शोर। —गुल=मुलायम। —गुला=कोमल। एक प्रकार का पकवान। —गुलाना= किसी गूदेदार चीज़ को दबा कर या मलकर मुलायम करना। —छर्रा=मौज। —दस्ता=फूल रखने का पात्र। —फाम=सुन्दर। खूबसूरत। —बदन=एक प्रकार का बहुमूल्य रेशमी कपड़ा जो प्रायः लहरियेदार या धारीदार होता है। —रू =सुन्दर। खूबसूरत। गुलाम (फ़ा०)=एक पुष्प विशेष। गुलाबी=गुलाब के फूल के रंग की वस्तु। शीशा। अमरूद की एक किस्म। गुलाबजामुन=एक प्रकार की मिठाई।

गुलाम—(पु० अ०) ख़रीदा हुआ नौकर। नौकर। ताश का एक पत्ता। गुलामी= दासत्व। सेवा। पराधीनता। —चोर=ताश का एक प्रकार का खेल। —गर्दिश =कोठी या महल आदि के चारोंओर बना हुआ वह बरामदा जहाँ अरदली, चप-

रासी, दवात और दूसरे नौकर चाकर रहते हों।

गुलिस्ताँ—(पु० फ़ा०) बाग। उपवन। फारसी का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

गुलियाना—(क्रि० हि०) औषध या और कोई तरल पदार्थ बाँस के चोंगे में भरकर पशु को पिलाना।

गुलबन्द—(पु० फा०) वह सूती, ऊनी या रेशमी लम्बी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ा पट्टी जो सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटी जाती है।

गुलेल—(स्त्री० फा० गिलूल) वह कमान या धनुष जिससे चिड़ियों और बन्दरों आदि को मारने के लिये मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं। —ची = गुलेल चलानेवाला।

गुलौरा, गुलार—(पु० हि०) वह स्थान जहाँ रस पकाने का भट्ठा हो और जहाँ गुड़ बनाया जाता है।

गुल्फ—(पु० स०) एँड़ी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म—(पु० स०) ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कोई लकड़ी या डंठल न हो।

गुल्ला—(पु० हि०) रसगुल्ला। मिट्टी की बनी गोली जो गुलेल से फेंकी जाती है।

गुस्ताख़—(वि० फ़ा०) बेअदब। गुस्ताख़ी = बेअदबी।

गुस्सा—(अ०) क्रोध। गुस्सैल = गुस्सावर।

गुस्ल—(पु० अ०) स्नान। —ख़ाना = स्नानागार।

गुहना—(क्रि० हि०) गूँथना। सुई तागों से सी देना।

गूँगा—(वि० फ़ा०) जो बोल न सके।

गूढ़—(वि० स०) छिपा हुआ।

गूलर—(पु० हि०) एक बड़ा पे[ड़] जिसकी पेड़ी डालादि से प्[र]कार या दूध निकलता है

गृह—(पु० स०) घर। कुटुम्[ब]

—पति=घर का मालिक। —पशु=कुत्ता । —मणि =दीपक । —स्थ=घर बार वाला। खाने-पीने से खुश आदमी। गृहस्थाश्रम=चार आश्रमों में म दूसरा आश्रम। गृहस्थी=घर-बार। कुटुम्ब। घर का सामान । खेती-बारी। गृहिणी=घर की मालकिन। गृही=गृहस्थ।

गृह-सचिव—(पु० सं०) स्वराष्ट्र सचिव।

गेँड—(पु० हि०) ऊख के ऊपर का पत्ता।

गेँडुआ—(पु० हि०) तकिया। बड़ा गद्द।

गेंद—(पु० हि०) कंदुक। —बल्ला=गेंद और उसे मारने की लकड़ी।

गेंदा—(पु० हि०) एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं।

गेटिस—(पु० अ० गेटर) मोजा आदि ... लिये रबर, ... फीता।

गेरुआ—(वि० हि०) गेरू के रंग का । गेरुई=चैत की फ़सल का रोग।

गेरू—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी।

गेली—(स्त्री० अ०) छापेखाने में धातु या लकड़ी की एक छिछली किश्ती जिस पर टाइप रखकर पहले पहल वह कागज़ छापा जाता है, जिस पर संशोधन होता रहता है।

गेसू—(फ़ा०) लट। काकुल। जुल्फ़।

गेहुँअन—(पु० हि०) एक प्रकार का अत्यन्त विषधर फनदार साँप।

गेहूँ—(पु० हि०) एक अनाज जिसको फसल अगहन में बोई जाती है और चैत में काटी जाती है।

गैंडा—(पु० हि०) भैंस के आकार का एक बड़ा पशु।

गैजेट—(अ०) सरकारी समाचार-पत्र।

गैजेटियर—(पु०

पुस्तक जिसमें किसी स्थान या भौगोलिक वर्णन हो।

गैजेटेड अफसर—(पु० अ०) वह सरकारी कर्मचारी जिसकी नियुक्ति की सूचना सरकारी गैजेट में प्रकाशित होती है।

गैब—(पु० अ०) वह जो सामने न हो। ग़ैबी=छिपा हुआ। अजन्मी।

ग़ैर—(वि० अ०) दूसरा। अजनबी। —मनकूला=अचल। —मुनासिब = अनुचित। —मुमकिन=असम्भव। —वाजिब=अयोग्य। —हाज़िर =अनुपस्थित।

ग़ैरत—(स्त्री० अ०) लज्जा।

गैलन—(स्त्री० अ०) पानी दूधादि द्रव पदार्थ मापने का एक अँगरेजी मान जो तीन सेर का होता है।

गैलरी—(स्त्री० अ०) नीचे ऊपर बैठने का सीढ़ीनुमा स्थान।

गैस—(स्त्री० अ०) एक तत्व। हवा।

गोंड—(पु० हि०) एक असभ्य जङ्गली जाति।

गोंदरा—(पु० हि०) नरम घास या पयाल का बना हुआ एक प्रकार का आसन जिस पर किसान लोग सोते हैं। गोंदरी=घास की बनी हुई चटाई। पयाल की बनी हुई चटाई।

गोकि—(फ़ा०) यद्यपि।

गो—(स्त्री० स०) गाय। —शाला=जहाँ गायें बाँधी जाती हैं।

गोज़—(पु० फ़ा०) पाद।

गोजई—(स्त्री० हि०) जौ और गेहूँ मिला हुआ।

गोटा—(पु० हि०) सुनहले या रुपहले बादले का बना हुआ पतला फीता। सूखा हुआ मल।

गोटी—(स्त्री० हि०) कंकड़। गेरू पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के खेल खेलते हैं।

गोड़इत—(पु० हि०) चौकीदार।
गोड़ना—(क्रि० स० हि०) कोड़ना।
गोड़ा—(पु० हि०) पलँगादि का पाया।
गोत—(पु० हि०) कुल। समूह। गोती = अपने गोत्र का। गोत्र = सतान। समूह। एक प्रकार का जाति विभाग।
गोता—(पु० फा०) डुब्बी। —खोर = डुबकी लगाने वाला।
गोदना—(क्रि० हि०) गड़ाना।
गोदी—(स्त्री० हि०) बड़ी नदी या समुद्र में वह घेरा हुआ स्थान जहाँ जहाज़ मरम्मतार्थ या तूफ़ान आदि के उपद्रव से रक्षित रहने के लिये रक्खे जाते हैं। जेटी।
गोधूली—(स्त्री० स०) सन्ध्या का समय।
गोपन—(पु० स०) छिपाना। गोपनीय = छिपाने योग्य।
गोफन, गोफना—(पु० हि०) ढेलवाँस। फन्नी।
गोबर—(पु० हि०) गौ का मल। —गणेश, गनेश = भद्दा मूरत। गोबरी = गोबर का लेपन। गोबरैला = एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो गोबर में या इसी प्रकार की कोई दूसरी गन्दी चीज़ में उत्पन्न होता है और उसी में रहता है।
गोभी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की घास जिसके पत्ते खरे खरे, कटावदार और फूल गाभी के पत्तों के रंग के होते हैं। एक तरकारी।
गोमती—(स्त्री० स०) एक नदी।
गोमुखी—(स्त्री० स०) ऊन आदि की बनी हुई एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डाल-कर जप करते समय माला फेरते हैं।
गोयँड—(स्त्री० हि०) गाँव के आसपास की भूमि।
गोयन्दा—(फ़ा०) कहने वाला। भेदिया।
गोया—(फ़ा०) मानो।

गोर—(स्त्री० फ़ा०) क़ब्र। गोरा। सफ़ेद। —स्तान=(फ़ा०) क़ब्रिस्तान। ईसाइ मुसल मानों के मुरदे गाड़ने की जगह। —कन=(फ़ा०) क़ब्र खोदने वाला।

गोरखधंधा—(पु० हि०) झगड़ा। उलझन।

गोरखनाथ—(पु० हि०) एक प्रसिद्ध अवधूत जो पन्द्रहवीं शताब्दी में हुए थे। गोरख पंथी=गोरखनाथ का अनु गामी।

गोरखर—(पु० फ़ा०) गधे की जाति का एक जंगली पशु जो गधे से बड़ा और घोड़े से छोटा होता है।

गोरखा—(पु० हि०) नैपाल के एक प्रदेश का निवासी।

गोनिया—(फ़ा०) बढ़इयों और मेमारों का औज़ार जिससे लकड़ी और इमारत की टेढ़ाई सिधाई देखी जाती है।

गोरस—(पु० स०) दूध। गोरसी =दूध गर्म करने की अँगीठी।

गोरा—(वि० स० गौर) सफ़ेद चमड़ेवाला। फिरंगी। —ई =गोरापन। सुन्दरता। गोरी=रूपवती स्त्री।

गोरिल्ला—(पु० अफ़्रिका) चिंपैंजी की जाति का बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बनमानुष।

गोरू—(पु० हि०) मवेशी।

गोल—(फ़ा०) गिरोह। दल। झुंड।

गोलमेज़ कान्फरेन्स—(स्त्री०) वह सभा जिसमें एक गोल मेज़ के चारोंओर बैठकर भिन्न भिन्न दलों या मतों के लोग किसी महत्व के विषय पर विचार करते हैं।

गोलन्दाज़—(पु० फ़ा०) तोप में बत्ती देने वाला। गोलन्दाज़ी =गोला चलाने का काम।

गोलवर—(पु० हि०) गुंबद। गोलाई। गोल=वृत्ताकार।

गोला—(पु० स०) किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड। लोहे का वह गोल पिंड जिसमें बहुत-सी छोटी छोटी गोलियाँ

मेखें आदि भरकर युद्ध में तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं। गरी का गोला। वह बाज़ार या मंडी जहाँ अनाज या किराने की बहुत बड़ी बड़ी दुकानें हों। गोलाई=गोला पन। गोलाकार। गोलाकृति=गोल आकृतवाला। गोलाध्याय=भास्कराचार्य का एक ग्रंथ जिसमें भूगोल और खगोल का वर्णन है। गोलार्द्ध=पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है। गोली=वटिया। औषधि की वटिका। मिट्टी काँच आदि का बना हुआ वह छोटा गोल पिंड जिससे बालक खेलते हैं। गोली का खेल। सीसे आदि का ढला हुआ वह गोल पिंड जो बन्दूक में भरकर चलाया जाता है।

गोल्ड—(पु० अ०) सोना। —न=सोने का। सोने के रंग का।

गोवध—(पु० सं०) गौ की हत्या।

गोश—(फ़ा०) कान। गोशा=कोना। —माल=(फ़ा०) कान मलना। —वारा=(फ़ा०) कोष्टक। विवरण-पत्र।

गोश्त—(पु० फ़ा०) मांस।

गोसफन्द—(फ़ा०) भेड़। बकरी।

गोसाईं—(पु०हि०) सन्यासियों का एक सम्प्रदाय। विरक्त साधु।

गोह—(स्त्री० हि०) छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु।

गोहरा—(पु० हि०) मट्ठा।

गोहराना—(क्रि० हि०) पुकारना। गोहार=पुकार।

गौं—(स्त्री० हि०) मौक़ा। मतलब।

गौंटा—(पु० हि०) षड्यन्त्र। मतलब।

गौगा—(पु० अ०) शोर। अफ़वाह।

गौण—(वि० सं०) जो प्रधान या मुख्य न हो। सहायक। साधारण।
गौना—(पु० हि०) मुकलावा। द्विरागमन।
गौर—(वि० सं०) गोरा। उज्ज्वल।
गौरव—(पु० सं०) बड़प्पन। सम्मान।
गौरया—(पु० हि०) चटक पक्षी।
गौहर—(पु० फा०) मोती।
ग्रंथ—(पु० सं०) पुस्तक। —कर्त्ता, कार=ग्रंथ का बनाने वाला। —चुम्बक=जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान् हो। —साहब=सिक्खों की धर्म पुस्तक जिसमें सब गुरुओं के उपदेश एकत्र किये हुये हैं।
ग्रह—(पु० सं०) वे तारे जो सूर्य के चारोंओर घूमते हैं। —वेध=ग्रह की स्थिति आदि का जानना। ग्राहक=ग्रहण करने वाला। खरीदार। चाहने वाला।
ग्रहण—(पु० सं०) सूर्य और चन्द्रमा के मध्य में पृथ्वी के आ जाने से चद्रमा पृथ्वी की छाया में आ जाता है, उसे चन्द्र-ग्रहण और पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने से सूर्य का कुछ अंश ढक जाता है उसे सूर्य-ग्रहण कहते हैं। पकड़ना। लेना या हस्तगत करना। मंजूरी। ग्राह्य=लेने योग्य। मानने लायक। जानने योग्य।
ग्रांडील—(वि० अं० ग्रैंडियर) ऊँचे कद का।
ग्राम—(पु० सं०) गाँव। बस्ती। समूह। —कुक्कुट=पालतू मुरगा। —सिंह=कुत्ता। ग्रामीण=देहाती। ग्राम्य=ग्रामीण। मूढ़।
ग्रामर—(अं०) व्याकरण।
ग्रासकट—(पु० अं०) घास काटने की मशीन।
ग्रीक—(वि० अं०) यूनान देश की भाषा। ग्रीस या यूनान देश का निवासी।

ग्रीवा—(स्त्री० सं०) गर्दन।

ग्रीष्म—(स्त्री०सं०)गरमी की ऋतु।

ग्रूप—(पु० अ०) झुंड।

ग्रेट प्राइमर—(पु० अ०) एक प्रकार का छापे का अक्षर।

ग्रेट ब्रिटेन—(पु० अ०) इंगलैण्ड, वेल्स और स्काटलैंड देश।

ग्रेन—(पु० अ०) एक अंगरेज़ी तौल जो प्राय एक जौ के बराबर होती है।

ग्रेनाइट—(पु० अ०) एक तरह का आग्नेय पत्थर जो बहुत कड़ा होता है।

ग्रेजुएट—(पु० अ०) बी० ए० या एम० ए० पास किया हुआ व्यक्ति।

ग्लास—(पु० अ०) शीशा। पानी पीने का एक प्रकार का बरतन।

ग्लेशियर—(अ०) बरफ की नदी।

ग्रोस—(अ०) बारह दर्जन।

घ

घ—हिन्दी-वर्णमाला में कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वा-मूल या कंठ से होता है।

घट—(पु० हि०) घड़ा। तंत्र-क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है।

घँघरी—(स्त्री० हि०) छोटा लहँगा।

घँघोलना—(क्रि० हि०) घँघोरना। पानी को हिलाकर उसमें कुछ मिलाना।

घंटा—(पु० सं०) अढ़ाई घड़ी का समय। एक तरह का बाजा जो मन्दिरों में लटकता रहता है। —घर=वह ऊँचा धौरहर जिस पर एक ऐसी बड़ी घड़ी लगी हो जो चारोंओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई पड़ता हो।

घंटी—(स्त्री० सं०) छोटा घंटा या उसके बजने का शब्द।

घट—(पु० सं०) घड़ा। कुम्भ।

घटती—(स्त्री० हि०) कमी। अवनति। अप्रतिष्ठा।

घटना—(क्रि० अ०) होना। कम होना। छोटा होना। (स०) वाक़्या। वारदात।

घटबढ—(स्त्री० हि०) कमी बढ़ी।

घटा—(स्त्री० सं०) मेघमाला। सुयह।

घटाटोप—(पु० सं०) बादलों का जमाव। ओहार।

घटी—(स्त्री० हि०) कमी। हानि। घाटा।

घटाना—(क्रि० हि०) कम करना। बाक़ी निकालना। अप्रतिष्ठा करना।

घटिया—(वि० हि०) जो अच्छे माल का न हो। सस्ता।

घडा—(पु० घट) मिट्टी का बना हुआ गगरा।

घडियाल—(पु०) वह घंटा जो पूजा के समय की सूचना के लिये बजाया जाय। एक जल जन्तु। मगर।

घडी—(स्त्री० हि०) समय सूचक यंत्र। समय।

घडीसाज—(पु० हि०) घड़ी की मरम्मत करने वाला।

घडीसाज़ी—(स्त्री० हि०) घड़ी की मरम्मत का व्यवसाय।

घडोंची—(स्त्री० हि०) घड़ा रखने की तिपाई या ऊँचा जगह।

घन—(पु० सं०) मेघ। हथौड़ा। समूह।

घनघोर—(पु० सं०) भीषण ध्वनि। भयानक।

घनचक्कर—(पु० सं०) मूर्ख। आवारा गर्द। अतिशयवादी। सूर्यमुखी का फूल। चक्कर। जंजाल।

घनत्व—(पु० सं०) सघनता।

घनफल—(पु० सं०) लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणन फल।

घनमूल—(पु० सं०) गणित में किसी घन-राशि का मूल अंक।

घना—(पु० सं० घन) गझिन। नज़दीकी। बहुत अधिक।

घूस—(स्त्री० हि०) चूहे के वर्ग का एक जन्तु। रिश्वत। उत्कोच।
घृत—(पु० हि०) घी।
घेंटा—(पु० अनु०) सुअर का बच्चा।
घेघा—(पु० देश०) गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है। गले का वह रोग जिससे गले में सूजन होकर थैली सा निकल आता है।
घेर—(पु० हि०) चारोंओर का फैलाव। घेरा। —घार= चारोंओर का फैलाव। खुशामद करना। घेरा= चारोंओर की सीमा। घिरा हुआ स्थान। हाता। मण्डल।
घोंघा—(पु० देश०) शंख की तरह का एक कीड़ा। मूर्ख। गावदी।
घोंची—(स्त्री० हि०) वह बैल जिसके सींग कानों की ओर मुड़े हों।
घोंटना—(क्रि० हि०) घूँट घूँट करके पीना।
घोंसला—(पु० हि०) नीड़। खोता।
घोटना—(क्रि० स० हि०) रग ड़ना। अभ्यास करना।
घोटाई—(स्त्री० हि०) घोटने की मजदूरी।
घोटाला—(पु० (देश०) घपला। गड़बड़।
घोड़ा—(पु० हि०) एक जानवर। खटका जिसके दबाने से बंदूक में रंजक लगती है और गोली चलती है। शतरंज का एक मोहरा जो ढाई घर चलता है। —गाड़ी=वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है। (स्त्री०) घोड़ी=टोंटा।
घोर—(वि० स०) भयंकर। सघन। कठिन। गहरा। बुरा। बहुत अधिक।
घोषणा—(स्त्री० स०) उच्च स्वर से किसी बात की सूचना राजाज्ञा आदि का प्रचार गर्जन। ध्वनि। —पत्र=

घुमक्कड़—(वि० हि०) बहुत घूमने वाला। सैलानी।

घुमनी—(वि० स्त्री० हि०) जो इधर उधर घूमती फिरे।

घुमाव—(पु० हि०) चक्कर। —दार=चक्करदार।

घुसपैठ—(स्त्री० हि०) पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई।

घूँघट—(पु० हि०) वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढका रहता है।

घूँट—(पु० अनु०) पानी या किसी द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार गले के नीचे उतारा जा सके। चुसकी।

घुंडीदार—(वि० हि०) जिसमें घुंडी लगी हो।

घुटना—(पु० हि०) पाँव के मध्य भाग का जोड़। साँस का भीतर ही भीतर दब जाना। रुकना।

घुटन्ना—(पु० हि०) घुटनों तक का पायजामा। पतली मोहरी का पायजामा।

घुट्टी—(स्त्री० हि०) वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जाती है।

घुड़कना—(क्रि० हि०) डाँटना।

घुड़की—(स्त्री० हि०) डाँट, डपट। फटकार।

घुड़दौड़—(स्त्री० हि०) घोड़ों की दौड़। घोड़ों के दौड़ाने का स्थान।

घुड़साल—(स्त्री० हि०) अस्त बल।

घूँटी—(स्त्री० हि०) एक औषधि जो छोटे बच्चों को पिलाई जाती है।

घूँसा—(पु० हि०) मुक्का।

घूमना—(क्रि० अ०) चारोंओर फिरना। चक्कर खाना। देशान्तर भ्रमण। मँडराना। किसी ओर को मुड़ना। वापस आना या जाना। लौटना।

घूर—(पु० हि०) वह जगह जहाँ कूड़ा-करकट फेंका जाय।

घूरना—(क्रि० हि०) बुरी नीयत से एकटक देखना।

चद—(वि० फ़ा०) कुछ ।
चदन—(पु० स०) एक पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत सुगंधित होती है ।
चदा—(पु० हि०) चन्द्रमा । चेहरी । उगाही ।
चन्द्र—(पु० स०) चन्द्रमा । गले में पहनने का एक गहना । गोलला हार । चन्द्रोदय=चन्द्रमा का उदय । चँदोवा । वैद्यक में एक रस ।
चपई—(वि० हि०) पीले रंग का ।
चपक—(पु० स) चम्पा ।
चपत—(वि० देश०) चलता । असद्दाम ।
चपा—(पु० हि०) एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के फूल लगते हैं ।
चपू—(पु० स०) गद्य-पद्य मय काव्य ।
चकई—(स्त्री० हि०) मादा चकवा ।
चकती—(स्त्री० हि०) पट्टी । पैबन्द ।
चकत्ता—(पु० हि०) चमड़े पर पड़ा हुआ धब्बा या दाग़ ।
चकनाचूर—(वि० हि०) चूर चूर ।
चकबदी—(स्त्री० हि०) ज़मीन की हदबंदी ।
चकमक—(पु० तु०) एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्द आग निकलती है ।
चकमा—(पु० हि०) भुलावा ।
चकराना—(क्रि० हि०) घूमना । चकित होना । आश्चर्य में डालना ।
चकला—(पु० हि०) चौका । चक्की । इलाक़ा । कसबी-ख़ाना ।
चकलेदार—(पु० देश०) किसी प्रदेश का शासक या कर संग्रह करनेवाला ।
चकवा—(पु० हि०) एक पक्षी ।
चकाचौंध—(स्त्री हि०) दृष्टि की तिलमिलाहट ।

पत्र जिसमें सर्वसाधारण को सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो। विज्ञप्ति। सूचना पत्र।

घोसी—(पु० हि०) अहीर। ग्वाला। दूध बेचनेवाला। आजकल जो मुसलमान दूध बेचते हैं, वे घोसी कहलाते हैं।

घौर—(पु० देश०) फलों का गुच्छा। घौद।

च

च—हिंदी-वर्णमाला का २२वाँ अक्षर और च वर्ग का पहला व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

चंग—(स्त्री० फा०) लड़कों के खेलने का कागज़ का बाजा। पतंग। गुड्डी।

चंगा—(वि० हि०) नीरोग। तन्दुरुस्त। अच्छा।

चंगुल—(पु० हि०) चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा। चकोटा।

चँगेर, चँगेरी—(स्त्री० हि०) टोकरी। डलिया।

चंचल—(वि० सं०) अधीर। उद्विग्न। नटखट। —ता= चपलता। शरारत।

चट—(वि० हि०) चालाक। धूर्त।

चडाल—(पु० सं०) चाण्डाल। डोम।

चंडू—(पु० हि०) अफ़ीम का सत जिसका धुआँ नशे के लिये एक नली के द्वारा पाते हैं। —खाना=वह घर जहाँ लोग इकट्ठे होकर चंडू पीते हैं।

चंडूल—(पु० देश०) ख़ाकी रंग की एक छोटी चिड़िया, जो पेड़ों और झाड़ियों में बहुत सुन्दर घोसला बनाती है और बहुत अच्छा बोलती है। पुराना चंडूल=बेडौल भद्दा या बेवकूफ़ आदमी।

चटनी—(स्त्री० हि०) अवलेह।

चटपटी—(स्त्री० हि०) आतुरता। तेज चीज़, जैसे अचार आदि।

चटाई—(स्त्री० हि०) तृण का बिछौना।

चटाना—(क्रि० हि०) खिलाना। रिशवत देना।

चटोरा—(वि० हि०) स्वाद लोलुप। लोभी।

चट्टान—(स्त्री० हि०) शिला-पट।

चट्टी—(स्त्री० हि०) पड़ाव। स्लिपर।

चढ़ना—(क्रि० हि०) ऊँचाई पर जाना। बढ़ना। आक्रमण करना। मँहगा होना। आवाज़ तेज होना। बहाव के विरुद्ध नदी में चलना। तनना। देवार्पित होना। ढोल सितार आदि की डोरी या तार कस जाना। सवार होना। किसी निर्दिष्ट काल विभाग जैसे वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरम्भ होना। कर्ज होना। दर्ज होना। पकने या आँच खाने के लिये चूल्हे पर रक्खा जाना। लेप होना। चढ़ाई = चढ़ने की क्रिया। वह स्थान जो आगे की ओर बराबर ऊँचा होता गया हो। धावा। चढ़ा ऊपरी = होड़। चढ़ाना = ऊँचाई पर पहुँचाना। चढ़ने में प्रवृत्त कराना। भाव बढ़ाना। धावा कराना। चढ़ाव = वह गहना जो दूल्हे के घर की ओर से दुलहिन को पहनाया जाता है। वह दिशा जिधर से नदी या पानी की धारा आई हो। चढ़ावा = पुजापा। बढ़ावा।

चतुरंग—(पु०, सं०) शतरंज का खेल। चतुरंगिणी = वह सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ, और पैदल हों।

चतुर—(पु० सं०) तेज। चलाक। चतुराई = होशियारी। चालाकी।

चतुर्थ—(वि० सं०) चौथा। चतुर्थांश = एक चौथाई।

चकित—(वि० स०) विस्मित। हैरान।

चकोर—(पु० स०) एक पक्षी।

चक्कर—(पु० हि०) फेरा।

चक्का—(पु० हि०) पहिया।

चक्की—(स्त्री० हि०) आटा पीसने या दाल दलने का यन्त्र।

चक्र—(पु० स०) पहिया। कुम्हार का चाक। लोहे का एक अस्त्र जो पहिए के आकार का होता था। षड्यन्त्र।

चक्रवर्ती—(वि० हि०) सार्वभौम।

चक्रवाक—(पु० स०) चकवा पक्षी।

चक्रवृद्धि—(स्त्री० स०) सूद दर सूद।

चक्रव्यूह—(पु० स०) एक प्रकार की फौजी मोर्चेबंदी।

चख—(फ़ा०) झगड़ा। लड़ाई।

चखना—(क्रि० हि०) स्वाद लेना।

चखाचख—(फ़ा०) झगड़ा। लड़ाई के समय तलवार की आवाज़।

चखाचखी—(स्त्री० फ़ा०) लाग-डाँट। विरोध। बैर।

चखाना—(क्रि० हि०) स्वाद चखाना। खिलाना।

चगड़—(वि० देश०) चतुर।

चगताई—(पु० तु०) मध्य एशिया निवासी तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश। अकबर इसी वंश का था।

चचा—(पु० हि०) बाप का भाई। चची=चचा की स्त्री चचेरा=चचाज़ाद। चचा से उत्पन्न।

चट—(क्रि० वि०) शीघ्र। वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है।

चटकदार—(वि० हि०) चटकीला।

चटकनी—(स्त्री० हि०) सिटकिनी।

चटकमटक—(स्त्री० हि०) बनाव। शृङ्गार। वेष विन्यास। चमक-दमक।

चबेना—(पु० हि०) चर्वण, भूँजा।

चमक—(स्त्री० हि०) रोशनी। कांति। कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एक-बारगी अधिक बल पड़ने के कारण पड़ता है। —दमक = तड़क-भड़क। ठाटबाट। —दार = भड़कीला। —ना = देदीप्यमान होना। चमकना। प्रसिद्ध होना। बढ़ती पर होना। चौंकना। झट से निकल जाना। एक बारगी दर्द हो उठना। मटकाना। चमकाना = साफ़ करना। चौंकाना। मटकाना। चमकीला = चमकदार। भड़कीला।

चमगादड़—(पु० हि०) एक जन्तु का नाम।

चमचम—(स्त्री० हि०) एक बँगला मिठाई।

चमचा—(पु० फ़ा०) चम्मच। एक प्रकार की छोटी कलछी। चिमटा।

चमड़ा—(पु० हि०) त्वचा। चर्म।

चमत्कार—(पु० [illegible]०) आश्चर्य। करामात।

चमत्कारी—(पु० स०) करामाती।

चमन—(पु० फ़ा०) फुलवाड़ी।

चमर—(पु० स०) सुरा गाय की पूँछ का बना चँवर।

चमरख—(स्त्री० हि०) चरखे की गुड़ियों में लगाने की चकती।

चमार—(पु० हि०) चमड़े का काम करनेवाली एक जाति-विशेष जिसे रैदास भी कहते हैं।

चमेली—(स्त्री० हि०) एक फूल।

चमोटा—(पु० हि०) चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाइ छूरे को रगड़ते हैं।

चमोटी—(स्त्री० हि०) चाबुक। पतली छड़ी।

चम्मच—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की हलकी कलछी।

चयन—(पु० स०) संग्रह। चुनना।

चतुर्दशी—(स्त्री० स०) चौदहवीं तिथि।
चतुर्भुज—(वि० सं०) चार भुजाओं वाला। विष्णु। वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों।
चतुर्वर्ग—(पु० स०) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।
चतुर्वर्ण—(पु० स०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
चतुर्वेदी—(पु० हि०) चार वेदों का जानने वाला पुरुष। ब्राह्मणों की एक जाति।
चतुष्पद—(पु० स०) चौपाया।
चतुष्पदी—(स्त्री० स०) चौपाई। चार पद का गीत।
चना—(पु० हि०) रबी की फसल का एक प्रधान अन्न जिसे बूट, छोला और रहिला भी कहते हैं।
चनार—(फ़ा०) एक पेड़।
चन्दाँ—(फ़ा०) इस क़दर। इतनी देर। अभी।
चन्दन—(फ़ा०) चन्दन। सन्दल।
चन्डाल—(फ़ा०) चाण्डाल। चूहड़ा। भंगी।
चपकन—(फ़ा०) अँगरखा।
चपकलश—(तु०) तलवार की लड़ाई। गिरोह। भीड़। कठिन स्थिति।
चपड़ा—(पु० हि०) साफ़ की हुई लाख।
चपत—(पु० हि०) तमाचा। थप्पड़।
चपरासी—(पु० फ़ा०) प्यादा। अरदली।
चपल—(वि० स०) चंचल। चालाक।
चपलता—(स्त्री०स०) चंचलता। धृष्टता।
चपला—(स्त्री० स०) फुरतीली। बिजली।
चपाती—(स्त्री० हि०) रोटी।
चपेटा—(पु० हि०) धक्का।
चप्पल—(पु० हि०) एक प्रकार का जूता।
चबाना—(क्रि० हि०) दाँतों से कुचलना।
चबूतरा—(पु० फ़ा०) चौतरा

चराचर—(वि० सं०) जड़ और चेतन।

चरित—(पु० सं०) जीवनी। कृत्य। चरितार्थ = जो पूरा उतरे। कृतकृत्य। चरित्र = स्वभाव। कार्य्य। करनी। —नायक = वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कुछ लिखा जाय। —वान = सदाचारी।

चर्च—(पु० अं०) गिरजा घर।

चर्चा—(स्त्री० सं०) बयान। बातचीत।

चर्चित—(वि० सं०) लेप किया हुआ।

चर्म—(पु० सं०) चमड़ा। —कार = चमार।

चर्य्या—(स्त्री० सं०) आचरण। कामकाज।

चर्राना—(क्रि० हि०) किसी बात की प्रबल इच्छा होना। लकड़ी आदि के टूटने का शब्द। खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव और हलकी पीड़ा।

चवर्ण—(पु० सं०) चबाना। चबेना।

चर्वित—(वि० सं०) चबाया हुआ। —चर्वण = (पु० सं०) किसी किए हुये काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना।

चलती—(स्त्री० हि०) प्रभाव

चलतू—(वि० हि०) काम चलाऊ। साधारण।

चलन—(पु० हि०) गति। रस्म। रिवाज। प्रचार। जिसका व्यवहार प्रचलित हो। चलना = गमन करना। निभना। चल विचल = जो अपने स्थान से हट गया हो। अव्यवस्थित। चलाऊ - टिकाऊ। मज़बूत। चलान = भेजा जाना। चलाना = चलने के लिये प्रेरित करना। गति देना। निभाना। चलायमान = चंचल। चलने वाला।

चवन्नी—(स्त्री० हि०) चार आने

चर—(पु० सं०) दूत। क़ासिद।

चरकटा—(पु० हि०) हाथी के लिये चारा काटनेवाला आदमी।

चर्ख़—(फ़ा०) आकाश।

चरखा—(पु० हि०) रहट। गराड़ी। झगड़े बखेड़े या झंझट का काम।

चरखी—(स्त्री० हि०) छोटा चरखा। (फ़ा०) वह वस्तु जो बराबर घूमती रहे।

चरण—(पु० सं०) पैर। किसी छंद, श्लोक या पद्य आदि का एक पद। चरणामृत=पैर का धोया हुआ जल। चरणोदक=चरणामृत।

चरना—(पु० हि०) पशुओं का मैदान में घूम घूमकर चारा खाना। घूमना फिरना। चरनी=वह नाद जिसमें पशुओं को खाने के लिये चारा दिया जाता है। चराना=पशुओं को चारा खिलाने के लिये मैदान में ले जाना। चरवाहा=वह जो पशु चरावे। चरवाही=पशु चराने की मज़दूरी। चराऊ=चरागाह। चरागाह=वह मैदान जहाँ पशु चरते हों। चरिंदा=चरने वाला जीव, जैसे, गाय भैंस आदि। चरी=वह ज़मीन जो किसानों को पशुओं के चारे के लिये ज़मींदार से बिना लगान मिलती है। बाजरे की क़िस्म का एक पौधा, जिसे जानवर खाते हैं।

चरपरा—(वि हि०) स्वाद में तीक्ष्ण।

चरबाँक, चरबाक—(वि० फ़ा० चब) चालाक। शोख़।

चरबी—(स्त्री० फ़ा०) मज्जा।

चरमराना—(क्रि० हि०) जूते आदि से चरमर शब्द होना।

चरस—(पु० हि०) गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद। मोट। पुर।

चरसा—(पु० हि०) मोट। पुर। भूमि का एक परिमाण।

चराग—(फ़ा०) दीपक।

चराचर—(वि० सं०) जड़ और चेतन।

चरित—(पु० सं०) जीवनी। कृत्य। चरितार्थ = जो पूरा उतरे। कृतकृत्य। चरित्र = स्वभाव। कार्य्य। करनी। —नायक = वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कुछ लिखा जाय। —वान = सदाचारी।

चच—(पु० अ०) गिरजा घर।

चर्चा—(स्त्री० सं०) बयान। बातचीत।

चर्चित—(वि० सं०) लेप किया हुआ।

चर्म—(पु० सं०) चमड़ा। —कार = चमार।

चर्य्या—(स्त्री० सं०) आचरण। कामकाज।

चर्राना—(क्रि० हि०) किसी बात की प्रबल इच्छा होना। लकड़ी आदि के टूटने का शब्द। खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव और हलकी पीड़ा।

चर्वण—(पु० सं०) चबाना। चबेना।

चर्वित—(वि० सं०) चबाया हुआ। —चर्वण = (पु० सं०) किसी किए हुये काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना।

चराती—(स्त्री० हि०) प्रभात

चलत्—(वि० हि०) काम चलाऊ। साधारण।

चलन—(पु० हि०) गति। रस्म। रिवाज। प्रचार। जिसका व्यवहार प्रचलित हो। चलना = गमन करना। निभना। चल विचल = जो अपने स्थान से हट गया हो। अव्यवस्थित। चलाऊ = टिकाऊ। मज़बूत। चलान = भेजा जाना। चलाना = चलने के लिये प्रेरित करना। गति देना। निभाना। चलायमान = चंचल। चलने-वाला।

चवन्नी—(स्त्री० हि०) चार आने

चर—(पु० स०) दूत। क़ासिद।
चरकटा—(पु० हि०) हाथी के लिये चारा काटनेवाला आदमी।
चर्ख़—(फ़ा०) आकाश।
चरखा—(पु० हि०) रहट। गराड़ी। झगड़े बखेड़े या झंझट का काम।
चरखी—(स्त्री० हि०) छोटा चरखा। (फ़ा०) वह वस्तु जो बराबर घूमती रहे।
चरण—(पु० स०) पैर। किसी छंद, श्लोक या पद्य आदि का एक पद। चरणामृत=पैर का धोया हुआ जल। चरणोदक=चरणामृत।
चरना—(पु० हि०) पशुओं का मैदान में घूम घूमकर चारा खाना। घूमना फिरना। चरनी=वह नाद जिसमें पशुओं को खाने के लिये चारा दिया जाता है। चराना=पशुओं को चारा खिलाने के लिये मैदान में ले जाना। चरवाहा=वह जो पशु चरावे। चरवाही=पशु चराने की मज़दूरी। चराऊ=चरागाह। चरागाह=वह मैदान जहाँ पशु चरते हों। चरिंदा=चरने वाला जीव, जैसे, गाय भैंस आदि। चरी=वह ज़मीन जो किसानों को पशुओं के चारे के लिये ज़मींदार से बिना लगान मिलती है। बाजरे की क़िस्म का एक पौधा, जिसे जानवर खाते हैं।
चरपरा—(वि० हि०) स्वाद में तीखा।
चरबाँक, चरबाक—(वि० फ़ा० चर्ब) चालाक। शोख़।
चरबी—(स्त्री० फ़ा०) मज्जा।
चरमराना—(क्रि० हि०) जूते आदि से चरमर शब्द होना।
चरस—(पु० हि०) गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद। मोट। पुर।
चरसा—(पु० हि०) मोट। पुर। भूमि का एक परिमाण।
चराग़—(फ़ा०) दीपक।

चराचर—(वि० स०) जड़ और चतन।

चरित—(पु० स०) जीवनी। कृत्य। चरितार्थ = जो पूरा उतरे। कृतकृत्य। चरित्र = स्वभाव। कार्य्य। करनी। —नायक = वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कुछ लिखा जाय। —वान = सदाचारी।

चरु—(पु० स०) गिरजा घर।

चर्चा—(स्त्री० स०) बयान। बातचीत।

चर्चित—(वि० स०) लेप किया हुआ।

चर्म—(पु० स०) चमड़ा। —कार = चमार।

चर्य्या—(स्त्री० स०) आचरण। कामकाज।

चर्राना—(क्रि० हि०) किसी बात की प्रबल इच्छा होना। लकड़ी आदि के टूटने का शब्द। खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव और हलकी पीड़ा।

चर्वण—(पु० स०) चबाना। चबेना।

चर्वित—(वि० स०) चबाया हुआ। —चर्वण = (पु० स०) किसी किए हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना।

चलती—(स्त्री० हि०) प्रभाव

चलतू—(वि० हि०) काम चलाऊ। साधारण।

चलन—(पु० हि०) गति। रस्म। रिवाज। प्रचार। जिसका व्यवहार प्रचलित हो। चलना = गमन करना। निभना। चल-विचल = जो अपने स्थान से हट गया हो। अव्यवस्थित। चलाऊ = टिकाऊ। मज़बूत। चलान = भेजा जाना। चलाना = चलने के लिये प्रेरित करना। गति देना। निभाना। चलायमान = चंचल। चलने वाला।

चवन्नी—(स्त्री० हि०) चार आने

पर नीचे आग जलाकर भोजन पकाया जाता है।

चूसना—(हि०) किसी पदार्थ का रस खींच-खींचकर पीना।

चूहा—(पु० हि०) मूस।

चें—(स्त्री०) चिड़ियों के बोलने का शब्द।

चेंज—(पु० अ०) हवा बदलना। परिवर्तन। विनिमय।

चेंबर—(पु० अ०) सभा-गृह। —आफ कामर्स=व्यापारियों की सभा।

चेअर—(स्त्री० अ०) बैठने की कुरसी। —मैन=किसी सभा या बैठक का प्रधान।

चेक—(पु० अ०) वह रुक्का या आज्ञापत्र जो किसी बैंक के नाम लिखा गया हो और जिसके देने पर वहाँ से उस पर लिखी हुई रकम मिल जाय।

चेचक—(स्त्री० फ़ा०) शीतला या माता नामक रोग। —रू=वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग हों।

चेत—(पु० हि०) ज्ञान। स्मरण। चेतन=आत्मा। जीवधारी। चेतना=बुद्धि। स्मृति। विचारना।

चेतावनी—(स्त्री० हि०) सतर्क होने की सूचना।

चेन—(स्त्री० अ०) ज़ंजीर।

चेना—(पु० हि०) साँपों की जाति या एक भेद।

चेप—(पु० हि०) लसदार रस।

चेपना—(क्रि० हि०) चिपकाना

चेला—(पु० हि०) शिष्य।

चेष्टा—(स्त्री० स०) कोशिश परिश्रम। इच्छा।

चेहरा—(पु० फ़ा०) मुखड़ा।

चेहलुम—(पु० फ़ा०) मुहर्रम चालीसवें दिन की रसम।

चेंसलर—(पु० अ०) विश्व विद्यालय का प्रधान अधिकारी।

चैत—(पु० हि०) वह चान्द्रमास जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़े।

चैतन्य—(पु० स०) होशियार।

एक प्रसिद्ध बंगाली वैष्णव धर्म प्रचारक।

चैती—(स्त्री० हि०) रब्बी। एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।

चैन—(पु० हि०) आराम।

चैला—(पु० हि०) कुल्हाड़ी से चीरा हुआ लकड़ी का टुकड़ा। चैली=(स्त्री०) लकड़ी का छोटा टुकड़ा जो छीलने या काटने से निकलता है।

चैलेंज—(पु० अ०) ललकार।

चोंगा—(पु०) बाँस की खोखली नली। बेवकूफ़।

चोगी—(स्त्री० हि०) भाथी में की वह नली जिसके द्वारा होकर हवा निकलती है।

चोंच—(स्त्री० हि०) पक्षियों के मुख का अगला भाग। बुद्धू।

चोंथना—(क्रि० हि०) फाड़ना या नोचना।

चोआ—(पु०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव पदार्थ।

चोकर—(पु० हि०) आटे का वह अंश जो छानने के बाद छलनी में बच जाता है।

चोखा—(वि० हि०) श्रेष्ठ। शुद्ध। ईमानदार। तेज। भुरता।

चोगा—(फ़ा०) लम्बा अंगरखा।

चोचला—(पु० हि०) हाव भाव। नख़रा।

चोट—(स्त्री० हि०) आघात। आक्रमण।

चोटा—(पु० हि०) राब का वह पसेव जो कपड़े में रखकर दबाने या छानने से निकलता है। झोंटा।

चोटी—(स्त्री० हि०) शिखा। एक में गुँथे हुये स्त्रियों के सिर के बाल। शिखर।

चोट्टा—(पु० हि०) चोर।

चोब—(स्त्री० फ़ा०) शामियाना खड़ा करने का बड़ा खम्भा। नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। छड़ी। लकड़ी। —दार वह नौकर जो हाथ में लकड़ी लेकर आगे आगे चले।

चोर—(पु० सं०) जो छिपकर पराई वस्तु का अपहरण करे। —दरवाज़ा=किसी मकान में पीछे की ओर या अलग खोलने से बना हुआ गुप्त द्वार। चोरी=छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम।

चोला—(पु० हि०) लम्बा और ढीला-ढाला कुरता। शरीर।

चोली—(स्त्री० सं०) अँगिया। कञ्चुकी।

चौंकना—(क्रि० हि०) भड़कना। भौंचक्का होना। सशंक होना।

चौंधियाना—(क्रि० हि०) चका चौंध होना। दृष्टि मंद होना।

चौंरी—(स्त्री० हि०) चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। सफ़ेद पूँछ वाली गाय।

चौक—(पु० हि०) चौखूँटी खुली ज़मीन। शहर का बड़ा बाज़ार। मंगल के अवसरों पर आँगन में अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। चार का समूह।

चौकड़ी—(स्त्री० हि०) छलाँग।

चौकन्ना—(वि० हि०) सावधान।

चौकस—(वि० हि०) चौकन्ना। ठीक।

चौका—(पु० हि०) काठ या पत्थर का पाटा जिस पर रोटी बेलते हैं। वह लिपा पुता स्थान जहाँ हिन्दू लोग खाना बनाते और खाते हैं।

चौकी—(स्त्री० हि०) अड्डा। छोटा थाना। रखवाली। रोटी बेलने का एक छोटा चकला। —दार=पहरा देनेवाला।

चौकोर—(वि० हि०) चौखूँटा।

चौखट—(स्त्री० हि०) दहलीज़।

चौगिर्द—(क्रि० वि० हि०) चारों तरफ़।

चौड़ा—(वि० हि०) लंबाई की ओर के दोनों किनारों के बीच फैला हुआ। —ई=लम्बाई के दोनों किनारों का फैलाव।

चौतरा—(पु०) चबूतरा।

चौताल—(पु० हि०) मृदंग

का एक ताल। एक प्रकार का गीत।
चौथा—(वि० हि०) क्रम में तीसरे के बाद पड़नेवाला अंक। —ई=चौथा भाग। —चौथिया=वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे।
चौधराना—(पु० हि०) चौधरी का पद। वह धन जो चौधरी को उसके कामों के बदले में मिले।
चौधरी—(पु० हि०) किसी जाति, समाज या मंडली का मुखिया।
चौपट—(वि० हि०) नष्ट भ्रष्ट। बरबाद।
चौपड़—(स्त्री० हि०) चौसर नामक खेल।
चौपाई—(स्त्री हि०) एक प्रकार का छन्द।
चौपाल—(पु० हि०) खुली हुई बैठक।
चौबंदी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का छोटा चुस्त अंगा। राजस्व।
चौबे—(पु० हि०) ब्राह्मणों की एक जाति।
चौबोला—(पु० हि०) एक मात्रिक छन्द।
चौभड़—(स्त्री० वि०) वह चौड़ा, चिपटा और गड्ढे दार दाँत जिससे आहार कूँचते या चबाते हैं।
चौमंजिला—(वि० हि०) चार मरातिब या खंडोंवाला मकान।
चौमासा—(पु० हि०) वर्षा-काल के चार महीने।
चौमुहानी—(स्त्री० हि०) चौराहा।
चौरस—(वि० हि०) समथल।
चौरा—(पु० हि०) चबूतरा। वह बैल जिसकी पूँछ सफ़ेद हो।
चौराई—(स्त्री० हि०) चौलाई नाम का साग।
चौसर—(पु० हि०) चौपड़।
चौहद्दी—(स्त्री० हि०) चारों ओर की सीमा।
चौहान—(पु० हि०)

के अंतर्गत क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

च्युत—(वि० सं०) पतित। गिरा हुआ।

छ

छ—हिंदी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन। इसके उच्चारण का स्थान तालु है।

छँटना—(क्रि० हि०) अलग होना। छितराना। साथ छोड़ना।

छँटा—(वि० हि०) चुना हुआ। मशहूर।

छंद—(पु० सं०) वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो। छंदोबद्ध=जो पद्य के रूप में हो। छंदोभंग=छंद रचना का एक दोष।

छकड़ा—(पु० सं०) बैलगाड़ी। बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी जिसे बैल खींचते हैं।

छकना—(क्रि० स०) तृप्त होना। खा पीकर अघाना। मूढ़ बनना।

छकाछक—(वि० हि०) अघाया हुआ। भरा हुआ।

छक्का—(पु० सं०) छः का समूह या वह वस्तु जो छः अवयवों से बनी हो। जूए का एक दाँव जिसमें कौड़ी या चित्ती फेंकने से छः कौड़ियाँ चित पड़ें।

छछूँदर—(पु० सं०) चूहे की जाति का एक जंतु। एक आतशबाज़ी।

छज्जा—(पु० हि०) ओलती। छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है।

छटकना—(क्रि० हि०) सटकना। दाँव से निकल जाना। वेग से अलग हो जाना।

छटपटाना—(क्रि० अनु०) तड़पना। बेचैन होना। घबन

या पीड़ा के कारण हाथ-पैर पटकारना।

छटाँक—(स्त्री० हि०) पाव भर का चौथाई। एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग है।

छटा—(स्त्री० हि०) प्रकाश। झलक। शोभा। छवि।

छठा—(वि० हि०) गिनती के क्रम से जिसका स्थान छ पर हो।

छड़—(स्त्री० हि०) धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।

छड़ा—(पु० हि०) लच्छा। पैर में पहनने का चूड़ी के आकार का एक गहना।

छड़ी—(स्त्री० हि०) पतली लाठी। सीधी पतली लकड़ी। —दार =छड़ीवाला। चोपदार।

छत—(स्त्री० हि०) पाटन। घर की दीवारों के ऊपर की पटिया।

छतरी—(स्त्री० हि०) छाता। राजाओं की चिता या साधु महात्माओं की समाधि के स्थान पर स्मारक रूप से बना हुआ छज्जेदार मंडप।

छतियाना—(क्रि० हि०) छाती के पास ले आना। बंदूक तानना।

छत्ता—(पु० हि०) मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर।

छत्र—(पु० सं०) राजाओं का छाता जो राजचिह्नों में से है। —पति=राजा। छत्र का अधिपति। —भंग=राजा का नाश।

छद्म—(पु० सं०) छिपाव। बहाना। छल। कपट। —वेश=बदला हुआ वेश।

छनछनाना—(क्रि० अनु०) किसी तपी धातु पर पानी आदि पड़ने पर छन-छन शब्द होना।

छप—(स्त्री० अनु०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।

छपटना—(क्रि० हि०) चिपकना। सटना।

छपटाना—(क्रि॰ हि॰) चिमटाना । आलिङ्गन करना ।

छपना—(क्रि॰ अ॰ हि॰) छापा जाना । मुद्रित होना । शीतला का टीका लगाना ।

छपाना—(क्रि॰ हि॰) छापने का काम कराना । मुद्रित कराना । शीतला का टीका लगवाना ।

छप्पय—(पु॰ हि॰) एक छंद जिसमें छ चरण होते हैं ।

छप्पर—(पु॰ हि॰) छाजन । छान ।

छबीला—(वि॰ हि॰) सुहावना । सुन्दर ।

छब्बीस—(वि॰ हि॰) जो गिनती में बीस और छ हो ।

छमछम—(स्त्री॰ अनु॰) नूपुर या घुँघरू आदि का शब्द । पानी बरसने का शब्द ।

छमाछम—(स्त्री॰ अनु॰) गहनों के बजने का शब्द । पानी बरसने का शब्द ।

छरछराना—(क्रि॰ हि॰) नमक या क्षार लगने से शरीर का घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना । छरछराहट= घाव में नमक आदि लगाने से उत्पन्न पीड़ा ।

छल—(पु॰ स॰) ठगपन । बहाना । कपट । —छंद= चालबाज़ी । कपट का व्यवहार । —ना=किसी को धोखा देना । धोखा । छल । छली=कपटी । धोखेबाज़ ।

छलकना—(क्रि॰ अ॰) उमड़ना । बाहर प्रकट होना । छलकाना=किसी बर्तन में रखे जल को हिला-डुलाकर बाहर उछालना ।

छलाँग—(स्त्री॰ हि॰) कुदान । फलाँग । चौकड़ी ।

छलावा—(पु॰ हि॰) भूत प्रेत आदि की छाया जो एक बार दिखाई पड़कर फिर झट से अदृश्य हो जाती है ।

छल्ला—(पु॰ हि॰) मुँदरी । छल्लेदार=जिसमें छल्ले लगे हों ।

छवाई—(स्त्री० हि०) छाने का काम। छाने की मजदूरी।

छवि—(स्त्री० स०) शोभा। कांति। चमक।

छाँट—(स्त्री० हि०) छाँटने की क्रिया। काटने या कतरने की क्रिया। कै। छाँटना=काट-कर अलग करना। छिन्न भिन्न करना।

छाँदना—(क्रि० हि०) जकड़ना। कसना। बाँधना।

छाजन—(पु० हि०) छप्पर का ढाँचा।

छाता—(पु० हि०) बड़ी छतरी।

छाती—(स्त्री० हि०) सीना। वक्षस्थल।

छात्र—(पु० सं०) विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति—(स्त्री०स०) वज़ीफ़ा। स्कालरशिप।

छान—(स्त्री० हि०) छप्पर।

छानना—(क्रि० हि०) किसी चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े के पार निकालना।

छानबीन—(स्त्री० हि०) जाँच पड़ताल। गहरी खोज।

छाना—(क्रि० हि०) तानना। फैलाना।

छाप—(स्त्री० हि०) निशान। मुहर। —ना=मुद्रित करना।

छापा—(पु० हि०) मुहर। —खाना=प्रेस। मुद्रणालय।

छाया—(स्त्री० स०) साया। —दान=एक प्रकार का दान। —पथ=आकाश गंगा।

छाला—(पु० हि०) चमड़ा। फफोला।

छावनी—(स्त्री० हि०) छप्पर। डेरा। पड़ाव। सेना के ठहरने का स्थान।

छिउँकी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की छोटी चींटी।

छिछोरा—(पु० हि०) ओछा। नीच प्रकृति का। —पन=ओछापन।

छिटकना—(क्रि० हि०) बखेरना

छपटाना—(क्रि० हि०) चिमटना। आलिङ्गन करना।
छपना—(क्रि० अ० हि०) छापा जाना। मुद्रित होना। शीतला का टीका लगाना।
छपाना—(क्रि० हि०) छापने का काम कराना। मुद्रित कराना। शीतला का टीका लगवाना।
छप्पय—(पु० हि०) एक छंद जिसमें छ चरण होते हैं।
छप्पर—(पु० हि०) छाजन। छान।
छबीला—(वि० हि०) सुहावना। सुन्दर।
छब्बीस—(वि० हि०) जो गिनती में बीस और छ हो।
छमछम—(स्त्री० अनु०) नूपुर या घुँघरू आदि का शब्द। पानी बरसने का शब्द।
छमाछम—(स्त्री० अनु०) गहनों के बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द।
छरछराना—(क्रि० हि०) नमक या खार लगने से शरीर का घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना। छरछराहट= घाव में नमक आदि लगाने से उत्पन्न पीड़ा।
छल—(पु० सं०) ठगपन। बहाना। कपट। —छंद= चालबाज़ी। कपट का व्यवहार। —ना=किसी को धोखा देना। धोखा। छल। छली=कपटी। धोखेबाज़।
छलकना—(क्रि० अ०) उमड़ना। बाहर प्रकट होना। छलकाना=किसी बर्तन में भरे जल को हिला डुलाकर बाहर उछालना।
छलाँग—(स्त्री० हि०) कुदान। फलाँग। चौकड़ी।
छलावा—(पु० हि०) भूत प्रेत आदि की छाया जो एक बार दिखाई पड़कर फिर झट से अदृश्य हो जाती है।
छल्ला—(पु० हि०) मुँदरी। छल्लेदार=जिसमें छल्ले लगे हों।

छवाई—(स्त्री० हि०) छाने का काम। छाने की मज़दूरी।

छवि—(स्त्री० स०) शोभा। कांति। चमक।

छाँट—(स्त्री० हि०) छाँटने की क्रिया। काटने या कतरने की क्रिया। क़ै। छाँटना=काट कर अलग करना। छिन्न भिन्न करना।

छाँदना—(क्रि० हि०) जकड़ना। कसना। बाँधना।

छाजन—(पु० हि०) छप्पर का बाँधा।

छाता—(पु० हि०) बड़ी छतरी।

छाती—(स्त्री० हि०) सीना। वक्षस्थल।

छात्र—(पु० स०) विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति—(स्त्री०स०) वज़ीफ़ा। स्कालरशिप।

छान—(स्त्री० हि०) छप्पर।

छानना—(क्रि० हि०) किसी चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े के पार निकालना।

छानबीन—(स्त्री० हि०) जाँच-पड़ताल। गहरी खोज।

छाना—(क्रि० हि०) तानना। फैलाना।

छाप—(स्त्री० हि०) निशान। मुहर। —ना=मुद्रित करना।

छापा—(पु० हि०) मुहर। —खाना=प्रेस। मुद्रणालय।

छाया—(स्त्री० स०) साया। —दान=एक प्रकार का दान। —पथ=आकाश-गंगा।

छाला—(पु० हि०) चमड़ा। फफोला।

छावनी—(स्त्री० हि०) छप्पर। डेरा। पड़ाव। सेना के ठहरने का स्थान।

छिउँकी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की छोटी चींटी।

छिछोरा—(पु० हि०) ओछा। नीच प्रकृति का। —पन=नीचता।

छिटकना—(क्रि० हि०) बखेरना

—ना=लगाव में न रहना। दूर होना।

छूत—(स्त्री० हि०) स्पर्श।

छूना—(क्रि० हि०) स्पर्श करना।

छेकना—(क्रि० हि०) स्थान लेना। जगह लेना।

छेड़—(स्त्री० हि०) किसी को चिढ़ाने या तंग करने की क्रिया।

छेद—(पु० सं०) सूराख। —ना=बेधना।

छेना—(पु० हि०) पनीर। फटे दूध का खोया।

छेनी—(स्त्री० हि०) टाँकी।

छैल छिकनियाँ—(पु० देश०) शौक़ीन।

छैल छबीला—(पु० देश०) बाँका।

छैला—(पु० हि०) शौक़ीन। सजीला।

छोकड़ा—(पु० हि०) लड़का। —पन=लड़कपन। छिछोरापन। छोकड़ी=लड़की।

छोटा—(वि० हि०) लघु। —पन=छोटाई। लड़कपन।

छोटी इलाइची—(स्त्री० हि०) सफ़ेद या गुजराती इलायची।

छोड़ना—(क्रि० हि०) पकड़ से अलग करना।

छोप—(पु० हि०) मोटा लेप। —ना=गाढ़ा लेप करना।

छोर—(पु० हि०) किसी वस्तु का किनारा।

छोलदारी—(स्त्री० हि०) छोटा तंबू।

ज—चवर्ग का तीसरा अक्षर। इसका उच्चारण तालु से होता है।

जंक्शन—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ दो या अधिक रेलवे लाइनें मिली हों। वह स्थान जहाँ दो रास्ते मिले हों। संगम।

जंग—(स्त्री० फ़ा०) लड़ाई। युद्ध। लोहे का मुरचा।

जंगम—(वि० सं०) चलने-फिरनेवाला। चलता फिरता।

जंगल—(पु० सं०) वन। रेगिस्तान।

जँगला—(पु० पुर्त०) कटहरा। बाड़ा। चौखट या खिड़की जिसमें जाली या छड़ लगी हो।

जंगली—(वि० हि०) जंगल में मिलने या होनेवाला। जंगल सम्बन्धी। जंगल में रहनेवाला।

जंगी—(वि० फ़ा०) बड़ा।

जंघा—(स्त्री सं०) जाँघ।

जँचा—(वि० हि०) सुपरीक्षित।

जंजाल—(पु० हि०) झंझट। बखेड़ा। —जंजाली= झगड़ालू।

जंजीर—(फ़ा०) शृङ्खला, साँकल। जंजीरा=एक प्रकार की सिलाई जो जंजीर की तरह मालूम पड़ती है। लहरिया।

जंटिलमेन—(पु० अं०) सभ्य पुरुष। भलामानुस।

जंतरमंतर—(पु० हि०) जादू टोना।

जँतसार—(स्त्री० हि०) जाँता गाड़ने का स्थान।

जंता—(पु० हि०) तार खींचने का औज़ार।

जंत्री—(पु० हि०) पत्रा। पंचांग।

जंद—(पु० फ़ा०) पारसियों का धर्म ग्रंथ।

जंबीरी नीबू—(पु० हि०) एक प्रकार का खट्टा नीबू।

जंबुक—(पु० हि०) गीदड़।

जंबूरक—(स्त्री० प्रा०) छोटी तोप जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती है।

जंबूरची—(पु० प्रा०) तोपची।

जंबूरा—(पु० हि०) चक्र जिस पर तोप चढ़ाई जाती है।

जँभाइ—(स्त्री० हि०) उबासी।

जँभाना—(क्रि० हि०) जँभाइ लेना।

जंभीरी—(हि०) एक प्रकार का खट्टा नीबू।

जई—(स्त्री० हि०) जौ की जाति का एक अन्न।

जईफ—(वि० अ०) बुड्ढा। —जईफी=(प्रा०) बुढ़ापा।

जक—(प्रा०) हरा देना। दोषारोपण करना।

जकड़—(स्त्री० हि०) कसकर बाँधना। —ना=कड़ा बाँधना।

जकात—(स्त्री अ०) दान। खैरात। चुंगी।

जखीरा—(पु० अ०) संग्रह। ढेर।

जख्म—(अ०) घाव।

जग—(पु० हि०) दुनिया।

जगजगाना—(क्रि० अनु०) चमकना।

जगत्—(पु० स०) संसार। कुएँ के ऊपर चारों तरफ बना हुआ चबूतरा। —सेठ=बहुत बड़ा धनी महाजन जिसकी साख संसार में हो। जगदाधार=परमेश्वर। जगदीश्वर =परमेश्वर। जगद्गुरु= अत्यन्त पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष। शंकराचार्य की गद्दी पर के महन्तों की उपाधि। जगद्धात्री=दुर्गा की एक मूर्ति। जगन्नाथ=ईश्वर विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के अन्तर्गत पुरी नामक स्थान में स्थापित है। जगत्पिता=परमात्मा।

जगना—(क्रि० हि०) नींद से उठना।

जगमग, जगमगा—(वि॰अनु॰) प्रकाशित। चमकीला। जग-मगाना=चमकना। जगमगा हट=चमक।
जगवाना—(क्रि॰ हि॰) सोते से उठवाना।
जगह—(स्त्री॰ हि॰) स्थान।
जगात—(पु॰ हि॰) महसूल।
जगाती—(पु॰ हि॰) वह जो कर वसूल करे।
जगाना—(क्रि॰ स॰ हि॰) चैतन्य करना। सुलगाना।
जघन्य—(वि॰ स॰) नीच। निकृष्ट।
जच्चा—(स्त्री॰ फ़ा॰) प्रसूता स्त्री।
जज—(पु॰ अ॰) न्यायाधीश।
जजमेंट—(पु॰ अ॰) फैसला। निर्णय।
जज़ा—(अ॰) प्रतिफल। बदला।
जजिया—(पु॰ अ॰) एक प्रकार का कर।
जजी—(स्त्री॰ हि॰) जज की अदालत।
जज़ीरा—(पु॰ फ़ा॰) टापू। द्वीप।
जटना—(क्रि॰ स॰ हि॰) ठगना।
जटल—(स्त्री॰ हि॰) बकवास।
जटा—(स्त्री॰ स॰) उलझे हुए बड़े-बड़े बाल।
जटित—(वि॰ स॰) जड़ा हुआ। जटिल=अत्यन्त कठिन। जटाधारी।
जठर—(पु॰ स॰) पेट। जठरा-ग्नि=पेट का वह गरमी या अग्नि जिससे अन्न पचता है।
जड़—(वि॰ स॰) अचेतन। मूर्ख। —ता=अचेतता। —त्व=अचैतन्य।
जड़हन—(पु॰ हि॰) एक प्रकार का धान।
जड़ाऊ—(वि॰ हि॰) पचीकारी किया हुआ।
जड़ित—(वि॰ हि॰) जो किसी चीज़ में जड़ा हुआ हो।
जड़ी—(स्त्री॰ हि॰) बूटी।
जताना—(क्रि॰ स॰ हि॰) बत लाना।
जत्था—(पु॰ हि॰) झुंड।
जद—(फ़ा॰) चोट मारना। मारना।

जदल—(अ०) युद्ध। जङ्ग।
जदा—(फ़ा०) मारा हुआ। चोट खाया हुआ।
जदीद—(वि० अ०) नया।
जन—(पु० सं०) लोग। जन=(फ़ा०) स्त्री। धर्म पत्नी।
जन-संख्या—(स्त्री० सं०) आबादी।
जनक—(पु० सं०) जन्मदाता।
जनखरी—(फ़ा०) ठुड्डी।
जनखा—(वि० फ़ा०) हीजड़ा। नपुंसक।
जनता—(स्त्री० सं०) सर्व-साधारण। पबलिक।
जनना—(क्रि० स० हि०) प्रसव करना। जननी=माता।
जननेन्द्रिय—(स्त्री० सं०) योनि।
जनपद—(पु० सं०) देश। देश-वासी।
जनप्रिय—(वि० सं०) सर्वप्रिय।
जनयिता—(पु० हि०) जन्मदाता। पिता। जनयित्री=जन्म देने वाली। माता।
जनरल—(पु० अ०) अंग्रेज़ी सेना का सेनापति।
जनरव—(पु० सं०) किंवदंती। बदनामी। शोर।
जनवरी—(स्त्री० अ०) अँगरेज़ी साल का पहला महीना।
जनवास—(पु० हि०) वह जगह जहाँ कन्या-पक्ष की ओर से बरातियों के ठहरने का प्रबन्ध हो।
जनश्रुति—(स्त्री० सं०) अफ़वाह।
जनस्थान—(पु० सं०) दण्डकवन।
जना—(स्त्री० सं०) पैदाइश।
जनाजा—(पु० अ०) अर्थी। ताबूत।
जनानखाना—(पु० फा०) स्त्रियों के रहने का घर। अन्तःपुर।
जनाना—(क्रि० हि०) मालूम कराना।
जनाना—(वि० फ़ा०) स्त्रियों का। नामर्द। निर्बल। अन्तःपुर।
जनानापन—(पु० फ़ा०) मेहरापन। स्त्रीत्व।
जनाब—(पु० अ०) महाशय। —आली=मान्यवर।
जनार्दन—(पु० सं०) विष्णु।

जनाश्रय—(पु० सं०) मकान।
जनित—(वि० स०) जन्मा हुआ।
जनी—(स्त्री० हि०) दासी। स्त्री। जन्माई हुई।
जनूब—(अ०) दक्षिण दिशा।
जनेऊ—(पु० हि०) यज्ञोपवीत।
जनेत—(स्त्री० हि०) बरात।
जनेवा—(पु० हि०) लकड़ी आदि में बनी हुई लकीर।
जन्द—(फ़ा०) पारसियों की धर्म-पुस्तक।
जन्नत—(अ०) स्वर्ग। बिहिश्त।
जन्म—(पु० सं०) उत्पत्ति। —कुंडली=ज्योतिष के अनुसार वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले। —तिथि =जन्म दिन। वर्ष-गाँठ। —दिन=वर्ष गाँठ। —पत्र =जन्म पत्री। जीवन चरित्र। —भूमि=जन्म स्थान। —राशि=वह लग्न जिसमें किसी के उत्पन्न होने के समय चन्द्रमा उदय हो। —स्थान =जन्म भूमि। माता का गर्भ। जन्मांध=जन्म का अंधा। जन्माष्टमी=भादों की कृष्णाष्टमी।
जप—(पु० सं०) किसी मंत्र या वाक्य का धीरे धीरे पाठ करना। —तप=सन्ध्या। पूजा। —ना=किसी वाक्य या वाक्यांश को बराबर लगातार धीरे धीरे देर तक कहना या दोहराना। —माला=वह माला जिसे लेकर लोग जप करते हैं। —यज्ञ=जप।
जफ़र—(अ०) विजय। फ़तेह।
जफ़ा—(स्त्री० फ़ा०) सख़्ती। ज़ुल्म। —कश=सहनशील। मेहनती।
जफ़ील—(स्त्री० हि०) सीटी।
जब—(क्रि० वि० हि०) जिस समय।
जबड़ा—(पु० हि०) मुँह में दोनों ओर ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें डाढ़े जड़ी रहती हैं।
जबर—(वि० हि०) बलवान। मज़बूत।

ज़बरदस्त—(वि० फ़ा०) बली। दृढ़। ज़बरदस्ती=अत्याचार। बल पूर्वक। ज़बरन्=बलात्। ज़बरदस्ती।

जबरील—(अ०) ईसाई और इसलाम मज़हब में एक फ़िरिश्ते का नाम।

ज़च्चा—(अ०) प्रसूता। जिस स्त्री के बच्चा पैदा हुआ हो।

ज़बह—(पु० अ०) हिंसा। वध।

ज़बाँ—(स्त्री० फ़ा०) जीभ। —दराज़=बढ़-बढ़कर बातें करने वाला। —दराज़ी=धृष्टता। ज़बान=जीभ। भाषा। बोली। —बंदी=मौन। ज़बानी=मौखिक। कथित। कहना।

ज़बून—(वि० पु०) बुरा। बेवक़ूफ़।

ज़ब्त—(अ०) कोई वस्तु किसी के अधिकार से ले लेना। ज़ब्ती=ज़ब्त होने की क्रिया।

जब्बार—अत्याचारी। ज़ुल्म करनेवाला।

जब्र—(पु० अ०) ज़्यादती। सख़्ती।

जमघट—(पु० हि०) बहुत से मनुष्यों की भीड़। ठट्ठ।

जमशेद—(फ़ा०) फारस के एक बादशाह का नाम जो हकीम था।

जमहूर—(अ०) प्रजातंत्र शासन।

जमाअत—(अ०) गिरोह। दल। समूह।

जमाइ—(पु० हि०) दामाद।

जमज़म—(अ०) काबे के पास एक कुआँ है।

जमा—(फ़ा०) एकत्र। —ख़र्च=आय और व्यय। —जथा=धन-सम्पत्ति।

जमात—(स्त्री० फ़ा०) बहुत से मनुष्यों का समूह। दरजा।

जमाल—(अ०) शरीर और मन दोनों की सुन्दरता।

जमादात—(अ०) प्राणहीन पदार्थ पत्थर, मिट्टी आदि।

जमादार—(पु० फ़ा०) कई सिपाहियों या पहरेदारों आदि

का प्रधान। —दारी=जमादार का पद।

ज़मानत—(स्त्री० अ०) वह जिम्मेदारी जो ज़बानी कोई काग़ज़ लिखकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है। —नामा=वह कागज जो जमानत करनेवाला जमानत के प्रमाण-स्वरूप लिख देता है।

जमाना—(क्रि० हि०) किसी तरल पदार्थ को ठोस बनाना।

ज़माना—(पु० फ़ा०) समय। युग। वक्त। —साज़=अपना मतलब साधने के लिये दूसरों को प्रसन्न रखनेवाला। व्यवहार कुशल। —साज़ी=अपना मतलब साधने के लिये दूसरों को प्रसन्न रखना।

जमाबंदी—(स्त्री० फा०) पटवारी का एक कागज जिसमें असामियों के नाम और उनसे मिलने वाले लगान की रकमें लिखी जाती हैं।

जमामार—(वि० हि०) अनुचित रूप से दूसरों का धन दबा रखने या ले लेने वाला।

जमाव—(पु० हि०) इकट्ठा होना। भीड़। —ड़ा=भीड़।

जमींकंद—(पु० फा०) सूरन।

जमींदार—(पु० फा०) भूमि का स्वामी। —दारी=जमींदार का हक या स्वत्व।

जमींदोज़—(वि० फा०) जो गिरा, तोड़ या उखाड़कर ज़मीन के बराबर कर दिया गया हो। एक प्रकार का ख़ेमा।

ज़मीन—(स्त्री० फा०) पृथ्वी।

ज़मीमा—(पु० अ०) क्रोड़पत्र। परिशिष्ट।

जमीयत—(अ०) आदमियों का गिरोह। सभा।

जमुर्रद—(पु० फा०) पन्ना नामक रत्न।

जमुर्रदी—वि० फा०) नीलापन लिये हुए हरा रंग।

जमोग—(पु० हि०) तसदीक।

जमोगना—(क्रि० हि०) हिसाब किताब की जाँच करना।

जयती—(स्त्री० स०) विज्ञ दिलो। बताशा।

जय—(स्त्री० स०) जीत। —पत्र =विजय-पत्र। —माल=वह माला जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती है। वह माला जो विजयी को विजय पाने पर पहनाई जाय। —श्री= विजय। एक प्रकार की रागिनी। —स्तंभ=वह स्तंभ जो विजयी राजा किसी देश का विजय करने के उपरान्त, विजय के स्मारक-स्वरूप बनवाता है।

जर—(पु० फा०) धन। स्वर्ण। —गर=(फा०) सोनार। —कस, जरकसी=जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।

जरई—(स्त्री० हि०) धान आदि के वे बीज जिनमें अंकुर निकले हों।

जरग—(पु०) आदमियों का गिरोह। सम्मेलन।

जरखेज—(वि० फा०) उपजाऊ।

जरठ—(वि० स०) वृद्ध।

जरतुश्त—(फा०) पारसियों के धर्म प्रवर्तक। जरदुश्त।

जरदोज—(पु० फा०) जरदोजी का काम करनेवाला। —जरदोजी=एक प्रकार की दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमें सितारे आदि से की जाती है।

जरनलिस्ट—(पु० अ०) सामयिक पत्र। जरनलिस्ट=पत्रकार। जरनलिज्म = पत्र-सम्पादन-कला।

जरब—(स्त्री० अ०) आघात। गुणा।

जरबफ्त—(पु० फा०) बेल-बूटेदार एक रेशमी कपड़ा।

जरमन—(पु० अ०) जरमनी का देश का निवासी। जरमनी देश की भाषा। —सिलवर=एक प्रकार की चाँदी।

जरमनी=मध्य यूरोप का एक प्रसिद्ध देश।
जरर—(पु० अ०) हानि। चोट।
जरा—(स्त्री० स०) बुढ़ापा। —ग्रस्त=वृद्ध।
जरा—(वि० अ०) थोड़ा।
जराफत—(अ०) बुद्धिमानी। सज्जनता।
जर्रा—(अ०) कण।
जरायु—(पु० स०) गर्भाशय।
जरिया—(पु० अ०) सहारा। वसीला।
जरी—(स्त्री० फा०) सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।
जरीफ—(पु० अ०) मसखरा। परिहास करनेवाला।
जरीब—(स्त्री० फा०) एक माप जिससे भूमि नापी जाती है।
जरूर—(क्रि० वि० अ०) अवश्य। जरूरत = आवश्यकता। जरूरी=आवश्यक।
जर्कबर्क—(वि० फा०) चमकीला।
जर्जर—(वि० स०) जीर्ण। जर्जरित=जीर्ण। पुराना।
जर्द—(वि० फा०) पीला। —आलू=एक मेवा जिसे सुखा लेने पर खुबानी कहते हैं। जर्दा=(फा०) एक प्रकार का व्यंजन। तम्बाकू। जर्दी=पीलापन।
जर्रा—(पु० अ०) अणु।
जर्राह—(पु० अ०) शस्त्र चिकित्सक। सर्जन। —जर्राही= शस्त्र चिकित्सा।
जल—(पु० स०) पानी। —खावा=कलेवा। —चर= जल जन्तु। —जन्तु=जलचर। —तरंग=एक प्रकार का बाजा। —पान= कलेवा। —प्रदान=तर्पण। —प्रपात=झरना। —प्लावन =बाढ़। —यान=नाव। —सेना=नौ सेना। समुद्री सेना। —सेनापति=जल या नौ सेना का प्रधान। नौसेनापति। जलांजलि=पानी भरी अँजुली। तर्पण।

जलजला—(पु० फा०)भूकंप।
जलन—(स्त्री० हि०) दाह।
जलना—(क्रि० अ० हि०) बलना।
जलवा—(अ०) वैभव।
जलसा—(पु० अ०) उत्सव। सभा।
जलादत—(अ०) चुस्ती। चालाकी। जवांमर्दी।
जलाना—(क्रि० हि०) प्रज्वलित करना। किसी के मन में ईर्ष्या या द्वेष आदि उत्पन्न करना।
जलालत—(अ०) बुजुर्गी। महत्व।
जलावतन—(वि० अ०) निर्वासित।
जलावतनी—(स्त्री० अ०) देश निकाला।
जलाशय—(पु० स०) वह स्थान जहाँ पानी जमा हो।
जलील—(वि० अ०) अपमानित।
जलूस—(पु० अ०) समारोह।
जलेबी—(स्त्री० फा०) एक प्रकार की मिठाई। एक प्रकार की आतिशबाजी।
जलोदर—(पु० स०) एक रोग।
जल्द—(क्रि० वि० अ०) शीघ्र। —बाज़=बहुत जल्दी करने वाला। जल्दी=शीघ्रता।
जल्पना—(क्रि० स०) व्यर्थ बकवाद करना।
जल्लाद—(पु० अ०) घातक।
जवाँमर्द—(वि० फा०) शूरवीर। जवाँमर्दी=वीरता।
जवाखार—(पु० हि०) एक प्रकार का नमक।
जवान—(वि० फा०) युवा। युवक। जवानी=युवावस्था।
जवाब—(पु० अ०) उत्तर। —तलब=जिसके सबंध में समाधान कारक उत्तर माँगा गया हो। —दावा=वह उत्तर जो वादी के निवेदन पत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिखकर अदालत में देता है। —देह =उत्तर-दाता। —देही= उत्तरदायित्व। —सवाल= प्रश्नोत्तर। —जवाबी=जवाब सम्बन्धी।
जवाल—(पु० हि०) अवनति।

जौहर—(फा०) गुण। हुनर।
जवाहर—(पु० अ०) रत्न। जवाहिरात=रत्न।
जशन—(पु० फा०) उत्सव। हर्ष मनाना।
जसामत—(अ०) मोटा। ताज़ा। लम्बे चौड़े शरीरवाला।
जसारत—(अ०) मर्दानगी। दिलेरी।
जस्ता—(पु० हि०) एक प्रकार की धातु।
जस्टिफाई—(पु० अ०) कम्पोज़ किये हुए मैटर को इस तरह बैठाना या कसना कि कोई लाइन या पंक्ति ऊँची-नीची या कोई अक्षर इधर उधर न होने पावे।
जस्टिस—(पु० अ०) न्याय। न्यायाधीश। विचारपति।
जस्टिस आफ दि पीस—(पु० अ०) स्थानीय छोटे मैजिस्ट्रेट जो शांति-रक्षा तथा छोटे मोटे मामलों आदि का विचार करने के लिये नियुक्त किए जाते हैं। जे० पी०।
जहँडाना—(क्रि० हि०) हानि उठाना। ठगा जाना।
जद—(फा०) चोट मारना। मारा। ज़दा=(फा०) मारा हुआ। चोट खाया हुआ।
जख्म—(अ०) घाव।
जहन्नुम—(पु० अ०) नरक। —रशीद = नरक में गया हुआ।
जहमत—(स्त्री० अ०) आपत्ति। कष्ट। दुःख। रंज।
जहर—(स्त्री० फा०) विष। —बाद=एक प्रकार का फोड़ा। —मोहरा=साँप का विष खींचने वाला एक प्रकार का काला पत्थर। ज़हरीला= विषैला।
जहाँ—(क्रि० वि० हि०) जिस जगह। (फा०) संसार। —दीद, जहाँदीदा = अनुभवी। —पनाह=संसार का रक्षक।
जहाज—(पु०अ०) पोत। जहाजी =जहाज संबंधी।
जहाद—(अ०) धर्मयुद्ध।

जहान—(पु० फा०) संसार।

जहालत—(स्त्री० अ०) अज्ञान। मूर्खता।

जहीन—(वि० अ०) बुद्धिमान्।

जहूर—(पु० अ०) प्रकाश।

जहेज—(पु० अ०) दहेज।

जाँघ—(स्त्री० हिं०) ऊरु। जाँघिया = हाफ़ पैंट।

जाँच—(स्त्री० हिं०) परीक्षा। —ना = सत्यासत्य का निर्णय करना।

जाँत, जाँता—(पु० हिं०) आटा पीसने की बड़ी चक्की।

जाँफिशानी—(फ़ा०) मेहनत। परिश्रम।

जाँबाज—(फा०) जान पर खेलने वाला।

जाँनिवाज—(फ़ा०) प्राणदान करनेवाला।

जा—(फा०) जगह।—बजा = हर जगह।

ज्वाइन्ट—(पु० अ०) जोड़।

जाए—(फा०) स्थान। जगह।

जाकट—(पु० अ०) फतुही। कुर्ती। सदरी।

जाकड—(पु० हि०) शर्त पर लाया हुआ माल। —बही = वह बही जिसमें दूकानदार जाकड़ दिये हुए माल का नाम और दाम आदि टाँक लेते हैं।

जागना—(क्रि० हि०) सोकर उठना।

जागरण—(पु० स०) जागना। जागरित = जागा हुआ। जागरूक = चैतन्य।

जागीर—(स्त्री० फा०) सेवा के पुरस्कार में मिली हुई भूमि। —दार = वह जिसे जागीर मिली हो।

जाग्रत—(स०) जो जागता हो।

जाजरूर—(पु० फा०) पाखाना।

जाजिम—(स्त्री० तु०) गलीचा।

जाज्वल्यमान—(वि० स०) प्रज्वलित।

जाट—(पु० हि०) भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति।

जाठ—(पु० हि०) लकड़ी का वह

मोटा और ऊँचा लट्ठा जो कोल्हू की कूँड़ी के बीच में लगा रहता है।

जाड़ा—(पु० हि०) शीतकाल।

जातक—(पु० सं०) बौद्ध कथायें।

जात कर्म्म—(पु० सं०) हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।

जात-पाँत—(स्त्री० हि०) बिरादरी।

जाति—(स्त्री० सं०) वर्ण। —वैर=स्वाभाविक शत्रुता। जातीय=जाति सम्बन्धी। जातीयता=जाति का भाव।

जाती—(वि० अ०) व्यक्तिगत।

जादू—(पु० फ़ा०) इन्द्रजाल। —गर=वह जो जादू करता हो। जादूगरी=जादू करने की क्रिया।

जान—(स्त्री० हि०) ज्ञान। (फ़ा०) प्राण। शक्ति। —कार=अभिज्ञ। —कारी =अभिज्ञता। —दार=सजीव। —बलब=मरणासन्न।

जानना—(क्रि० हि०) अनुभव करना।

जानशीन—(पु० फ़ा०) उत्तराधिकारी।

जानाँ—(फ़ा०) माशूक़।

जाना—(क्रि० हि०) गमन करना।

जानिब—(स्त्री० अ०) तरफ़।

जानू—(फ़ा०) घुटना।

जाफ़त—(स्त्री० अ०) भोज।

जाफ़रान—(पु० अ०) केसर। ज़ाफ़रानी=केसरिया रंग का।

जाब प्रेस—(पु० अं०) कार्ड, नोटिस आदि छोटी-छोटी चीज़ों के छापने का प्रेस।

जाबजा—(क्रि० वि० फ़ा०) जगह-जगह।

जाबिर—(वि० फ़ा०) अत्याचारी।

ज़ाब्ता—(पु० अ०) क़ायदा।

जाम—(फ़ा०) प्याला।

जामेजम—(फ़ा०) जमशेद का प्याला।

जामा—(पु० फ़ा०) पहनावा। कपड़े।

जामाता—(पु० हि०) दामाद।

जामिन—(पु० अ०) ज़िम्मेदार। —दार = ज़मानत करने वाला।

जामुन—(पु० हि०) एक प्रकार का वृक्ष और फल।

जामुनी—(वि० हि०) जामुन के रंग का।

जामेसेहर—(फा०) सूर्य।

जायंट—(वि० अ०) साथ में काम करनेवाला। सहयोगी।

जायंट मैजिस्ट्रेट—(पु० अ०) फ़ौजदारी का वह मैजिस्ट्रेट जिसका दर्जा ज़िला मैजिस्ट्रेट के नीचे होता है।

जायका—(पु० अ०) स्वाद। ज़ायकेदार = स्वादिष्ट।

जाय—(फ़ा०) जगह। स्थान।

जायज—(वि० अ०) उचित।

जायज़रूर—(पु० फ़ा०) पाख़ाना।

जायद—(वि० फ़ा०) अधिक।

जायदाद—(स्त्री० फ़ा०) संपत्ति। —ग़ैरमनक़ूला = अचल संपत्ति। —ज़ोजियत = स्त्री धन। —मकफ़ूला = वह संपत्ति जो रेहन या बन्धक हो। —मनक़ूला = चल संपत्ति। —मुतनाज़िया = विवाद-ग्रस्त संपत्ति। —शौहरी = वह संपत्ति जो स्त्री को उसके पति से मिले। स्त्री धन।

जायनमाज—(स्त्री० फ़ा०) वह छोटी दरी जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।

जायफल—(पु० हि०) एक सुगंधित फल।

जायल—(वि० फ़ा०) विनष्ट।

जाया—(वि० फ़ा०) ख़राब। बरबाद।

जार—(पु० स०) पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला। (फ़ा० ज़ार) आर्त्त। शोकित। क्रुद्ध। रोता हुआ।

जारी—(वि० अ०) चालू । बहता हुआ ।

जाल—(पु० स०) एक में बुने या गुथे हुए बहुत से तारों अथवा रेशों का समूह । (फ़ा०) धोखा । —दार = जिसमें जाल की तरह पास पास बहुत से छेद हों । —साज़ = (फ़ा०) दगाबाज । —साज़ी = दग़ाबाजी । जालिया = दगाबाज ।

जाला—(पु० हि०) मकड़ी का बुना हुआ जाल ।

जालिम—(वि० अ०) अत्याचारी ।

जाली—(स्त्री० हि०) किसी लकड़ी, पत्थर या धातु की चादर आदि में बना हुआ बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह । —दार = जिसमें जाली बनी या पड़ी हो ।

जावित्री—(स्त्री० हि०) जायफल के ऊपर का छिलका ।

जावेद—(फ़ा०) दीर्घजीवी ।

जासूस—(पु० अ०) भेदिया ।

जाह—(अ०) मान । वैभव । रुतबा ।

जाहिद—(प्रा० अ०) संसार त्यागी । परहेज़गार ।

जाहिर—(वि० अ०) प्रकट । —दारी = दिखावा । ज़ाहिरा = प्रत्यक्ष में ।

जाहिल—(वि० अ०) मूर्ख ।

ज़िंक—(स्त्री० अ०) जस्ते का तार ।

ज़िंदगी—(स्त्री० फ़ा०) जीवन । ज़िन्दगानी = (फ़ा०) ज़िंदगी । ज़िंदा = (फा०) जीवित । —दिल = (फा०) विनोदप्रिय ।

ज़ियादा—(अ०) अधिक । विशेष ।

जिंस—(स्त्री० फा०) क़िस्म । वस्तु । सामग्री । अनाज ।

जिंसवार—(पु० फा०) पटवारियों का एक काग़ज़ जिसमें वे परताल करते समय अपने हलके के प्रत्येक खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं ।

ज़िक्र—(पु० अ०) चर्चा ।
ज़िगर—(पु० फा०) कलेजा । मन ।
जिच, ज़िच्च—(स्त्री० फा०) परवशी ।
जिज्ञासा—(स्त्री० सं०) जानने की इच्छा । जिज्ञासु=जानने की इच्छा रखनेवाला ।
जितना—(वि० हि०) जिस मात्रा का ।
जितेन्द्रिय—(वि० सं०) जिसकी इन्द्रियाँ वश में हों ।
ज़िद—(स्त्री० अ०) हठ । ज़िद्दी=(फा०) हठी ।
जिधर—(क्रि० हि०) जहाँ ।
जिन—(पु० सं०) जैनों के तीर्थंकर । (अ०) भूत ।
ज़िना—(पु० अ०) व्यभिचार । —कारी=(फा०) पर-स्त्री गमन । —बिलजब्र=(अ०) बलात्कार ।
जिनिस—(स्त्री० फा०) प्रकार । वस्तु । सामग्री ।
जिबह—(अ०) बलिदान । गला काटना ।
जिमनास्टिक—(पु० अ०) अँगरेज़ी कसरत ।
जिमाअ—(अ०) मैथुन ।
ज़िम्मा—(पु० अ०) उत्तर-दायित्व । ज़िम्मादार=उत्तर दायी । —दारी=उत्तर दायित्व । —वार=उत्तर दाता ।
ज़ियाफ़त—(स्त्री०अ०) आतिथ्य । भोज ।
ज़ियारत—(स्त्री० अ०) दर्शन । तीर्थ-यात्रा । ज़ियारती=दर्शक । तीर्थ-यात्री ।
ज़िरह—(पु० अ०) हुज्जत । तर्क ।
ज़िराअत—(स्त्री० अ०) खेती । किसानी ।
ज़िला—(स्त्री० अ०) चमक-दमक । पानी ।
ज़िला—(पु० अ०) प्रदेश । किसी इलाक़े का छोटा विभाग या अंश । —बोर्ड=किसी ज़िले के कर दाताओं के प्रतिनिधियों की सभा । —मैजिस्ट्रेट=ज़िले का बड़ा

हाकिम । —दार = माल गुज़ारी वसूल करनेवाला एक अफसर ।
जिलासाज़—(पु० फा०) सिकलीगर ।
जिल्द—(स्त्री० अ०) खाल । —गर = जिल्दबंद । —बंद = जिल्द बाँधनेवाला । —बंदी = जिल्द बँधाई । —साज़ = जिल्दबंद । —साज़ी = जिल्दबंदी ।
ज़िल्लत—(स्त्री० अ०) अपमान ।
जिस्म—(पु० फ़ा०) शरीर । बदन । जिस्मानी = शरीर सम्बन्धी ।
ज़िहन—(पु० अ०) समझ ।
जिहाद—(पु० अ०) मज़हबी लड़ाई ।
जीजा—(पु० हि०) बड़ी बहिन का पति । जीजी = बड़ी बहिन ।
जीत—(वि० हि०) विजय ।
जीता—(वि० हि०) जीवित ।
ज़ीन—(पु० फ़ा०) काठी ।
ज़ीनहार—(फ़ा०) हरगिज़ । कदापि ।
ज़ीनत—(स्त्री० फ़ा०) शोभा । सजावट ।
ज़ीनपोश—(पु० फ़ा०) काठी का ढँकना ।—सवारी = घोड़े पर ज़ीन रखकर चढ़ने का कार्य ।
ज़ीना—(फा०) सीढ़ी ।
जीभ—(स्त्री० हि०) जिह्वा ।
जीभी—(स्त्री० हि०) धातु की बनी एक पतली लचीली वस्तु जिससे छीलकर जीभ साफ की जाती है ।
जीरा—(पु० हि०) एक मसाले का नाम ।
जीर्ण—(वि० स०) बुढ़ापे से जर्जर । पुराना । —ज्वर = पुराना बुखार । —ता = बुढ़ापा । पुरानापन ।
जीव—(पु० स०) जान । प्राण । —दान = प्राणदान । —धारी = प्राणी । —हिंसा = प्राणियों की हत्या । जीवात्मा = जीव ।

जुलूस—(पु० अ०) उत्सव। समारोह।
जुल्लाब—(पु० अ०) दस्त। रेचन।
जुस्तजू—(स्त्री० फा०) तलाश। खोज।
जुही—(स्त्री० हि०) एक फूल।
जूजू—(पु० अनु०) एक कल्पित भयंकर जीव। हाऊ।
जूट—(पु० सं०) जटा की गाँठ। जटा। (अ०) सन।
जूठा—(वि० हि०) किसी के खाने से बचा हुआ।
जूड़ा—(पु० हि०) सिर के बालों की गाँठ।
जूड़ी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का ज्वर।
जूता—(पु० हि०) पनही। उपानह। —खोर=जो जूता खाया करे। निलज्ज। जूती=स्त्रियों का जूता।
जूनियर—(वि० अ०) पाज क्रम से पिछला। छुटा।
जूरर—(पु० अ०) जूरी का काम करनेवाला। पंच।
जूरिस्ट—(पु० अ०) वह व्यक्ति जो कानून में, विशेषकर दीवानी कानून में, पारंगत हो।
जूरिस्डिक्शन—(पु० अ०) अधिकार सीमा।
जूरी—(स्त्री० हि०) जुही। (अ०) एक प्रकार के पंच जो अदालत में जज के साथ बैठकर मुकदमों के फ़ैसले में सहायता देते हैं।
जूप—(पु० सं०) झील।
जूस—(पु० हि०) रसा। काढ़ा। (अ०) रस।
जूम ताक—(पु० हि०) एक प्रकार का जूआ।
जूही—(स्त्री० हि०) एक फूल।
जेंगरा—(पु० देश०) अन्नों और तरकारियों के डंठल।
जेंवनार—(स्त्री० हि०) भोज। रसोई।
जेटी—(स्त्री० अ०) नदी या समुद्र के किनारे पर वह बना हुआ चबूतरा जिसपर से

जहाजों का माल उतारा और चढ़ाया जाता है।

जेठ—(पु० हि०) हिंदुओं का एक महीना। पति का बड़ा भाई। जेठा=बड़ा। जेठानी=पति के बड़े भाई की स्त्री।

जेनरल स्टाफ—(पु० अ०) जेनरलों या सेनाध्यक्षों का वर्ग या समूह।

जेप्लिन—(पु० जर्मन) जर्मनी का एक प्रकार का वायुयान।

जेब—(अ०) पाकेट। खीसा। सजावट। —कट=गिरहकट। —खर्च=(फ़ा०) भोजन, वस्त्र आदि के व्यय से भिन्न, निज का और ऊपरी खर्च। —घड़ी=जेब घड़ी। (अ०) मार। जेबी=जेब में रखने योग्य।

जेब—(फ़ा०) सुन्दरता।

जेबरा—(पु० अ०) एक जंगली जानवर।

जेर—(फ़ा०) नीचे। दुर्बल। गिरा हुआ। —बन्द=वह तस्मा जो घोड़े के नीचे बाँधा जाता है। —दस्त=दुर्बल। पराजित। —बार=ऋणग्रस्त। कष्ट-पीड़ित। दुःखित।

जेल—(पु० अं०) कारागार। जेलर=जेल का अफसर।

जेलोटीन—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की सरेस।

जेवर—(पु० फ़ा०) गहना। आभूषण।

जेष्ठ—(पु० हि०) जेठ मास। जेठ।

जेहन—(पु० अ०) बुद्धि।

जैतून—(पु० अ०) एक प्रकार का वृक्ष।

जैन—(पु० स०) भारत का एक धर्म सम्प्रदाय। जैनी=जैन मतावलम्बी।

जैल—(पु० अ०) दामन। नीचे।

जोंक—(स्त्री० हि०) पानी में रहनेवाला एक कीड़ा।

जोकर—(अं०) मसखरा।

जोखिम—(स्त्री० हि०) भारीपन। खतरा। (अ०) रिस्क।

जोगवना—(क्रि० हि०) रक्षित रखना। बटोरना।

जोगिन—(स्त्री० हि०) विरक्त स्त्री। जोगी की स्त्री।

जोगिनिया—(स्त्री० देश०) एक प्रकार का धान।

जोगिया—(वि० हि०) जोगी सम्बन्धी। गेरू के रंग में रँगा हुआ।

जोगी—(पु० हि०) योगी। एक जाति।

जोगीड़ा—(पु० हि०) एक प्रकार का गाना।

जोट—(पु० हि०) जोड़ा। साथी।

जोड़—(पु० हि०) जोड़ने की क्रिया। जोड़ना = सम्बद्ध करना। जोड़ा=दो समान पदार्थ। जोड़ी=एक ही सी दो चीज़ें।

जोतना—(हि०) हल से ज़मीन कोड़ना। जोताई = जोतने का काम। जोतने की मज़दूरी।

जोती—(स्त्री० हि०) लगाम।

ज़ोफ़—(पु० अ०) बुढ़ापा। सुस्ती।

जोम—(पु० अ०) उत्साह। अहंकार।

ज़ोर—(पु० फा०) शक्ति। —मंद=(फा०) ताक़त वाला। —शोर=(फा०) बहुत अधिक ज़ोर। —दार =ज़ोरवाला। ज़ोरावर= बलवान। ज़ोरावरी=ज़बरदस्ती।

जोया—(फा०) ढूँढ़नेवाला।

जोरू—(स्त्री० हि०) पत्नी।

जोलाहा—(फा०) जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

जोश—(पु० फा०) उफान। जोशीला=आवेगपूर्ण।

जोशन—(पु० फा०) कवच।

जौ—(पु० हि०) एक अनाज।

ज़ौजा—(अ०) पत्नी। स्त्री।

ज़ौर—(अ०) अत्याचार। ज़ुल्म।

जौहर—(पु० फा०) रत्न। उत्तम। जौहरी=रत्न विक्रेता। पारखी।

ज्ञात—(वि० सं०) विदित। —व्य=जानने योग्य। ज्ञाता =जानकार।

ज्ञाति—(पु० सं०) गोती। बांधव।

ज्ञान—(पु० सं०) बोध। जानकारी। —गम्य=जो जाना जा सके। —गोचर=ज्ञान गम्य। ज्ञानी=जानकार। ज्ञानेंद्रिय=वे इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है। ज्ञेय=जानने योग्य।

ज्या—(स्त्री० सं०) धनुष की डोरी।

ज्यादती—(स्त्री० फ़ा०) अधिकता।

ज्यादा—(क्रि० वि० फ़ा०) अधिक।

ज़्याफत—(स्त्री० अ०) भोज।

ज्यामिति—(स्त्री० सं०) रेखा गणित।

ज्यों—(क्रि० वि० हि०) जैसे।

ज्योति—(स्त्री० हि०) प्रकाश। लौ। —र्मय=प्रकाशमय। —विद्या=ज्योतिष विद्या।

ज्योतिष—(पु० सं०) वह विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की परस्पर दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। ज्योतिषी=ज्योतिर्विद्। ज्योतिष्मान्=प्रकाशयुक्त।

ज्योत्स्ना—(स्त्री० सं०) चाँदनी।

ज्योनार—(स्त्री० हि०) रसोई।

ज्वलत—(वि० सं०) जलता हुआ। दीप्त। प्रकट।

ज्वार—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का अनाज। लहर की उठान। —भाटा=(हि०) समुद्र के जल का चढ़ाव और उतार।

ज्वालामुखी पर्वत—(पु० सं०) वह पर्वत जिसकी चोटी से धुआँ, राख तथा पिघले हुए पदार्थ निकला करते हैं।

जोगिन—(स्त्री० हि०) विरक्त स्त्री। जोगी की स्त्री।

जोगिनिया—(स्त्री० देश०) एक प्रकार का धान।

जोगिया—(वि० हि०) जोगी सम्बन्धी। गेरू के रंग में रँगा हुआ।

जोगी—(पु० हि०) योगी। एक जाति।

जोगीड़ा—(पु० हि०) एक प्रकार का गाना।

जोट—(पु० हि०) जोड़ा। साथी।

जोड़—(पु० हि०) जोड़ने की क्रिया। जोड़ना = संबद्ध करना। जोड़ा=दो समान पदार्थ। जोड़ी=एक ही सी दो चीज़ें।

जोतना—(हि०) हल से ज़मीन खोदना। जोताई = जोतने का काम। जोतने की मज़दूरी।

जोती—(स्त्री० हि०) लगाम।

ज़ोफ—(पु० अ०) बुढ़ापा। सुस्ती।

जोम—(पु० अ०) उत्साह। अहंकार।

ज़ोर—(पु० फा०) शक्ति। —मंद=(फा०) ताकत वाला। —शोर=(फा०) बहुत अधिक ज़ोर। —दार =ज़ोरवाला। ज़ोरावर= बलवान। ज़ोरावरी=ज़बरदस्ती।

जोया—(फा०) ढूँढ़नेवाला।

जोरू—(स्त्री० हि०) पत्नी।

जोलाहा—(फा०) जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

जोश—(पु० फा०) उफान। जोशीला=आवेगपूर्ण।

जोशन—(पु० फा०) कवच।

जौ—(पु० हि०) एक अनाज।

जौजा—(अ०)पत्नी। स्त्री।

जौर—(अ०) अत्याचार। ज़ुल्म।

जौहर—(पु० फा०) रत्न। उत्तम। जौहरी=रत्न विक्रेता। पारखी।

ज्ञात—(वि० स०) विदित। —व्य=जानने योग्य। ज्ञाता =जानकार।

ज्ञाति—(पु० स०) गोती। बाधव।

ज्ञान—(पु० स०) बोध। जानकारी। —गम्य=जो जाना जा सके। —गोचर=ज्ञान गम्य। ज्ञानी=जानकार। ज्ञानेंद्रिय=वे इन्द्रियाँ जिनसे जीवों के विषयों का बोध होता है। ज्ञेय=जानने योग्य।

ज्या—(स्त्री० स०) धनुष की डोरी।

ज्यादती—(स्त्री० फ़ा०) अधिकता।

ज्यादा—(क्रि० वि० फ़ा०) अधिक।

ज्याफत—(स्त्री० अ०) भोज।

ज्यामिति—(स्त्री० स०) रेखा गणित।

ज्यों—(क्रि० वि० हि०) जैसे।

ज्योति—(स्त्री० हि०) प्रकाश। लौ। —र्मय=प्रकाशमय। —र्विद्या=ज्योतिष विद्या।

ज्योतिष—(पु० स०) वह विद्या जिससे अवरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की परस्पर दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। ज्योतिषी=ज्योतिर्विद्। ज्योतिष्मान्=प्रकाशयुक्त।

ज्योत्स्ना—(स्त्री० स०) चाँदनी।

ज्योनार—(स्त्री० हि०) रसोई।

ज्वलत—(वि० स०) जलता हुआ। दीप्त। प्रकट।

ज्वार—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का अनाज। लहर की उठान। —भाटा=(हि०) समुद्र के जल का चढ़ाव और उतार।

ज्वालामुखी पर्वत—(पु० स०) वह पर्वत जिसकी चोटी से धुआँ, राख तथा पिघले हुए पदार्थ निकला करते हैं।

झ—हिन्दी-वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

झकार—(स्त्री० सं०) झनझन शब्द।

झँकोरना—(क्रि० अ० अनु०) हवा का झोंका मारना।

झकना—(पु० हि०) बहुत अधिक दुखी होकर पछताना और कुढ़ना।

झखाड़—(पु० हि०) घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा।

झंझट—(स्त्री० अनु०) व्यर्थ का झगड़ा।

झंझा—(पु० सं०) वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। —निल = आँधी। —वात आँधी। प्रचण्ड वायु।

झंझी—(स्त्री० देश०) फूटी कौड़ी।

झंडा—(पु० हि०) पताका। (स्त्री०) झंडी।

झँपना—(क्रि० हि०) ढँकना। छिपना।

झँपान—(पु० हि०) डोली।

झँवा—(पु० हि०) जली हुई ईंट।

झउआ, झउवा—(पु० हि०) टोकरा।

झक—(स्त्री० अनु०) धुन। सनक।

झकझक—(स्त्री० अनु०) व्यर्थ का हुज्जत।

झकझोर—(पु० अनु०) झटका।

झकना—(क्रि० अनु०) व्यर्थ की बातें करना। झका = हुज्जती।

झकाझक—(वि० अनु०) चमकीला।

झख—(स्त्री० हि०) मछली।

झगड़ना—(क्रि० हि०) झगड़ा करना। झगड़ा = तकरार। झगड़ालू = लड़ाई करनेवाला।

झज्झर—(पु० हि०) एक बर्तन।

झझक—(स्त्री० हि०) चौंक। चमक। —ना = (अनु०) ठिठकना।

झट—क्रि० हि०) तुरत। —पट =फौरन्।

झटकना—(क्रि० हि०) हलका धक्का देना।

झटका—(पु० हि०) धक्का देना।

झड़प—(स्त्री० हि०) दो जीवों की परस्पर मुठभेड़। झड़पा झड़पी=(अनु०) हाथापाई।

झड़ाका—(पु० अनु०) झड़प।

झड़ी—(स्त्री० हि०) लगातार वर्षा।

झनकार—(स्त्री० सं०) झनझन शब्द। झनाहट=झनझना हट।

झपक—(स्त्री० हि०) बहुत थोड़ा समय। झपकी=(स्त्री० अनु०) हलकी नींद।

झपट—(स्त्री० हि०) धावा। —ना=धावा करना।

झमकना—क्रि० हि०) दमकना।

झरना—(क्रि० हि०) चश्मा। सोता।

झरोखा—(पु० हि०) गवाक्ष।

झलक—(स्त्री० हि०) चमक। —ना=(क्रि० हि०) चमकना।

झलका—(पु० हि०) चमका। फफोला।

झलझलाहट—(स्त्री० अनु०) चमक।

झल्लाना—(क्रि० हि०) बहुत चिढ़ना।

झाईं—(स्त्री० हि०) प्रतिबिम्ब। चेहरे पर का काला धब्बा।

झाँकना—(क्रि० हि०) लुक-छिपकर देखना।

झाँकी—(स्त्री० हि०) दर्शन।

झाँझ—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का बाजा। पैर का एक गहना।

झाँवाँ—(पु० हि०) जली हुई ईंट।

झाँसा—(पु० हि०) धोखाधड़ी।

झाऊ—(पु० देश०) एक पौधा।

झाऊ—(पु० हि०) एक छोटा झाड़।

झाग—(पु० हि०) फेन।

झाड़—(पु० हि०) वह छोटा पेड़ या कुछ बड़ा पौधा जिसमें

पेड़ी न हो। —राड़= जंगल। —भंखाड़=(हि०) कँटिदार झाड़ियों का समूह।
झाड़न—(स्त्री० हि०) वह जो कुछ झाड़ने पर निकले। झाड़ने का कपड़ा।
झाड़ना—(क्रि० स० हि०) झटकारना।
झाड़ फूँक—(स्त्री० हि०) मंत्र आदि पढ़कर झाड़ना या फूँकना।
झाड़ा—(पु० हि०) झाड़-फूँक। मल।
झाड़ी—(स्त्री० हि०) छोटा झाड़। —दार=झाड़ी की तरह का।
झाड़ू—(स्त्री० हि०) बोहारी। बढ़नी।
झापड़—(पु० हि०) तमाचा।
झायँ झायँ—(स्त्री० अनु०) बकवाद।
झालर—(स्त्री० हि०) हाशिया।
झिड़क—(स्त्री० हि०) डाँट।
झिड़की—(स्त्री० हि०) फटकार।
झिलँगा—(पु० हि०) टूटा हुई खाट।
झिलमिल—(स्त्री० हि०) काँपती हुई रोशनी।
झिलमिलाना—(अ० हि०) रह-रहकर चमकना।
झिलमिली—(स्त्री० हि०) खड़खड़िया।
झींकना—(अ० हि०) खीजना।
झींगा—(पु० हि०) एक मछली।
झींगुर—(पु० हि०) एक कीड़ा। झिल्ली।
झील—(स्त्री० हि०) प्राकृतिक तालाब।
झुंड—(पु० हि०) वृंद। समूह। गिरोह।
झुकना—(अ० हि०) निहुरना। झुकाव=झुकना। आकर्षण।
झुमका—(पु० हि०) एक गहना।
झुरना—(क्रि० हि०) सूखना।
झुरमुट—(पु० हि०) कई झाड़ों पत्तों आदि से ढका हुआ स्थान।
झुलनी—(स्त्री० हि०) एक गहना।

झुलसना—(क्रि० हि०) झौंसना। जलाना।
झुलाना—(क्रि० हि०) झूले में बिठाकर हिलाना।
झूठमूठ—(क्रि० हि०) व्यर्थ।
झूठा—(वि० हि०) मिथ्या। झूठ बोलनेवाला।
झूमना—(क्रि० हि०) बार-बार झोंके खाना।
झूरा—(वि० हि०) सूखा।
झूला—(पु० हि०) हिंडोला।
झेलना—(क्रि० हि०) सहना।
झोंक—(स्त्री० हि०) झुकाव। धक्का। पिनक। —ना=फेंक-कर छोड़ना। झोंका=हवा का झटका या धक्का।
झोंकी—(स्त्री० हि०) बोझ। जोखिम।
झोंझ—(पु० हि०) घोंसला।
झोंटा—(पु० हि०) बड़े-बड़े बालों का समूह।
झोंपड़ा—(पु० हि०) कुटी। (स्त्री०) झोंपड़ी=कुटिया।
झोपा—(पु० हि०) गुच्छा।
झोल—(पु० हि०) शोरबा।
झोला—(पु० हि०) थैला। झोली=थैली।
झौंसना—(क्रि० हि०) झुलसना।
झौवा—(पु० हि०) बड़ा टोकरा जो अरहर के डण्ठलों से बनता है।

ञ

ञ—हिन्दी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इससे हिन्दी में कोई शब्द नहीं बनता।

ट—हिन्दी-वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यञ्जन और टवर्ग का पहला अक्षर।

टँकाई—(स्त्री० हि०) सुई से टाँकने की मज़दूरी या काम।

टंकार—(स्त्री० सं०) झनकार।

टंकी—(स्त्री० अं०) पानी का बड़ा बरतन।

टंकोर—(पु० सं०) झनकार।

टँगना—(क्रि० हि०) लटकना।

टँगारी—(स्त्री० हि०) कुल्हाड़ी।

टंच—(वि० हि०) तैयार। पूरा। विशुद्ध।

टट घट—(पु० हि०) मिथ्या आडम्बर।

टटा—(पु० हि०) झगड़ा।

टडर—(पु० हि०) अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा कोई मनुष्य किसी के प्रति अपना देना अदालत में दाखिल करे।

टँडिया—(स्त्री० हि०) एक गहना।

टकटकी—(पु० हि०) स्थिर दृष्टि। टकटकी = गड़ी हुई नज़र।

टकराना—(क्रि० हि०) ज़ोर से भिड़ना।

टकसाल—(स्त्री० हि०) रुपये, पैसे आदि बनने का कार्यालय। मिन्ट। टकसाली = खरा।

टका—(पु० हि०) रुपया। सिक्का।

टकुआ—(पु० हि०) तकला।

टक्कर—(स्त्री० हि०) ठोकर।

टटका—(वि० हि०) तत्काल का। ताज़ा।

टटोलना—(क्रि० हि०) ढूँढ़ना। छूना।

टट्टर—(पु० हि०) बाँस की पट्टियों आदि का बना हुआ पल्ला जो परदे, किवाड़, छाजन आदि का काम दे।

टट्टी—(स्त्री० हि०) बाँस की पट्टियों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जो आड़, रोक या रक्षा

के लिये दरवाजे बरामदे अथवा और किसी खुले स्थान में लगाया जाता है। पाखाना।

टन—(स्त्री० हि०) घंटा बजने का शब्द। (अ०) एक अंग्रेज़ी तौल।

टनमन—(पु० हि०) स्वस्थ। चुस्त।

टनेल—(स्त्री० अ०) सुरंग।

टपकना—(क्रि० हि०) बूँद-बूँद गिरना। चूना।

टपका—(पु० हि०) बूँद। चुआ।

टब—(पु० अ०) पानी रखने के लिये नाँद के आकार का एक खुला बरतन।

टमेटो—(पु० अ०) विलायती भंटा।

टरकाना—(क्रि० हि०) टाल देना।

टरकी—(पु० तुरकी) रूम देश।

टर्रा—(हि०) बदमिज़ाज।

टर्राना—(क्रि० हि०) ऐंठकर बातें करना। टर्रापन=कटुवादिता।

टलना—(क्रि० हि०) हटना।

टसक—(स्त्री० हि०) कसक।

टसकना—(क्रि० हि०) खिसकना।

टसर—(पु० हि०) एक प्रकार का कड़ा और मोटा रेशम।

टहनी—(स्त्री० हि०) वृक्ष की बहुत पतली शाखा।

टहल—(स्त्री० हि०) सेवा। टहलनी=दासी। टहलुआ=सेवक। टहलुई=दासी।

टहलना—(क्रि० हि०) धीरे धीरे चलना।

टाँकना—(क्रि० हि०) सीना। जोड़ना।

टाँका—(पु० हि०) जोड़ मिलाने वाली कील या काँटा।

टाँकी—(स्त्री० हि०) पत्थर गढ़ने का औज़ार।

टाँग—(क्रि० हि०) पैर।

टाँगना—(क्रि० हि०) लटकाना।

टाँट—(पु० हि०) कपाल।

टाँय टाँय—(स्त्री० हि०) व्यर्थ बकवाद।

टाइट—(अ०) खूब कसकर बाँधा हुआ।

टाइटिल—(अ०) पदवी। ख़िताब। —पेज=किसी पुस्तक के सबसे ऊपर का पृष्ठ जिस पर पुस्तक और ग्रंथकार का नाम आदि रहता है।

टाइप—(पु० अ०) सीसे के ढले हुए अक्षर जिनको मिलाकर पुस्तकें छापी जाती हैं। —फाउंड्री मशीन=अक्षर ढालने की मशीन। —मोल्ड =अक्षर ढालने की कल। —राइटर=एक कल जिसमें कागज़ रखकर टाइप के से अक्षर छाप सकते हैं। टाइपिस्ट=टाइपराइटर का काम जाननेवाला व्यक्ति।

टायफायड ज्वर—(पु० अ०) एक ज्वर।

टाइफोन—(पु० अ०) एक प्रकार का तूफान।

टाइम—(पु० अ०) समय। —टेबुल=समय-सूचक विवरण पत्र। समय विभाग। —पीस=एक प्रकार की घड़ी। —कीपर=समय की सूचना देनेवाला व्यक्ति।

टाई—(स्त्री० अ०) कपड़े की एक पट्टी जो अँग्रेज़ी पहनावे में कालर के ऊपर बाँधी जाती है।

टाउन—(पु० अ०) शहर। —एरिया=कस्बों की म्युनिसिपैलिटी। —ड्यूटी=चुंगी। —हाल=किसी नगर में वह सार्वजनिक भवन जिसमें सर्वसाधारण संबंधी सभायें होती हैं।

टाक—(अ०) बात-चीत। टाकी=बोलता हुआ सिनेमा।

टाट—(पु० हि०) सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ कपड़ा।

टार्टरिक्एसिड—(पु० अ०) इमली का सत।

टाटी—(स्त्री० हि०) टट्टी।

टान—(स्त्री० हि०) तनाव। दबाव।

टानिक—(पु० अ०) पुष्टिकारक औषध। ताकत की दवा।

टाप—(स्त्री० हि०) घोड़े का सुम।
टापिक—(अ०) विषय। प्रसग।
टापू—(पु० हि०) द्वीप।
टार्च—(अ०) एक तरह का जेब। लैम्प जो मसाले से जलता है।
टारपीडो—(पु० अ०) एक प्रकार का जंगी जहाज़ जो पानी के भीतर भीतर चलकर शत्रु के जहाजों का नाश करता है। —कैचर=तेज चलने वाला वह शक्तिशाली जंगी जहाज जो टारपीडो बोट को नष्ट करने के काम में लाया जाता है।
टाल—(स्त्री० हि०) ऊँचा ढेर।
टालटूल—(स्त्री० हि०) बहाना।
टावर—(पु० अ०) लाट। मीनार।
टालना—(क्रि० हि०) हटाना।
टिंचर—(पु० अ०) एक अँग्रेज़ी दवा। —आयाडीन=सूजन पर लगाने के लिये लोहे के सार का अर्क। —ओपियाई=अफीम का अर्क। —कार्डिमम=इलायची का अर्क। —स्टील=फौलाद के सार का अर्क।
टिंड—(पु० हि०) ढेंड़सी।
टिकट—(पु० अ०) कहीं आने-जाने या कोई काम करने के लिये अधिकार पत्र।
टिकटिक—(स्त्री० अनु०) घोड़ों को हाँकने के लिये मुँह से किया हुआ शब्द। घड़ी के बोलने का शब्द।
टिकटिकी—(स्त्री० हि०) टिकठी।
टिकड़ी—(स्त्री० हि०) छोटी रोटी।
टिकना—(क्रि० हि०) ठहरना। टिकाना=ठहराना।
टिकरी—(स्त्री० हि०) टिकिया। टिक्कड़=बड़ी टिकिया।
टिकली—(स्त्री० हि०) छोटी टिकिया। बेंदी।
टिकाऊ—(वि० हि०) मजबूत।
टिकोरा—(पु० हि०) आम का छोटा और कच्चा फल।
टिक्का—(पु० देश०) तिलक।
टिटहरी—(स्त्री० हि०) एक पक्षी।

जिसके द्वारा एक स्थान पर कहा हुआ शब्द कितने ही कोस दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई पड़ता है।
टेलिस्कोप—(अ०) दूरबीन।
टेव—(स्त्री० हि०) आदत।
टेवा—(पु० हि०) जन्मपत्री।
टेसू—(पु० हि०) पलाश का फूल। लड़कों का एक उत्सव।
टैंया—(स्त्री० देश०) छोटी कौड़ी।
टैक्स—(पु० अ०) महसूल।
टैक्सी—(स्त्री० अ०) किराये पर चलनेवाली मोटर गाड़ी।
टैबलेट—(पु० अ०) छोटी टिकिया।
टोंटा—(पु० हि०) नली।
टोंटी—(स्त्री० हि०) नली।
टोक—(पु० हि०) पूछ-ताछ। —ना=बीच में बोल उठना।
टोकनी—(स्त्री० हि०) डलिया।
टोकरा—(पु० हि०) डला। टोकरी=छोटा टोकरा।
टोटका—(पु० हि०) टोना।
टोटल—(पु० अ०) जोड़।
टोटा—(पु० हि०) कारतूस। घाटा।
टोडी—(स्त्री० हि०) एक रागिनी।
टोनहाइ—(स्त्री० हि०) टोना करानेवाली।
टोना—(पु० हि०) जादू।
टोप—(पु० सि०) बड़ी टोपी।
टोपी—(स्त्री० हि०) सिर पर का पहरावा। —दार=जिस पर टोपी लगी हो। —वाला=वह आदमी जो टोपी पहने हो।
टोरी—(पु० अ०) वह जो प्रजा सत्तात्मक शासन प्रणाली का विरोधी हो।
टोल—(स्त्री० हि०) चुंगी।
टोला—(पु० हि०) महल्ला। टोली=छोटा महल्ला। पार्टी।
टोह—(स्त्री० हि०) खोज।
ट्यूटर—(अ०) गृह-शिक्षक। —शन=घर पर आकर पढ़ाने का काम।
ट्रंक—(पु० अ०) लोहे का सफरी सन्दूक।

ट्रंप—(पु० अ०) ताश का एक खेल।

ट्रस्ट—(पु० अ०) संपत्ति या दान-संपत्ति को इस विचार से दूसरे व्यक्तियों को सौंपना कि वे संपत्ति का प्रबन्ध या उपयोग उसके स्वामी के दान पत्र के अनुसार करेंगे।

ट्रस्टी—(पु० अ०) अभिभावक।

ट्राम—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की लंबी गाड़ी जो लोहे की बिछी हुई पटरी पर चलती है।

ट्रान्जैकशन—(अ०) काम।

ट्रान्सपोर्ट—(पु० अ०) माल असबाब एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। बारबर दारी। वह जहाज जिस पर सैनिक या युद्ध का सामान आदि एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाता है। सवारी गाड़ी।

ट्रान्सफर—(अ०) तबादला।

ट्रान्सलेटर—(पु० अ०) भाषांतरकार। अनुवादक।

ट्रान्सलेशन—(पु० अ०) अनुवाद। भाषांतर।

ट्रूप—(स्त्री० अ०) पलटन। सैन्य। दल। घुड़सवारों का एक दल।

ट्रूस—(स्त्री० अ०) क्षणिक संधि।

ट्रेजरर—(पु० अ०) खजांची। कोषाध्यक्ष।

ट्रेड—(अ०) व्यापार।

ट्रेडमार्क—(अ०) छाप।

ट्रेडिल मशीन—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की छापने की छोटी कल।

ट्रेन—(स्त्री० अ०) रेलगाड़ी।

ट्रेनिंग—(अ०) शिक्षा देना।

ट्रैजेडियन—(पु० अ०) वह अभिनेता जो विषाद शोक और गम्भीर भावव्यंजक अभिनय करता है। वियोगांत नाटक खेलक।

ट्रैजेडी—(स्त्री० अ०) दुःखांत नाटक। वियोगांत नाटक।

ठ—व्यञ्जनों में ग्यारहवाँ और टवर्ग का दूसरा व्यञ्जन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।

ठंठ—(वि० हि०) ठूँठा।

ठंढक, ठंडक—(स्त्री० हि०) शीत। ठंढ। ठंढा=शीतल। ठंढ=सरदी। ठंढाई—या ठंडाई। यह दवा जिसके पीने से शरीर की गरमी कम होती है। ठंढी=शीतल।

ठंढा मुलम्मा—(पु० हि०) बिना आँच के सोना चाँदी चढ़ाने की रीति।

ठक ठक—(स्त्री० अनु०) झगड़ा।

ठकठकाना—(क्रि० अनु०) खटखटाना।

ठकुरसुहाती—(स्त्री० हि०) खुशामद।

ठकुराइन—(स्त्री० हि०) ठाकुर की स्त्री। मालकिन।

ठकुराई—(स्त्री० हि०) आधिपत्य।

ठकुरानी—(स्त्री० हि०) जमींदार की स्त्री। स्वामिनी।

ठग—(पु० हि०) धोखा देकर धन हरण करनेवाला। —ई=ठगपना। धोखा। —पना=छल। —विद्या=धोखेबाजी। ठगाई=ठगपना। ठगाना=ठगा जाना। ठगिनी=लुटेरिन। ठगी=ठग का काम।

ठट, ठट्ट—(पु० हि०) समूह।

ठटना—(क्रि० हि०) निश्चित करना। सजना।

ठटरी—(स्त्री० हि०) ढाँचा।

ठट्ठा—(पु० हि०) उपहास। मजाक।

ठठेरा—(पु० हि०) कसेरा। ठठेरी=ठठेरा जाति की स्त्री। ठठेरे का काम।

ठठोली—(स्त्री० हि०) दिल्लगी।

ठनक—(स्त्री० हि०) मृदंगादि की ध्वनि। ठनकना=ठन ठन शब्द करना।

ठनगन—(पु० हि०) विवाह आदि अवसरों पर नेगियों या पुरस्कार पानेवालों का अधिक पाने के लिये हठ करना।

ठनठन गोपाल—(पु० अनु०) छूँछी और निःसार वस्तु। निधन आदमी।

ठनाका—(पु० अनु०) ठन-ठन शब्द।

ठनाठन—(क्रि० वि० अनु०) झनकार के साथ।

ठमकना—(क्रि० हि०) ठिठकना।

ठर्रा—(पु० हि०) मोटा सूत। एक प्रकार की शराब।

ठस—(वि० हि०) ठोस (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो।

ठसक—(स्त्री० हि०) नखरा।

ठसाठस—(क्रि० हि०) ठूँस-कर भरा हुआ।

ठस्सा—(पु० देश०) नक्काशी बनाने की एक छोटी रुखानी। ठसक। घमंड। शान।

ठहर—(पु० हि०) स्थान। —ना=रुकना। ठहराना स्थान देना। रोकना। ठह-रौनी=विवाह में लेन-देन का करार।

ठहाका—(पु० अनु०) अट्टहास।

ठाँठ—(वि० हि०) नीरस।

ठाँसना—(क्रि० हि०) ज़ोर से घुसाना।

ठाकुर—(पु० हि०) देव-मूर्ति। ज़मींदार। क्षत्रिय। —द्वारा =देवालय। —बारी= मंदिर।

ठाट—(पु० हि०) लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा। —बंदी= ढहर। —बाट=सजावट।

ठानना—(क्रि० हि०) दृढ़ संकल्प करना।

ठिठकना—(क्रि० हि०) रुक जाना।

ठीक—(वि० हि०) यथार्थ। —ठाक=बंदोबस्त।

ठीकरा—(स्त्री० हि०) मिट्टी के बरतन का छोटा फूटा टुकड़ा। (स्त्री०) ठीकरी।

ठीका—(पु० हि०) ज़िम्मा। —दार=ठीका देनेवाला।

ठीहा—(पु० हि०) ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिसका थोड़ा सा भाग ज़मीन के ऊपर रहता है।

ठुकराना—(क्रि० हि०) ठोकर मारना। तिरस्कार करना।

ठुड्डी—(स्त्री० हि०) चिबुक।

ठुमकना—(क्रि० अनु०) कूदते या फुदकते हुए चलना। ठुमकी=थपकी।

ठुमरी—(स्त्री० हि०) एक गीत।

ठूँठ—(पु० हि०) सूखा पेड़। ठूँठा।

ठेंगा—(पु० हि०) अँगूठा। चिढ़ाना।

ठेंठी—(स्त्री० देश०) कान की मैल। कान का छेद मूँदने की वस्तु। डाट।

ठेका—(पु० हि०) सहारे की वस्तु। बैठक।

ठेठ—(वि० देश०) निपट। ख़ालिस। शुद्ध।

ठेलना—(क्रि० हि०) ढकेलना।

ठेला—(पु० हि०) एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं।

ठेहरी—(स्त्री० देश०) वह छोटी सी लकड़ी जो दरवाज़ों के पल्लों की चूल के नीचे गड़ी रहती है और जिस पर चूल घूमती है।

ठोक—(स्त्री० हि०) प्रहार। —ना=आघात पहुँचाना।

ठोकवा—(पु० हि०) पूआ।

ठोकर—(स्त्री० हि०) ठेस।

ठोडी—(स्त्री० हि०) ठुड्डी।

ठोस—(वि० हि०) जिसके भीतर खाली स्थान न हो।

ठौर—(पु० हि०) जगह।

ड—हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यंजन और टवर्ग का तीसरा वर्ण।

डंक—(पु० हि०) भिड़, बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों के पीछे का ज़हरीला काँटा।

डंका—(पु० हि०) नगाड़ा।

डंगू—(पु० अ०) एक ज्वर।

डंठल—(पु० हि०) छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

दंड, डंड—(पु० हि०) एक प्रकार का व्यायाम। —पेल कसरती।

डंडा—(पु० हि०) सोटा। —डंडी = छोटी लम्बी पतली छड़ी।

डंबेल—(पु० अ०) कसरत करने का लोहे का एक पदार्थ।

डँवाडोल—(वि० हि०) विचलित।

डक—(पु० अ०) वह स्थान जहाँ जहाज आकर ठहरते हैं।

डकार—(स्त्री० अनु०) मुँह से निकला हुआ वायु का उद्गार। —ना = डकार लेना।

डकैत—(पु० हि०) डाका डालने वाला। —डकैती = डकैत का काम।

डग—(पु० हि०) क़दम।

डगडगाना—(क्रि० अनु०) हिलना।

डगना—(क्रि० हि०) खसकना।

डगमगाना—(क्रि० हि०) इधर उधर हिलना डोलना।

डगर—(स्त्री० हि०) रास्ता।

डटना—(क्रि० हि०) अड़ना।

डटाना—(क्रि० हि०) हटाना।

डपटना—(क्रि० हि०) डाँटना।

डपोरसंख—(पु० अनु०) डींग मारनेवाला। मूर्ख।

डफ—(पु० हि०) डफला। (स्त्री०) डफली = खँजड़ी।

डफाली—(पु० हि०) डफला बजानेवाला

डबडबाना—(क्रि० अनु०) अश्रुपूर्ण होना।

डबल—(वि० अ०) दोहरा। —रोटी = पावरोटी।

डभका—(पु० हि०) कुएँ से ताजा निकाला हुआ पानी।

डमरु—(पु० हि०) एक बाजा। —मध्य=धरती का वह तंग पतला भाग जो दो बड़े-बड़े खंडों को मिलाता है। —यन्त्र=वैद्यों का एक प्रकार का यन्त्र।

डर—(पु० हि०) भय। —ना=भयभीत होना। —पोक=भीरु। कायर। डराना=भय दिखाना। डरावना=भयकर।

डलिया—(स्त्री० हि०) छोटा टोकरा।

डली—(स्त्री० हि०) छोटा टुकड़ा। सुपारी।

डहकना—(क्रि० हि०) छल करना। डहकाना=गँवाना।

डहडहा—(वि० अनु०) हरा भरा। —ना=हरा भरा होना।

डहर—(स्त्री० हि०) पशुओं का रास्ता।

डाँक—(स्त्री० हि०) ताँबे या चाँदी का बहुत पतला कागज़ की तरह का पत्तर।

डाँगर—(वि० हि०) चौपाया।

डाँट—(स्त्री० हि०) शासन। वश। दबाव।

डाँटना—(क्रि० हि०) डपटना।

डाँड—(पु० हि०) दंड। जुर माना। सरहद।

डाँडा—(पु० हि०) खूँटा।

डाँवाडोल—(वि० हि०) विचलित।

डाँस—(पु० हि०) बड़ा मच्छर।

डाइन—(स्त्री० हि०) चुड़ैल।

डाइबिटीज़—(पु० अ०) बहुमूत्र रोग। मधुमेह।

डाइरेक्टर—(पु० अ०) कार्य सचालक। डाइरेक्टरी=वह पुस्तक जिसमें किसी नगर या देश के मुख्य निवासियों या व्यापारियों आदि की सूची अक्षर क्रम से हो।

डाई—(पु० अ०) साँचा। ठप्पा। —प्रेस=ठप्पा उठाने की कल।

डाक—(पु० हि०) पोस्ट आफिस। —खाना=वह सरकारी दफ्तर जहाँ से चिट्ठियाँ जाती हैं और बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ लोगों को बाँटी जाती हैं। —गाड़ी =डाक ले जानेवाली रेल गाड़ी जो और गाड़ियों से तेज चलती है। —घर=डाकखाना। —बंगला=वह बँगला या मकान जो सरकार की ओर से ठहरने के लिये बना हो। —महसूल=वह खर्च जो चीज को डाक द्वारा भेजने या मँगाने में लगे। —मुंशी=डाकघर का अफसर। —व्यय=डाक-महसूल।

डाका—(पु० हि०) वह आक्रमण जो धन हरण करने के लिये सहसा किया जाता है।—जनी =डाका मारने का काम। डाकू=डाका डालनेवाला।

डाकिनी—(स्त्री०) डाइन। चुड़ैल।

डाकेट—(पु० अ०) चिट्ठी का खुलासा।

डाक्टर—(पु० अ०) वैद्य। डाक्टरी=पाश्चात्य आयुर्वेद। डाक्टर का पेशा या काम। वह परीक्षा जिसे पास करने पर आदमी डाक्टर होता है।

डाटना—(क्रि० हि०) भिड़ाकर ठेलना।

डाढ़ा—(स्त्री० हि०) दावानल।

डाढ़ी—(स्त्री० हि०) ठोड़ी। दाढ़ी।

डाबर—(पु० हि०) नीची जमीन। तलैया।

डामल—(स्त्री० हि०) जनमक़ैद।

डायट—(स्त्री० अ०) व्यवस्थापिका सभा। राज्यसभा। पथ्य। भोजन।

डायन—(स्त्री० हि०) डाकिनी।

डायनमो—(पु० अ०) एक छोटा एंजिन जिससे बिजली पैदा की जाती है।

डायरिया—(पु० अ०) दस्त की बीमारी। अतिसार।

डायरी—(स्त्री० अं०) रोज़-नामचा।

डायल—(पु० अं०) घड़ी का चेहरा।

डायस—(अं०) वह ऊँचा स्थान या चबूतरा जिस पर किसी सभा के सभापति का आसन रक्खा जाता है।

डायमंड—(अं०) हीरा।

डायमंड कट—(पु० अं०) हीरे की सी काट।

डायर्की—(स्त्री० अं०) वह शासन प्रणाली या सरकार जिसमें शासन अधिकार दो व्यक्तियों के हाथों में हो। द्वैध शासन।

डाल—(स्त्री० हिं०) शाखा।

डालना—(क्रि० हिं०) छोड़ना। अन्दर करना।

डालफिन—(स्त्री० अं०) ह्वेल मछली का एक भेद।

डालर—(पु० अं०) अमेरिका का सिक्का।

डाली—(स्त्री० हिं०) डलिया। फल, फूल, मेवे तथा और खाने पीने की वस्तुएँ जो डलिया में सजाकर किसी के पास सम्मानार्थ भेजी जाती हैं। शाखा।

डाह—(स्त्री० हिं०) ईर्ष्या।

डिंगल—(जि० हिं०) राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और कथा चली आदि लिखते चले आते हैं।

डिक्टेटर—(पु० अं०) प्रधान नेता। पथ प्रदर्शक। निरंकुश शासक।

डिक्टेशन—(पु० अं०) वह वाक्य जो लिखने के लिये बोला जाय। इमला।

डिक्लेरेशन—(पु० अं०) वह लिखा हुआ काग़ज़ जिसमें किसी मैजिस्ट्रेट के सामने कोई प्रेस खोलने या कोई समाचार पत्र छापने और निकालने की जिम्मेदारी ली या घोषित की जाती है।

डिक्री—(स्त्री० अं०) आज्ञा। न्यायालय की वह आज्ञा जिसके द्वारा झगड़नेवाले पक्षों

में से किसी पक्ष को किसी सम्पत्ति का अधिकार दिया जाय।

डिक्शनरी—(स्त्री० अ०) शब्द कोष। लुगत।

डिगना—(क्रि० हि०) टलना। फिसलना।

डिगरी—(स्त्री० अ०) विश्व विद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की पदवी। —दार=वह जिसके पक्ष में अदालत की डिगरी हुई हो।

डिगाना—(क्रि० हि०) हटाना।

डिटेक्टिव—(पु० अ०) जासूस।

डिपटी—(पु० अ०) नायब।

डिपाज़िट—(पु० अ०) धरोहर। जमा।

डिपार्टमेंट—(पु० अ०) विभाग।

डिपो—(स्त्री० अ०) गुदाम।

डिप्लोमा—(पु० अ०) सनद।

डिप्लोमेट—(पु० अ०) कूट नीतिज्ञ।

डिफेमेशन—(पु० अ०) मान हानि। बेइज़्ज़ती।

डिबिया—(स्त्री० हि०) छोटा डिब्बा। डिब्बा=सम्पुट।

डिबेंचर—(पु० अ०) ऋण-स्वीकार पत्र।

डिमरेज—(पु० अ०) बन्दरगाह में जहाज़ के ज्यादह ठहरने का हर्जा। स्टेशन पर आये हुए माल के अधिक दिन पड़े रहने का हर्जा जो पानेवाले को देना पड़ता है।

डिमाई—(स्त्री० अ०) कागज़ या छापने की कल की एक नाप जो १८×२२ इंच होती है।

डिलेवरी—(स्त्री० अ०) डाक खानों में आई हुई चिट्ठियों, पारसलों, मनीआडरों की बँटाई जो नियत समय पर होती है। किसी चीज़ का बाँटा जाना या दिया जाना। प्रसव होना।

डिविजनल—(वि० अ०) डिवी-ज़न का। उस भूभाग का जिसमें कई ज़िले हों।

डिविडेंड—(पु० अ०) वह मुनाफा जो कम्पनी या सम्मिलित पूँजी से चलने वाली कम्पनी को होता है और जो हिस्सेदारों में, उनके हिस्से के मुताबिक बाँटा जाता है।

डिवीज़न—(पु० अ०) कमिश्नरी विभाग।

डिस्ट्रिब्यूट—(क्रि० अ०) छापे खाने में कम्पोज़ किए हुए टाइपों (अक्षरों) को केसों (खानों) में अपने अपने स्थान पर रखना। बाँटना।

डिसकाउंट—(पु० अ०) बट्टा। दस्तूरी। कमीशन।

डिसमिस—(वि० अ०) बर ख़ास्त।

डिसिप्लिन—(पु० अ०) कायदे के अनुसार चलने की शिक्षा या भाव। अनुशासन। फरमाँ बरदारी। व्यवस्था। शिक्षा। दंड।

डिस्ट्रायर—(पु० अ०) नाशक जहाज़। टारपीडो बोट।

डिस्ट्रिक्ट—(पु० अ०) ज़िला। —बोर्ड=ज़िला बोर्ड। किसी ज़िले के कर-दाताओं के प्रतिनिधियों की सभा। —मैजिस्ट्रेट=ज़िला हाकिम।

डिस्पेप्सिया—(पु० अ०) मंदाग्नि। पाचन शक्ति की कमी।

डींग—(स्त्री० हि०) शेखी।

डील—(पु० हि०) क़द।

डीह—(पु० हि०) गाँव। ग्राम देवता।

डुबाना—(क्रि० हि०) बोरना।

डुबाव—(पु० हि०) डूबने भर की गहराई।

डूँगर—(पु० हि०) टीला। (स्त्री०) डूगरी=छोटी पहाड़ी।

डूबना—(क्रि० हि०) बूड़ना।

डेक—(पु० अ०) जहाज़ पर लकड़ी से पटा हुआ फ़र्श या छत।

डेपूटेशन—(पु० अ०) चुने हुए प्रधान प्रधान लोगों की वह मण्डली जो जन-साधारण या किसी सभा, या संस्था की

ओर से सरकार, राजा महा राजा अथवा किसी अधिकारी या शासक के पास किसी विषय में प्रार्थना करने के लिये भेजी जाय।

डेमोक्रेसी—(स्त्री० अ०) सर्व साधारण द्वारा परिचालित सरकार। प्रजा-सत्तात्मक राज्य। प्रजातंत्र। राजनीतिक और सामाजिक समानता।

डेमोक्रेट—(पु० अ०) वह जो डेमोक्रेसी या प्रजासत्ता या लोकमत्ता के सिद्धांत का पक्षपाती हो।

डेरा—(पु० हि०) ठहराव। पड़ाव।

डेरी—(स्त्री० अ०) वह स्थान जहाँ गौएँ, भैंसें रखी जातीं हैं, और दूध, मक्खन आदि बेचा जाता है।

डेल्टा—(पु० यु० अ०) नदियों के मुहाने या संगम स्थान पर बनी हुई भूमि।

डेल आयरियन—(स्त्री० आय-रिश) आयर्लैंड की पार्लमेंट या व्यवस्थापिका सभा।

डेलिगेट—(पु० अ०) प्रतिनिधि।

डेली—(स्त्री० अ०) दैनिक।

डेवढ़ा—(वि० हि०) डेढ़गुना।

डेवलप करना—(क्रि० अ०) फ़ोटोग्राफ़ी में प्लेट को मसाले मिले हुए जल से धोना जिसमें अंकित चित्र का आकार स्पष्ट हो जाय।

डेस्क—(पु० अ०) लिखने के लिये छोटा ढालुआँ मेज़।

डेहरी—(स्त्री० हि०) दरवाज़े के नीचे की उठी हुई ज़मीन जिस पर चौखट के नीचे की लकड़ी रहती है।

डैना—(पु० हि०) पंख।

डैम—(पु० अ०) एक अँगरेज़ी गाली।

डैश—(पु० अ०) विराम चिह्न।

डोंगा—(पु० हि०) बिना पाल की नाव। डोंगी=बिना पाल की छोटी नाव।

डोकरा—(पु० हि०) बूढ़ा आदमी।

डोम—(पु० हि०) एक अस्पृश्य नीच जाति। —कौआ = बड़ी जाति का कौआ। डोमिन = डोम जाति की स्त्री।
डोमिनियन—(स्त्री० अं०) स्वतंत्र शासन या सरकार।
डोर—(स्त्री० सं०) धागा। डोरा = सूत। डोरिया = एक प्रकार का सूती कपड़ा। डोरी = रस्सी।
डोल—(पु० हि०) लोहे का एक गोल बरतन जिससे कुएँ से पानी खींचते हैं। झूला। —चा = छोटा डोल। —डाल = चलना फिरना। डोलना = (क्रि० हि०) गति में होना। पाखाने जाना।
डोला—(पु० हि०) पालकी। डोली = स्त्रियों के बैठने की एक सवारी जिसे कहार कन्धों पर उठाकर ले चलते हैं।
डोंडा—(स्त्री० हि०) ढिंढोरा।
डौल—(पु० हि०) ढाँचा। ढंग। —डाल = उपाय।
ड्यूक—(पु० अं०) इंगलैंड के सामन्तों और भूम्यधिकारियों को दी जाने वाली एक सर्वोच्च उपाधि।
ड्यूटी—(स्त्री० अं०) कर्त्तव्य। धर्म। फ़र्ज़। सेवा। पहरा। चुंगी। महसूल।
ड्योढ़ा—(वि० हि०) डेढ़गुना।
ड्योढ़ी—(स्त्री० हि०) दरवाज़ा। —दार = द्वारपाल। सिपाही। —बान = दरबान।
ड्राइंग—(स्त्री० अं०) लकीरों से चित्र या आकृति बनाने की विद्या।
ड्राइवर—(पु० अं०) गाड़ी हाँकने या चलाने वाला।
ड्राई प्रिंटिंग—(स्त्री० अं०) सूखी छपाई।
ड्राप—(पु० अं०) बूँद। बिन्दु। यवनिका। —सीन = नाट्य शाला या थियेटर के रंगमंच के आगे का परदा जो नाटक का एक अंक पूरा होने पर गिराया जाता है। यवनिका।
ड्राफ्ट्समैन—(पु० अं०) नकशा बनानेवाला।

ड्राफ्ट—(पु० अ०) मसविदा। मसौदा।

ड्राम—(पु० अ०) पानी आदि द्रव पदार्थों के नापने का एक अँग्रेज़ी मान जो तीन माशे के बराबर होता है।

ड्रामा—(पु० अ०) अभिनय। नाटक।

ड्रिल—(स्त्री० अ०) कवायद।

ड्रेडनाट—(पु० अ०) जंगी जहाज का एक भेद।

ड्रेन—(पु० अ०) परनाला। मोरी।

ड्रेस करना—(क्रि० अ०) मरहम-पट्टी करना।

ढ

ढ—हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन और टवर्ग का चौथा अक्षर।

ढंग—(पु० हि०) शैली।

ढंगी—(वि० हि०) चतुर। पाखंडी।

ढँढोरा—(पु० हि०) डुगडुगी।

ढकना—(पु० हि०) ढक्कन। छिपाना।

ढकेलना—(क्रि० हि०) धक्के से गिराना।

ढकोसला—(पु० हि०) पाखंड।

ढक्कन—(पु० सं०) ढाकने की वस्तु।

ढचर—(पु० हि०) आयोजन और सामान।

ढब—(पु० हि०) तरीक़ा।

ढमढम—(पु० अनु०) ढोल का वा नगारे का शब्द।

ढरकना—(क्रि० हि०) ढलना।

ढरका—(पु० हि०) आँख का एक रोग।

ढरकी—(स्त्री० हि०) जुलाहों का एक औज़ार। पशुओं को दवा पिलाने की बाँस की चोंगी।

ढर्रा—(पु० हि०) मार्ग। ढंग।

ढलरा—(पु० हि०) आँख का एक रोग।
ढलाई—(स्त्री० हि०) ढालने का काम। ढालने की मजदूरी।
ढहाना—(क्रि० हि०) ध्वस्त करना।
ढाँचा—(पु० हि०) ढौल।
ढाँसना—(क्रि० हि०) सूखी खाँसी खाँसना।
ढाक—(पु० हि०) पलाश का पेड़।
ढाढ़स—(पु० हि०) धीरज।
ढाल—(स्त्री० स०) नीचे को उतरती हुई ऊँचाई। तलवार की चोट सँभालने वाला एक हथियार।
ढालना—(क्रि० हि०) उँडेलना।
ढिँढोरा—(पु० हि०) घोषणा करने की भेरी।
ढिठाई—(स्त्री० हि०) धृष्टता।
ढिलाई—(स्त्री० हि०) सुस्ती।
ढीठ—(वि० हि०) बेअदब।
ढील—(स्त्री० हि०) शिथिलता। जूँ। ढीला = शिथिल। —पन = शिथिलता।
ढुँढ़वाना—(क्रि० हि०) खोज पाना।
ढुर्रा—(स्त्री० हि०) पगडंडी।
ढुलकना—(क्रि० हि०) लुढ़कना।
ढुलना—(क्रि० हि०) ढरकना।
ढुलवाई—(स्त्री० हि०) ढोने की मज़दूरी। ढुलवाना = ढोने का काम कराना।
ढूँढ़—(स्त्री० हि०) खोज। —ना = खोजना।
ढेंकली—(स्त्री० हि०) सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र।
ढेंका—(पु० हि०) बड़ी ढेंकी।
ढेंकी—(स्त्री० हि०) अनाज कूटने का लकड़ी का एक यंत्र। ढेंकली।
ढेंढ़र—(पु० हि०) ढेंटर।
ढेंपी—(स्त्री० हि०) फल का मुँह।
ढेर—(पु० हि०) राशि। समूह।
ढेरा—(पु० देश०) सुतली बटने की फिरकी।
ढेलवाँस—(स्त्री० हि०) गोफन।

ढेला—(पु० हि०) ईंट, मिट्टी, कंकड़, पत्थर आदि का टुकड़ा।

ढोंग—(पु० हि०) पाखंड। ढोंगी=पाखंडी।

ढोंढ—(पु० हि०) कपास, पोस्ते आदि की कली।

ढोटा—(पु० हि०) पुत्र।

ढोना—(क्रि० हि०) भार ले चलना।

ढोल—(पु० अ० दुहल) एक बाजा।

ढोलक—(स्त्री० हि०) ढोल।

ढोलना—(पु० हि०) ढोलक के आकार का छोटा जन्तर जो तागे में पिरोकर गले में पहना जाता है।

ढोली—(स्त्री० हि०) २०० पानों की गड्डी।

ण

ण—हिन्दी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यञ्जन।

त

त—हिन्दी-वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दंत है।

तँई—(प्रत्य० हि०) से।

तंग—(पु० फा०) घोड़ों की ज़ीन कसने का तस्मा। सिकुड़ा हुआ। छोटा। —दस्त =निर्धन। ग़रीब। —दिल =कंजूस। —दस्ती= कंजूसी। —हाल=ग़रीब। बीमार। तंगी=संकीर्णता। तकलीफ़। ग़रीबी।

तंज—(अ०) उपालम्भ। ताना।

तजेव—(स्त्री० फ़ा०) महीन और बढ़िया मलमल।
ततु—(पु० हि०) तागा। ताँत।
तत्र—(पु० स०) ततु। शैवों और शाक्तों का धर्म ग्रन्थ। शासन।
तदुरुस्त—(वि० फा०) स्वस्थ। तदुरुस्ती=स्वास्थ्य।
तदूर—(पु० हि०) अँगीठी।
तद्रा—(स्त्री० स०) ऊँघाई। आलस्य।
तबाकू—(पु० हि०) एक पौधा।
तबोह—(स्त्री० अ०) नसीहत।
तनू—(पु० हि०) खेमा।
तबूर—(पु० फा०) छोटा ढोल। (अ०) रोटी पकाने का ज़र्फ़।
तबूरा—(पु० हि०) बीन या सितार की तरह का एक बाजा।
तँबोलिन—(स्त्री० हि०) पान बेचनेवाली स्त्री। तँबोली=पान बेचनेवाला।
तवङ्गर—(फ़ा०) मालदार।
तअज्जुब—(पु० अ०) आश्चर्य।
तअम्मुल—(पु० अ०) फ़िक्र।
तअल्लुक़—(पु० अ०) सबध।
तअल्लुक़ा—(पु० अ०) बड़ा इलाक़ा।
तअल्लुक़ेदार—(पु० अ०) इलाक़ेदार।
तअस्सुब—(पु० अ०) धर्म या जाति सबधी पक्षपात।
तइनात—(पु० हि०) नियुक्त।
तक़दिमा—(अ०) मुक़दमा पेश करना। पेशगी दिया गया रुपया।
तक़दीर—(स्त्री० अ०) भाग्य।
तकरार—(स्त्री० अ०) विवाद। झगड़ा।
तक़रीर—(स्त्री० अ०) बातचीत। भाषण।
तक़रीब—(स्त्री० अ०) उत्सव।
तक़रीबन्—(अ०) लगभग। अनुमानत।
तक़र्रुब—(अ०) समीपता। नज़दीकी।
तक़र्रुरी—(स्त्री० अ०) नियुक्ति।
तक्ला—(पु० हि०) टेकुआ।

तख्ती=छोटा तख्ता या टेकुरी।

तक्लीअ—(अ०) टुकड़े करना।

तक्लीद—(अ०) अनुकरण।

तक्वियत—(अ०) बल देना।

तकय्युद—(अ०) बंदी। क़ैद होना।

तकब्बुर—(अ०) अहंकार। घमंड।

तकरार—(अ०) झगड़ा। लड़ाई।

तयरीफ़—(स्त्री० अ०) फूट।

तक्लील—(अ०) कम करना। थोड़ा करना।

तकल्लुफ़—(पु० अ०) शिष्टाचार।

तक्सीम—(स्त्री० अ०) बाँटना।

तक्सीर—(स्त्री० अ०) अपराध। भूल। —वार=अपराधी। गुनहगार।

तक़ाज़ा—(पु० अ०) तगादा। माँग।

तक़ावी—(स्त्री० अ०) वह धन जो ज़मींदार या राजा की ओर से गरीब किसानों को खेती के औज़ार बनवाने और बीज खरीदने को दिया जाय।

तकिया—(पु० फ़ा०) सिर के नीचे रखने का रूईदार थैला। —कलाम=बोलते समय एक ही वाक्य या शब्द जो आदत पड़ जाने के कारण बार बार आवे। —दार=मज़ार पर रहनेवाला मुसल्मान फ़कीर।

तखफ़ीफ़—(स्त्री० अ०) कमी। संक्षिप्त करना। हल्का करना।

तखमीनन—(क्रि० वि०) अंदाज़ से। तखमीना=अंदाज़।

तखलिया—(पु० अ०) एकांत स्थान।

तखल्लुस—(अ०) छाप। उपनाम।

तख़सीस—(अ०) विशेषता। खास बात।

—ताऊस=(अ०) एक प्रसिद्ध राज सिंहासन, जिसे शाहजहाँ ने छ करोड़ रुपये लगाकर बनवाया था।
—नशीन=सिंहासनारूढ़।
—पोश=तख़्त या चौकी पर बिछाने की चादर।
तख़्ता=बड़ा पटरा। चिरी हुई लकड़ी। तख़्ती=छोटा तख़्ता। पटिया।

तगडा—(वि० हि०) बलवान्।

तजरबा—(पु० अ०) अनुभव।
—कार=अनुभवी।

तजरुबा—(पु० अ०) अनुभव।
—कार=अनुभवी।

तज़्किरा—(पु० अ०) चर्चा। ज़िक्र करना।

तजवीज़—(स्त्री० अ०) सम्मति। योजना। —सानी=(अ०) एक ही हाकिम के सामने होनेवाला पुनर्विचार।

तजल्ली—(अ०) प्रकाश। रोशनी।

तजम्मुल—(अ०) वैभव। शान। सुन्दरता।

तट—(पु० सं०) किनारा। क्षेत्र। प्रदेश। —स्थ=किनारे पर रहनेवाला। निरपेक्ष।

तडका—(पु० हि०) सवेरा। बघार।

तडप—(स्त्री० हि०) छटपटाना। चमक। झलक। —ना=छटपटाना।

तडाका—(पु० अनु०) "तड़" शब्द। जल्दी से।

तडातड—(क्रि० अनु०) तड़तड़ शब्द के साथ।

तत्काल—(क्रि० सं०) फ़ौरन्।
तत्कालीन=उसी समय का।

तत्क्षण—क्रि० सं०) तत्काल।

तत्ता—(वि० हि०) गरम।

तत्व—(पु० सं०) वास्तविकता। सार। —ज्ञ=तत्वज्ञानी। दार्शनिक। —ज्ञान=ब्रह्म ज्ञान। —ज्ञानी=तत्वज्ञ। दार्शनिक। —दर्शी=तत्व ज्ञानी। —वेत्ता=तत्वज्ञ। दार्शनिक। —शास्त्र=दर्शन-शास्त्र। तत्वावधान=निरीक्षण।

तत्पर—(वि० सं०) उद्यत । मुस्तैद । —ता=मुस्तैदी ।
तत्पुरुष—(सं०) एक समास ।
तत्सम—(पु० सं०) हिन्दी में व्यवहृत होनेवाला संस्कृत का वह शब्द जो अपने शुद्ध रूप में हो ।
तथा—(अव्य० सं०) और । इसी तरह ।
तथापि—(अव्य० सं०) तोभी ।
तथ्य—(वि० सं०) सत्य ।
तदनंतर—(क्रि० सं०) उसके बाद ।
तदनुरूप—(वि० सं०) उसी के समान ।
तदनुसार—(वि० सं०) उसके अनुकूल ।
तदबीर—(स्त्री० अ०) उपाय ।
तदारक—(पु० अ०) बदोबस्त । दंड ।
तदुपरान्त—(क्रि० सं०) उसके बाद ।
तद्भव—(पु० सं०) संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप ।
तन—(पु० हि०) शरीर । बदन ।
तनकीह—(स्त्री अ०) जाँच करना ।
तनख्वाह—(स्त्री० फा०) वेतन । मजदूरी । —दार=वेतन भोगी ।
तन्ज—(अ०) ताना ।
तनज्जुल—(पु० अ०) अवनत । तनज्जुली=(स्त्री० फ़ा०) अवनति ।
तनय—(पु० सं०) पुत्र ।
तनसीख—(स्त्री० अ०) रद्द करना ।
तनहा—(वि० फ़ा०) अकेला । —ई=एकांत ।
तना—(पु० फ़ा०) पेड़ का धड़ ।
तनाजा—(पु० अ०) झगड़ा ।
तनाव—(पु० हि०) खिंचाव ।
तनावर—(फ़ा०) मोटा । बड़ा । ताक्तदार ।
तनासुल—(अ०) प्रसव । सन्तानोत्पत्ति ।
तनी—(स्त्री० हि०) बंधन ।
तन्मय—(वि० सं०) लवलीन । —ता=एकता ।

तप—(पु० हि०) तपस्या। (फा०) ज्वर। ताप।
तपन—(पु०सं०) जलन। ग्रीष्म। तपना=गर्म होना। तपाना=गर्म करना।
तपस्या—(स्त्री० सं०) तप। तपस्विनी=तपस्या करने वाली स्त्री। तपस्वी=तपस्या करने वाला।
तपाक—(पु० फा०) आवेश। जल्दी।
तपिश—(फा०) गरमी। सोज़िश।
तपेदिक—(पु० फा०) राजयक्ष्मा।
तपोधन—(पु० सं०) तपस्वी।
तपोभूमि—(स्त्री० सं०) तपोवन।
तपोबल—(पु० सं०) तप का प्रभाव या शक्ति।
तप्तकुंड—(पु० सं०) गरम पानी का सोता या कुंड।
तप्ता—(फा०) जला हुआ। आशिक़।
तफरीक—(स्त्री० अ०) जुदाई। विभिन्नता।
तफ़रिक़ा—(अ०) फ़र्क़। फ़ासिला।
तफ़ज़ील—(अ०) बड़प्पन। प्रतिष्ठा करना।
तफ़ज़्ज़ुल—(अ०) बुज़ुर्गी। बड़ाई।
तफ़तीश—(अ०) खोज। तलाश।
तफ़रीह—(स्त्री० अ०) प्रसन्नता। ताज़गी।
तफ़सील—(स्त्री० अ०) विस्तृत बयान। टीका। सूची।
तफ़ावत—(पु० अ०) अन्तर। दूरी।
तब—(अव्य० हि०) उस समय।
तबक़—(पु० अ०) लोक। चाँदी सोने आदि धातुओं का पतला वरक़।
तबक़ा—(पु० फ़ा०) तह। लोक। पद। दर्जा।
तबदील—(वि० अ०) परिवर्तित। तबदीली=(स्त्री० अ०) बदली। तबद्दल=(पु० अ०) बदली।
तबर्रा—(अ०) नफ़रत करना।
तबल—(पु० फ़ा०) नगारा। ढोल। —ची=(हि०) वह जो तबला बजाता हो।

तबला = एक प्रसिद्ध बाजा।

तबस्सुम—(अ०) मुसकुराना। कली का खिलना।

तबाक़—(पु० अ०) परात।

तबायत—(स्त्री० अ०) चिकित्सा।

तबाह—(वि० फ़ा०) बरबाद। तबाही = बरबादी। उजड़ जाना।

तबीअत—(स्त्री० अ०) चित्त। स्वास्थ्य। —दार = (वि० अ०) समझदार। भावुक। —दारी = समझदारी। भावुकता।

तबीब—(पु० अ०) चिकित्सक। हकीम। वैद्य।

तबेला—(पु० अ०) अस्तबल। घुड़साल।

तभी—(अव्य० हि०) उसी समय।

तमचा—(पु० फ़ा०) पिस्तौल।

तम—(हि०) अंधकार।

तमक—(पु० हि) जोश। क्रोध।

तमगा—(पु० तु०) पदक।

तम्बूर—(अ०) तमूरा।

तमतमाना—(क्रि० हि०) धूप या क्रोध के कारण चेहरा लाल हो जाना।

तमकनत—(अ०) गर्व। टीमटाम।

तमतमाहट—(हि०) चेहरा लाल हो जाना। लाली।

तमसील—(अ०) उदाहरण।

तमस्सुक—(अ०) दस्तावेज़।

तमन्ना—(अ०) वांछा। अभिलाषा। इच्छा।

तमहीद—(अ०) भूमिका।

तमा—(अ०) लालच। लोभ।

तमाअत—(अ०) लोभ करना। लालच करना।

तमाचा—(पु० हि०) थप्पड़।

तमाम—(वि० अ०) सम्पूर्ण। पूरा।

तमाशा—(पु० फ़ा०) चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। —ई = तमाशा देखनेवाला। तमाशबीन = ऐयाश। तमाशा देखनेवाला। तमाशबीनी = ऐयाशी।

तमीज़—(स्त्री० अ०) विवेक। ज्ञान। अदब।

तमोलिन—(स्त्री० हि०) पान बेचने वाली स्त्री ।

तम्बोल—(फ़ा०) ताम्बूल । पान ।

तय्यार—(अ०) मस्तुत ।

तरंगिणी—(स्त्री० स०) नदी ।

तय—(अ०) निश्चय करना । आमादा । मुस्तैद ।

र—(वि० फ़ा०) भीगा हुआ । शीतल । —बतर=भीगा हुआ ।

तर्क—(अ०) छोड़ना । परिग्रह ।

तरकश—(पु० फ़ा०) तूणीर ।

तरकारी—(स्त्री० फ़ा०) शाक । भाजी ।

तरकी—(स्त्री० हि०) कान में पहनने का एक गहना ।

तरकीब—(स्त्री० अ०) उपाय । युक्ति ।

तरक्क़ी—(स्त्री० अ०) उन्नति ।

तरकीक—(अ०) बारीक करना ।

तरगीब—(अ०) लालच देना । आकर्षित करना ।

तर्ज़—(अ०) प्रकार । ढँग । तरह ।

तरजुमा—(पु० अ०) अनुवाद ।

तरतीब—(स्त्री० अ०) सिलसिला । क्रम ।

तरदीद—(स्त्री० अ०) मसूख़ ।

तरद्दुद—(पु० अ०) फिकर । चिन्ता ।

तरना—(क्रि० हि०) पार करना ।

तरफ़—(स्त्री० अ०) ओर । —दार=पक्षपाती । —दारी=पक्षपात । तरफ़ैन = दोनों ओर ।

तरबियत—(अ०) तालीम । परवरिश ।

तरबूज—(पु० हि०) मतीरा ।

तरमीम—(स्त्री० अ०) संशोधन ।

तरल—(वि० स०) चंचल ।

तरस—(पु० हि०) दया ।

तरसना—(क्रि० हि०) अभाव का दुःख सहना । तरसाना= अभाव का दुःख देना ।

तरह—(स्त्री० अ०) प्रकार । भाँति । समस्या । —दार= सुन्दर बनावट का ।—दारी= सजधज का ढँग ।

तराई—(स्त्री० हि०) पहाड़ के नीचे की भूमि ।

तराक—(फ़ा०) कोड़े मारने की आवाज़। तड़ाक।

तराना—(फ़ा०) राग। गीत।

तराज़ू—(स्त्री० फ़ा०) तुला।

तराबोर—(वि० हि०) सराबोर।

तरावट—(स्त्री० हि०) गीला पन। ठंडक।

तराश—(स्त्री० फ़ा०) काटछांट। —खराश = काट छांट। तराशा = छिलका तराशा हुआ। तराशना = कतरना।

तरीका—(पु० अ०) ढँग। प्रणाली।

तरु—(पु० स०) पेड़।

तरोई—(स्त्री० हि०) एक तर कारी।

तर्क—(पु० स०) विवेचना। (अ०) छोड़ना। परिग्रह। तर्कणा=(स) विचार। दलील। तर्कना=विचार। युक्ति।—वितर्क=विवेचना। बहस। —शास्त्र=सिद्धांतों के खण्डन मण्डन की, शैली

तर्ज़—(पु० अ०) प्रकार। शैली। तरह। ढँग।

तर्जुमा—(पु० अ०) भाषान्तर।

तर्पण—(पु० स०) पितरों को जल देना।

तल—(पु० स०) नीचे का भाग। तला।

तलख़—(फ़ा०) कड़ुवा। असह्य।

तलछट—(स्त्री० हि०) तलौंछ।

तलत्तुफ़—(अ०) मेहरबानी करना।

तलफना—(क्रि० अनु०) छट-पटाना।

तलफ़्फ़ुज़—(अ०) उच्चारण।

तलब—(स्त्री० अ०) रोज़। तलाश। चाह। माँगना। इच्छा। तलबाना=वह ख़र्चा जो गवाहों को तलब करने के लिये टिकट के रूप में अदालत में दाख़िल किया जाता है।

तलबी—(स्त्री० अ०) बुलाहट।

तलवार—(स्त्री० हि०) एक हथि यार।

तलहटी—(स्त्री० हि०) पहाड़ की तराई।

तला—(पु० हि०) पेंदा।

तलाक़—(पु० अ०) पति पत्नी का विधान पूर्वक सम्बन्ध त्याग।

तलाज—(अ०) शोर-गुल।

तलातुम—(अ०) झगड़ा। लड़ाई। नदी में लहरों की थपेड़ें।

तलाफी—(अ०) निवारण। दिलजोई।

तलाश—(स्त्री० तु०) खोज। ढूँढ़ना। तलाशी=गुम की हुई या छिपाई हुई वस्तु को पाने के लिये घर बार, चीज वस्तु आदि की देख भाल।

तली—(स्त्री० हि०) पेंदी।

तले—(क्रि० हि०) नीचे।

तलैटी—(स्त्री० हि०) पेंदी। तलहटी।

तल्प—(पु० स०) पलँग। अटारी।

तल्ली—(स्त्री० सं०) जूते का तला।

तवक्कुल—(अ०) ईश्वर पर भरोसा करना।

तवज्जह—(स्त्री० अ०) ध्यान।

तवा—(पु० हि०) लोहे का एक बर्तन जिस पर रोटी सेंकते हैं। (फ़ा०) तावा।

तवङ्गर—(फ़ा०) ताक़तवर। मालदारी।

तवाज़ा—(स्त्री० अ०) आदर। दावत। नम्रता।

तवायफ—(स्त्री० अ०) वेश्या।

तवारीख—(स्त्री० अ०) इतिहास।

तवालत—(स्त्री० अ०) लम्बाई। अधिकता। आपत्ति। कष्ट।

तवील—(अ०) लम्बा।

तशख़ीस—(स्त्री० अ०) ठहराव। रोग का निदान।

तशबीह—(अ०) उदाहरण। मिसाल।

तशरीफ—(स्त्री० अ०) इज़्ज़त बड़प्पन।

तशदीद—(अ०) किसी पर सख्ती करना।

तशद्दुद—(अ०) अनाचार। किसी पर सख्ती करना।

तश्तरी—(स्त्री० फ़ा०) रिकाबी।

तसदीक़—(स्त्री० अ०) सचाई। समर्थन। गवाही।

तसद्दुक़—(पु० अ०) निछावर। बलि प्रदान।

तसदीद—(अ०) दुरुस्त करना।

तसनीफ़—(स्त्री० अ०) ग्रंथ की रचना। ग्रंथ।

तसबीह—(स्त्री० अ०) जप माला।

तसमई—(हि०) एक प्रकार का पकवान।

तसरीह—(अ०) प्रकट करना।

तसला—(पु० हि०) कटोरे के आकार का एक बड़ा बरतन। (स्त्री०) तसली।

तसलीम—(स्त्री० अ०) प्रणाम। स्वीकृति।

तसल्ली—(स्त्री० अ०) आश्वासन। धैर्य।

तसवीर—(स्त्री० अ०) चित्र।

तसहीह—(अ०) शुद्ध करना। दुरुस्त करना।

तसह्हुय—(अ०) माशूक़ का अपने आशिक़ से नाज़ करना।

तस्कर—(पु० सं०) चोर।

तसर्रुफ़—(अ०) दख़ल देना। कुछ का कुछ कर देना।

तस्फ़िया—(अ०) निपटारा करना।

तह—(स्त्री० फ़ा०) परत।

तहक़ीक़—(स्त्री० अ०) सत्य। खोज। जाँच। तहक़ीक़ात=अनुसन्धान।

तहख़ाना—(पु० फ़ा०) तलगृह।

तहज़ीब—(स्त्री० अ०) शिष्ट व्यवहार।

तहबन्द—(फ़ा०) लुङ्गी। लँगोट।

तहबाज़ारी—(स्त्री० फ़ा०) वह महसूल जो मट्टी में सौदा बेचनेवालों से ज़मींदार लेता है।

तहत—(अ०) अधीन। नीचे।

तहमत—(पु० फ़ा०) लुंगी।

तहरीक—(अ०) आन्दोलन। ध्यान दिलाना।

तहरीर—(स्त्री० अ०) लेख।
तहरीरी=(वि० फ़ा०) लिखित।
तहलका—(पु० अ०) मृत्यु। हलचल। बरबादी।
तहय्युर—(अ०) विस्मय। आश्चर्य।
तहम्मुल—(अ०) धैर्य। सतोप। उठाना। बरदाश्त करना।
तहवील—(स्त्री० अ०) सुपुर्दगी। धरोहर। जमा। कोष। ख़ज़ाना। रोकड़। —दार= ख़ज़ानची।
तहव्वुर—(अ०) मर्दानगी।
तहसनहस—(वि० देश०) बरबाद।
तहसील—(स्त्री० अ०) वसूली। तहसीलदार की कचहरी। इकट्ठा करना। —दार= कर वसूल करनेवाला अफ़सर। —दारी=तहसीलदार का काम।
तहाँ—(हि०) वहाँ।
तहेदस्त—(फ़ा) खाली हाथ। ग़रीब।
तहोवाला—(वि० फ़ा०) नीचे ऊपर।
ताँता—(पु० हि०) चलनेवालों का पंक्ति-बद्ध समूह।
ताँतिया—(वि० हि०) ताँत के तरह दुबला पतला।
ताँबा—(पु० हि०) धातु।
ताशाँ—(फ़ा०) चमत्कार।
ताबूल—(पु० सं०) पान।
ता—(फ़ा०) तक।
ताईं—(अव्य० हि०) प्रति।
ताअत—(अ०) प्रार्थना। पूजा। आदर। सत्कार।
ताइ—(स्त्री० हि०) हरारत। जूड़ी।
ताइद—(स्त्री० अ०) पक्षपात। अनुमोदन।
ताऊ—(पु० हि०) बाप का बड़ा भाई।
ताऊन—(पु० अ०) प्लेग।
ताऊस—(पु० अ०) मोर।
ताक—(स्त्री० हि०) घात।
ताक—(पु० अ०) आला।
ताक़जुफ़्त—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का जूआ।

ताक झाक—(स्त्री० हि०) घात।
ताकत—(स्त्री० अ०) शक्ति। सामर्थ्य। —वर=बलवान।
ताकना—(क्रि० हि०) देखना।
ताकीद—(स्त्री० अ०) सावधान करना। बार बार कहना।
ताम्मुल—(अ०) समझना। जानना। फिक्र करना।
तागा—(पु० हि०) सूत।
ताज—(पु० अ०) राजमुकुट।
ताजगी—(स्त्री० फ़ा०) हरापन। ताज़ापन। स्वस्थता। नयापन।
ताजपोशी—(स्त्री० फ़ा०) राज मुकुट धारण करने या राज सिंहासन पर बैठने की रीति या उत्सव।
ताजमहल—(पु० अ०) आगरे का प्रसिद्ध मक़बरा।
ताजा—(वि० फ़ा०) हरा भरा।
ताजिया—(पु० अ०) बाँस की कमचियों पर रंग बिरंगे काग़ज़, पन्नी आदि चिपका कर बनाया हुआ मक़बरे के आकार का मंडप।
ताजिर—(अ०) व्यापारी। सौदागर।
ताजी—(वि० फ़ा०) अरब का घोड़ा।
ताजीम—(स्त्री० अ०) सम्मान-प्रदर्शन। प्रतिष्ठा करना।
ताजीमी सरदार—(पु० फ़ा०) ऐसा सरदार जिसकी दरबार में विशेष प्रतिष्ठा हो।
ताजीरात—(पु० अ०) अपराध और दंड सम्बन्धी व्यवस्थाओं या क़ानूनों का समूह। दंड विधि।
ताड—(पु० सं०) पेड़।
ताडना—(स्त्री०) सं०) प्रहार। धमकी।
ताडपत्र—(पु०सं०) ताड़ का। पत्ता।
ताडनाज—(वि० हि०) ताड़ने वाला।
ताडी—(स्त्री० सं०) खजूर का रस।
ताता—(वि० हि०) गरम।
तातायेई—(स्त्री० अनु०) नृत्य का शब्द।

तुलसी—(स्त्री० सं०) एक छोटा पौधा ।
तुलसीदास—(पु०) एक प्रसिद्ध भक्त कवि जिन्होंने राम चरितमानस बनाया ।
तुला—(स्त्री० स०) तराजू ।
तुलादान—(पु० स०) एक प्रकार का दान ।
तुलुअ—(अ०) उदय होना ।
तुषार—(पु० स०) पाला । बरफ़ ।
तुहफा—(अ०) भेंट । अनोखी वस्तु ।
तुहमत—(स्त्री० अ०) झूठा कलंक ।
तुहिन—(पु० स०) कुहरा । बरफ । ठंडक ।
तूँबा—(पु० हि०) कडुआ गोल कद्दू ।
तूँबी—(स्त्री० हि०) कडुआ गोल कद्दू ।
तूत—(फा०) शहतूत । एक फल ।
तूती—(स्त्री० फ़ा०) तोते की जाति की चिड़िया ।
तूदा—(पु० फ़ा०) ढेर । हदबदी ।
तूफ़ान—(पु० अ०) आँधी । तूफ़ानी=ऊधमी ।
तूमड़ी—(स्त्री० हि०) तूँबी ।
तूमार—(पु० अ०) बात का बतंगड़ ।
तूल—(अ०) लम्बाई ।
तूलिका—(स्त्री० स०) तसवीर बनानेवालों की कूँची ।
तृण—(पु० स०) घास ।
तृतीय—(वि० स०) तीसरा । तृतीया=तीज ।
तृप्त—(वि०स०) अघाया हुआ । तुष्ट । तृप्ति=(स०) सतोष ।
तृषा—(स्त्री० स०) प्यास । तृष्णा । लालच । तृषित=प्यासा । तृष्णा=लालच । प्यास ।
तेंदुआ—(पु० देश०) बिल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु ।
तेग—(स्त्री० अ०) तलवार ।
तेज—(पु० हि०) चमक । कांति । —स्वी=जिसमें तेज हो । प्रतापी । —स्विता=

प्रताप । तेजोमय=जिसमें खूब तेज हो ।
तेज़—(वि० फ़ा०) जिसकी धार पैनी हो । महँगा ।
तेजपत्ता—(पु० हि०) दारचीनी की जाति का एक पेड़ ।
तेजबल—(पु० हि०) एक काँटेदार जंगली पेड़ ।
तेज़ाब—(पु० फ़ा०) किसी क्षार पदार्थ का अम्ल सार ।
तेज़ी—(स्त्री० फा०) उग्रता । शीघ्रता ।
तेलगू—(स्त्री० हि०) तैलंग देश की भाषा ।
तेल—(पु० हि०) वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों, वनस्पतियों आदि से निकलता या निकाला जाता है । (स०) तैल । —हन=वे बीज जिनसे तेल निकलता है । तेलिन=तेली की स्त्री । तेलिया=तेल के से रंगवाला। —कद=एक प्रकार का कद्दा। —सुहागा=एक प्रकार का सुहागा जो देखने में बहुत चिकना होता है । तेली=हिन्दुओं की एक जाति ।
तैनात—(वि० हि०) नियत । तैनाती=नियुक्ति । मुकर्रेरी।
तैयार—(वि० अ०) सब तरह से दुरुस्त या ठीक। तैयारी=प्रबन्ध की पूर्णता ।
तैरना—(क्रि० हि०) उतराना । पैरना । तैराई=तैरने की क्रिया । तैराक=तैरनेवाला ।
तैलंग—(पु० हि०) दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश ।
तैलाभ्यंग—(पु० स०) तेल की मालिश ।
तैश—(पु० अ०) गुस्सा ।
तोंद—(स्त्री० हि०) पेट का फुलाव ।
तोटक—(पु० स०) एक छंद ।
तोड़—(पु० हि०) तोड़ने की क्रिया । दही का पानी । तेज़ धारा । —जोड़=दाँव-पेंच । —ना=टुकड़े करना ।
तोड़ा—(पु० हि०) ख़ज़ाना । रुपये की थैली ।

तोतला—(वि० हि०) यह जो तुतलाकर बोलता हो। —ना साफ न बोलना।

तोता—(पु० फ़ा०) सुआ। शुक। —चश्म=(फा०) तोते की तरह आँखें फेरने वाला।

तोंद—(अ०) तोंद। बड़ा पहाड़।

तोप—(स्त्री० तु०) गोला मारने का एक बहुत बड़ा हथियार। —ख़ाना=तोपघर। —ची =(अ०) तोप चलाने वाला।

तोबड़ा—(पु० हि०) घोड़ों के दाना खिलाने का थैला।

तोबा—(स्त्री० अ०) किसी अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की प्रतिज्ञा।

तोमर—(पु० स०) भाले की तरह का एक प्राचीन हथियार।

तोरण—(पु० स०) किसी घर या नगर का बाहरी फाटक। बंदनवार।

तोला—(पु० हि०) एक तौल जो बारह माशे या छानवे रत्ती की होती है।

तोशक—(स्त्री० तु०) गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

तोशा—(पु० फ़ा०) साधारण खाने पीने की चीज़ें।—ख़ाना (फ़ा०) वह बड़ा कमरा जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हों।

तोहफा—(पु० अ०) सौगात। उपहार। बढ़िया। उत्तम।

तोहमत—(स्त्री० अ०) झूठा कलंक। तोहमती=झूठा अभियोग लगाने वाला।

तौक—(पु० अ०) हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक गहना।

तौकीर—(अ०) दूसरे की प्रतिष्ठा का ध्यान रखना।

तौफ़ीक—(अ०) इच्छा। सुयाफ़िक करना।

तौर—(अ०) प्रकार। भाँति।

तौल—(पु० स०) तराज़ू। वज़न। भार का मान। —ना=(क्रि० हि०) वज़न करना। तौलाई= तौलने की मजदूरी।

तौलिया—(स्त्री० हि०) मोटा अँगोछा जिससे स्नान आदि करने के बाद शरीर पोंछते हैं।
तौसीअ—(अ०) विस्तृत करना।
तौसीफ—(अ०) प्रशंसा करना।
तौहीन—(अ०) नीचा दिखाना।
त्याग—(पु० सं०) किसी चीज़ पर से अपना हक़ हटा लेना अथवा उसे अपने पास से अलग करने का काम। —पत्र=इस्तीफा। त्यागी= जिसने सब कुछ त्याग दिया हो।
त्याज्य—(वि० सं०) त्यागने योग्य।
त्यों—(क्रि० हि०) उस प्रकार।
त्योरी—(स्त्री० हि०) भौं।
त्योहार—(पु० हि०) वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय। त्योहारी=वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष में छोटों, लड़कों या नौकरों आदि को दिया जाता है।
त्राता—(पु० सं०) बचानेवाला।
त्रिकाल—(पु० सं०) तीनों काल—भूत, वर्तमान और भविष्य। तीनों समय—प्रात, मध्याह्न और सायं।
त्रिताप—(पु० सं०) गरमी। तेज। दैहिक, दैविक और भौतिक कष्ट।
त्रिदोष—(पु० सं०) वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष।
त्रिफला—(पु० सं०) आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह।
त्रिवली—(स्त्री० सं०) तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं।
त्रिलोक—(पु० सं०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।
त्रिवेणी—(स्त्री० सं०) गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम स्थान जो प्रयाग में है।
त्रिशूल—(पु० सं०) एक प्रकार का हथियार जिसके सिरेपर तीन फल होते हैं।

थ—हिन्दी वर्णमाला का सत्रहवाँ और तवर्ग का दूसरा अक्षर।

थकना—(क्रि० हि०) मिहनत करते-करते हार जाना। थकान=थकावट। थकावट =शिथिलता। थकित= थका हुआ।

थन—(पु० हि०) गाय, भैंस, बकरी इत्यादि चौपायों का स्तन।

थपकी—(स्त्री० हि०) हाथ से धीरे धीरे ठोंकना।

थपुआ—(पु० हि०) खपड़ा।

थमना—(क्रि० हि०) रुकना। ठहरना।

थरथराना—(क्रि० हि०) डर के मारे काँपना।

थरथराहट—(स्त्री० हि०) कँप कँपी।

थर्मामीटर—(पु० अं०) सरदी गरमी नापने का यंत्र।

थर्राना—(क्रि० हि०) डर के मारे काँपना।

थल—(पु० हि०) जगह।

थहाना—(क्रि० हि०) गहराई का पता लगाना।

था—(क्रि० हि०) 'है' शब्द का भूतकाल। रहा।

थाँट—(अं०) विचार।

थाती—(स्त्री० हि०) धरोहर।

थान—(पु० हि०) जगह। डेरा। पशुओं के बाँधे जाने की जगह।

थाना—(पु० हि०) टिकने या बैठने का स्थान। पुलिस की बड़ी चौकी।— दार=थाने का अफ़सर। —दारी= थानेदार का पद या कार्य।

थाप—(स्त्री० हि०) थपकी। प्रतिष्ठा। —ना=स्थापित करना। जमाना। किसी गीली सामग्री (मिट्टी गोबर आदि) को हाथ या साँचे से पीट अथवा दबाकर कुछ बनाना।

थामना—(क्रि० हि०) रोकना।

थाला—(पु० हि०) वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है।

थाली—(स्त्री० हि०) बड़ी तश्तरी ।

थिएटर—(पु० अं०) रंगभूमि । नाटक या तमाशा ।

थियरी (थ्योरी)—(अं०) सिद्धान्त ।

थियोसोफिस्ट—(पु० अ०) थियोसोफी के सिद्धान्तों को माननेवाला ।

थियोसोफी—(स्त्री० अ०) ब्रह्मविद्या ।

थिरकना—(क्रि० हि०) ठुमुक ठुमुक कर नाचना ।

थुक्का फज़ीहत—(स्त्री० हि०) निन्दा और तिरस्कार ।

थू—(अव्य० अनु०) थूकने का शब्द । घृणा और तिरस्कार सूचक शब्द ।

थूक—(पु० हि०) लार । थूकना = मुँह से थूक निकालना ।

थूनी—(स्त्री० हि०) थम । सहारे का खंभा ।

थूवा—(पु० हि०) मिट्टी आदि के ढेर का बना हुआ टीला ।

थूहर—(हि०) सेंहुड़ ।

थेई थेई—(वि० अनु०) ताल सूचक नाच का शब्द और मुद्रा ।

थोक—(पु० हि०) ढेर । झुंड । —दार = इकट्ठा माल बेचने वाला व्यापारी ।

थोड़ा—(वि० हि०) कम । ज़रा सा ।

थोथा—(वि० देश०) खोखला । (स्त्री०) थोथी = निस्सार ।

थोपना—(क्रि० हि०) छोपना । मिथ्या अपराध लगाना ।

थैला—(पु० हि०) बड़ा बटुआ । (स्त्री०) थैली । —दार = रोकड़िया । खज़ान्ची ।

थ्रू—(अं०) द्वारा । मारफ़त ।

दं—हिन्दी वर्णमाला में अठारहवाँ व्यंजन और तवर्ग का तीसरा वर्ण।

दंग—(वि० फ़ा०) चकित। विस्मित।

दंगल—(पु० फ़ा०) पहलवानों की कुश्ती। अखाड़ा।

दंगा—(पु० हि०) झगड़ा। उपद्रव।

दंड—(पु० सं०) सज़ा। डंडा। —नीति=(स्त्री० सं०) दंड देकर अर्थात् पीड़ित करके शासन में रखने की नीति। —नीय=(वि० सं०) दंड देने योग्य। —प्रणाम=(सं०) भूमि में डंडे के समान पड़कर प्रणाम करने की मुद्रा। सादर अभिवादन। —वत्=(पु० सं०) पृथ्वी पर लेट कर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम। —विधि=(सं०) जुर्म और सजा का क़ानून। दंडी=दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। वह संन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे।

दंत—(पु० सं०) दाँत। —कथा=जनश्रुति।

दंदान—(फ़ा०) दाँत। दंदानेदार=जिसमें दाँत की तरह निकले हुए कंगूरों की पंक्ति हो। —दंदानेसाज़=दाँत बनानेवाला।

दंभ—(पु० सं०) पाखंड। अभिमान। दंभी=पाखंडी।

दंश—(पु० सं०) वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। डाँस।

दकियानूस—(अ०) पुराना पन्थी। अन्धविश्वासी।

दक़ीक़—(अ०) कठिन। मुश्किल।

दक़ीक़ा—(पु० अ०) कोई बारीक बात। उपाय।

दक़्क़ाक़—(अ०) आटा पीसनेवाला। बहुत चतुर।

दक्खिन—(पु० हि०) उत्तर के सामने की दिशा। दक्खिनी=दक्खिन का।

दक्ष—(त्रि० स०) चतुर।
दक्षिण—(वि० स०) दाहना। दक्षिण दिशा।
दक्षिणा—(स्त्री० स०) वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय।
दक्षिणी—(स्त्री० हि०) दक्षिण देश की भाषा या निवासी।
दखल—(पु० अ०) अधिकार। —दिहानी = क़ब्ज़ा दिला देना। —नामा = वह सरकारी आज्ञापत्र जिसमें किसी व्यक्ति के लिए किसी पदार्थ पर अधिकार कर लेने की आज्ञा हो। दख़ीलकार = वह असामी जिसने किसी ज़मींदार के खेत या ज़मीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दख़ल रक्खा हो। दख़ीलकारी = वह ज़मीन जिस पर दख़ीलकार का अधिकार हो।
दगदग—(पु० अ०) डर। संदेह।
दग़लफ़सल—(पु० अ०) धोखा। फ़रेब।
दग़ा—(स्त्री० अ०) कपट। धोखा। —दार = (वि० फ़ा०) धोखेबाज़। —बाज़ = (त्रि० फ़ा०) छली। धोखा देनेवाला। —बाज़ी = (फ़ा०) छल। धोखा।
दग्ध—(वि० स०) जला या जलाया हुआ। दुखित।
दज्जाल—(पु० अ०) झूठा। बेईमान।
दतुवन—(स्त्री० हि०) दातुन।
दत्तक—(पु० स०) गोद लिया हुआ लड़का।
दत्तचित्त = (वि० स०) लव लीन।
दद्दोरा—(पु० हि०) चकत्ता।
दधि—(पु० स०) दही।
दपट—(स्त्री० हि०) घुड़की। —ना = डाँटना। घुड़कना।
दफ़—(फ़ा०) डफ। एक बाजा।
दफ़ती—(स्त्री० अ०) गत्ता।
दफ़न—(पु० अ०) मुरदे को ज़मीन में गाड़ने की क्रिया।

दफा—(स्त्री० अ०) बार। किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के सम्बन्ध में व्यवस्था हो। पैरा। धारा। —दार=(अ०+फ़ा०) फौज का वह पदधारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

दफीना—(पु० अ०) गड़ा हुआ धन या ख़ज़ाना।

दफ्तर—(पु०फ़ा०) कार्यालय। आफ़िस। दफ़्तरी=जिल्द साज़।

दबग—(वि० हि०) प्रभाव शाली।

दबक—(स्त्री० हि०) छिपना। —ना=(हि०) डर के मारे छिपना। दबकाना=(हि०) छिपाना। डाँटना। दबकी =(स्त्री० देश०) सुराही की तरह का मिट्टी का एक बर्तन जिसमें पानी रखकर चरवाहे और खेतिहर खेतपर ले आया करते हैं।

दबदबा—(पु० अ०) रोबदाब। आतंक।

दबना—(क्रि० हि०) बोझ के नीचे पड़ना। दाब में आना। दबवाना=दबाने का काम दूसरे से करवाना। दबाना =(हि०) ऊपर से भार रखना। मजबूर करना। दबाव=(हि०) प्रभाव। ज़ोर।

दबिला—(पु० देश०) हलवा इयों का एक औज़ार।

दबिस्ता—(फ़ा०) शिक्षालय। मदर्सा।

दबीज—(वि० अ०) मोटा। गाढ़ा।

दबीर—(पु० फ़ा०) लिखने वाला। मुंशी।

दबोचना—(क्रि० हि०) किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना।

दम—(फ़ा०) जान। प्राण। —कल=यन्त्र। —खम=(फ़ा०) मज़बूती। प्राण। —चूल्हा=एक प्रकार का

लोहे या चूल्हा। —दार = (फ़ा०) मज़बूत। —बाज़ = फुसलानेवाला। दग़ाबाज़। फ़रेबी।

दमक—(स्त्री० हि०) चमक। आभा। दमकना = चमकना।

दमड़ी—(स्त्री० हि०) पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा—(पु० फ़ा०) मोरचा। नक्क़ारा। ढोल। शोहरत। फ़रेब। चापलूसी।

दमन—(पु० स०) दबाना। रोकना। —शील = दमन करनेवाला। दमनीय = दमन होने के योग्य। जो दबाया जा सके।

दमा—(पु० फ़ा०) साँस का एक रोग।

दमाद—(पु० हि०) कन्या का पति। जामाता।

दमामा—(पु० फा०) नगारा।

दया—(स्त्री० स०) करुणा। रहम। —निधान = दया का खज़ाना। बहुत दयालु पुरुष। —पात्र = (स०) वह जो दया के योग्य हो। —मय = (स०) दयालु। दयार्द्र = दया से भीगा हुआ। दया-पूर्ण। —लु = (वि० स०) बहुत दया करनेवाला। दया-वान्। दयालुता = रहमदिली। दयावंत = दयालु। —वती = दया करनेवाली। —वान् = दयालु। —वीर = वह जो दया करने में वीर हो। —शील = दयालु। कृपालु। —सागर = अत्यंत दयालु पुरुष।

दयानत—(स्त्री० अ०) ईमान। —दार = (अ०) ईमानदार। —दारी = (अ०) ईमान-दारी।

दयार—(अ०) प्रांत। प्रदेश।

दर—(पु० स०) शंख। दरार। गुफा। (फा०) अन्दर। बीच।

दरकना—(क्रि० हि०) चिरना। विदीर्ण होना।

दरकार—(वि० फा०) आव-श्यक। ज़रूरी।

जार = वह जिसकी दाढ़ी जली हो। गाली।

दाता—(पु० स०) देने वाला। दातार = दाता। देनेवाला।

दातुन—(स्त्री० हि०) दतुवन। दातून। दातौन।

दाद—(स्त्री० हि०) एक चर्मरोग।

दादनी—(स्त्री० फा०) ऋण। कर्ज़।

दादा—(पु० हि०) पितामह। आजा। बड़ा भाई।

दादी—(स्त्री० हि०) पिता की माता। दादा की स्त्री। (फ़ा०) फरियादी।

दादूपंथी—(पु० हि०) दादू नामक साधु का अनुयायी।

दानव—(पु० स०) असुर। राक्षस। दानवी = राक्षसी।

दानवीर—(पु० स०) दान देने का साहसी पुरुष।

दाना—(पु० हि०) अनाज का एक बीज। अन्न का एक कण। (फ़ा०) बुद्धिमान। —ई = (फ़ा०) अक्लमंदी। बुद्धि। अक्ल।

दानाचारा—(पु० हि०) खाना पीना। आहार। दाना पानी = खान पान।

दानाध्यक्ष—(पु० स०) राजाओं के यहाँ दान का प्रबंध करने वाला कर्मचारी।

दानिश—(स्त्री० फ़ा०) समझ। बुद्धि। राय। सम्मति। दानिश्ता = (फा०) जानकर। जाना हुआ।

दानेदार—(वि० फा०) जिसमें दाने हों। रवादार।

दाम—(फ़ा०) जाल। फंदा। मूल्य। क़ीमत।

दामन—(पु० फ़ा०) कोट, कुर्ते इत्यादि का निचला भाग। पल्ला। —गीर = (फ़ा०) पल्ले पड़नेवाला। पीछे पड़ने वाला।

दामाद—(पु० हि०) पुत्री का पति। जमाई।

दामिनी—(स्त्री० स०) बिजली।

दायक—(पु० स०) देनेवाला। दाता।

दायमुलहब्स—(पु० अ०) जीवन भर के लिये क़ैद। कालपानी की सज़ा।
दायर—(वि० फ़ा०) फिरता हुआ। चलता। जारी।
दायरा—(पु० अ०) गोल घेरा। मण्डल।
दायाँ—(वि० हि०) दाहिना।
दायित्व—(पु० सं०) ज़िम्मेदारी। जवाबदेही।
दायिनी—(स्त्री० सं०) देने वाली।
दायी—(वि० हि०) देनेवाला।
दायें—(क्रि० वि० हि०) दाहिनी ओर का।
दार—(अ०) सूली। फाँसी का तख्ता। (फ़ा०) रखनेवाला। वाला।
दारचीनी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का तज जो दक्षिण भारत, सिंहल और टेनासरिम में होता है।
दारमदार—(पु० फ़ा०) आश्रय। ठहराव। कार्य का भार।
दारा—(स्त्री० हि०) स्त्री। पत्नी।
—ई=(फ़ा०) हुकूमत। खुदाई।
दारुण—(वि० सं०) भयंकर। भीषण। कठिन।
दारुस्सलाम—(अ०) स्वर्ग।
दारुस्सल्तनत—(अ०) राजधानी।
दारुल्ख़िलाफ़त—(अ०) राजधानी।
दारुलफ़ना—(अ०) दुनिया। जगत।
दारुलमुल्क—(अ०) राजधानी।
दारुहल्दी—(स्त्री० हि०) एक झाड़।
दारू—(स्त्री० फ़ा०) दवा। औषध।
दारोगा—(पु० फ़ा०) निगरानी रखने वाला अफ़सर।
दार्शनिक—(वि० सं०) दर्शन जानने वाला। दर्शन शास्त्र सम्बन्धी।
दाल—(स्त्री० हि०) दली हुई अरहर, मूँग आदि। —माठ =घी, तेल आदि में नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल

दिखाऊ—(वि० हि०) बनावटी।
दिखाव—(पु० हि०) दृश्य। —टी=बनावटी। दिखावा =आडंबर। ऊपरी तड़क-भड़क।
दिगर—(फ़ा०) अन्य। दूसरा।
दिग्दर्शक यन्त्र—(पु० सं०) कुतुबनुमा। कम्पास।
दिग्दर्शन—(पु० सं०) नमूना। जानकारी।
दिग्विजय—(स्त्री० सं०) अपनी वीरता और गुणों द्वारा देश देशान्तरों में अपनी प्रधानता अथवा महत्व स्थापित करना। दिग्विजयी=जिसने दिग्विजय किया हो।
दिन—(पु० सं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। दिवस। —चर्या=दिन भर का काम धंधा।
दिनाई—(स्त्री० हि०) एक रोग।
दिमाग—(पु० अ०) मस्तिष्क। भेजा। बुद्धि। —दार=(अ०+फ़ा०) बहुत बड़ा समझदार। घमंडी।
दिया—(पु० हि०) चिराग। —बत्ती=सन्ध्या के समय दिया जलाने का काम। —सलाई=लकड़ी की वह तीली या सलाई जो रगड़ने से जल उठती है। दियारा—(पु० फ़ा०) नदी के किनारे की वह ज़मीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है। कछार।
दिरम—(पु० हि०) मिश्र देश का चाँदी का एक सिक्का। साढ़े तीन माशे की एक तौल।
दिल—(पु० फा०) कलेजा। हृदय। —यारा=(फा०) माशूक। प्रेमिका। —आराम (फ़ा०) माशूक। प्रेमिका। —गीर=(फ़ा०) उदास। दुखी। —गीरी=(फ़ा०) उदासी। रंज। दुख। —चला=साहसी। दिलेर। वीर। दानी। पागल। —चस्प=(फ़ा०) जिसमें जी लगे। मनोहर। —चस्पी=(फा०) दिल का लगना। मनोरंजन।

—अमर्द=(फ़ा०) हृतमी मान। समर्दी। —जला=(वि० फ़ा०) अत्यन्त दुखी। —दार=(फ़ा०) उदार। रसिक। प्रेमी। —पसन्द=(फ़ा०) मनोहर। जो भला मालूम हो। —पिज़ीर=(फ़ा०) दिल पसंद। —फ़िगार=(फ़ा०) ज़ख़्मी दिल। आशिक़। —बर=प्यारा। —बस्ता=(फ़ा०) दिल लगा हुआ। —बस्तगी (फ़ा०) दिल का लगना। —बहार=(फ़ा०) खशखाशी रंग का एक भेद। —रुबा=प्यारा। —वाला=उदार। दाता। साहसी। —शाद=(फ़ा०) चालाक। निडर। दिलावर=शूर। बहादुर। साहसी। दिलावरी=(फ़ा०) बहादुरी। साहस। दिलासा=(फ़ा०) तसल्ली। ढाढ़स। दिली=(फ़ा०) हार्दिक। हृदय या दिल-सम्बन्धी। ज़िगरी। दिलेर=(फ़ा०) बहादुर। साहसी। दिलेराना=(फ़ा०) दिलेर के मानिन्द। वीरतापूर्वक। दिलेरी=(फ़ा०) बहादुरी। साहस।

दिल्लगी=मज़ाक़। परिहास। हँसी ठट्ठा। दिल्लगीबाज़=हँसी या दिल्लगी करनेवाला। मस ख़रा। दिल्लगीबाज़ी=(हि०) दिल्लगी करने का काम।

दिवस—(पु० सं०) दिन। रोज़।

दिवाला—(पु० हि०) ऋण न चुका सकना। दिवालिया=जिसने दिवाला निकाला हो।

दिव्य—(वि० सं०) स्वर्गीय। अलौकिक। चमकीला। बहुत अच्छा। ख़ूब सुन्दर।

दिशा—(स्त्री० सं०) ओर। तरफ़। —भ्रम=दिशा भूल जाना। —शूल=किस दिन किस तरफ़ नहीं जाना चाहिये, इसका नियम।

दिसम्बर—(पु० अं०) अँगरेज़ी साल का बारहवाँ या आख़िरी महीना।

दिसावर—(पु० हि०) दूसरा

देश। परदेश। दिसावरी = बाहरी।

दिह्दा—(वि॰ फ़ा॰) दाता। देनेवाला।

दिहात—(फ़ा॰) ग्राम समूह।

दिहुला—(पु॰ देश॰) एक प्रकार का धान।

दीगर—(फ़ा॰) और। दूसरा।

दीक्षा—(स्त्री॰ स॰) मंत्र की शिक्षा, जिसे गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। दीक्षित = जिसने गुरु से दीक्षा ली हो।

दीठबंद—(पु॰ हि॰) नजरबंद। जादू।

दीदार—(पु॰ फा॰) दर्शन।

दीदी—(स्त्री॰ हि॰) बड़ी बहिन।

दीन—(वि॰ स॰) गरीब। दरिद्र। (अ॰) पथ। मज़हब। दीनता = (स॰) गरीबी। कातरता। —दयालु = दीनों पर दया करने वाला। —दार = (अ॰) अपने धर्म पर विश्वास रखने वाला। —बंधु = दुखियों का सहायक।

दीनार—(पु॰ अ॰) मोहर।

दीप—(पु॰ स॰) चिराग़। दीया। —क = (स॰) दीया। चिराग़। एक रागिनी। —शिखा = चिराग़ की लौ। दीपावलि = दीपों की कतार। दीवाली।

दीप्ति—(स्त्री॰ स॰) उजाला। चमक। शोभा।

दीवाचा—(फ़ा॰) भूमिका।

दीमक—(स्त्री॰ फ़ा॰) चींटी की तरह का एक छोटा कीड़ा।

दीर्घ—(वि॰ स॰) लंबा। बड़ा। दीर्घायु = (स॰) बहुत दिनों तक जीने वाला।

दीवट—(स्त्री॰ हि॰) चिराग़दान।

दीवान—(पु॰ अ॰) राजमंत्री। दरबार। —गी = (फ़ा॰) पागलपन। —आम = (अ॰) आम दरबार। —ख़ाना = (फ़ा॰) बैठक। —ख़ालसा = (अ॰) वह अधिकारी जिसके पास राजा या बादशाह की मुहर रहती है। —ख़ास

दरबार। वह जगह या मकान जहाँ खास दरबार होता हो।

दीवाना—(वि० फा०) पागल। —पन=पागलपन। दीवानी=(फ़ा०) दीवान का ओहदा। पगली।

दीवार—(स्त्री० फा०) भीत। —गीर=(फा०) दिया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवाली—(स्त्री० हि०) कार्तिक की अमावस्या को होनेवाला उत्सव।

दुःख—(पु० सं०) कष्ट। तकलीफ़। —दायक=(सं०) दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला। दुःखात=(सं०) जिसके अंत में दुःख हो।

दुआ—(स्त्री० अ०) प्रार्थना। दरख्वास्त। आशीर्वाद।

दुआबा—(पु० फ़ा०) दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दुकड़ा—(पु० हि०) जोड़ा। दुकड़ी=जिसमें कोई वस्तु दो दो हो। —मी, बूटियोंवाला ताश का पत्ता।

दुकान—(स्त्री० फ़ा०) सौदा बिकने का स्थान। —दार=(पु० फ़ा०) दुकान का मालिक। —दारी=(फ़ा०) दुकान का माल बेचने का काम।

दुकाल—(पु० हि०) अकाल।

दुगा—(वि० हि०) जो एक साथ दो हो।

दुक्की—(स्त्री० हि०) ताश का वह पत्ता, जिसपर दो बूटियाँ बनी हो।

दुखाना—(क्रि० हि०) कष्ट पहुँचाना।

दुखिया—(वि० हि०) दुखी। पीड़ित। दुखी=(वि० हि०) जिसे दुःख हो।

दुख्तर—(फ़ा०) लड़की। पुत्री।

दुगना—(वि० हि०) दूना।

दुचन्द—(फ़ा०) दुगुना। दूना।

दुग्ध—(वि० सं०) दूध।

दुज़्द—(फ़ा०) चोर। —चोरी करनेवाला।

दुतर्फा—(वि० फ़ा०) दोनों ओर का।

दुधार—(वि० हि०) दूध देने वाली।

दुनाली—(स्त्री० हि०) दो नल वाली।

दुनिया—(स्त्री० अ०) संसार। जगत्। दुनियावी=(अ०) सांसारिक। —दार=(फा०) संसारी। गृहस्थ। —दारी=(फ़ा०) दुनिया का कारबार। —साज़—(फ़ा०) चापलूस। —साजी=(फ़ा०) अपना मतलब निकालने का ढंग।

दुपट्टा—(पु० हि०) चादर।

दुपहरिया—(स्त्री० हि०) दो पहर।

दुबधा—(स्त्री० हि०) चित्त की अस्थिरता। अनिश्चय।

दुबला—(वि०, हि०) चौथा शरीर का। कृश। ऊँचे खेतों में पानी पहुँचाने का एक प्रकार। —पन=(हि०) ।

दुबारा—(फा०) दूसरी दफा।

दुबाला—(फा०) दुगना।

दुभाषिया—(पु० हि०) दो भिन्न भिन्न भाषायें बोलनेवालों के बीच का मध्यस्थ।

दुमंजिला—(वि० फा०) दो खंड।

दुम—(स्त्री० फा०) पूँछ। —ची=(फा०) घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है। पुट्ठों के बीच की हड्डी। —दार=(वि० फा०) पूँछवाला।

दुम्बा—(फा०) चौड़ी और भारी पूँछवाला मेढ़ा।

दुरंगी—(स्त्री० हि०) दो रंगों की। दोतरफी। छल युक्त।

दुरंगा—(वि० हि०) दो रंगों का।

दुर—(अ०) मोती। दाँत।

दुरभिसंधि—(स्त्री० सं०) मिल जुलकर की हुई कुमंत्रणा।

दुरमुस—(पु० हि०) कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाने का औजार।

दुरुस्त--(फा०) उचित। ठीक। वाजिब।

दुरवस्था—(स्त्री० स०) ख़राब हालत। हीन दशा।

दुराग्रह—(पु० स०) हठ। जिद।

दुराचरण—(पु० स०) बुरी चाल चलन।

दुराचार—(पु० स०) खोटी चाल। दुराचारी=बुरे चाल चलन का।

दुरात्मा—(वि० हि०) दुष्टात्मा। खोटा।

दुराशा —(स्त्री० स०) ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो।

दुरुपयोग—(पु० सं०) बुरा उपयोग।

दुरुस्त—(वि० फ़ा०) ठीक।

दुर्गंध---(स्त्री० स०) बदबू। बुरी गंध।

दुर्ग—(वि० स०) जिसमें पहुँचना कठिन हो। दुगम। क़िला। दुर्गाधिकारी=क़िलेदार।

दुर्गति—(स्त्री० स०) बुरा हाल दुदशा।

दुर्गम—(वि० स०) जहाँ जाना कठिन हो।

दुर्गा—(पु० स०) आदि शक्ति देवी।

दुर्गाष्टमी—(स्त्री० स०) आश्विन और चैत्र के शुक्ल पक्ष की अष्टमी।

दुर्गुण—(पु० स०) दोष। ऐब।

दुर्जन—(पु० स०) दुष्ट आदमी। —ता=(स०) दुष्टता।

दुर्जय—(वि० स०) जिसे जीतना बहुत कठिन हो।

दुर्ज्ञेय—(वि० स०) कठिनाई से जानने योग्य।

दुर्दमनीय—(वि० स०) जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। प्रबल।

दुर्दशा—(स्त्री० स०) बुरी दशा। ख़राब हालत।

दुर्दिन—(पु० स०) बुरा दिन। दुदशा का समय।

दुर्द्धर्ष—(वि० स०) जिसका दमन करना कठिन हो। प्रबल।

दुर्नीति—(स्त्री० स०) कुनीति। अन्याय।

दुर्बल—(वि० स०) कमज़ोर। —ता=(स०) कमज़ोरी। दुबलापन।

दुर्बोध—(वि० स०) जो जल्दी समझ में न आवे।

दुर्भाग्य—(पु० स०) मंद भाग्य। खोटी किस्मत।

दुर्भिक्ष—(पु० स०) अकाल।

दुर्मति—(स्त्री० स०) बुरी बुद्धि। नासमझी।

दुर्रा—(पु० फ़ा०) कोड़ा। चाबुक।

दुर्लभ—(वि० स०) जो कठिनता से मिल सके।

दुर्विदग्ध—(वि० स०) अधजला। घमंडी।

दुर्विनीत—(वि० स०) अशिष्ट। अक्खड़।

दुर्व्यसन—(पु० स०) ख़राब आदत।

दुलकी—(स्त्री० हि०) घोड़े की एक चाल।

दुलत्ती—(स्त्री० हि०) घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलदुल—(पु० अ०) वह खच्चरी जिसे इसकंदरिया (मिश्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नज़र में दिया था।

दुलहन—(स्त्री० हि०) नई बहू।

दुलाई—(स्त्री० हि०) रुई भरा हुआ पतला ओढ़ना।

दुलार—(पु० हि०) प्यार। दुलारा=लाड़ला। दुलारी =प्यारी।

दुशाला—(पु० हि०) पशमीने की चद्दरों का जोड़ा। —पोश=(वि० फ़ा०) जो दुशाला ओढ़े हो। —फ़रोश =(फ़ा०) दुशाला बेंचने वाला।

दुश्वार—(फ़ा०) कठिन। मुश्किल।

दुश्चरित—(वि० स०) बदचलन। कठिन। दुश्चरित्र =(स०) बदचलन।

दुश्मन—(पु० फ़ा०) शत्रु। बैरी।

=(वि॰ स॰) जो देखने में आ सके। दृष्टिपात=(पु॰ स॰) ताकना या देखना। अवलोकन।

देखना—(क्र॰ हि॰) अवलोकन करना।

देखाऊ—(वि॰ हि॰) बनावटी।

देखा देखी—(स्त्री॰ हि॰) आँखों से मुलाक़ात।

देग—(पु॰ फ़ा॰) एक बरतन। —चा=(फ़ा॰) छोटा देग। —ची = (फ़ा॰) छोटा देगचा।

देदीप्यमान—(फा॰) चमकता हुआ।

देनदार—(हि॰) क़र्ज़दार।

देन लेन—(पु॰ हि॰ ब्याज पर रुपया उधार देने का व्यापार।

देना—(स॰ हि॰) प्रदान करना। क़र्ज़।

देर—(स्त्री॰ फ़ा॰) विलम्ब।

देव—(फ़ा॰) भूत। जिन।

देवता—(पु॰ स॰) स्वर्ग में रहने वाला अमर प्राणी।

देवदार—(पु॰ हि॰) एक पेड़।

देवर—(पु॰ स॰) पति का छोटा भाई। देवरानी=(हि॰) देवर की स्त्री।

देवर्षि—(पु॰ स॰) देवताओं में ऋषि।

देववाणी—(स्त्री॰ स॰) संस्कृत भाषा। आकाशवाणी।

देवी—(स्त्री॰ स॰) देवता की स्त्री।

देश—(पु॰ स॰) राष्ट्र। पृथ्वी का वह विभाग जिसका कोई अलग नाम हो, जिसमें कई प्रांत, नगर, ग्राम आदि हों और एक ही जाति के लोग बसते हों।—ज=(वि॰ स॰) देश में उत्पन्न। —निकाला =(हि॰) देश से निकाल दिये जाने का दंड। —भाषा =(स्त्री॰ स॰) वह भाषा जो किसी देश या प्रांत विशेष में ही बोली जाती हो। —देशांतर=(पु॰ स॰) विदेश। परदेश। देशाटन=(सं॰) भिन्न भिन्न देशों की यात्रा।

देशी=(वि० हि०) देश सम्बन्धी।

देसावर—(पु० हि०) विदेश। परदेश। देसावरी=(हि०) दूसरे देश से आया हुआ।

देह—(स्त्री० स०) शरीर। बदन।

देहकान—(पु० फा०) किसान। गँवार। देहकानी=(वि० फ़ा०) गँवारू। ग्रामीण।

देहली—(स्त्री० स०) चौकठ।

दैत्य—(पु० स०) असुर। राक्षस।

दैर—(फ़ा०) मन्दिर। गुम्बद।

दैनिक—(वि० स०) प्रतिदिन का।

दैवज्ञ—(पु० स०) ज्योतिषी।

दो—(वि० हि०) तीन से एक कम।

दोआब—(पु० फा०) दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दोखमा—(पु० हि०) एक प्रकार का मैना जिसमें कुल्फी नहीं होती।

दोचार—(फ़ा०) मुलाक़ात। मुक़ाबिला।

दोज़ख—(पु० फ़ा०) जहन्नुम। नरक।

दोज़र्बी—(स्त्री० फ़ा०) दोनली बन्दूक।

दोजहाँ—(फ़ा०) दो दुनिया।

दोज़ानू—(वि० फ़ा०) घुटनों के बल बैठना।

दोतरफ़ा—(वि० फ़ा०) दोनों तरफ़ का।

दोतल्ला—(वि० हि०) दो खंड का। दोमंज़िला।

दोद—(फा०) धुआँ। ग़म। रंज।

दोना—(पु० हि०) पत्तों का बना हुआ कटोरा। दोनिया=(स्त्री०) छोटा दोना।

दोनों—(वि० हि०) एक और दूसरा।

दोपल्ली—(वि० हि०) दो पल्लेवाला।

दोपहर—(स्त्री० हि०) मध्याह्न काल।

दोफसली—(वि० हि०) दोनों

दोबारा—(वि० फ़ा०) दूसरी बार।

दोबाला—(वि० फा०) दूना। दुगना।

दोमंजिला—(वि० फा०) दो खंड का।

दोमट—(स्त्री० हि०) वह ज़मीन जिसकी मिट्टी में कुछ बालू भी मिला हो।

दोमुहाँ—(वि० हि०) दो मुँह वाला। कपटी।

दोयम—(वि० फ़ा०) दूसरा।

दोशंबा—(फा०) सोमवार।

दोष—(पु० स०) ऐब। अपराध। दोषी=अपराधी। पापी। मुज़रिम।

दोसूती—(स्त्री हि०) दोतही या दुसूती नाम की मोटी चादर जो बिछाने के काम में आती है।

दोस्त—(पु० फा०) मित्र। —दार=(पु० फ़ा०) मित्र। —दारी=(स्त्री० फा०) मित्रता। दोस्ताना=(पु० फा०) दोस्ती। मित्रता। दोस्ती=(फा०) मित्रता।

दोहत्था—(क्रि० हि०) दोनों हाथों से।

दोहर—दो परतों की चादर।

दोहरा—(वि० हि०) दो परत या तह का। दुगना।

दोहराना—(क्रि० हि०) किसी बात को दूसरी बार करना या कहना।

दोहा—(पु० हि०) एक छंद।

दौंगरा—(पु० हि०) वह हलकी वर्षा जो गर्मी के दिनों में तपी हुई धरती पर होती है।

दौर—(फा०) ज़माना। चक्र। समय। गर्दिश। दौरान=(फा०) समय। ज़माना।

दौरी—(स्त्री० हि०) बैलों को चलाकर अन्न और भूसे का अलग करना।

दौड़—(स्त्री० हि०) दौड़ने की क्रिया या भाव। —धूप=(हि०) किसी काम के लिये बार बार चारोंओर जाना आना। —ना=(हि०) तेज

चलना। दौड़ादौड़=बिना ठहरे, रुके हुए चलना।
दौड़ाना=(हि०) जल्द जल्द चलाना।
दौना—(पु० हि०) एक पौधा।
दौर—(पु० अ०) चक्कर। फेरा। दिनों का फेर। बदली का समय।
दौरा—(पु० अ०) चारों ओर घूमने की क्रिया। गश्त। फेरा। बाँस का बना बड़ा टोकरा।
दौरान—(अ०) समय चक्र। ज़माना।
दौलत—(पु० अ०) धन। सम्पत्ति। —खाना=(पु० फा०) निवासस्थान। घर। —मन्द=(वि० फा०) धनी। सधन।
द्युति—(स्त्री० सं०) कान्ति। चमक। शोभा। किरण।
द्यूत—(पु० सं०) जुआ।
द्योतक—(वि० सं०) प्रकाशक। बतलानेवाला।
द्रव—(पु० सं०) बहाव। रस।
द्रवीभूत=(वि० सं०) जो पानी की तरह पतला हो गया हो। पिघला हुआ।
द्रव्य—(पु० सं०) पदार्थ। चीज़। सामग्री। धन।
द्रष्टव्य—(वि० सं०) देखने योग्य।
द्रष्टा—(वि० सं०) देखनेवाला। दर्शक।
द्रावक—(वि० सं०) ठोस चीज़ को पानी की तरह पतला करनेवाला। पिघलानेवाला। हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।
द्रुत—(वि० सं०) तेज़। जल्द। —गति=(सं०) शीघ्रगामी। —गामी=(वि० सं०) तेज़ चलनेवाला। —विलम्बित=(सं०) एक छन्द।
द्रुम—(पु० सं०) वृक्ष। पेड़।
द्वन्द—(पु० सं०) जोड़ा। दो आदमियों की परस्पर लड़ाई। झगड़ा। द्वन्द्व=(पु० सं०) जोड़ा। दो आदमियों की लड़ाई।
द्वादश—(वि० सं०) बारह।

बारहवाँ। द्वादशी=(स०) बारहवीं तिथि।

द्वारा—(पु० हि०) ज़रिये से।

द्वितीय—(वि० स०) दूसरा।

द्विदल शासन प्रणाली—(स्त्री० स०) द्वैध शासन प्रणाली। एक प्रकार की शासन प्रणाली या सरकार जिसमें शासन अधिकार दो भिन्न व्यक्तियों के हाथ में रहता है।

द्वितीया—(स्त्री० स०) दूज।

द्वीप—(पु० स०) स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो।

द्वेष—(पु० स०) वैर। शत्रुता।

द्वेषी—(वि० हि०) विरोधी। चिढ़ रखनेवाला।

द्वैध शासन प्रणाली—(स्त्री० स०) एक प्रकार की शासन प्रणाली या सरकार, जिसमें शासन अधिकार दो भिन्न व्यक्तियों के हाथ में रहता है। द्विदल शासन प्रणाली।

द्वैधीभाव—(पु० स०) एक से लड़ना तथा दूसरे से सन्धि करना। दोनों ओर मिलकर रहना।

ध

ध—हिंदी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण।

धंधा—(पु० हि०) काम-काज।

धँसना—(हि०) गड़ना। चुभना। धँसान=दलदल। धँसाव =धँसान। ढाल। उतार।

धक—(स्त्री० अनु०) दिल के धड़कने का शब्द। चकित। धकधकाना=हृदय का धड़कना। धकधकाहट=धड़कन। आशंका। धकधकी=जी की धड़कन।

धक्का—(पु०हि०) टक्कर। रेला।

धकमधक्का = रगड़ा। भीड़।
धक्कामुक्का = मुठभेड़। मार-पीट।

धज—(स्त्री० हि०) सजावट।

धड़—(पु० हि०) शरीर का मध्य भाग जिसमें छाती पीठ और पट होते हैं।

धड़कन—स्त्री०(हि०) हृदय का स्पंदन। धड़कना = छाती का धकधक करना। धड़का = खटका। भय। गिरने पड़ने का शब्द। धड़ाका = धड़ाका।
धड़ाका = धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द।

धड़ाधड़—(वि० अनु०) बार बार। धड़ाके के साथ।

धड़ाम—(हि०) गिरने का शब्द।

धड़ी—(स्त्री० हि०) चार या पाँच सेर की एक तोल।

धत्—(अव्य० अनु०) तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धता—(वि० अनु०) हटा हुआ। टाल देना।

धतूरा—(पु० हि०) एक पौधा।

धधक—(स्त्री० अनु०) आग की भड़क। धधकना = लपट के साथ जलना। दहकना।

धन—(पु० सं०) संपत्ति। दौलत। —हीन = दरिद्र। कंगाल। धनाढ्य = धनवान्। मालदार। धनी = धनवान्। मालदार।

धनुष—(पु० सं०) कमान। धनुधर = तीरंदाज़। धनुर्वात = एक वायु रोग जिसमें शरीर धनुष की तरह झुक जाता है। धनुर्विद्या = धनुष चलाने की विद्या। धनुर्वेद = वह शास्त्र जिसमें धनुष चलाने की विद्या का निरूपण हो। धन्वी = धनुधर। चतुर।

धन्य—(वि० सं०) पुण्यवान्। बड़ाई के योग्य। —वाद = साधुवाद। शाबाशी। शुक्रिया।

धब्बा—(पु० देश०) निशान।

धमक—(स्त्री० अनु०) भारी बोझ के गिरने का शब्द। पैर रखने की आवाज़। धमकना = धमाका करना। पहुँचना।

धमकाना = डराना। डाँटना।
धमकी = डाँट डपट।
धमनी—(स्त्री० स०) नस।
धमाचौकड़ी—(स्त्री० अनु०) उछल-कूद।
धमार—(स्त्री० अनु०) उपद्रव।
धरणी—(स्त्री० स०) पृथ्वी। नाड़ी।
धरती—(स्त्री० हि०) पृथ्वी। ज़मीन।
धरहर—(स्त्री० हि०) धर-पकड़। गिरफ़्तारी।
धराऊ—(वि० हि०) मामूली से अच्छा। बहुमूल्य। रक्खा हुआ।
धरातल—(पु० स०) पृथ्वी। रक़बा।
धरोहर—(स्त्री० हि०) अमानत। थाती।
धर्म—(पु० स०) स्वभाव। नित्य नियम। प्रकृति। मज़हब। —निष्ठ = धार्मिक। धर्म परायण। —भीरु = जिसे धर्म का भय हो। —शाला = वह मकान जो यात्रियों के ठहरने के लिये बना हो और जिसका कुछ भाड़ा आदि न लगता हो। —शास्त्र = वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार सम्बन्धी नियम हों।
धाक—(पु० स०) रोब। दबदबा। —बँधना = आतंक छाना।
धातु—(स्त्री० स०) खनिज पदार्थ। वीर्य।
धाम—(पु० स०) शरीर। देवस्थान या पुण्य स्थान। परलोक। स्वर्ग।
धाय—(स्त्री० हि०) दाई। धात्री।
धार—(पु० सं०) ज़ोर से पानी बरसना।
धारणा—(स्त्री० स०) अक़्ल। याद।
धारा—(स्त्री० स०) पानी का बहाव या गिराव।
धारी—(वि० हि०) धारण करने वाला। लकीर। —दार = लकीरोंवाला।

धारोष्ण—(पु० सं०) थन से निकला हुआ ताज़ा दूध।
धावा—(पु० हि०) हमला। चढ़ाई।
धिक्—(अव्य० सं०) लानत। निंदा। धिक्कार=लानत। फटकार। धिक्कारना=फटकारना। बुरा भला कहना।
धींगाधींगी—(स्त्री० हि०) शरारत। ज़बरदस्ती।
धींगामुश्ती—(स्त्री० हि०) शरारत। उपद्रव। बदमाशी।
धीमा—(वि० हि०) मंद।
धीर—(वि० सं०) धैर्यवाला। नम्र।
धीरज—(पु० हि०) धीरता। धैर्य।
धीरे—(क्रि० हि०) आहिस्ते से। मंद-मंद।
धीवर—(पु० सं०) मछुवा मल्लाह।
धुंध—(स्त्री० हि०) अँधेरा।
धुआँ—(पु० हि०) धूम। —कश=स्टीमर।
धुकड़ पुकड़—(पु० अनु०) घबराहट। आगा पीछा।
धुकधुकी—(स्त्री० अनु०) पेट और छाती के बीच का भाग जो कुछ गहरा सा होता है।
धुन—(पु० हि०) लगन।
धुनकना—(क्रि० हि०) रुई से बिनौले अलग करना। धुनकी=रुई धुनने का धनुष। धुनियाँ=रुई धुननेवाला।
धुरंधर—(वि० सं०) भार उठानेवाला। श्रेष्ठ। प्रधान।
धुरई—(स्त्री० हि०) कुएँ से धुर द्वारा पानी निकालने में सहायक बाँस।
धुरा—(पु० हि०) वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है और जिस पर वह घूमता है। धुरी=छोटा धुरा। धुरीण=बोझ सँभालने वाला। मुख्य। प्रधान।
धुर्रा—(पु० हि०) किसी चीज़ का अत्यंत छोटा भाग। कण। ज़र्रा।
धुलना—(क्रि० हि०) धोया

लाना। धुलवाना=धोने का काम दूसरे से करवाना। धुलाई=धोने का काम। धोने की मजदूरी। धुलाना=धुल जाना।

धुवाँ—(पु० हि०) धूम।

धुस्स—(पु० हि०) टीला। मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर।

धुस्सा—(पु० हि०) मोटे ऊन की लोई।

धुआँधार—(पु० हि०) धुएँ से भरा हुआ।

धूना—(पु० हि०) गुग्गुल की जाति का एक बड़ा पेड़।

धूनी—(स्त्री० हि०) धूप। गुग्गुल, लोबान आदि गंध द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। अलाव।

धूप—(पु० सं०) सुगंधित धूम। घाम। —घड़ी=एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है। —छाँह=एक रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है, कभी दूसरा। —बत्ती=मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है।

धूम्र—(पु० सं०) धुआँ। —केतु=पुच्छल तारा। आग। —धाम=भीड़ भाड़ और तैयारी। समारोह। —पान=सिगरेट या तम्बाकू पीना।

धूर्त्त—(वि० सं०) छली। दगाबाज। —ता=चाल बाजी। छल।

धूल—(स्त्री० हि०) गर्द। रज। (सं०) धूलि।

धूसर—(वि० सं०) धूल के रंग का। मटमैला। धूल से भरा।

धृष्टता—(स्त्री० सं०) ढिठाई। गुस्ताखी। निलज्जता।

धेनु—(स्त्री० सं०) गाय।

ध्येय—(वि० सं०) धारण करने योग्य।

धेली—(स्त्री० हि०) अठन्नी।

धैर्य्य—(पु० स०) धीरता। सब्र।

धोंधा—(पु० हि०) लोंदा। बेडौल पिंड।

धोखा—(पु० हि०) छल। दगा। धोखेबाज़=धोखा देनेवाला। छली। धोखेबाजी=छल कपट।

धोती—(स्त्री० हि०) कमर से नीचे पहनने का कपड़ा।

धोना—(क्रि० हि०) पानी से साफ़ करना।

धौंकना—(क्रि० हि०) आग पर, उसे दहकाने के लिये भाथी दबाकर हवा का झोंका पहुँचाना।

धौंकनी—(स्त्री० हि०) भाथी।

धौंस—(स्त्री० हि०) धमकी। डाँट। —पट्टी=भुलावा। दम दिलासा।

धौराहर—(पु० हि०) ऊँची अटारी।

धौल धक्का—(पु० हि०) आघात। चपेट।

ध्यान—(पु० स०) भावना। विचार। याद।

ध्रुपद—(पु० हि०) एक गीत।

ध्रुव—(वि० स०) अचल। इधर उधर न हटनेवाला। ध्रुवतारा। —दर्शक=मत्स्यमंडल। कुतुबनुमा।

ध्वंसक—(वि० स०) नाश करनेवाला।

ध्वज—(पु० स०) चिह्न। निशान। झंडा। ध्वजा=पताका। झंडा।

ध्वनि—(स्त्री०स०) शब्द। नाद। आवाज़। —त=प्रकट किया हुआ। बजाया हुआ।

या दूकानों आदि को वह कापी जिसमें भेजी जानेवाली चिट्ठियों की नक़ल रहती है। नक़ली (अ०)=जो असली न हो। बनावटी।

नकसीर—(स्त्री० हि०) नाक से खून बहना।

नक़ाब—(स्त्री० अ०) मुँह छिपाने का परदा।

नक़ाशी—(स्त्री० अ०) धातु या पत्थर आदि पर खोदकर बेल बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। —दार=(अ० × फ़ा०) जिस पर नक़ाशी हो।

नक़ाहत—(अ०) रोग के बाद की दुबलता। कमज़ोरी।

नक़ीब—(पु० अ०) भाट। चारण।

नकेल—(स्त्री० हि०) ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी।

नक्क़ारा—(पु० फ़ा०) नगाड़ा। नक्क़ारख़ाना=नौबतख़ाना। नक्क़ारची=नगाड़ा बजाने वाला।

नक्क़ाल—(पु० अ०) नक़ल करनेवाला। नक्क़ाली=(स्त्री० अ०) नक़ल करने का काम।

नक्क़ाश—(पु० अ०) वह जो खोदकर बेल बूटे आदि बनाता हो। नक्क़ाशी=धातु या पत्थर आदि पर खोदकर बेल बूटे आदि बनाने की विद्या।—दार=जिस पर खोदकर बेल-बूटे बनाये गये हों।

नक्कू—(वि० हि०) बड़ी नाक-वाला।

नक़्श—(वि० अ०) खींचा, बनाया या लिखा हुआ। —निगार=(फ़ा०) बनाये हुए बेल-बूटे आदि। नक़्क़ाशी। नक़्शा=चित्र। स्केच। मैप। —नवीस=नक़्शा बनाने वाला। —नवीसी=नक़्शा बनाना। नक़्शी=जिस पर बेल-बूटे बने हों।

नक्षत्र—(पु० स०) तारे।

नख—(पु० स०) हाथ या पैर का नाखून।

नख़रा—(पु० फ़ा०) हाव भाव। चोचला। नाज़। —तिल्ला

=नखरा। नाज़। नखरेबाज़ =(वि० फा०) नखरा करनेवाला। नखरेबाज़ी=(फा०) चोचलापन।

नखशिख—(पु० स०) नख से लेकर शिखा तक के सब अंग।

नखास—(पु० अ०) वह बाजार जिसमें पशु विशेषत घोड़े बिकते हैं।

नग—(फ़ा०) नगीना।

नगण्य—(वि० स०) तुच्छ।

नगर—(पु० स०) शहर। —कीर्तन=(पु० स०) वह गाना, बजाना या कीर्तन जिसे नगर की गलियों और सड़कों में घूम घूमकर कुछ लोग करें। नगरी=(स०) शहर। नगर।

नगीना—(पु० हि०) रत्न। मणि। —साज़=(फा०) वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।

नचाना—(क्रि० हि०) नाच कराना।

नद्दाफ़—(अ०) धुनिया। रुई धुननेवाला।

नज़दीक—(वि० फा०) पास। समीप। नज़दीकी=निकटस्थ।

नज़म्—(स्त्री० अ०) कविता। पद्य।

नज़र—(स्त्री० अ०) निगाह। चितवन। कृपादृष्टि। निगरानी। ध्यान। भेंट। —बंद=जिसे नज़रबन्दी की सज़ा दी जाय। —बन्दी=वह सज़ा जिसमें दण्डित पुरुष किसी नियत स्थान पर रखा जाता है और उस पर कड़ी निगरानी रहती है। जादूगरी। —बाग=वह बाग जो महलों या बड़े बड़े मकानों आदि के सामने या चारों ओर उनके अहाते के अन्दर ही रहता है। —सानी=किसी किये हुए कार्य या लिखे हुए लेख आदि को, उसमें सुधार या परिवर्त्तन करने के लिये फिर से देखना। नज़राना=नज़र लग जाना। भेंट। उपहार।

नज़रत—(अ०) तरोताज़गी।
नज़ला—(पु० अ०) एक प्रकार का रोग। —बन्द=अफ़ीम और चूने आदि का वह फाहा जो नज़ले के गिरने से रोकने के लिये दोनों कनपटियों पर लगाया जाता है।
नज़ाकत—(स्त्री० फा०) सुकुमारता। कोमलता।
नजात—(स्त्री० अ०) मोक्ष। मुक्ति। छुटकारा।
नज़ामत—(स्त्री० अ०) नाज़िम का पद। नाज़िम का महकमा या विभाग।
नज़ारत—(स्त्री० अ०) नाज़िर का पद। नाज़िर का महकमा।
नज़ारा—(पु० अ०) दृश्य। नज़र। —बाज़ी=स्त्री या पुरुष का दूसरे पुरुष या स्त्री को प्रेम या वासना की दृष्टि से देखना।
नजिस—(अ०) अपवित्र।
नज़ीर—(स्त्री० अ०) उदाहरण। मिसाल। उपमा।
नजूम—(पु० अ०) ज्योतिष विद्या। नजूमी=ज्योतिषी।
नज़ूल—(पु० अ०) सरकारी ज़मीन।
नट—(पु० स०) नाटक का पात्र। एक जाति के पुरुष जो गा बजाकर और तरह तरह के खेल दिखाकर अपना निर्वाह करते हैं। नटी=(स०) नट जाति की स्त्री। नाचनेवाली स्त्री। अभिनेत्री। वेश्या। नट की स्त्री।
नटखट—(वि० हि०) ऊधमी। नटखटी=बदमाशी।
नताइज—(अ०) नतीजे का बहुवचन। परिणाम। ग़रज़।
नथ—(स्त्री० हि०) एक गहना जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं।
नथना—(पु० हि०) नाक का अगला भाग।
नथनी—(स्त्री० हि०) नाक में पहनने की छोटी नथ। बुलाक़।
नद—(पु० स०) बड़ी नदी।

नदामत—(अ०) लज्जा। शरमिंदगी।
नदारद—(वि० फा०) गायब।
नदी—(स्त्री० स०) दरिया।
नधना—(क्रि० हि०) जुतना।
नन्द, ननद—(स्त्री० हि०) पति की बहन।
ननसार—(स्त्री० हि०) नाना का घर।
ननिहाल—(पु० हि०) नाना का घर।
नन्हा—(वि० हि०) छोटा।
नपुंसक—(पु० स०) नामर्द।
नफर—(पु० फा०) दास। सेवक। (अ०) व्यक्ति। एक आदमी।
नफरत—(स्त्री० अ०) घिन। घृणा।
नफरी—(स्त्री० फा०) एक मजदूर की एक दिन की मज़दूरी या एक दिन का काम।
नफस—(अ०) दम। श्वास।
नफसानी—(अ०) कामेच्छा संबंधी।
नफा—(पु० अ०) फायदा। लाभ।
नफासत—(स्त्री०अ०) उम्दापन। अच्छाई।
नफीरी—(स्त्री० फा०) तुरही। शहनाई।
नफीस—(अ०) सुन्दर। सुघर। बहुमूल्य।
नफस—(वि० अ०) उमदा। बढ़िया। साफ। सुघर।
नफ्से अम्मारा—(अ०) विषय वासना। प्रवृत्ति।
नबात—(अ०) हरी घास। तरकारी। सब्जी।
नब्ज—(स्त्री० अ०) नाड़ी।
नभ—(पु० हि०) आकाश। आसमान।
नम—(वि० फा०) गीला। तर।
नमक—(पु० फा०) लवण। नोन। —ख्वार=(वि० फा०) नमक खानेवाला। पालित होनेवाला।—दान=(पु० हि०) पिसा हुआ नमक रखने का पात्र। —सार=(पु० फा०) वह स्थान

जहाँ नमक निकलता या बनता हो।—हराम=कृतघ्न। —हरामी=कृतघ्नता। —हलाल = स्वामि भक्त। —हलाली=स्वामि भक्ति।
नमकीन—(वि० फ़ा०) जिसमें नमक का सा स्वाद हो। खूबसूरत।

नमदा—(पु० फ़ा०) जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।

नमस्कार—(पु० सं०) प्रणाम। झुककर अभिवादन करना।

नमस्ते—(सं०) नमस्कार।

नमाज़—(स्त्री० फ़ा०) मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना। —गाह=(स्त्री० फ़ा०) मसजिद में वह जगह जहाँ नमाज़ पढ़ी जाती है। —बंद=(फ़ा०) कुश्ती का एक प्रकार का पेंच। नमाज़ी=(पु० फ़ा०) नमाज पढ़नेवाला।

नमी—(स्त्री० फ़ा०) गीला पन। तरी।

नमूदार—(वि० फ़ा०) प्रकट। ज़ाहिर।

नमूना—(पु० फ़ा०) बानगी आदर्श।

नम्र—(वि० सं०) जिसमें नम्रता हो। विनीत। झुका हुआ।

नय—(फ़ा०) बाँसुरी।

नयन—(पु० सं०) नेत्र। आँख।

नया—(वि० हि०) नवीन। ताजा। नूतन।

नर—(पु० सं०) पुरुष। आदमी।

नरई—(स्त्री० देश०) गेहूँ की बाल का डंठल।

नरक—(पु० सं०) दोज़ख़।

नरकट—(पु० हि०) बेंत की तरह का एक पौधा।

नरगिस—(पु० फ़ा०) एक फूल।

नरद—(स्त्री० हि०) चौसर खेलने की गोटी।

नरमा—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की कपास।

नर मेश—(फ़ा०) मेंढा।

नरसिंहा—(पु० हि०) एक बाजा।

नरी—(स्त्री० फ़ा०) बकरी या बकरे का रँगा हुआ चमड़ा। मुलायम चमड़ा।

नरेंद्र—(पु० सं०) राजा।

नरेश—(पु० सं०) राजा।

नरोत्तम—(पु० सं०) ईश्वर। भगवान।

नरोह—(स्त्री० देश०) पिंडली की हड्डी।

नर्म—(फ़ा०) मुलायम। गुद गुदा।

नर्मी—(स्त्री० हि०) कोमलता। नम्रता।

नल—(पु० हि०) पनाला। लोहे या तांबे का पोला लम्बा छड़।

नला—(पु० हि०) पेड़ू के अन्दर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है।

नली—(स्त्री० सं०) छोटा या पतला नल। नल के आकार की पोली हड्डी।

नवम्बर—(पु० अं०) अँगरेजी का ग्यारहवाँ महीना।

नव—(पु० सं०) नवीन। नौ। —ग्रह=(पु० सं०) सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु शुक्र, शनि, राहु और केतु ये ग्रह। नवमी=(सं०) नवीं तिथि। —युवक=(सं०) नौजवान। तरुण। —यौवना=(सं०) नौजवान औरत। —रत्न=(सं०) मोती, पन्ना माणिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लह सुनिया, पद्मराग और नीलम या जवाहर ये नौ रत्न। —रस=(सं०) काव्य के नौ रस—शृंगार करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत। नवला=(स्त्री० सं०) नई स्त्री। तरुणी। —शिक्षित=(सं०) वह जिसने अभी हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो।

नवाजिश—(स्त्री० फ़ा०) मेहर बानी। कृपा। इनायत।

नवाव—(पु० अ०) बादशाह का प्रतिनिधि, जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिये नियुक्त हो। —ज़ादा=(पु० फा०) नवाब का पुत्र। नवाबी=(हि०) नवाब का पद। नवाब का काम।

नवार—(फा०) निवाड़, जिससे पलंग बुने जाते हैं।

नवासा—(फा०) दौहित्र। बेटी का बेटा।

नवाह—(अ०) दिशा में। आस पास।

नवीन—(वि० स०) नया। ताज़ा। —ता=(हि०) नयापन।

नवीस—(पु० फा०) लिखने वाला। लेखक। नवीसी=लिखाई।

नशा—(पु० फ़ा०) मतवाला पन। —खोर=नशेबाज़।

नशोनुमा—(अ०) पैदा होना। बढ़ना।

नशीन—(वि० फा०) बैठनेवाला।

नशीला—(वि० फा०) नशा लाने वाला। मादक। नशेबाज़=(पु० फा०) नशा वाला।

नश्तर—(पु० फा०) फोड़ा चीरने का तेज़ चाकू।

नष्ट—(वि० स०) बरबाद।

नस—(स्त्री० हि०) रक्त वाहिनी पतली नली। रग।

नस्तालीक—(पु० अ०) वह जिसका रंग-ढंग बहुत अच्छा और सुन्दर हो।

नसर—(अ० अ०) गद्य।

नसल—(स्त्री० अ०) वंश। खानदान।

नसीब—(पु० अ०) भाग्य। तक़दीर।

नसीम—(पु० अ०) ठंडी। धीमी और बढ़िया।

नसीहत—(स्त्री० अ०) उपदेश। सीख।

नस्तालीक गो—(अ०) शुद्ध और स्वच्छ लिखने वाला।

नहछू—(पु० हि०) विवाह की एक रसम।

नहर—(स्त्री० फा०) जल बहाने

जानवरों की नाक की नकेल या रस्सी।
नाद—(पु० स०) शब्द । आवाज । ध्वनि।
नादान—(वि० फा०) अनजान । मूर्ख । नादानी= नासमझी । अज्ञान ।
नादार—(वि० फा०) निधन । कंगाल ।
नादारी—(स्त्री० फा०) गरीबी। निधनता ।
नादिम—(वि० अ०) लज्जित। शरमिन्दा ।
नादिर—(फा०) तुहफा ।
नादिरशाही—(स्त्री० फ़ा०) ऐसा अंधेर जैसा नादिरशाह ने दिल्ली में मचाया था ।
नादिहद—(वि० फा०) न देनेवाला ।
नादिहदी—(स्त्री० फा०) किसी का कुछ न देने की प्रवृत्ति ।
नादुरुस्त—(फा०) अशुद्ध । गलत ।
नाधना—(क्रि०हि०) जोतना ।
नाधा—(पु० हि०) वह रस्सी या चमड़े की पट्टी जिससे हल या कोल्हू की हरिस जुए में बाँधी जाती है ।
नान—(फा०) रोटी।—बाई= रोटी शाक बेचनेवाला । —खताई=मीठी खस्ता टिकिया ।
नानकोआपरेशन—(पु० अ०) असहयोग ।
नाना—(वि० स०) बहुत तरह के । बहुत । मामा का बाप । ननिहाल=(हि०) नानी का घर । नानी=माता की माता ।
नाप—(स्त्री० हि०) माप । परिमाण । नापने का काम। —तोल=(हि०) नापने और तौलने की क्रिया । नापना=मापना । लम्बाई, चौड़ाई, गहराई या ऊँचाई निश्चित करना ।
नापसन्द—(वि० फा०) जो पसन्द न हो । अस्वीकृत ।
नापाक—(वि० फा०) अशुद्ध

अपवित्र। नापाकी=अपवित्रता। अशुद्धता।
नापायदार—(वि० फ़ा०) जो टिकाऊ न हो। क्षणभंगुर। नापायदारी=(फ़ा०) क्षणभंगुरता। अदृढ़ता।
नाफ़र्मा—(पु० फ़ा०) अवज्ञा करनेवाला। हुक्म न माननेवाला।
नाफ़हम—(फ़ा०) नासमझ।
नाफ़ा—(पु० फ़ा०) कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृगों की नाभि में होती है।
नाफ़ी—(अ०) नष्ट करने वाला।
नाबदान—(पु० हि०) पनाला। मरदा।
नाबालिग—(वि० अ०) जिसका लड़कपन अभी दूर न हुआ हो। नाबालिगी=नाबालिग रहने का अवस्था।
नाबीना—(फ़ा०) अन्धा।
नाबूद—(वि० फ़ा०) नष्ट।
नाभि—(स्त्री० सं०) पहिये का मध्य भाग। ढोंढ़ी।
नामंज़ूर—(वि० फ़ा०) अस्वीकृत।
नाम—(पु० हि०) वह शब्द जिससे किसी चीज़ या व्यक्ति का बोध हो। संज्ञा। नामक=नाम से प्रसिद्ध।—करण=हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बच्चे का नाम रक्खा जाता है। —ज़द=प्रसिद्ध। मशहूर। —दार=नामी। प्रसिद्ध प्रतिष्ठित। —धाम=नाम और पता। पता ठिकाना।—धारी=नाम वाला। नामी। —वर=नामी। प्रसिद्ध। —वरी=कीर्ति। प्रसिद्धि। नामावली=नामों की सूची। नामी=मशहूर। नामी गिरामी=विख्यात।
नामर्द—(वि० फ़ा०) नपुंसक। डरपोक। नामर्दी=नपुंसकता। कायरपन।
नामहदूद—(फ़ा०) असीम। बेहद।
नामा—(फ़ा०) पत्र। ख़त। चिट्ठी।
नामाकूल—(वि० अ०) अयोग्य। नालायक़। उल्लू।

प्रकट होना। प्रसिद्ध। स्पष्ट होना। धूप। —क=वह जो प्रकाश करे। वह जो प्रकट करे। पुस्तक छपानेवाला। —न=किसी पुस्तक को छपाकर सर्वसाधारण में प्रकाशित करने का काम। प्रकाशित=चमकता हुआ। प्रकट। छपी हुई। —मान=चमकीला। प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रकीर्णक—(पु० स०) अध्याय। विस्तार। फुटकर।

प्रकृत—(वि० स०) असली। वास्तविक। स्वभाववाला।

प्रकृति—(स्त्री० सं०) स्वभाव। कुदरत। —सिद्ध=स्वाभाविक।

प्रकोप—(पु० स०) बहुत अधिक कोप। किसी रोग को प्रबलता।

प्रक्रिया—(स्त्री० स०) तरीका।

प्रक्षिप्त—(पु० स०) पीछे से मिलाया हुआ।

प्रखर—(वि० स०) तीक्ष्ण। प्रचण्ड। धारदार। पैना।

प्रख्यात—(वि० स०) प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रगल्भ—(वि० स०) चतुर। प्रतिभाशाली। साहसी। निडर। निर्लज्ज।

प्रचण्ड—(वि० स०) तेज। प्रखर। प्रबल। भयङ्कर। कठोर। असह्य। बड़ा। बलवान्। बहुत गरम। प्रतापी।

प्रचलित—(वि० स०) जारी। चलता हुआ।

प्रचार—(पु० स०) चलन। रवाज। प्रसिद्ध। —कार्य=प्रचार करने का ढंग या काम। प्रोपैगण्डा। —क=फैलानेवाला। प्रचार करने वाला।

प्रचुर—(वि० स०) बहुत। अधिक।

प्रच्छन्न—(वि० स०) ढका हुआ। छिपा हुआ।

प्रजा—(स्त्री० स०) सन्तान। रैयत। राज्य के निवासी। —पति=सृष्टि का उत्पन्न करने वाला। ब्रह्मा।

राजा। —सत्ता=प्रजा द्वारा सचालित राज्यप्रबन्ध।

प्रणय—(स०) प्रेम। स्त्री पुरुष सम्बन्धी प्रेम। प्रणयिनी=प्रेमिका। पत्नी। प्रणयी=प्रेमी। प्रेम करनेवाला। पति।

प्रणाली—(स्त्री० स०) नाली। प्रथा। रीति। परिपाटी। क़ायदा। ढंग।

प्रणीत—(पु० स०) बनाया हुआ। रचित। प्रणेता=रचयिता। बनानेवाला। कर्ता।

प्रताप—(पु० स०) पौरुष। वीरता। तेज। इक़बाल। ताप।

प्रति—(अव्य० हि०) लिये। हर एक। ओर। तरफ़। —कूल=(स०) ख़िलाफ़। विरुद्ध। —दान=वापस करना। परिवर्तन। विनिमय। —ध्वनि=प्रतिनाद। गूँज। —निधि=दूसरों का स्थानापन्न होकर काम करने वाला। —फल=बदला। —बिंब=परछाइँ। छाया। —लिपि=लेख की नक़्ल। —वाद=विरोध। विवाद। बहस। उत्तर। जवाब। —वादी=वह जो प्रतिवाद करे। —षेध=मनाही। निषेध। खंडन। —हिंसा=बैर निकालना। बदला लेना।

प्रतिज्ञा—(स्त्री० स०) प्रण। दृढ़ निश्चय। शपथ। —पत्र=इक़रारनामा।

प्रतिभा—(स्त्री० स०) बुद्धि। —शाली=विशेष बुद्धि सम्पन्न।

प्रतिमा—(स्त्री० स०) मूर्ति। छाया। प्रतिबिंब।

प्रतिष्ठा—(स्त्री० स०) स्थापना। रखा जाना। ठहराव। देवता की प्रतिमा की स्थापना। मान मर्यादा। गौरव। प्रसिद्धि। यश। —पत्र=सम्मानपत्र। —प्रतिष्ठित=(स०) आदर-प्राप्त। इज़्ज़तदार।

प्रतीकार—(पु० स०) बदला। प्रतिकार। इलाज।

प्रतीक्षा—(स्त्री० स०) आसरा। इन्तज़ार। —लीपक= इन्तज़ार करने वाला।

प्रतीत—(वि० स०) जाना हुआ। विदित।

प्रतीति—(स्त्री० स०) जानकारी ज्ञान। विश्वास।

प्रत्यंचा—(स्त्री० हि०) धनुष की डोरी।

प्रत्यक्ष—(वि० स०) जो देखा जा सके।

प्रत्यागमन—(पु० स०) लौट आना। वापसी। दोबारा आना।

प्रत्याघात—(पु० स०) चोट के बदले की चोट। टक्कर।

प्रत्युपकार—(पु० स०) उपकार के बदले में उपकार। प्रत्युपकारी=उपकार का बदला देने वाला।

प्रत्येक—(वि० स०) हरएक। अलग अलग।

प्रथम—(वि० स०) पहला। आदि का।

प्रथा—(स्त्री० स०) रीति। रिवाज़। नियम।

प्रदक्षिणा—(स्त्री० स०) परिक्रमा। चारों ओर घूमना।

प्रदेश—(पु० स०) प्रान्त। सूबा। स्थान। जगह।

प्रधान—(वि० स०) मुख्य। ख़ास। श्रेष्ठ। मुखिया। नेता। मन्त्री। वज़ीर।

प्रबंध—(पु० स०) इन्तज़ाम। निबन्ध।

प्रबल—(वि० स०) बलवान्। प्रचंड। तेज़। उग्र।

प्रबोध—(पु० स०) जागना। पूर्ण ज्ञान। आश्वासन।

प्रभा—(स्त्री० स०) प्रकाश। चमक।

प्रभात—(पु० स०) सवेरा।

प्रभाव—(पु० स०) सामर्थ्य। असर।

प्रभु—(पु० स०) नायक। अधिपति। स्वामी। मालिक।

ईश्वर। —ता=बड़ाई। महत्व। हुकूमत।

प्रमाण—(पु० सं०) सबूत। प्रमाणित = साबित। प्रामाणिक=विश्वास योग्य।

प्रमाद—(पु० सं०) भूल। भ्रम।

प्रमेह—(पु० सं०) धातु गिरने का रोग।

प्रमोद—(पु० सं०) आनन्द। हर्ष। सुख।

प्रयत्न—(पु० सं०) चेष्टा। कोशिश। प्रयास।

प्रयास—(पु० सं०) प्रयत्न। उद्योग। कोशिश।

प्रयुक्त—(वि० सं०) अच्छी तरह मिला हुआ। सम्मिलित। व्यवहार में आया हुआ।

प्रयोग—(पुं० सं०) साधन। व्यवहार।

प्रयोजन—(पु० सं०) कार्य। काम। मतलब। गरज।

प्रलय—(पु० सं०) विलीन होना। न रह जाना। संसार का तिरोभाव।

प्रलाप—(पु० सं०) बकना। व्यर्थ की बकवाद।

प्रलोभन—(पु० सं०) लालच दिखाना।

प्रवर्त्तक—(पु० सं०) सञ्चालक।

प्रवाद—(पु० सं०) जनश्रुति। अपवाद।

प्रवास—(पु० सं०) विदेश रहना। परदेश का निवास। परदेश। प्रवासी=परदेश में रहने वाला।

प्रवाह—(पु० सं०) स्रोत। बहाव। धारा। व्यवहार। सिलसिला।

प्रवाहिका—(स्त्री० सं०) बहाने-वाली।

प्रविष्ट—(वि० सं०) भीतर पहुँचा हुआ। घुसा हुआ।

प्रवृत्त—(वि० सं०) तत्पर। लगा हुआ। तैयार। प्रवृत्ति= लगन।

प्रवेश—(पु० सं०) भीतर जाना। घुसना। गति। पहुँच।

प्रशंसक—(वि० सं०) प्रशंसा करनेवाला। खुशामदी।

प्रशंसा—(स्त्री० सं०) स्तुति। बड़ाई। तारीफ।

प्रशस्त—(वि० सं०) प्रशंसनीय। श्रेष्ठ। उत्तम। प्रशस्ति=प्रशंसा। सरनामा।

प्रश्न—(पु० सं०) पूछताछ। जिज्ञासा। सवाल।

प्रश्वास—(पु० सं०) बाहर आती साँस।

प्रसंग—(पु० सं०) मेल। संबंध। लगाव। विषय का लगाव। अर्थ की संगति।

प्रसन्न—(वि० सं०) संतुष्ट। खुश।

प्रसव—(पु० सं०) बच्चा जनने की क्रिया।

प्रसाद—(पु० सं०) प्रसन्नता। कृपा। सफाई। वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। देवता या बड़े का देन।

प्रसिद्ध—(वि० सं०) विख्यात। मशहूर।

प्रसूता—(स्त्री० सं०) बच्चा जनने वाली स्त्री।

प्रसून—(पु० सं०) फूल। पुष्प। फल।

प्रस्तर—(पु० सं०) पत्थर।

प्रस्ताव—(पु० सं०) अवसर। विषय। ज़िक्र। चर्चा। सभा समाज में उठाई हुई बात। —क=प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला। प्रस्तावित=जिसके लिये प्रस्ताव हुआ हो।

प्रस्तुत—(वि० सं०) प्रासंगिक। जो सामने हो। तैयार।

प्रस्थान—(पु० सं०) रवानगी। गमन। कूच।

प्रहरी—(वि० सं०) पहर पहर पर घंटा बजानेवाला। पहरेवाला।

प्रहसन—(पु० सं०) हँसी। दिल्लगी। नाटक का एक अंग।

प्रहार—(पु० सं०) आघात। वार। चोट।

प्रांत—(पु० सं०) सीमा। छोर। सिरा। प्रदेश। खंड।

प्राइम मिनिस्टर—(पु० अं०) किसी राज्य या देश का प्रधान मंत्री। वज़ीर आज़म।

प्राइमर—(पु० अं०) किसी भाषा

थी वह प्रारम्भिक पुस्तक जिसमें उस भाषा की वर्णमाला आदि दी गई हो।

प्राइमर—(वि० अ०) प्रारंभिक। प्राथमिक।

प्राइवेट—(वि० अ०) व्यक्तिगत। निजका। गुप्त। —सेक्रटरी = किसी बड़े आदमी का निज का मन्त्री या सहायक।

प्राकार—(पु० सं०) कोट। चहार दिवारी।

प्राकृत—(वि० सं०) प्रकृति-संबंधी। स्वाभाविक। सहज। साधारण। नीच। बोलचाल की भाषा। एक प्राचीन भाषा। प्राकृतिक = जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। कुदरती।

प्राक्सी—(स्त्री० अ०) प्रतिनिधि पत्र। प्रतिनिधि।

प्राचीन—(वि० सं०) पूरब का। पुराना। पुरातन।

प्राण—(पु० सं०) वायु। जान। —दंड = मौत की सजा। —प्रतिष्ठा = प्राण धारण कराना। —घातक = घातक प्राणायाम = योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगों में चौथा। साँस रोकने की क्रिया। प्राणी = प्राण धारी। जीव।

प्रातःकाल—(पु० सं०) सबेरे का समय। प्रातःकालीन = प्रातःकाल सम्बन्धी। प्रातःकाल का। प्रातःस्मरणीय = जो प्रातःकाल स्मरण करने के योग्य हो। श्रेष्ठ। पूज्य।

प्राथमिक—(वि० सं०) पहले का। प्रारंभिक। आदिम।

प्रादुर्भाव—(पु० सं०) प्रकट होना। विकाश।

प्रादुर्भूत—(वि० सं०) प्रकटित। विकसित। निकला हुआ। उत्पन्न।

प्रादेशिक—(वि० सं०) प्रदेश सम्बन्धी। प्रांतिक।

प्राधान्य—(पु० सं०) प्रधानता। श्रेष्ठता। मुख्यता।

प्राप्त—(वि० सं०) पाया हुआ। जो मिला हो। प्राप्ति =

मिलना। उपलब्धि। पहुँच। आय। फायदा।

प्रामीसरी नोट—(पु० अ०) हुंडी।

प्राय—(वि० सं०) बहुधा। अक्सर। लगभग। क़रीब क़रीब।

प्रायद्वीप—(पु० हि०) स्थल का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो और केवल एक ओर स्थल से मिला हो।

प्रायश्चित्त—(पु० सं०) शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।

प्रारंभ—(पु० सं०) आरंभ। शुरू। आदि। प्रारंभिक=प्रारंभ का। आदिम। प्राथमिक।

प्रारब्ध—(वि० सं०) भाग्य। क़िस्मत।

प्रार्थना—(स्त्री० सं०) निवेदन। विनय। प्रार्थी=माँगने वाला। निवेदक। इच्छुक।

प्रासाद—(पु० सं०) महल।

प्रास्पेक्टस—(पु० अ०) विवरण पत्र।

प्रिंटर—(पु० अ०) छापने वाला।

प्रिंटिंग—(स्त्री० अ०) छापने का काम। छपाई। —इंक=टाइप के छापने की स्याही। —प्रेस=छापाख़ाना।

प्रिंस—(पु० अ०) राजकुमार। शाहज़ादा। सरदार।

प्रिंस आफ वेल्स—(पु० अ०) इंग्लैंड का युवराज।

प्रिंसिपल—(पु० अ०) किसी बड़े विद्यालय या कालिज आदि का प्रधान अधिकारी। सिद्धान्त।

प्रिय—(सं०) प्यारा। प्रियतम=प्यारों से भी बढ़कर प्रिय। स्वामी। पति।—वर=अतिप्रिय। सब से प्यारा। प्रिया=स्त्री। प्रेमिका स्त्री।

प्रिविलेज लीव—वह छुट्टी जिसे सरकारी तथा किसी गैर सरकारी संस्था या कम्पनी के नौकर कुछ निर्दिष्ट अवधि तक

काम करने के बाद पाने के अधिकारी होते हैं।

प्रिवी कौंसिल—(पु० अं०) किसी बड़े शासक को शासन के काम में सहायता देनेवाले कुछ चुने हुए लोगों का दल।

प्रीति—(स्त्री० सं०) आनन्द। प्रसन्नता। प्रेम। मुहब्बत।

प्रीमियम—(पु० अ०) वह रकम जो जीवन या दुर्घटना आदि का बीमा कराने पर उस कम्पनी को, जिसके यहाँ बीमा कराया गया हो, निश्चित समयों पर दी जाती है।

प्रीमियर—(पु० अ०) प्रधान मंत्री। वजीर आज़म।

प्रूफ—(पु० अं०) सबूत। प्रमाण। किसी छपने वाली चीज़ का वह नमूना जो उसके छपने से पहले अशुद्धियाँ आदि दूर करने के लिये तैयार किया जाता है। —रीडर=प्रूफ पढ़नेवाला।

प्रूम—(पु० अ०) सीसे का बना हुआ एक यंत्र जिससे समुद्र की गहराई नापते हैं।

प्रेत—(पु० सं०) मरा हुआ मनुष्य।

प्रेम—(पु० सं०) स्नेह। अनुराग। प्रीति। —पात्र=प्रेमी। माशूक। प्रेमालाप=प्रेम की बातचीत। प्रेमालिंगन=प्रेमपूर्वक गले लगाना। प्रेमी=अनुरागी। आसक्त।

प्रेरणा—(स्त्री० सं०) कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। दबाव। ज़ोर। प्रेरित=भेजा हुआ। प्रवृत्त किया हुआ।

प्रेषक—(पु० सं०) भेजने वाला। प्रेरक। प्रेषित=भेजा हुआ।

प्रेस—(पु० अं०) छापने की कल। छापाखाना। —कम्युनिक किसी विषय के सम्बन्ध में वह सरकारी विज्ञप्ति या वक्तव्य जो अखबारों को छापने के लिए दिया जाता है। —ऐक्ट=वह कानून जिसके द्वारा छापे खाने वालों के अधिकारों और

मिलना । उपलब्धि । पहुँच । आय । फायदा ।

प्रामीसरी नोट—(पु० अ०) हुंडी ।

प्राय —(वि० स०) बहुधा । अक्सर । लगभग । करीब करीब ।

प्रायद्वीप—(पु० हि०) स्थल का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो और केवल एक ओर स्थल से मिला हो ।

प्रायश्चित्त—(पु० स०) शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं ।

प्रारंभ—(पु० स०) आरंभ । शुरू । आदि । प्रारंभिक= प्रारंभ का । आदिम । प्राथमिक ।

प्रारब्ध—(वि० स०) भाग्य । क़िस्मत ।

प्रार्थना—(स्त्री० स०) निवेदन । विनय । प्रार्थी=माँगने वाला । निवेदक । इच्छुक ।

प्रासाद—(पु० स०) महल ।

प्रास्पेक्टस—(पु० अ०) विवरण पत्र ।

प्रिंटर—(पु० अ०) छापने वाला ।

प्रिंटिंग—(स्त्री० अं०) छापने का काम । छपाई । —इंक= टाइप के छापने की स्याही । —प्रेस=छापाखाना ।

प्रिंस—(पु० अ०) राजकुमार । शाहज़ादा । सरदार ।

प्रिंस आफ वेल्स—(पु० अ०) इंगलैंड का युवराज ।

प्रिंसिपल—(पु० अ०) किसी बड़े विद्यालय या कालिज आदि का प्रधान अधिकारी । सिद्धान्त ।

प्रिय—(स०) प्यारा । प्रियतम= प्राणों से भी बढ़कर प्रिय । स्वामी । पति ।—वर=अति प्रिय । सब से प्यारा । प्रिया =स्त्री । प्रेमिका स्त्री ।

प्रिविलेज लीव—वह छुट्टी जिसे सरकारी तथा किसी गैर सरकारी संस्था या कम्पनी के नौकर कुछ निर्दिष्ट अवधि तक

काम करने के बाद पाने के अधिकारी होते हैं।

प्रिवी कौंसिल—(पु० अ०) किसी बड़े शासक को शासन के काम में सहायता देनेवाले कुछ चुने हुए लोगों का दल।

प्रीति—(स्त्री० सं०) आनन्द। प्रसन्नता। प्रेम। मुहब्बत।

प्रीमियम—(पु० अ०) वह रकम जो जीवन या दुर्घटना आदि का बीमा कराने पर उस कम्पनी को, जिसके यहाँ बीमा कराया गया हो, निश्चित समयों पर दी जाती है।

प्रीमियर—(पु० अ०) प्रधान मंत्री। वज़ीर आज़म।

प्रूफ—(पु० अ०) सबूत। प्रमाण। किसी छपने वाली चीज़ का वह नमूना जो उसके छपने से पहले अशुद्धियाँ आदि दूर करने के लिये तैयार किया जाता है। —रीडर=प्रूफ पढ़नेवाला।

प्लम—(पु० अ०) सीसे का बना हुआ एक यंत्र जिससे समुद्र की गहराई नापते हैं।

प्रेत—(पु० सं०) मरा हुआ मनुष्य।

प्रेम—(पु० सं०) स्नेह। अनुराग। प्रीति। —पात्र=प्रेमी। माशूक। प्रेमालाप=प्रेम की बातचीत। प्रेमालिंगन=प्रेमपूर्वक गले लगाना। प्रेमी=अनुरागी। आसक्त।

प्रेरणा—(स्त्री० सं०) कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। दबाव। ज़ोर। प्रेरित=भेजा हुआ। प्रवृत्त किया हुआ।

प्रेषक—(पु० सं०) भेजने वाला। प्रेरक। प्रेषित=भेजा हुआ।

प्रेस—(पु० अ०) छापने की कल। छापाखाना। —कम्युनिक किसी विषय के सम्बन्ध में वह सरकारी विज्ञप्ति या वक्तव्य जो अख़बारों को छापने के लिए दिया जाता है। —ऐक्ट=वह कानून जिसके द्वारा छापे खाने वालों के अधिकारों और

प्राय दीवारों आदि पर चिप काया जाता है। पास्टर।
प्लैटिनम—(पु० अ०) चांदी के रङ्ग का एक बहुमूल्य धातु।

प्लेन—(पु० अ०) किसी बनने वाली इमारत का रेखा चित्र। नक्शा। ढाँचा। मनसूबा। तजवीज। योजना।

फ

फ—हिन्दी वर्णमाला में बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण।

फंकी—(स्त्री० हि०) फाँकने की दवा।

फंद—(पु० अ०) कोष।

फंदा—(पु० हि०) बन्धन। जाल।

फँसना—(क्रि० स० हि०) बन्धन में पड़ना। पकड़ा जाना। उलझना।

फक—(वि० हि०)। सफेद। बदरङ्ग।

फक्त—(वि० अ०) बस। पर्याप्त। केवल। सिर्फ।

फकीर—(पु० अ०) भिखमङ्गा। भिक्षुक। साधु। संसार त्यागी।

फख्र—(पु० फा०) गौरव। गर्व।

फजर—(स्त्री० अ०) प्रात काल। सवेरा।

फजल—(पु० अ०) कृपा। मेहरबानी।

फजीलत—(स्त्री० अ०) श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। बड़ाई।

फजीहत—(स्त्री० अ०) दुर्दशा। दुर्गति।

फजूल—(वि० फा०) व्यर्थ। —खर्च=अपव्ययी। फजूल खर्ची=व्यर्थ व्यय करना।

फटकना—(क्रि० हि०) फट् फट् शब्द करना। फटफटाना। आने देना।

फटका—(पु० अनु०) धुनिए की

धुनकी जिससे वह रुई आदि धुनता है।
फटकार—(स्त्री० हि०) भिड़की। —ना = भिड़कना। उड़ा लेना। मारना।
फट्ठा—(पु० हि०) चीरे हुए बाँस की पट्टी। मुँहफट आदमी। (स्त्री०) फट्टी।
फड़—(स्त्री० हि०) दाँव। जुए का अड्डा। —बाज़ = अपने यहाँ लोगों को जूआ खेलाने वाला व्यक्ति।
फड़कन—(स्त्री० हि०) धड़कन। उत्सुकता। फड़कना = (अनु०) फड़फड़ाना। उछलना।
फड़नवीस—(पु० हि०) मराठोंके राजत्वकाल का एक राजपद।
फड़फड़ाना—(क्रि० अनु०) फड़फड़ शब्द उत्पन्न करना। हिलाना।
फड़ुआ, फड़ुहा—(पु० हि०) मिट्टी खोदने और टालने का औजार। (स्त्री०) फड़ुही। फड़ुई।
फण—(पु० सं०) फन।
फतवा—(पु० अ०) मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी देते हैं।
फतह—(स्त्री० अ०) विजय। जीत। सफलता। —मन्द = विजयी।
फतिंगा—(पु० हि०) पतिंगा। पतङ्ग।
फतीलसोज़—(पु० फा०) चिरागदान। दीवट।
फतूर—(पु० अ०) विकार। दोष। नुकसान।
फतूह—(स्त्री० अ०) जीत। विजय।
फतूही—(स्त्री० अ०) सदरी। सलूका। विजय या लूट का धन।
फतेह—(स्त्री० अ०) विजय। जीत
फन—(पु० हि०) फण।
फन—(पु० फा०) गुण। खूबी। विद्या। दस्तकारी। छलने का ढङ्ग।
फना—(स्त्री० अ०) विनाश। बरबादी।
फफोला—(पु० हि०) छाला। झलका।

फबती—(स्त्री॰ हि॰) वह बात जो समय के अनुकूल हो। व्यंग्य।

फबना—(क्रि॰ हि॰) शोभा देना। सोहना।

फय्याज—(अ॰) दाता। उदार। दाता।

फरक—(पु॰ अ॰) पार्थक्य। अलगाव। दूरी। अन्तर। भेद।

फरजद—(पु॰ फा॰) पुत्र। लड़का।

फरजी—(पु॰ फा॰) शतरञ्ज का एक मोहरा। कल्पित।

फरद—(स्त्री॰ अ॰) लेखा या वस्तुओं की सूची।

फरमाइश—(स्त्री॰ फा॰) आज्ञा। आर्डर। माँग। फरमाइशी = जो फरमाइश करके बनवाया या मँगाया गया हो।

फरमान—(पु॰ फा॰) राजकीय आज्ञापत्र। अनुशासन पत्र। फरमाना = आज्ञा देना। कहना।

फरयाद—(स्त्री॰ फा॰) शिकायत। नालिश।

फरलांग—(पु॰ अ॰) दो सौ बीस गज की दूरी।

फरलो—(स्त्री॰ अ॰) छुट्टी जो सरकारी नौकरों को आधे वेतन पर मिलती है।

फरवरी—(पु॰ अ॰) अङ्गरेजी सन् का दूसरा महीना।

फरश—(पु॰ अ॰) बिछावन। धरातल। समतल भूमि। —बन्द = वह ऊँचा और समतल स्थान जहाँ फरश बना हो।

फरशी—(स्त्री॰ फा॰) गुड़गुड़ी। हुक्का।

फरहंग—(फा॰) बुद्धि। शब्द कोष। खुशी।

फरहत—(स्त्री॰ अ॰) आनंद। प्रसन्नता। मन शुद्धि।

फरहाद—(फा॰) एक प्रसिद्ध प्रेमी का नाम।

फराख—(वि॰ फा॰) विस्तृत। लम्बा। चौड़ा। फराखी = चौड़ाई। विस्तार। फैलाव।

फरागत—(स्त्री॰ अ॰) छुटकारा। छुट्टी। निबटना। निश्चिंत होना। पाखाना जाना।

फ़राज़—(वि० फ़ा०) ऊँचा।

फ़रामोश—(वि० फ़ा०) भूला हुआ। विस्मृत।

फ़रार—(वि० अ०) भागा हुआ। फ़रारी=भागा हुआ। भगोड़ा।

फरासीस—(पु० फा०) फ्रांस का रहने वाला। फरासीसी=फ्रांस का रहने वाला। फ्रांस का।

फराहम—(फा०) इकट्ठा। जमा।

फरियाद—(स्त्री० फा) शिकायत। नालिश। फरियादी=फरियाद करने वाला।

फरिश्ता—(पु० फा०) ईश्वरी दूत।

फरीक—(पु० अ०) मुकाबला करने वाला। विरोधी। दूसरा पक्ष। प्रतिपक्षी। फरीकैन=फरीक का बहुवचन।

फरुही—(स्त्री० हि०) छोटा फावड़ा। मथानी।

फरेफ्ता—(वि० फा०) लुभाया हुआ। आशिक़। आसक्त।

फरेब—(पु० फा०) छल। धोखा। कपट। फरेबी=धोखेबाज़। कपटी।

फरो—(वि० फा०) दबा हुआ। तिरोहित।

फरोख्त—(स्त्री० फा०) विक्रय। बिक्री। बेचना।

फरोश—(फा०)। बेचनेवाला।

फर्क—(पु० अ०) भेद। अन्तर।

फर्ज—(पु० अ०) धार्मिक कृत्य। कर्तव्य कर्म। उत्तर-दायित्व। कल्पना। मान लेना। फर्जी=कल्पित। सत्ताहीन।

फर्द—(स्त्री० फा०) कागज व कपड़े आदि का टुकड़ा जो किसी के साथ जुड़ा या लगा न हो। कागज का टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची या सूचना आदि लिखी गई हो या लिखी जायँ।

फर्म—(पु० अं०) व्यापारी व महाजनी कोठी। साझे का कारबार।

फर्राटा—(पु० अनु०) वेग। तेजी।

फर्राश—(पु० अ०) नौकर।

ख़िदमतगार। फर्राशी=(वि०फ़ा०) फर्श या फर्राश के कामों से सम्बन्ध रखनेवाला।
फर्श—(स्त्री० अ०) बिछावन। या बिछाने का कपड़ा।
फर्शी—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का बड़ा हुक्का। फर्श का।
फर्स्ट—(वि० अ०) पहला। —क्लास=सर्वश्रेष्ठ।
फल—(पु० स०) वनस्पति का बीजकोश। परिणाम। नतीजा। कर्मभोग। गुण। प्रभाव। बदला। हलकी नोक। चाकू की धार।
फलक—(पु० स०) तख़्ता। पट्टी। वरक। पृष्ठ। (अ०) आकाश। स्वर्ग। आसमान।
फलदान—(पु० हि०) हिंदुओं की एक रीति जो विवाह होने के पहले होती है।
फलाँ—(वि० फ़ा०) अमुक। कोई अनिश्चित।
फलाँग—(स्त्री० हि०) कुदान। चौकड़ी।
फलालीन, फलालेन, फलालैन—(पु० हि०) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र। (अ०) फ्लैनल।
फलाहारी—(पु० हि०) फल खानेवाला। जो फल खाकर निर्वाह करता हो।
फलित—(वि० स०) फला हुआ। संपन्न। पूर्ण।
फली—(पु० हि०) छीमी।
फलीभूत—(वि० स०) लाभदायक। फलदायक।
फवाइद—(अ०) फायदे का बहु वचन। फलदायक।
फव्वारा—(अ०) निर्झर, जिसमें से पानी निकलता हो।
फसल—(स्त्री० अ०) ऋतु। मौसम। समय। काल। खेत की उपज। अन्न। फसली=ऋतु सम्बन्धी। ऋतु का। एक प्रकार का संवत्। —बुखार=जाड़ा देकर आने वाला बुखार।
फसाद—(पु० अ०) बिगाड़। विकार। बिगाड़। उपद्रव। झगड़ा लड़ाई। विवाद।

फसादी = उपद्रवी। झगड़ालू। नटखट।

फसाना—(फा०) क़िस्सा कहानी।

फसील—(अ०) परकोटा। शहर पनाह। क़िले की दीवार।

फसीह—(अ०) सुन्दर वक्ता। अच्छा बोलनेवाला।

फस्द—(स्त्री० अ०) नस को छेद कर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

फस्ल—(अ०) ऋतु। खेती। पुस्तक का एक भाग।

फहम—(स्त्री० अ०) ज्ञान। समझ। बुद्धि।

फहरना—(क्रि० हि०) वायु में उड़ाना। फड़फड़ाना। फहराना = (क्रि० हि०) उड़ाना।

फहश—(वि० अ०) फूहड़। अश्लील।

फाँक—(स्त्री० हि०) छुरी आदि से काटा हुआ टुकड़ा।

फाँकना—(क्रि० हि०) कण या चूर्ण को मुँह में फेंककर खाना। फाँका—(पु० हि०) चूर्ण या कण जो एक बार में मुँह में आ सके।

फाँड़ा—(पु० हि०) दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।

फाँद—(स्त्री० हि०) उछाल। फाँदना = कूदना। उछलना।

फाँफी—(स्त्री० हि०) बहुत बारीक तह। दूध के ऊपर पड़ी हुई मलाई की बहुत पतली तह। जाला। माड़ा।

फाँस—(स्त्री० हि०) बंधन। पाश। फंदा। फाँसना = बाँधना। पकड़ना। जाल में फँसाना। फाँसी = प्राणदंड देने का फंदा।

फाइनानशल—(वि० अं०) मालगुज़ारी के मुताल्लिक़। माली।

फाइनानशल कमिश्नर—(पु० अं०) वह सरकारी अफसर जिसके अधीन किसी प्रदेश का राजस्व विभाग या माल का महकमा हो।

फाइन—(पु० अ०) जुर्माना । अर्थदंड ।

फाइनल—(वि० अ०) आखिरी । अंतिम ।

फाइनान्स—(पु० अ०) राजस्व और उसके आय व्यय की पद्धति । अर्थ व्यवस्था ।

फाइल—(स्त्री० अ०) मिसिल । नत्थी । सामयिक पत्रों आदि के कुछ पूरे अंकों का समूह ।

फाउंटेनपेन—(अ०) वह कलम जिसमें अंदर स्याही भरी रहती है ।

फाउंड्री—(स्त्री० अ०) ढालने का कारखाना ।

फाउंडेशन—(अ०) नींव ।

फाका—(पु० अ०) उपवास ।

फाकामस्त, फाकेमस्त—(वि० फ़ा०) जो पैसा पास न रख कर भी बेपरवा रहता हो ।

फाख्तई—(वि० हि०) भूरापन लिये हुए लाल रंग ।

फाख्ता—(अ०) पंडुक ।

फाग—(पु० हि०) फागुन के महीने में होनेवाला उत्सव ।

फागुन—(पु० सं०) माघ के बाद का महीना । फाल्गुन ।

फाजिल—(वि० अ०) ज़रूरत से ज़्यादा । खर्च या काम से बचा हुआ । निरर्थक । व्यर्थ ।

फाजिल बाकी—(स्त्री० अ०) हिसाब का जमा या बेशी । हिसाब में का लेना या देना ।

फाटक—(पु० हि०) बड़ा दरवाजा । तोरण ।

फाटना—(क्रि० हि०) टूटना । खंडित होना । दरार पड़ना ।

फाड़ना—(क्रि० हि०) चीरना । विदीर्ण करना ।

फातिहा—(पु० अ०) प्रार्थना । वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय ।

फादर—(पु० अ०) पादरियों की सम्मान सूचक उपाधि । पिता । बाप ।

फानी—(अ०) नाशवान ।

फानूस—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की बड़ी कंदील । (अ०) झाड़ का वह हिस्सा जिसमें बत्तियाँ जलाते हैं ।

फायदा—(पु० अ०) लाभ। नफा। आय। फायदेमंद=लाभदायक। उपकारक।

फायर—(पु० अ०) आग। बंदूक, तोप आदि हथियारों का दगना। —एंजिन=आग बुझाने की दमकल। —ब्रिगेड=आग बुझानेवाले कर्मचारियों का दल। —मैन=इंजन में कोयला झोंकने का काम करनेवाला।

फारखती—(स्त्री० हि०) चुकती। बेबाकी।

फारम (फार्म)—(पु० अ०) दरख्वास्त, बही खाते, रसीद आदि के नमूने। छपाई में एक पूरा तख्ता जो एक बार एक साथ छापा जाता है।

फारमूला—(पु० अ०) संकेत। सिद्धांत। कायदा। नुसखा।

फारसी—(स्त्री० फा०) फारस देश की भाषा।

फारिग—(वि० अ०) काम से छुट्टी पाया हुआ। निश्चिन्त। बेफ़िक्र। छूटा हुआ। मुक्त। —उल् बाल=संपन्न। निश्चिन्त। —उल् बाली=अमीरी। बेफ़िक्री।

फारेन—(वि० अ०) दूसरे राष्ट्र या देश का। वैदेशिक। पर राष्ट्रीय। —मिनिस्टर=वैदेशिक मंत्री।

फार्म—(अ०) खेत।

फाल—(अ०) पतन।

फालतू—(वि० हि०) ज़रूरत से ज्यादा। बढ़ती। निकम्मा।

फालसा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का छोटा पेड़।

फालिज—(पु० अ०) पक्षाघात। लकवा मार जाना।

फालूदा—(पु० फ़ा०) पीने के लिये बनाई हुई एक चीज़ जिसका व्यवहार प्रायः मुसलमान करते हैं।

फाल्गुन—(पु० सं०) माघ के बाद का महीना।

फावड़ा—(पु० हि०) मिट्टी खोदने का एक औज़ार।

फाश—(वि० फा०) खुला। प्रकट। ज्ञात।

फासफरस—(पु० अ०) एक जलनेवाला द्रव्य।

फासला—(पु० अ०) दूरी। अंतर।

फास्ट—(वि० अ०) तेज। शीघ्र गामी।

फाहा—(पु० हि०) फाया।

फिक—(अ०) चिन्ता। सोच।

फाहिशा—(वि० अ०) छिनाल।

फिकरा—(पु० अ०) वाक्य। जुमला। झाँसापट्टी। दम बुत्ता। फिकरेबाज = झाँसा पट्टी देनेवाला। फ़िकरेबाजी = झाँसापट्टी देना।

फिक्र—(स्त्री० अ०) चिन्ता। —मन्द = (फ़ा०) चिन्ताग्रस्त।

फिट—(अव्य० अनु०) छी। धिक्कारने का शब्द। (अ०) उपयुक्त। ठीक। जिसके कल पुरजे आदि ठीक हों। मूर्च्छा।

फिटकार—(पु० हि०) धिक्कार। लानत।

फिटकिरी—(स्त्री० हि०) एक खनिज पदार्थ।

फिटन—(स्त्री० अ०) चार पहिये की खुली घोड़ा गाड़ी।

फितना—(पु० अ०) झगड़ा। दंगा फसाद।

फितरत—(अ०) स्वभाव। बुद्धि। कमजोरी। फ़ितरती = चालाक। चतुर। मायावी। धोखेबाज।

फितूर—(पु० अ०) कमी। झगड़ा। फितूरी = झगड़ालू। उपद्रवी।

फिदवी—(वि० अ०) आज्ञा कारी।

फिदा—(अ०) आसक्त।

फिरंग—(पु० अ०) गरमी। आतशक।

फिरंगिस्तान—(पु० अ० फा०) फिरङ्गियों के रहने का देश। युरोप। गोरों का देश।

फिरंगी—(वि० हि०) गोरा। युरोपियन।

फिरट, फ़ट—(वि०अ०) वरुद्ध। खिलाफ। बिगड़ा हुआ।

फिर—(क्रि० वि० हि०) एक बार और। दोबारा।

फिरका—(अ०) जाति । सम्प्रदाय ।
फिरकी—(स्त्री० हि०) लड़कों का एक खिलौना ।
फिरदौस—(अ०) स्वर्ग ।
फिरदौसी—(फ़ा०) फारसी के एक कवि का नाम ।
फिरना—(क्रि० हि०) इधर उधर चलना । वापस आना ।
फिरनी—(स्त्री० फा०) एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।
फिराक—(पु० अ०) वियोग । चिन्ता । सोच । टोह । खोज ।
फिरार—(पु० अ०) भागना । भाग जाना । फिरारी = भागने वाला । भगोड़ा ।
फिरिश्ता—(पु० फ़ा०) देवदूत ।
फिलसफा—(अ०) दर्शनशास्त्र । फिलासफी ।
फिलहाल—(अ०) तत्काल । फ़ौरन् । अभी ।
फिलासफी—(स्त्री० अ०) दर्शन शास्त्र । सिद्धान्त या तत्व की बात ।
फिल्ली—(स्त्री० देश०) करघे का एक पुर्ज़ा ।
फिशाँ—(फ़ा०) झाड़ता हुआ । झाड़ने वाला ।
फिस—(वि० अनु०) कुछ नहीं ।
फिसड्डी—(वि० अनु०) जिससे कुछ करते धरते न बने ।
फिसलन—(स्त्री० हि०) रपटन । फिसलना = रपटना । खिसलना ।
फिहरिश्त—(स्त्री० फ़ा०) सूची । सूचीपत्र । बीजक ।
फी—(अव्य० अ०) हरएक । प्रति एक । भेद । अन्तर । (अ०) शुल्क । फीस ।
फीका—(वि० हि०) स्वादहीन । नीरस ।
फीता—(पु० पुर्त०) नेवार की पतली धज्जी ।
फीरोजा—(पु० फा०) एक बहुमूल्य पत्थर । फ़ीरोज़ी = (फ़ा०) फीरोजे के रंग का । हरापन लिए नीला ।
फील—(पु० फ़ा०) हाथी । —खाना = वह घर जहाँ हाथी

बाँधा जाता हो। —पाया = ईंट का बना हुआ मोटा खंभा जिस पर छत ठहराई जाती है।

फील्ड—(पु० अ०) खेत। मैदान। गेंद खेलने का मैदान।

फील्ड एम्बुलेंस—(पु० अ०) मैदानी अस्पताल।

फीवर—(पु० अ०) ज्वर। बुखार।

फीस—(स्त्री० अ०) कर। मेहनताना। उजरत।

फुँकनी—(स्त्री० हि०) नली जिसमें मुँह की हवा भरकर आग दहकाते हैं।

फुँकवाना—(क्रि० हि०) फूँकने का काम कराना।

फुंसी—(स्त्री० हि०) छोटी फोड़िया।

फुचड़ा—(पु० देश०) कपड़े, दरी, कालीन, कागज आदि बुनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुट—(वि० हि०) अकेला। अलग। (अं०) एक नाप जो १२ इंच का होता है। पैर। —नोट = वह टिप्पणी जो किसी लेख या पुस्तक के पृष्ठ में नीचे की ओर दी जाती है। —पाथ = (अं०) शहरों में सड़क की पटरी पर का वह भाग जिस पर मनुष्य पैदल चलते हैं। —बाल = (अं०) बड़ा गेंद जिसे पैर की ठोकर से उछालकर खेलते हैं।

फुटकर—(वि० हि०) जिसका जोड़ा न हो। अकेला। अलग। पृथक्। थोड़ा थोड़ा।

फुटका—(पु० हि०) फफोला। छाला। फुटकी = बहुत छोटी बूँदी।

फुटेहरा—(पु० हि०) चने का भुना हुआ चबेना।

फुदकना—(क्रि० अनु०) उछल उछलकर कूदना। उछलना।

फुदकी—(स्त्री० हि०) एक छोटी चिड़िया।

फुनगी—(स्त्री० हि०) अंकुर।

फुफकार—(पु० अनु०) फूँक जो साँप मुँह से निकालता है।

फुरेरा—(वि० हि०) फूला न समाना।

फुरकत—(स्त्री० अ०) वियोग।

फुरती—(स्त्री० हि०) शीघ्रता। तेजी। —ला=जो सुस्त न हो। तेज़।

फुरफुराना—(क्रि० हि०) उड़कर परों का शब्द करना।

फुरफुराहट—(स्त्री० अनु०) पर फड़फड़ाना।

फुरसत—(स्त्री० अ०) अवसर। समय। अवकाश। छुट्टी।

फुलचुही—(स्त्री० हि०) एक चिड़िया।

फुलझड़ी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

फुलवारी—(स्त्री० हि०) बगीचा। पुष्प वाटिका।

फुलाना—(क्रि० हि०) भीतर के दबाव से बाहर की ओर फैलाना। फुलाव=उभार या सूजन।

फुलिसकैप—(पु० अं०) एक प्रकार का काग़ज़।

फुलेल—(पु० हि०) [illegible] तेल।

फुनीगी—(स्त्री० हि०) [illegible] पत्ती।

फुसफुसा—(वि० हि०) [illegible] ढीला।

फुसलाना—(क्रि० हि०) [illegible] लाना। [illegible]

फुहारा—(पु० हि०) [illegible] महीन [illegible]

फूँक—(स्त्री० हि०) [illegible]

फूल—(पु० हि०) पुष्प। सुमन। [illegible] होना।

फुला—(पु० हि०) जाला। आँख का एक रोग।
फुली—(स्त्री० हि०) सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाती है।
फुहड़—(वि० हि०) बेशऊर।
फेंकना—(क्रि० हि०) अपने से दूर गिराना।
फेंट—(स्त्री० हि०) कमर का घेरा। पटुका। कमरबंद।
फेटना—(क्रि० हि०) लेप या लेई की तरह चीज़ को हाथ या उँगली से मथना।
फेंटा—(पु० हि०) कमर का घेरा। पटुका। कमरबंद।
फेन—(पु० सं०) झाग।
फेनिल—(वि० सं०) फेनयुक्त।
फेफड़ा—(पु० हि०) साँस की थैली जो छाती के नीचे होती है। फुप्फुस।
फेर—(पु० हि०) चक्कर। घुमाव। परिवर्तन। अंतर। फ़र्क। असमञ्जस। भ्रम। धोखा। झंझट। व्याज। —फार=परिवर्तन। उलट पलट। फेरा=चक्कर। परिभ्रमण। इधर से उधर घूमना।
फेरा—(स्त्री० हि०) परिक्रमा। प्रदक्षिणा। योगी या फ़क़ीर का नियम से भिक्षा के लिये बराबर आना। घूम फिरकर सौदा बेचना।
फेल—(पु० अ०) काम। कार्य। (अं०) अकृतकार्य।
फेलो—(पु० अं०) सभासद। सभ्य।
फेल्ट—(पु० अं०) जमाया हुआ ऊन।
फेस—(पु० अं०) चेहरा। मुँह। सामना। टाइप का वह ऊपरी भाग जो छपने पर उभरता है। —वेल्यु=वह दाम जो चीज़ के ऊपर छपा रहता है।
फेहरिस्त—(स्त्री० फा०) सूचीपत्र।
फेंसिंग—(अं०) तार लगाना। बाड़ बाँधना।
फैंसी—(वि० अं०) देखने में सुन्दर।
फैकल्टी—(स्त्री० अं०) विश्व

विद्यालय के अन्तर्गत विद्वत्‌ समिति।

फैक्टरी—(स्त्री० अ०) कारखाना।

फैज़—(पु० अ०) लाभ। वृद्धि। फल। परिणाम। दान। देन।

फैदम—(पु० अ०) गहराई की एक नाप जो छ फुट की होती है।

फैन—(पु० अ०) पखा।

फैयाज—(वि० अ०) खुले दिल का। उदार।

फैयाजी—(स्त्री० अ०) उदारता।

फैर—(स्त्री० अ०) बन्दूक तोप आदि हथियारों का दगना।

फैलना—(क्रि० हि०) स्थान घेरना। व्यापक होना। छाना। बिखरना। छितराना।

फैलसूफ—(वि० यू०) फ़जूल खर्च।

फैलाना—(क्रि० हि०) स्थान घिरवाना। फैलाव = विस्तार। प्रसार। लम्बाई चौड़ाई।

फैशन—(पु० अ०) ढग। तर्ज़। चाल।

फैसल—(अ०) न्याय करना। झगड़ा निपटाना।

फैसला—(पु० अ०) निर्णय।

फोकट—(वि० हि०) तुच्छ। व्यर्थ। मुफ्त।

फोकस—(पु० अ०) फोटोग्राफी में कैमरे के लैंस के सामने के दृश्य को स्पष्ट करना।

फोटो—(पु० अ०) फोटोग्राफी के यत्र द्वारा उतारा हुआ चित्र। फोटोग्राफ = छाया चित्र। —ग्राफर = फोटोग्राफी का काम करने वाला। —ग्राफी = प्रकाश की किरणों द्वारा आकृति या प्रतिकृति उतारने की क्रिया।

फोड़ा—(पु० हि०) व्रण। फोड़िया = छोटा फोड़ा। फुनसी।

फोता—(पु० फा०) अडकोष।

फोनोग्राफ—(पु० अ०) एक यत्र जिसमें गाए हुए राग, कही हुई बातें और बजाए हुए बाजों का स्वर आदि चूड़ियों

में भरे रहते हैं और ज्यों के त्यों सुनाई पड़ते हैं।

फोरमैन—(पु० अ०) कारखानों में कारीगरों और काम करने वालों का सरदार या जमादार।

फोट—(पु० अ०) रिसा। दुर्ग।

फोलाद—(पु०) इसपात।

फोलिया—(पु० अ०) कागज के तख्ते का आधा भाग।

फौज—(स्त्री० अ०) सेना। लश्कर। —दार=सेना का प्रधान। सेनापति। —दारी=लड़ाई झगड़ा। मार पीट।

फौजी—(वि० अ०) फौज संबंधी। सैनिक।

फौत—(वि० अ०) नष्ट। मृत। गत।

फौती—(वि०अ०) मृत्यु संबंधी। मृत्यु का। —नामा=मृत व्यक्तियों के नाम, पते की सूची।

फौरन—(क्रि० वि० अ०) तुरन्त। तत्काल।

फौलाद—(पु० फा०) एक प्रकार का लोहा। फौलादी=फौलाद का बना हुआ।

फौवारा—(पु० हि०) जल का महीन छाता। जल के छींटे देनेवाला यंत्र।

फ्राक—(पु० अ०) फ्रांस का चाँदी का सिक्का।

फ्रांटियर—(पु० अ०) सरहद। सीमांत।

फ्रांसीसी—(वि० फ्रांस) फ्रांस देश का।

फ्राक—(पु० अ०) लम्बी आस्तीन का ढीला ढाला कुरता।

फ्रिस्केट—(स्त्री० अ०) लोहे की चद्दर का बना हुआ चौखटा जो हाथ से चलाए जानेवाले प्रेस के ढाले में जड़ा रहता है।

फ्री—(वि० अ०) स्वतन्त्र। मुक्त। मुफ्त। फ्रीट्रेड=वह वाणिज्य जिसमें माल के आने जाने पर किसी प्रकार का कर या महसूल न लिया जाय।

फ़्रीमेसन—(पु० अ०) फ़्रीमेसनरी भाव के गुप्त संघों का सदस्य।

फ़्रीमेसनरी—(स्त्री० अ०) एक प्रकार का गुप्त संघ या सभा जिसकी शाखा प्रशाखाएँ यूरप, अमेरिका तथा अन्य सब स्थानों में हैं, जहाँ यूरपियन हैं।

फ़्रेंच—(वि० अ०) फ्रांस देश का। —पेपर=एक प्रकार का हलका, पतला और चिकना काग़ज़।

फ़्रेम—(पु० अ०) चौखटा।

फ़्युडेटरी चीफ़—(पु० अ०) सामन्त राजा। करद राजा। मांडलिक।

फ़्युडेटरी स्टेट—(पु० अ०) वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य के अधीन हो और उसे कर देता हो।

फ़्लाइब्वाय—(पु० अ०) प्रेस में वह लड़का जो प्रेस पर से छपे हुए काग़ज़ जल्दी से खटाखट उतारता है और उन पर आँख दौड़ाकर छपाई की त्रुटि की सूचना प्रेसमैन को देता है।

फ़्लूट—(पु० अ०) वंशी की तरह का एक अँगरेज़ी बाजा।

फ़्लैग—(पु० अ०) झंडा। पताका।

ब

ब—हिन्दी का तेइसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण।

बँगला—(वि० हि०) बंगाल देश का। बंगाल देश की भाषा। एक खास ढंग से बना हुआ मकान।

बंगाल—(पु० हि०) बंग देश जो भारत का पूर्वी भाग है। बंगाली=बंगाल देश का निवासी।

बंचना—(स०) ठगी।

बंचक—(पु० हि०) पाखंडी।

बटलोई—(स्त्री० हि०) देगची। पतीली।

बटा—(पु० हि०) गोला। गेंद।

बटालियन—(स्त्री० अं०) पैदल सेना का एक दल जिसमें १००० जवान होते हैं।

बटिया—(स्त्री० हि०) छोटा बट्टा। लोढ़िया।

बटा—(स्त्री० हि०) गाली।

बटुरना—(क्रि० हि०) सिमटना इकट्ठा होना।

बटुला—(पु० हि०) बड़ी बट लोई।

बटुआ—(पु० हि०) गोल थैली। बड़ा बटलोई।

बटेर—(स्त्री० हि०) एक छोटी चिड़िया। —बाजी=बटेर पालने या लड़ाने का काम।

बटोर—(पु० हि०) जमावड़ा। —ना=समेटना।

बट्टा—(पु० हि०) दस्तूर। दलाली। —खाता=डूबी हुई रकम का लेखा या बही।

कूटने पीसने का पत्थर। लोढ़िया। बटिया।

बड़प्पन—(पु० हि०) बड़ाई। गौरव। महत्त्व।

बड़बड़—(स्त्री० अनु०) बक वाद। व्यर्थ का बोलना। बड़बड़ाना=व्यर्थ बोलना। बकवाद करना।

बड़वाग्नि—(पु० सं०) समुद्र के भीतर की आग।

बड़हल—(पु० हि०) एक पेड़।

बड़ा—(वि० हि०) अधिक विस्तार का। विशाल। दीर्घ। जिसकी उम्र ज्यादा हो। श्रेष्ठ। बुजुर्ग। महत्त्व का। भारी। बढ़कर। ज्यादा। एक पकवान। — दिन= २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों के त्योहार का दिन है।

बड़ाई—(स्त्री० हि०) बड़प्पन। श्रेष्ठता।

बड़े लाट—(पु० हि० अ०) हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी

बढ़ई—(पु० हि०) मेमार। लकड़ी का काम करनेवाला।

बढ़ती—(स्त्री० हि०) वृद्धि। आधिक्य। उन्नति।

बढ़ना—(क्रि० हि०) वृद्धि का प्राप्त होना। गिनती या नाप तौल में ज्यादा होना। असर या ख़ासियत वग़ैरह में ज़्यादा होना। चलना। चलने में किसी से आगे निकल जाना। भाव का बढ़ना। किसी से किसी बात में अधिक हो जाना। चिराग़ का बुझना।

बढ़नी—(स्त्री० हि०) झाड़ू। बुहारी।

बढ़ाव—(पु० हि०) फैलाव। विस्तार। अधिकता। उन्नति। वृद्धि।

बढ़ावा—(पु० हि०) प्रोत्साहन। उत्तेजना।

बणिक्—(पु० सं०) बनिया। सौदागर। बेचनेवाला।

बतकही—(स्त्री० हि०) बात चीत। वार्तालाप।

बतख—(स्त्री० हि०) हंस की जाति की एक चिड़िया।

बतबढाव—(पु० हि०) विवाद।

बतासा—(पु० हि०) एक प्रकार की मिठाई।

बतौर—(क्रि० अ०) तरीके पर। रीति से।

बत्ती—(स्त्री० हि०) सूत, रूई, कपड़े आदि की पतली छड़। दीपक। मोमबत्ती।

बत्तीसी—(स्त्री० हि०) दाँतों की पंक्ति।

बथुआ—(पु० हि०) एक साग।

बद—(फ़ा०) बुरा। —अमली = राज्य का कुप्रबन्ध। अशांति। —अन्देश = दुश्मन। —इन्तज़ामी = कुप्रबन्ध। अव्यवस्था। —कार = कुकर्मी। व्यभिचारी। —कारी = कुकर्म। व्यभिचार। —किस्मत = अभागा। बुरी क़िस्मत का। —ख़त = बुरा लेख। बुरे अक्षर। —ख्वाह = बुरा चाहनेवाला। —गुमान = बुरा

संदेह करनेवाला। —गुमानी =बुरा शक। —गोई= निन्दा। चुगली। —चलन =बुरे चाल चलन का। —चलनी = व्यभिचार। —ज़बान = कटुभाषी। —ज़ात=खोटा। नीच। —तमीज़=अशिष्ट। गँवार। —तर = और भी बुरा। —दियानती=बेईमानी। विश्वासघात। —दुआ= शाप। —नसीबी=दुर्भाग्य। —नाम=कलंकित।—नामी =अपकीर्ति। कलंक। —नीयत=जिसकी नियत बुरी हो। —नीयती=बेई-मानी। दगाबाज़ी। —नुमा =कुरूप। भद्दा। —परहेज़ =कुपथ्य करनेवाला। —परहेज़ी=कुपथ्य।—बख़्त =अभागा। बदक़िस्मत। —बू=दुर्गंध। —बूदार= दुर्गंधयुक्त। —मज़ा=बुरे स्वाद का। —मस्त=नशे में चूर। लंपट। —मस्ती =मतवालापन। कामुकता। —माश=दुर्वृत्त। खोटा। दुष्ट। दुराचारी। —माशी =दुष्कर्म। नीचता। दुष्टता। व्यभिचार। —मिज़ाज=बुरे स्वभाव का। —रंग=भद्दे रंग का। —राह=बुरी राह चलनेवाला। —शक्ल= कुरूप। बेडौल। —सलूकी =बुरा व्यवहार। बुराई। —सूरत=कुरूप। बेडौल। —हज़मी=अपच। अजीर्ण। —हवास=बेहोश। अचेत। व्याकुल।

बदन—(फ़ा०) शरीर।

बदरनवीसी—(फ़ा०) हिसाब-किताब की जाँच। हिसाब में गड़बड़ रक़म अलग करना।

बदल—(पु० अ०) हेरफेर। परिवर्तन। —ना=परिवर्तित होना या करना। विनिमय करना।

बदला—(पु० अ०) विनिमय। प्रतिफल। नतीजा।

बदली—(स्त्री० हि०) फैलकर छाया हुआ बादल। तबादला।

बदस्तूर—(फा०) ज्यों का त्यों।

बदा—(पु० हि०) नियत।

बदाबदी—(स्त्री० हि०) होड़। लागडाट।

बदौलत—(फा०) द्वारा। कृपा से।

बद्दू—(पु० देश०) बदनाम।

बद्ध—(वि० सं०) बँधा हुआ। निर्धारित।

बध—(पु० सं०) हत्या।

बधाई—(स्त्री० हि०) मुबारकबादी।

बधिक—(पु० हि०) बध करनेवाला। हत्यारा। जल्लाद। व्याध। बहेलिया।

बधिया—(पु० हि०) नपुंसक किया हुआ चौपाया। खस्सी।

बधिर—(पु० सं०) बहरा।

बध्य—(वि० सं०) मारने के योग्य।

बन—(पु० हि०) जंगल।

बनना—(क्रि० हि०) तैयार होना। रचा जाना। हो सकना। आपस में निभना। सजना। —पथ=जंगल का रास्ता। —वास=वन में बसना। —बिलाव=बिल्ली की जाति का एक जंगली जंतु। —मानुष=जंगली आदमी। —वनस्पति=पौधा। पेड़।

बनफशा—(पु० फा०) एक प्रकार की वनस्पति।

बनात—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाफर—(पु० हि०) क्षत्रियों की एक जाति।

बनाम—(अव्य० फा०) नाम पर। नाम से। किसी के प्रति।

बनारसी—(वि० हि०) काशी संबंधी।

बनाव—(पु० हि०) बनावट। रचना। शृंगार। बनावट=रचना। गढ़न। —बनावटी=नकली। कृत्रिम।

बनिया—(पु० हि०) वैश्य। व्यापार करनेवाला व्यक्ति।

बनियाइन—(स्त्री० हि०) गंजी।

बनिस्बत—(अव्य० फ़ा०) अपेक्षा। मुकाबले में।

बनेठी—(स्त्री० हि०) पटे बाजी के अभ्यास के लिये लम्बी लाठी जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।

बपतिस्मा—(पु० अं०) ईसाई सम्प्रदाय का एक मुख्य संस्कार।

बपौती—(स्त्री हि०) बाप से पाई हुई जायदाद।

बफर स्टेट—(पु० अं०) वह मध्यवर्ती छोटा राज्य जो दो बड़ राज्यों को एक दूसरे पर आक्रमण करने से रोकने का काम करे।

बफारा—(पु० हि०) औषध मिश्रित जल की भाप।

बबर—(पु० फ़ा०) सिंह।

बबूल—(पु० हि०) एक काँटेदार पेड़।

बबूला—(पु० हि०) बुलबुला। बुद्‌बुद। फेन।

बम—(पु० अं०) विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना एक प्रकार का गोला। —पुलिस = राह चलतों और मुसाफिरों के लिये बस्ती से दूर बना हुआ पाखाना। —चख = शोर। झगड़ा। विवाद।

बमुकाबला—(वि० फ़ा०) मुकाबले में। सामने। विरुद्ध।

बमूजिब—(वि० फ़ा०) अनुसार। मुताबिक।

बया—(पु० हि०) एक पक्षी।

बयान—(पु० फ़ा०) बखान। वर्णन। जिक्र। हाल। विवरण।

बयाना—(पु० फ़ा०) पेशगी। अगाऊ।

बयाबान—(पु० फ़ा०) जंगल। उजाड़।

बरअक्स—(फ़ा०) उलटा।

बरई—(पु० हि०) तमोली।

बरकंदाज—(पु० अ०—फ़ा०) चौकीदार। रक्षक।

बरकत—(स्त्री० अ०) बढ़ती।

बरकरार—(वि० फ़ा०) कायम। स्थिर।

बरखास्त—(वि० फा०) जिसकी बैठक समाप्त हो गई हो।
बरखिलाफ़—(वि० फा०अ०) प्रतिकूल। उलटा। विरुद्ध।
बरख़ुरदार—(फ़ा०) बेटा।
बरगद—(पु० हि०) बड़ का पेड़।
बरछा—(पु० हि०) भाला नामक हथियार।
बरजस्त—(फ़ा०) ठीक। चुस्त।
बरतन—(पु० हि०) पात्र। भाँड़ा।
बरतना—(क्रि० हि०) बरताव करना।
बरतरफ़—(फ़ा०अ०) बरख़ास्त।
बरताव—(पु० हि०) व्यवहार।
बरदाना—(क्रि० हि०) गाय को साँड़ से ओड़ा खिलाना।
बरदाफरोश—(पु० फ़ा०) दासों को खरीदने और बेचनेवाला। बरदाफरोशी = (फ़ा०) गुलाम बेचने का काम।
बरदार—(वि० फ़ा०) ढोनेवाला। ले आनेवाला।
बरदाश्त—(स्त्री० फा०) सहन।
बरनर—(पु० अ०) लंप का वह ऊपरी भाग जिसमें बत्ती लगाई जाती है।
बरपा—(वि० फ़ा०) खड़ा हुआ।
बरफी—(स्त्री० फ़ा०) एक मिठाई।
बरबस—(वि० हि०) बल पूर्वक। ज़बरदस्ती। व्यर्थ।
बरबाद—(वि० फ़ा०) नष्ट। चौपट। तबाह। बरबादी = नाश। खराबी। तबाही।
बरमला—(फ़ा०) सामने।
बरमा—(पु० देश०) छेद करने का लोहे का एक औज़ार।
बरस—(पु० हि०) वर्ष। साल। —गाँठ = जन्मदिन। साल-गिरह।
बरसात—(स्त्री० हि०) वर्षाकाल। वर्षाऋतु। बरसाती = बरसात का।
बरसाना—(क्रि० हि०) वर्षा करना। वृष्टि करना।
बरहम—(वि० फ़ा०) जिसे गुस्सा आ गया हो। उत्तेजित।
बरहा—(पु० हि०) खेतों में

बिचाई के लिये बनी हुई नाली।

बरही—(पु० हि०) पुत्र जन्म के बारहवें दिन का उत्सव।

बरा—(पु० हि०) उड़द की पीसी हुई दाल का बना हुआ, एक पकवान। बड़ा।

बरात—(स्त्री० हि०) जनेत। बराती=(पु० हि०) विवाह में वर पक्ष की ओर से सम्मिलित होने वाला।

बरामकोट—(पु० अ०) बड़ा कोट।

बराना—(क्रि० हि०) बचाना।

बराबर—(वि० हि०) तुल्य। एक सा। समान पद या मर्यादावाला। समतल। ठीक। लगातार। साथ। हमेशा। बराबरी=समानता। सामना।

बरामद—(वि० फ़ा०) खोई हुई, धारी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाला जाय।

बरामदा—(पु० फ़ा०) छज्जा। दालान। ओसारा। (अ०) बराडा।

बराय—(अव्य० फ़ा०) वास्ते। लिये। निमित्त।

बराव—(पु० हि०) परहेज़।

बरी—(स्त्री० हि०) उद या मूँग की गोल टिकिया। (वि० फ़ा०) मुक्त। छूटा हुआ।

बरेली—(स्त्री हि०) स्त्रियों का एक गहना।

बरौछी—(स्त्री० हि०) सूअर के बालों का बनी हुई कूँची।

बर्क—(फ़ा०) बिजली। बिजली की चमक।

बर्ग—(फ़ा०) पत्ता।

बर्फ—(स्त्री० फ़ा०) हिम। पाला। तुषार। बर्फिस्तान=बर्फ का मैदान या पहाड़।

बर्फी—(स्त्री० फ़ा०) एक मिठाई।

बर्बर—(वि० स०) असभ्य। जंगली आदमी। अशिष्ट।

बर्राक—(अ०) चमकीला।

बलन्द—(वि० फ़ा०) ऊँचा।

बल—(पु० स०) शक्ति

सामर्थ्य । सहारा । भरोसा । लपेट । मरोड़ । टेढ़ापन । सिकुड़न । —वान्=ताकत वर । शक्तिमान् । मजबूत । —शाली=बलवान् । —बलिष्ठ=अधिक बलवान । —बख़्शी=ताकतवर ।

बलबलाना—(क्रि॰ अनु॰) ऊँट का बोलना । व्यर्थ बकना ।

बलवा—(फ़ा॰) दंगा । हुल्लड़ । विप्लव । विद्रोह ।

बला—(अ॰) विपत्ति । कष्ट । रोग । व्याधि ।

बलिदान—(पु॰ सं॰) कुरबानी ।

बलिहारी—(स्त्री॰ हि॰) निछावर । कुरबान ।

बलूत—(पु॰ अ॰) माजूफल की जाति का एक पेड़ ।

बल्कि—(अव्य फ़ा॰) अन्यथा । इसके विरुद्ध । बहतर है ।

बल्ब—(पु॰ अ॰) शीशे का वह खोखला लट्टू जिसके अन्दर बिजली की रोशनी के तार लगे रहते हैं ।

बल्ला—(पु॰ हि॰) शहतीर या डंडा । बल्ली=छोटा बल्ला । खंभा । डाँड़ ।

बवासीर—(स्त्री॰ अ॰) अर्श रोग ।

बशारत—(अ॰) खुशख़बरी । शुभ समाचार ।

बशीर—(अ॰) शुभ समाचार देनेवाला ।

बसंत—(पु॰ सं॰) चैत और बैसाख के महीने । बसंती =बसंतऋतु सम्बन्धी । सरसों के फूल के रंग का । एक रंग का नाम । पीला कपड़ा ।

बस—(वि॰ फ़ा॰) भरपूर । काफ़ी ।

बसना—(क्रि॰ हि॰) आबाद होना । ठहरना । वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय । थैली ।

बसाना—(क्रि॰ हि॰) आबाद करना । ठहराना । महकना ।

बसारत—(अ॰) दृष्टि ।

बसूला—(पु॰ हि॰) एक हथियार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलते

और बढ़ते हैं। बसूली = छोटा बसूला।

बसेरा—(वि० हि०) टिकने की जगह। घोसले में बैठना।

बस्ट—(पु० अं०) मुख अथवा छाती के ऊपर का चित्र।

बस्ता—(पु० फा०) बेठन। कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें पुस्तक और बहीखाते इत्यादि बाँधकर रखे जाते हैं।

बस्तार—(पु० फ़ा०) पुलिंदा। एक में बँधी हुई बहुत सी वस्तुओं का समूह।

बस्ती—(स्त्री० हि०) आबादी। निवास।

बहँगा—(पु० हि०) बड़ी बहँगी। बहँगा=काँवर। बोझा ले चलने के लिये तराजू के आकार का ढाँचा।

बहकना—(क्रि० हि०) भटकना। मार्गभ्रष्ट होना। चूकना। बहकाना=रास्ता भुलवाना। भटकाना। लक्ष्य भ्रष्ट करना।

बहना—(क्रि० हि०) प्रवाहित होना। पानी की धारा में पड़ जाना। हवा का चलना। मारा मारा फिरना। आवारा होना।

बहनोई—(पु० हि०) बहन का पति। बहनोरा=बहन की ससुराल।

बहबूदी—(स्त्री० फ़ा०) लाभ। भलाई। फायदा।

बहर—(अ०) समुद्र। गीत की लय। बहरी=समुद्री।

बहरा—(वि० हि०) न सुनने वाला।

बहल—(स्त्री० हि०) रथ के आकार की बैलगाड़ी।

बहलना—(क्रि० हि०) कष्ट या दुःख की बात भूलना और चित्त का दूसरी ओर लगना। भुलावा देना। बहकाना। बहलाना=मनोरंजन करना। भुलावा देना। बहकाना। बहलाव=मनोरंजन। प्रसन्नता।

बहली—(स्त्री० हि०) रथ के आकार की बैलगाड़ी।

बहस—(स्त्री० अ०) दलील।

सुंदर और बनाठना। बाँकी = लोहे का बना हुआ एक औज़ार। छैल छबीली।

बाँकपन—(हि०) टेढ़ापन। छैलापन। बनावट। सजावट। शोभा।

बाँग—(स्त्री० फ़ा०) आवाज़। अज़ान। प्रातःकाल के समय मुरगे के बोलने का शब्द।

बाँगड़—(वि० हि०) मूर्ख। बेवकूफ़।

बाँचना—(क्रि० हि०) पढ़ना।

बांझ—(स्त्री० हि०) बंध्या।

बांट—(पु० हि०) भाग। हिस्सा।
बाँटना = विभाग करना। वितरण करना।

बाँड़ा—(पु० देश०) वह पशु जिसकी पूँछ कट गई हो। परिवारहीन पुरुष।

बाँदी—(स्त्री० फ़ा०) लौंडी। दासी।

बाँध—(पु० हि०) बंद। धुस्स।

बाँधना—(क्रि० हि०) गाँठ देना। क़ैद करना। पाबंद करना। नियत करना।
बाँधनू = मंसूबा। उपक्रम।

बाँस—(पु० हि०) एक वनस्पति।

बाँसुरी—(स्त्री० हि०) मुरली। वंशी।

बाँह—(स्त्री० हि०) भुजा। बाहु। हाथ।

बाइप्लेन—(पु० अं०) एरोप्लेन या वायुयान का एक भेद।

बाइबिल—(स्त्री० यू०) ईसाइयों की धर्म पुस्तक। इञ्जील।

बाइस—(अ०) कारण। सबब।

बाइसिक्लि—(स्त्री० अं०) पैरगाड़ी।

बाई—(स्त्री० हि०) वायु का प्रकोप। स्त्रियों के लिये एक आदर-सूचक शब्द।

बाउटी—(स्त्री० अ०) सहायता। मदद।

बाकी—(वि० अ०) शेष।

बाख़बर—(फ़ा०) जाननेवाला। वाक़िफ़।

बाग—(पु० अ०) उपवन । वाटिका । —बान=(फ़ा०) माली । —बानी=(फा०) माली की जगह ।

बागडोर—लगाम ।

बागर—(पु० देश०) नदी के किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं ।

बागी—(पु० अ०) विद्रोही । राजद्रोही ।

बागीचा—(पु० फ़ा०) छोटा बाग । उपवन ।

बाघ—(पु० हि०) शेर ।

बाघंबर—(पु० हि०) बाघ की खाल । एक प्रकार का रोएँदार कंबल ।

बाज़—(पु० अ०) एक शिकारी पक्षी । कुछ । थोड़े । बगैर । बिना । (फ़ा०) महसूल । लगान ।—गुज़ार=महसूल अदा करनेवाला । —दावा=(फा०) अपने अधिकारों का त्याग ।

बाज़रा—(पु० हि०) एक अन्न ।

बाजा—(पु० हि०) बजाने का यन्त्र । वाद्य ।

बाजाब्ता—(क्रि० फा०) नियमानुसार ।

बाज़ार—(पु० फा०) हाट । बाजारी=बाजार संबधी । मामूली । बाज़ारू=(फा०) मर्यादा रहित । अशिष्ट ।

बाज़ी—(स्त्री० फा०) शर्त । दाँव । बदान ।

बाज़ीगर—(पु० फ़ा०) जादूगर ।

बाज़ू—(पु० फा०) भुजा । बाँह पर पहनने का बाज़ूबंद नाम का गहना । तरफ़ । ओर । पक्षी का डैना ।

बाट—(पु० हि०) मार्ग । रास्ता । पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज़ पीसी जाय । पत्थर आदि का वह टुकड़ा जो तौलने के काम आता है ।

वाटिका—(स्त्री० स०) बाग । फुलवाड़ी ।

बाटी—(स्त्री० हि०) गोली । पिंड । अंगारों या उपलों

आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की रोटी।

वाडकिन—(पु० अ०) छापखाने में और दफ्तरख़ाने में काम आनेवाला एक प्रकार का सूआ।

वाढ़—(स्त्री० हि०) वृद्धि। तेज़ी। ज़ोर।

वाडी—(स्त्री० अ०) अँगरेज़ी ढंग की एक प्रकार की अँगिया या कुरती।

बाड़ा—(पु० हि०) चारों ओर से घिरा हुआ विस्तृत। ख़ाली स्थान पशुशाला। बाड़ी = वाटिका।

बाडिस—(स्त्री० अ०) स्त्रियों के पहनने की अँगरेज़ी ढंग की कुरती। बाडी। बाडी गार्ड—(अ०) शरीर-रक्षक।

बाढ़—(स्त्री० हि०) अधिकता। जल प्लावन।

बाण—(पु० स०) तीर।

वाणिज्य—(पु० सं०) व्यापार। रोज़गार।

बात—(स्त्री० हि०) वचन। वाणी। कथन। चर्चा। बहाना। वादा। मान मर्यादा। इज़्ज़त। प्रतिष्ठा। रहस्य। भेद।

बातिन—(अ०) अन्त करण। अन्दरूनी।

बाती—(स्त्री० हि०) बत्ती।

बाद—(पु० स०) बहस। तर्क। विवाद। झगड़ा। (अ०) पश्चात्। पीछे। दस्तूरी या कमीशन। अतिरिक्त। सिवाय। (फ़ा०) बात। हवा। —सबा = प्रात काल की वायु। —फिरङ्ग = आतशक का रोग। —कश = लुहार की धौंकनी। —नुमा = (फ़ा०) वायु की दिशा सूचित करनेवाला यंत्र। —बान = (फा०) पाल।

बादल—(पु० हि०) मेघ। घन। एक प्रकार का पत्थर जो दूधिया रंग का होता है।

बादशाह—(पु० फ़ा०) राजा। शासक। सरदार। स्वतंत्र। शतरंज का एक मुहरा। ताश

का एक पत्ता। —ज़ादा=(फ़ा०) राजकुमार। —त=राज्य। शासन। हुकूमत। बादशाही=राज्य। राज्याधिकार। शासन। हुकूमत। मनमाना व्यवहार। बादशाह का। राजाओं के योग्य।

बादहवाई—(क्रि० फ़ा०) यों ही। व्यर्थ। फ़ज़ूल।

बादाम—(पु० फ़ा०) एक मेवा। बादामी=बादाम के छिलके के रंग का। बादाम के आकार का एक प्रकार का धान।

बादियान—(फ़ा) सौंफ़।

बादी—(वि० फ़ा०) बात या विचार करनेवाला। किसी के विरुद्ध अभियोग लानेवाला। मुद्दई। वैरी। शत्रु। राग में प्रधान रूप से लगनेवाला स्वर।

बाध—(पु० सं०) मूँज की रस्सी। बाधक=रुकावट डालनेवाला। विघ्नकर्ता। दुःखदायी।

बाधा—(स्त्री० सं०) रुकावट। अड़चन। विघ्न। बाधित=जो रोका गया हो। बाध्य=विवश किया जानेवाला। मजबूर होनेवाला।

बानगी—(स्त्री० हि०) नमूना।

बानर—(पु० सं०) बंदर।

बाना—(पु० हि०) पहनावा। पोशाक। एक हथियार। कपड़े की बुनावट।

बानी—(फ़ा०) पेड़ों पर उगने वाला एक पौधा। जड़ जमाने वाला।

बानू—(फ़ा०) बेगम।

बाप—(पु० हि०) पिता। जनक।

बाब—(पु० अ०) परिच्छेद। पुस्तक का कोई विभाग।

बाबत—(स्त्री० अ०) संबंध। विषय।

बावरची—(पु० फ़ा०) भोजन बनानेवाला। रसोइया।

बाबा—(पु० तु०) पिता। साधु संन्यासियों के लिये आदर सूचक शब्द। बूढ़ा पुरुष। पितामह। दादा।

बाबू—(पु० हि०) एक आदर सूचक शब्द। महाशय।

बॉयकाट—(पु० अं०)बहिष्कार।

बॉय स्काउट—(पु० अं०) बालचर।

बॉयस्कोप—(पु० अं०) सिनेमा।

बायाँ—(वि० हि०) दहने का उलटा।

बायें—(क्रि० हि०) बाई ओर।

बारबार—(क्रि० हि०) बार बार। लगातार। पुन पुन।

बार—(पु० हि०) द्वार। दर वाज़ा। देर। विलंब। दफा। मरतबा। बोझ। भार।

बारक—(स्त्री० अं०) छावनी आदि में सैनिकों के रहने के लिए बना हुआ पक्का मकान।

बारदाना—(पु० फा०) व्यापार की चीज़ों के रखने का बर तन। रसद। वह अस्तर जो बँधी हुई पगड़ी के नीचे लगा रहता है।

बारनिश—(स्त्री० अं०) फेरा हुआ रोगन या चमकीला रंग।

बारबरदार—(फा०) बोझ ढोने वाला। बारबरदारी=(फा०) सामान ढोने का काम। सामान ढोने की मज़दूरी।

बारहदरी—(स्त्री० हि०) वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार हों।

बारहमासा—(पु० हि०) वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेष ताओं का वर्णन किसी विरही या विरहिणी के मुँह से कराया गया हो।

बारहमासी—(वि० हि०) सदा-बहार। सदाफल। सब ऋतुओं में फलने फूलनेवाला।

बारहवफात—(पु० अ०) एक अरबी महीना।

बारहसिंगा—(पु० हि०) हिरन की जाति का एक पशु।

बारिक—(पु० अ०) छावनी। —मास्टर=(अ०) वह प्रधान कर्मचारी जो बारिक की देख भाल और प्रबंध करता हो।

बारिश—(स्त्री० फा०) वर्षा। वृष्टि। वर्षा-ऋतु।

बारिस्टर—(पु० अ०) वह वकील जिसने विलायत में रहकर क़ानून की परीक्षा पास की हो।

बारीक—(वि० फा०) महीन। पतला। सूक्ष्म। बारीकी=(फा०) महीनपन। पतलापन। खूबी।

बारूद—(स्त्री० तु०) दारू। अग्निचूर्ण। —खाना=वह स्थान जहाँ गोला बारूदादि लड़ाई का सामान रहता है।

बारे में—(अव्य० फा० हि०) विषय में। संबंध में। प्रसंग में।

बारोमीटर—(पु०) एक यंत्र जिससे हवा का दबाव मालूम होता है।

बार्डर—(पु० अ०) किसी चीज़ के किनारों पर बना हुआ बेलबूटा। हाशिया।

बाल—(पु० सं०) बालक। लड़का। केश। कुछ अनाजों के पौधों के डंठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुछे रहते हैं। —चर=बायस्काउट। —काल=बचपन। बाल्यावस्था। —बच्चे=लड़केवाले। संतान। औलाद। —विधवा=वह स्त्री जो बाल्यावस्था ही में विधवा हो गई हो। —ब्रह्मचारी=बहुत ही छोटी उम्र से ब्रह्मचर्य व्रत रखनेवाला।

बालक—(पु० सं०) लड़का। पुत्र। शिशु। अनजान आदमी।

बालटी—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की डोलची।

बालना—(क्रि० हि०) जलाना। रोशन करना।

बाला—(सं०) नवयुवती।

बाला—(फा०) ऊँचा। —ई=ऊँचाई। ऊपरी।

बालावर—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का अँगरखा।
बालिका—(स्त्री० सं०) कन्या।
बालिग—(पु० अ०) जवान।
बालिश—(स्त्री० फ़ा०) तकिया।
बालिश्त—(पु० फ़ा०) बित्ता। बीता।
बालिस ट्रेन—(स्त्री० अं०) वह रेलगाड़ी जिस पर सड़क बनाने के सामान (कंकड़ आदि) लादकर भेजे जाते हैं।
बाली—(स्त्री० हि०) कान में पहनने का एक आभूषण। जौ, गेहूँ, ज्वार आदि के पौधों का वह ऊपरी भाग या सींका जिसमें अन्न के दाने लगते हैं।
बालू—(पु० हि०) रेत। रेणुका। —दानी=बालू रखने की डिबिया।
बालूसाही—(स्त्री० हि०) एक मिठाई।
बाल्यावस्था—(स्त्री० सं०) प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।
बावजूद—(फ़ा०) तिस पर भी। तो भी।
बावरची—(पु० फ़ा०) भोजन पकानेवाला। रसोइया। —खाना=भोजन पकाने का स्थान। पाकशाला। रसोईघर।
बावला—(वि० हि०) पागल। —पन=पागलपन।
बावली—(स्त्री० हि०) चौड़े मुँह का कुआँ, जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों। पगली।
बाशिंदा—(पु० फ़ा०) रहने वाला। निवासी।
बास—(पु० हि०) निवास। रहने का स्थान। बू। गंध।
बासमती—(पु० हि०) एक प्रकार का धान।
बासा—(पु० हि०) भोजनालय।
बासी—(वि० हि०) देर का बना हुआ।
बाहम—(क्रि० फ़ा०) आपस में। परस्पर।

बाहर—(क्रि॰ हि॰) भीतर या अंदर का उलटा। किसी दूसरे स्थान पर।

बाहरी—(वि॰ हि॰) बाहर का। पराया। गैर। अजनबी। ऊपरी।

बाहुबल—(पु॰ स॰) बहादुरी। पराक्रम।

बाहुल्य—(पु॰ स॰) बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

बिंदी—(स्त्री॰ हि॰) शून्य। बिंदु। माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका। बिंदुली।

बिकना—(क्रि॰ हि॰) बेचा जाना। बिक्री होना।

बिकवाना—(क्रि॰ हि॰) बेचने का काम दूसरे से कराना।

बिकाऊ—(वि॰ हि॰) बिकने वाला। जो बिकने के लिये हो।

बिकारी—(वि॰ हि॰) बुरा। हानिकारक। एक प्रकार की टेढ़ी पाई।

बिक्री—(स्त्री॰ हि॰) विक्रय। बेचना।

बिखरना—(क्रि॰ हि॰) छितराना। तितर बितर होना।

बिगड़ना—(क्रि॰ हि॰) खराब हो जाना। अच्छा न रह जाना। खराब दशा में आना। चाल चलन का खराब होना। क्रुद्ध होना। लड़ाई झगड़ा होना। विरोधी होना। बे-फ़ायदा खर्च होना।

बिगड़ेदिल—(पु॰ हि॰) हर बात में लड़ने झगड़ने वाला।

बिगड़ैल—(वि॰ हि॰) हर बात में क्रोध करनेवाला। हठी। ज़िद्दी। बुरे रास्ते पर चलने वाला।

बिगाड़—(पु॰ हि॰) बुराई। दोष। झगड़ा।—ना = किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। बुरी दशा में लाना। कुमार्ग में लगाना। पातिव्रत्य भंग करना। स्वभाव खराब करना।

बिगुल—(पु॰ अ॰) अँगरेज़ी ढंग की एक प्रकार की तुरही।

बिगुलर=(अ०) फौज में बिगुल बजानेवाला।
बिग्रह—(पु० हि०) झगड़ा लड़ाई। कलह।
बिचकना—(क्रि० हि०) बिदकना। हाथ से निकल जाना।
बिचकाना—(क्रि० अनु०) बिदाना। किसी को चिढ़ाने के लिए मुँह टेढ़ा करना।
बिछना—(क्रि० हि०) फैलाया जाना। बिछाया जाना। छितराया जाना।
बिछाना—(क्रि० हि०) फैला देना। बिखराना।
बिछिया—(स्त्री० हि०) पैर की उंगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।
बिछुआ—(पु० हि०) पैर में पहनने का एक गहना। एक छोटा सा शस्त्र। छुरा छुआ।
बिछुड़ना—(क्रि० हि०) जुदा होना। अलग होना। वियोग होना।
बिछुड़—(पु० हि०) जुदाई। वियोग।
बिछौना—(पु० हि०) बिस्तर।
बिजन—(पु० स०) निर्जन स्थान सुनसान जगह। अकेला।
बिजली—(स्त्री० हि०) विद्युत। बादलों की रगड़ से आकाश में चमकनेवाला प्रकाश।
बिजायठ—(पु० हि०) बाँह पर पहनने का बाजूबंद।
बिजौरा—(पु० हि०) नीबू की जाति का एक वृक्ष।
बिज्जू—(पु० देश०) बिल्ली के आकार प्रकार का एक जंगली जानवर।
बिडंबना—(क्रि० हि०) नकल। उपहास। बदनामी।
बित्ता—(पु० हि०) बालिश्त।
बित्ती—(स्त्री० हि०) वह धन जो दूकानदार लोग गोशाला या और किसी धर्म कार्य के लिये, माल का दाम चुकाने के समय, काटकर अलग रखते हैं।
बिदकना—(क्रि० हि०) भड़कना। बिदकाना=भड़काना।
बिदहना—(पु० हि०) धान या

कइनी आदि की फसल पर आरम में पाटा या हेंगा चलाना।
विदा—(स्त्री० फ़ा०) प्रस्थान। गमन। रवानगी। रुखसत। गौना। द्विरागमन। विदाई = विदा होने की आज्ञा। वह धन जो किसी को विदा होने के समय, उसका सत्कार करने के लिये दिया जाता है।
विद्दत—(स्त्री० अ०) खराबी। दोष। तकलीफ। आफत। अत्याचार। दुर्दशा।
विधवा—(वि० स०) रॉड़।
विनती—(स्त्री हि०) प्रार्थना। निवेदन।
विना—(अ-य० हि०) छोड़कर। बगैर। (फ़ा०) आधार। जड़।
विनोल।—(पु०) कपास का बीज।
विपदा—(स्त्री० हि०) आफ़त। सकट।
विवाई—(स्त्री० हि०) एक रोग जिसमें पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है और वहाँ छिद्र हो जाता है।
विरगिड—(स्त्री० अ०) सेना का एक विभाग।
विरला—(वि० हि०) कोई कोई।
विरहा—(पु० हि०) अहीरों का गीत।
विरादर—(पु० फा०) भाई। भ्राता। बिरादरी = भाई-चारा। बधुत्व। जातीय-समाज।
विराना—(क्रि० हि०) मुँह चिढ़ाना। चुनना। छाँटना।
विल—(पु० हि०) छेद। दरार। (अ०) बीजक। हिसाब।
विलाना—(क्रि० हि०) अलग होना। नष्ट होना।
विलटी—(स्त्री० अ०) रेल के द्वारा भेजे जाने वाले माल की वह रसीद जो रेलवे कम्पनी से मिलती है।
विलनी—(स्त्री० हि०) काली भौंरी। भ्रमरी।
विलफेल—(क्रि० अ०) इस समय। अभी।

बिलबिलाना—(क्रि॰ अनु॰) छोटे छोटे कीड़ों का इधर उधर रेंगना। व्याकुल होकर बकना।

बिलहरा—(पु॰ हि॰) बाँस की तीलियों या बेंत आदि का बना हुआ संपुट जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।

बिलल्ला—(वि॰ देश॰) बावला। मूर्ख। आवारा।

बिला—(अव्य॰ अ॰) बिना। बग़ैर।

बिलियर्ड—(पु॰ अं॰) एक अँगरेज़ी खेल।

बिलोना—(क्रि॰ हि॰) मथना।

बिलमुक्ता—(वि॰ अ॰) जो घट बढ़ न सके।

बिल्ला—(पु॰ हि॰) बिडाल। चपरास।

बिल्ली—(स्त्री॰ हि॰) एक जानवर।

बिल्लौर—(पु॰ हि॰) एक प्रकार का स्वच्छ सफ़ेद पत्थर। बहुत स्वच्छ शीशा।

बिशप—(पु॰ अं॰) ईसाई मत का बड़ा पादरी।

बिसखपरा—(पु॰ हि॰) गोह की जाति का एक विषैला जंतु।

बिसमिल—(वि॰ फ़ा॰) घायल। ज़ख़्मी।

बिसमिल्लाह—(पु॰ अ॰) श्रीगणेश। आरंभ। आदि।

बिसायँध—(वि॰ हि॰) सड़ी मछली या सड़े मांस की सी गंधवाला। दुर्गंध। बदबू।

बिसात—(स्त्री॰ अ॰) हैसियत। समाई। जमा। पूँजी। सामर्थ्य। शतरंज। चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा। बिसाती = छोटी चीज़ों का दूकानदार।

बिसारना—(क्रि॰ हि॰) भुला देना। स्मरण न रखना।

बिस्कुट—(पु॰ अं॰) खमीरी आटे की तंदूर पर पकी हुई टिकिया।

बिस्तर—(पु॰ हि॰) बिछौना।

बिस्तुइया—(स्त्री॰ हि॰) छिपकली।

बिहतर—(वि० फ़ा०) बहुत अच्छा। बिहतरी=भलाई। कुशल।
बिहाग—(पु०) एक राग।
बिहिश्त—(स्त्री० फ़ा०) स्वर्ग। वैकुंठ।
बिही—(स्त्री० फ़ा०) अमरूद की तरह का एक पेड़। —दाना=बिही नामक फल का बीज
बींड़ी—(स्त्री० हि०) बैलगाड़ी में तीसरा बैल जो आगे रहता है।
बीघा—(पु० हि०) बीस बिस्वा ज़मीन।
बीच—(पु० हि०) मध्य।
बीचोबीच—(क्रि० हि०) बिल कुल बीच में। ठीक मध्य में।
बीछना—(क्रि० हि०) चुनना। छाँटना।
बीज—(पु० सं०) दाना। तुख्म। जड़। मूल। हेतु। कारण। शुक्र। वीर्य।
बीजक—(पु० सं०) सूची। फ़िह रिस्त।
बीट—(स्त्री० हि०) पक्षियों की विष्ठा। गुह। मल।
बीड़ी—(स्त्री० हि०) पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग हुक्के या सिगरेट आदि के स्थान में सुलगाकर पीते हैं।
बीतना—(क्रि० हि०) वक्त कटना। समय गुज़रना।
बीन—(स्त्री० हि०) एक बाजा।
बीबी—(स्त्री० फ़ा०) कुलवधू। पत्नी।
बीभत्स—(वि० सं०) घृणित।
बीम—(पु० अ०) जहाज़ की मस्तूल।
बीमा—(पु० फ़ा०) हानि पूरी करने की ज़िम्मेदारी।
बीमार—(वि० फ़ा०) रोगी। —दारी=रोगियों की शुश्रूषा। बीमारी=रोग। व्याधि। झंझट। बुरी आदत।
बीर—(पु० हि०) शूर। पराक्रमी। बलवान्।

बीरबहूटी—(स्त्री० हि०) एक छोटा रेंगनेवाला कीड़ा।

बीसी—(स्त्री० हि०) बीस चीज़ों का समूह। कौड़ी।

बीहड़—(वि० हि०) ऊँचा नीचा। विषम। विकट।

बुँदेला—(पु० हि०) क्षत्रियों का एक वंश।

बुक—(स्त्री० हि०) कलफ़ किया हुआ महीन, पर बहुत करारा कपड़ा। महीन पन्नी। (अं०) किताब। —सेलर =पुस्तकें बेचनेवाला।

बुक्चा—(पु० फ़ा०) गठरी।

बुक्का—(स्त्री० सं०) हृदय। कलेजा। गुरदे का मांस। प्राचीनकाल का एक प्रकार का बाजा।

बुख़ार—(पु० अ०) भाप। ज्वर। ताप।

बुगदा—(पु० फ़ा०) कसाइयों का छुरा।

बुज़दिल—(वि० फ़ा०) कायर। डरपोक।

बुज़ुर्ग—(वि० फ़ा०) बुड्ढा। बड़ा। बुज़ुर्गी=बड़ापन।

बुझना—(क्रि० हि०) जलने का अंत हो जाना। ठंढा होना।

बुझाना—(क्रि० हि०) अग्नि शांत करना। पानी डालकर ठंढा करना।

बुढ़ाई—(स्त्री० हि०) बुढ़ापा।

बुढ़ापा—(पु० हि०) वृद्धावस्था।

बुत—(पु० फ़ा०) मूर्ति। प्रतिमा। प्रियतम। मूर्ति की तरह चुपचाप बैठा रहनेवाला। —परस्त= मूर्तिपूजक। रसिक। सौंदर्योपासक। —परस्ती=मूर्तिपूजा। —शिकन=मूर्तिपूजा का घोर विरोधी।

बुताम—(पु० अं०) बटन। घुंडी।

बुत्ता—(पु० देश०) धोखा। झाँसा। बहाना। हीला।

बुदबुदा—(पु० हि०) पानी का बुलबुला। बुल्ला।

बुद्ध—(वि० सं०) जो जागा हुआ हो। ज्ञानवान।

बुद्धि—(स्त्री० सं०) विवेक। अक्ल। समझ। —मत्ता=समझदारी। अक्लमंदी। —मान्=समझदार। अक्लमंद। —मानी=समझदारी। अक्लमंदी।

बुध—(पु० सं०) एक ग्रह।

बुनना—(क्रि० हि०) जुलाहों का काम।

बुनावट—(स्त्री० हि०) सूतों की मिलावट।

बुनियाद—(स्त्री० फा०) जड़। नींव। असलियत। वास्तविकता।

बुरकना—(क्रि० अनु०) भुर भुराना। छिड़कना।

बुरा—(वि० हि०) खराब। निकृष्ट। बुराई=खराबी। नीचता। दोष। अवगुण। ऐब।

बुरादा—(पु० फा०) लकड़ी का चूरा।

बुरुश—(पु० अं०) कूँची।

बुर्का—(अ०) स्त्रियों के पहनने का पर्दे का कपड़ा।

बुर्ज—(पु० अ०) गरगज। किले आदि की दीवारों में, आगे की ओर निकला हुआ गोल या पहलदार भाग। मीनार का ऊपरी भाग। गुंबद। राशिचक्र।

बुर्द—(स्त्री० फा०) ऊपरी आमदनी। ऊपरी लाभ। नफा। शर्त। बाजी। —बार=सहनशील।

बुलंद—(वि० फा०) भारी। बहुत ऊँचा। बुलंदी=ऊँचाई।

बुलडाग—(पु० अं०) विलायती कुत्ता।

बुलबुल—(स्त्री० फा०) एक चिड़िया।

बुलबुला—(पु० हि०) बुदबुदा। पानी का बुल्ला।

बुलाक—(पु० तु०) नाक का गहना।

बुलाकी—(पु० तु०) घोड़े की एक जाति।

बुलाना—(क्रि० हि०) पुकारना। आवाज देना। अपने पास आने के लिये कहना।

बुलावा—(पु० हि०) निमंत्रण।

बेफायदा—(वि० अ०) नियम विरुद्ध।

बेकार—(वि० फ़ा०) निकम्मा। व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बेकारी=निकम्मापन। काम धंधा का न होना।

बेकसूर—(वि० अ०) निरपराध।

बेख—(स्त्री० फ़ा०) जड़। मूल।

बेखटक—(वि० हि०) निस्संकोच।

बेखतर—(वि० अ०) निर्भय। निडर।

बेखता—(वि० अ०) बेकसूर। निरपराध।

बेखबर—(वि० फ़ा०) अनजान। नावाकिफ। बेहोश। बेसुध।

बेखबरी—(स्त्री० फ़ा०) अज्ञानता। बेहोशी।

बेखौफ़—(वि० फ़ा०) निडर। निर्भय।

बेगम—(स्त्री० तु०) रानी। राजपत्नी। तास का एक पत्ता जिस पर एक स्त्री या रानी का चित्र बना होता है।

बेगरज—(फ़ा०+अ०) जिसे कोई ग़रज़ या परवा न हो। व्यर्थ।

बेगरजी—(स्त्री० फ़ा० अ०) बिना मतलब का।

बेगाना—(वि० फ़ा०) पराया। गैर। बेगानगी=(फ़ा०) परायापन।

बेगार—(स्त्री० फ़ा०) बिना मजदूरी का जबरदस्ती लिया हुआ काम। बेगारी=(फ़ा०) बेगार में काम करनेवाला आदमी।

बेगुनाह—(वि० फ़ा०) बेक़सूर। निर्दोष।

बेचना—(क्रि० हि०) विक्रय करना। फ़रोख्त करना।

बेचारा—(वि० फ़ा०) गरीब। दीन।

बेचिराग—(वि० फ़ा+अ०) उजड़ा हुआ।

बेचैन—(वि० फ़ा०) व्याकुल। विकल। बेचैनी=विकलता। व्याकुलता। घबराहट।

बेजड—(वि० हि०) बे बुनियाद। निर्मूल।

बेजबान—(वि० फ़ा०) गूँगा। गरीब।
बेजा—(वि० फा०) बेमौके। बे ठिकाने। अनुचित। ना मुनासिब। खराब। बुरा।
बेजान—(वि० फ़ा०) मुरदा। कमज़ोर।
बेजाब्ता—(वि० फा० + अ०) क़ानून के विरुद्ध।
बेजार—(वि० फ़ा०) व्यथित।
बेजोड़—(वि० हि०) जिसमें जोड़ न हो। निहरम। अद्वितीय।
बेट—(पु० अ०) बाजी। दाँव। शर्त।
बेटा—(पु० हि०) पुत्र। लड़का। बेटी = लड़की।
बेठन—(पु० हि०) बँधना।
बेठिकाने—(वि० हि०) ऊल जलूल। व्यय। निरथक।
बेड—(पु० अ०) नीचे का भाग। तल। बिस्तर। बिछौना।
बेडा—(पु० हि०) तिरना। जहाज़ों या नावों का समूह। आदा।
बेडी—(स्त्री० हि०) लोहे की ज़ंजीर जो कैदियों के पहनाई जाती है।
बेडौल—(वि० हि०) भद्दा। बेढंगा।
बेढंगा—(वि० हि०) भद्दा। कुरूप। —पन = भद्दापन।
बेढ़ई—(स्त्री० हि०) पचौड़ी। भरी हुई रोटी या पूरी।
बेढ़ना—(क्रि० हि०) रूँधना। चौपायों का घेरकर हाँक ले जाना।
बेढब—(वि० हि०) बेढंगा। भद्दा।
बेतकल्लुफ—(वि० फ़ा० + अ०) सरल। निर्व्याज। निश्छल। बेतकल्लुफी = सरलता। सादगी।
बेतकसीर—(वि० फा + अ०) निरपराध। बेगुनाह।
बेतमीज—(वि० फ़ा + अ०) बेशहूर। बेहूदा। उजड्ड।
बेतरह—(क्रि० फा + अ०) बुरी तरह से। अनुचित रूप से। विलक्षण ढंग से।

वेतरीका—(वि० फा०+अ०) बेकायदा। अनुचित।

वेतहाशा—(क्रि० फा०+अ०) बहुत अधिक तेजी से। बिना सोचे समझे।

वेताब—(वि० फा०) दुबल। कमजोर। विकल। व्याकुल। बेताबी=कमजोरी। दुबलता। बेचैनी। घबराहट।

वेतार—(वि० हिं०) बिना तार का।

वेतुका—(वि० हि०) बमेल।

वेतौर—(क्रि० फा०+अ०) बुरी तरह से। बेतरह।

वेदखल—(वि० फा०) अधिकार च्युत। बेदखली=अधिकार में न रहने देना।

वेदम—(वि० फा०) मृतक। मुरदा। अधमरा। मृतप्राय।

वेदर्द—(वि० फा०) कठोर हृदय। निर्दय। बेदर्दी=निर्दयता। कठोरता। बेरहमी।

वेदाग—(वि० फा०) निर्दोष। शुद्ध। बिना धब्बे का।

वेदाना—(पु० हि०) काबुली अनार।

वेधड़क—(क्रि० फा०+हि०) नि सकोच। निडर होकर। बेलाग। बेरुकावट। निडर।

वेनजीर—(वि० फा०+अ०) अनुपम।

वेनट—(स्त्री० अ०) संगीन।

वेनसीब—(वि० हि०+अ०) अभागा। बदकिस्मत।

वेना—(पु० हि०) बाँस का बना हुआ पंखा।

वेनागा—(क्रि० फा०+हि०) लगातार। नित्य। बिना नागा डाले।

वेलुली—(स्त्री० देश०) जाँते या चक्की में वह छोटी सी लकड़ी जो किल्ले के ऊपर रखी जाती है।

वेपरद—(वि० फा०) नङ्गा। नग्न। बेपरदगी=परदे का अभाव।

वेपरवा वेपरवाह—(वि० फा०) बेफिक्र। मन मौजी। उदार।

वेपेंदी—(वि० हि०) जिसमें पेंदा न हो।

बेफायदा—(वि॰ फ़ा॰) व्यर्थ।

बेफिकरा—(वि॰ हि॰ फा॰) निश्चिन्त।

बेफिक्र—(वि॰ फ़ा॰) बेपरवा। बेफिक्री = निश्चिन्तता।

बेबस—(अ॰) लाचार। परवश।

बेबसी—(स्त्री॰ हि॰) लाचारी। मजबूरी।

बेबाक—(वि॰ फा॰) चुकाया हुआ।

बेबुनियाद—(वि॰ फ़ा॰) निर्मूल।

बेभाव—(क्रि॰ फ़ा॰) बेहद। बेहिसाब।

बेमज़ा—(वि॰ फा॰) जिसमें कोई आनन्द न हो।

बेमन—(क्रि॰ फ़ा॰) बिना मन लगाये।

बेमरम्मत—(वि॰ फा॰) बिना सुधरा। टूटा फूटा।

बेमालूम—(क्रि॰ फ़ा॰) बिना किसी को पता लगे।

बेमिलावट—(वि॰ हि॰) बेमेल। शुद्ध। ख़ालिस।

बेमुनासिब—(वि॰ फा॰) अनुचित।

बेमुरव्वत—(वि॰ फ़ा॰) शील सकोच रहित। बेमुरव्वती = दुःशीलता।

बेमौका—(वि॰ फ़ा॰) अवसर का अभाव।

बेमौसिम—(वि॰ फ़ा॰) उपयुक्त मौसिम या ऋतु न होने पर भी होनेवाला।

बेरस—(वि॰) रस हीन। बुरे स्वादवाला।

बेरहम—(वि॰ फ़ा॰) निठुर। निर्दय। बेरहमी = निर्दयता। निष्ठुरता।

बेरा—(पु॰ अ॰) साहब लोगों का वह चपरासी जिसका काम चिट्ठी पत्री या समाचार आदि पहुँचाना और ले आना आदि होता है।

बेरी—(स्त्री॰ हि॰) एक लता। एक कँटीला वृक्ष।

बेरुख—(वि॰ फ़ा॰) बेमुरव्वत। नाराज़। क्रुद्ध।

बेरुखा—(स्त्री० फ़ा०) बेमुरव्वती।

बेगोर—(वि० फा०+हि०) बेखटके। निर्विघ्न।

बेरोजगार—(वि० फा०) बिना काम धंधे का।

बेरौनक—(वि० फ़ा०) उदास।

बेर्रा—(पु० देश०) मिले हुए जौ और चने का साग।

बेल—(पु० हि०) श्रीफल। बिल्व। एक कटीला वृक्ष। (पु० फ़ॉ०) गाँठ। जमानत।

बेलचा—(पु० फा०) एक प्रकार की छोटी कुदाल। एक प्रकार की लंबा खुरपी।

बेलज्जत—(वि० फ़ा०) स्वाद हीन। मुस्वाद्धित।

बेलदार—(पु० फ़ा०) फावड़ा चलाने या ज़मीन खोदने का काम करनेवाला मजदूर। बेलदारी=बेलदार का काम।

बेलन—(पु० हि०) बेलन। कोल्हू का लाठ। कोई गोल और लंबा लुढ़कनवाला पदार्थ। बेलनदार=जिसमें बेलन लगा हो। बलना=काठ का बना हुआ छोटा गोल डंडा जो प्रायः रोटी, पूरी, कचौरी को चकले पर रखकर बेलने के काम में आता है। (क्रि० स०) रोटी पूरी, कचौरी, आदि को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ा और पतला करना। चौपट करना।

बेलपत्र—(पु० हि०) बेल के वृक्ष की पत्तियाँ।

बेलबूटेदार—(वि० हि०) जिसमें बेल-बूटे बने हों। बेल-बूटों वाला।

बेला—(पु० हि०) चमेली की जाति का एक फूल। मोगरा। मल्लिका। समय। वक्त। एक बाजा।

बेलाग—(वि० फा०) बिलकुल अलग। साफ खरा।

बेलाडोना—(पु० अं०) मकोय का सत्त।

बेलौस—(वि० हि०+फ़ा०) सच्चा। खरा। बेमुरव्वत।

बेवकूफ़—(वि० फ़ा०) मूर्ख। नासमझ। बेवकूफ़ी = मूर्खता। नादानी। नासमझी।

बेवक्त—(क्रि० फ़ा०) कुसमय में।

बेवतन—(वि० फ़ा०) बिना घर द्वार का।

बेवफ़ा—(वि० फ़ा०) बेमुरौव्वत। अकृतज्ञ।

बेवा—(स्त्री० फ़ा०) विधवा। राँड़।

बेशऊर—(वि० फ़ा०) मूर्ख। नासमझ। बेशऊरी = मूर्खता। नासमझी।

बेशक—(क्रि० वि० फ़ा०) निःसन्देह। अवश्य।

बेशक़ीमत, बेशक़ीमती—(वि० फ़ा०) बहुमूल्य।

बेशरम—(वि० फ़ा०) निर्लज्ज। बेहया। बेशरमी = निर्लज्जता। बेहयाई।

बेशी—(स्त्री० फ़ा०) अधिकता। ज्यादती।

बेसन—(पु० देश०) चने की दाल का आटा।

बेसनी—(वि० हि०) बेसन का बना हुआ।

बेसबब—(क्रि० वि० फ़ा०) अकारण।

बेसबरा—(वि० फ़ा०) अधीर। बेसबरी = असंतोष। अधैर्य।

बेसमझ—(वि० फ़ा०) मूर्ख। नासमझ। बेसमझी = नासमझी। मूर्खता।

बेसरोसामान—(वि० फ़ा०) दरिद्र। कंगाल। जिसके पास कुछ सामग्री न हो।

बेसिलसिले—(क्रि० हि०) अव्यवस्थित रूप से।

बेसुध—(वि० हि०) अचेत। बेहोश। बेख़बर।

बेसुर—(वि० हि०) बेमेल स्वर-वाला।

बेसुरा—(वि० हि०) जो नियमित स्वर में न हो। बेमौक़ा।

बेस्वाद—(वि० हि०) स्वाद रहित। बदज़ायक़ा।

बेहगम—(वि० हि०) बेढंगा। बेढब।

बेहतर—(वि० फा०) बढ़कर अच्छा। (अव्य०) प्रार्थना या आदेश के उत्तर में स्वीकृति सूचक शब्द। बेहतरी = अच्छापन। भलाई।

बेहद—(वि० फा०) असीम। अपार। बहुत अधिक।

बेहन—(पु० हि०) अनाज आदि का बीज जो खेत में बोया जाता है। बीया।

बेहना—(पु० देश०) धुनिया।

बेहया—(वि० फा०) निलज्ज। बेशर्म। बेहयाई = निलज्जता। बेशर्मी।

बेहला—(पु० हि०) सारंगी के आकार का अँगरेज़ी बाजा।

बेहाल—(वि० फा०) व्याकुल। बेचैन।

बेहिसाब—(क्रि० फा०) बहुत अधिक। बेहद।

बेहुरमत—(वि० फा०) बेइज़्ज़त।

बेहूदगी—(स्त्री०फा०) असभ्यता।

बेहूदा—(वि० फा०) बदतमीज़। अशिष्ट। —पन = अशिष्टता। असभ्यता।

बेहोफ—(वि० फा०) बेफ़िक्र। चिंता-रहित।

बेहोश—(वि० फा०) मूर्च्छित। बेसुध। बेहोशी = मूर्छा। अचेतनता।

बक—(पु० अ०) रुपये के लेन देन की बड़ी कोठी।

बकर—(पु० अ०) महाजन। साहूकार।

बगन—(पु० हि०) एक फल तरकारी।

बगनी—(वि० हि०) बैंगन के रंग का। बैंगनी।

बैजनी—(वि० हि०) बगनी।

बैंड—(पु० अ०) अँगरेज़ी बाजा।

बै—(स्त्री० अ०) बेचना। बिक्री।

बैजा—(पु० अ०) अंडा। अंडकोश।

बैट—(पु० अ०) डंडा।

बैटरी—(स्त्री० अ०) चीनी या शीशे आदि का पात्र जिसमें रासायनिक पदार्थों के योग से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम में लाई जाती है। तोपख़ाना।

बैठक—(स्त्री० हि०) बैठने का स्थान। चौपाल। अथाई। एक प्रकार की कसरत। बैठका = चौपाल या दालान। बैठकी = किसी स्थान पर बैठने का महसूल।

बैठा ठाला—(पु० हि०) निकम्मा। बेकार।

बैठना—(क्रि० हि०) आसन जमाना। किसी को पति बना लेना। खर्च होना।

बैठनी—(स्त्री० हि०) करघे में वह स्थान जहाँ जुलाहे कपड़ा बुनते समय बैठते हैं।

बैठाना—(क्रि० हि०) स्थित करना। किसी स्त्री को पत्नी की तरह घर में रख लेना।

बैना—(पु० हि०) वह मिठाई आदि जो विवाहादि उत्सवों के उपलक्ष में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

बैरंग—(वि० अ०) वह चिट्ठी या पारसल जिसका महसूल पानेवाले से वसूल किया जाय।

बैर—(पु० सं०) शत्रुता। दुश्मनी। विरोध। द्वेष।

बैरन—(पु० अ०) एक अँगरेज़ी उपाधि।

बैरा—(पु० अ०) सेवक। चाकर।

बैरागी—(पु० हि०) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।

बैरी—(वि० सं०) शत्रु। विरोधी।

बैरोमीटर—(पु० अ०) मौसिम की सर्दी-गर्मी नापने का एक यंत्र।

बैल—(पु० हि०) एक चौपाया। मूर्ख मनुष्य।

बैलर—(पु० अ०) पीपे के आकार का लोहे का बड़ा देग जो भाप से चलनेवाली कलों में होता है।

बैलून—(पु० अ०) गुब्बारा।

बैसाखी—(स्त्री० हि०) लँगड़े के टेकने की लाठी।

बोझ—(पु० हि०) भार। वज़न। मुश्किल काम। कठिन बात। बोझा = भार। वज़न।

बोट—(स्त्री० अ०) नाव। नौका। स्टीमर। जहाज़।

बोटी—(स्त्री० हि०) मांस का छोटा टुकड़ा।

बोडा—(पु० देश०) एक फली जिसकी तरकारी बनती है।

बोतल—(स्त्री० अ०) काँच का एक लंबी गरदन का गहरा बरतन।

बोता—(पु० अ०) ऊँट का बच्चा।

बोदर—(पु० देश०) ताल या जलाशय के किनारे सिंचाई का पानी चढ़ाने के लिये बना हुआ स्थान जिसके कुछ नीचे दो आदमी इधर उधर खड़े होकर टोकरे आदि जलाचक्र पानी ऊपर गिराते रहते हैं।

बोदा—(वि० हि०) मूर्ख। गावदी। सुस्त। (अ०) बोता। —पन=मूर्खता। नासमझी।

बोध—(पु० सं०) ज्ञान। जान-कारी। संतोष। बोधक= ज्ञान करानेवाला। बताने वाला। —गम्य=समझ में आने योग्य।

बोनस—(पु० अं०) पुरस्कार। वह अतिरिक्त लाभ जो किसी कंपनी के हिस्सेदारों को दिया जाय।

बोना—(क्रि० हि०) बीज को जमने के लिये जुते खेत या भुरभुरी की हुई ज़मीन में छितराना। बिखराना।

बोरसी—(स्त्री० हि०) अंगीठी।

बोरा—(पु० हि०) टाट का बना थैला। बोरिया=छोटा थैला। (फ़ा०) चटाई। बिस्तर। बोरी=छोटा बोरा।

बोर्ड—(पु० अं०) किसी स्थायी कार्य्य के लिये बनी हुई समिति। माल के मामलों के फैसले या प्रबंध के लिये बनी हुई समिति या कमेटी। काग़ज़ की मोटी दफ्ती। बोर्डर=वह विद्यार्थी जो बोर्डिंग हाउस में रहता हो। बोर्डिङ्ग हाउस=छात्रावास।

बोल—(पु० हि०) वचन। वाणी। ताना। व्यंग। बोलती= बोलने की शक्ति।

बोलना = मुँह से शब्द निकालना। आने के लिये कहना या कहलाना। बोला चाली = बात चीत। बोलाता = ब्योंता। बोली = आवाज। वाणी। वचन। बात। नीलाम करनेवाले और लेने वाले का जोर से दाम कहना। भाषा। हँसी दिल्लगी। ताना। ठठोली।

बोहनी—(स्त्री० हि०) किसी सौदे की पहली बिक्री। किसी दिन की पहली बिक्री।

बोहारी—(स्त्री० हि०) झाड़ू।

बौखलाना—(क्रि० हि०) बहक जाना। सनक जाना।

बौछाड़—(स्त्री० हि०) बूँदों की झड़ी। लगातार बात पर बात।

बौड़म—(पु० हि०) बेवकूफ। पागल।

बौद्ध—(वि० स०) बुद्ध का अनुयायी। —धर्म = गौतम बुद्ध का सिखाया मत।

—(पु० हि०) आम की मञ्जरी। —ना = आम का फूलना।

ब्यवहर—(पु० हि०) उधार। कर्ज।

ब्यवहार—(पु० हि०) रुपए का लेन देन। लेने देने का सबंध। इष्ट मित्र का संबंध। ब्यवहारी = कार्यकर्त्ता। मामला करने वाला। व्यापारी।

ब्याज—(पु० हि०) वृद्धि। सूद।

ब्याना—(क्रि० हि०) जनना। पैदा करना।

ब्यापना—(क्रि० हि०) किसी स्थान में भर जाना। असर करना।

ब्यालू—(पु० हि०) रात का खाना।

ब्याह—(पु० हि०) विवाह। शादी।

ब्योंचना—(क्रि० हि०) मुरकना। मोच खा जाना।

ब्योंत—(पु० हि०) ढंग। उपाय। तरीका।

ब्यारा—(पु० हि०) विवरण। तफ़सील।

ब्योहर—(पु० हि०) लेन-देन का व्यापार।

ब्रह्म—(पु० हि०) ईश्वर। जगत का कारण। —कर्म = ब्राह्मण का कर्म। —चर्य = वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। चार आश्रमों में पहला आश्रम। ब्रह्मचारी = ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाला। ब्रह्मचारिणी = ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाली स्त्री। —ज्ञान = ब्रह्म का बोध। अद्वैत सिद्धांत का बोध। —ज्ञानी = अद्वैत वादी। —द्रोही = ब्राह्मणों से वैर रखनेवाला। —पुत्र = ब्रह्मा का पुत्र। —रंध्र = मूर्द्धा का छेद। ब्रह्माण्ड-द्वार। —वेत्ता = ब्रह्मज्ञानी। —हत्या = ब्राह्मण को मार डालना। ब्रह्मांड = चौदहों भुवनों का समूह। कपाल। खोपड़ी।

ब्रह्मा—(पु० स०) सृष्टिकर्त्ता। विधाता।

ब्राह्मण—(पु० स०) चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण। ब्राह्मणी = ब्राह्मण जाति की स्त्री।

ब्राह्ममुहूर्त्त—(पु० स०) सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय।

ब्राह्मसमाज—(पु० स०) बंग देश में प्रवर्त्तित एक नया संप्रदाय जिसमें एकमात्र ब्रह्म ही की उपासना की जाती है।

ब्राह्मी—(स्त्री० स०) भारतवर्ष की पुरानी लिपि। औषध के काम में आनेवाली एक बूटी।

ब्रिगेड—(पु० अ०) सेना का एक समूह। ब्रिगेडियर = एक सैनिक कर्मचारी जो एक ब्रिगेड भर का संचालक होता है।

ब्रिटिश—(वि० अ०) उस द्वीप से संबंध रखनेवाला जिसमें इंगलैंड प्रदेश है। इंगलिस्तान का। अँगरेज़ी।

ब्रिज—(पु० अ०) पुल । सेतु ।
ब्रिटेन—(पु० अ०) इंगलैंड और वेल्स ।
ब्रोनियर—(पु० अ०) एक प्रकार का छोटा टाइप ।
ब्रुश—(पु० अ०) बालों का बना हुआ कूँचा जिससे टोपी या जूते इत्यादि साफ किये जाते हैं ।
ब्रोकर—(पु० अ०) दलाल ।
ब्लाक—(पु० अ०) ठप्पा । भूमि का कोई चौकोर टुकड़ा या वर्ग ।
ब्लाटिंग पेपर—(अ०) सोख़्ता । स्याही-सोख़ काग़ज़ ।
ब्लयू—(अ०) नीला । —ब्लैक =नीली मिश्रित काली स्याही ।
ब्लैंकट—(अ०) कंबल ।
ब्लैक—(अ०) काला । —बोर्ड =काला तख्ता ।

भ

भ—हिन्दी-वर्णमाला का चौबी सवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण ।
भग—(पु० सं०) पराजय । बाधा । भाँग । भगड़ = बहुत भाँग पीनेवाला । भँगेड़ी ।
भंगी—(पु० हि०) मल मूत्र उठानेवाला । भँगेड़ी ।
भँडभाँड—(पु० हि०) एक कँटीला पौधा ।
भँडरिया—(पु० हि०) एक जाति का नाम । ढोंगी । पाखंडी । धूर्त । भड्डर के वंशज ।
भंडार—(पु० हि०) कोष । खज़ाना । अन्नादि रखने का स्थान । पाकशाला । भंडारा = साधुओं का भोज । भंडारी = खजानची । कोषाध्यक्ष ।
भँडौआ—(पु० हि०) भाँड़ों के गाने के गीत । अश्लील बात ।

भड़ुआ—(पु० हि०) वेश्याओं का दलाल। वेश्याओं के साथ तबला या सारंगी बजानेवाला।

भड्डर—(पु० हि०) एक जाति। वर्षा विज्ञान का एक प्राचीन कवि।

भतीजा—(पु० हि०) भाई का पुत्र।

भत्ता—(पु० हि०) वेतन के अतिरिक्त जो किसी कर्मचारी को यात्रा के समय दिया जाता है। अलाउंस।

भद्दा—(वि० हि०) बेढंगा। कुरूप। —पन = बेढंगापन।

भद्र—(वि० स०) सभ्य। सुशिक्षित।

भद्रा—(स्त्री० स०) फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग। बाधा।

भनभनाहट—(स्त्री० हि०) गुंजार।

भभक—(स्त्री० हि०) उबलना। उबाल।

भय—(पु० स०) डर। खौफ। भयंकर = डरावना। भयभीत = डरा हुआ। भयातुर = डर से घबराया हुआ। भयानक = भयंकर। भयावह = डरावना।

भरण—(पु० स०) पालन-पोषण।

भरता—(पु० देश०) चोखा।

भरनी—(स्त्री० हि०) भरना। प्रवेश होना।

भरपाई—(क्रि० हि०) पूरी वसूली या रसीद।

भरपूर—(वि० हि०) भली-भाँति।

भरम—(पु० हि०) संशय। संदेह। भेद। रहस्य।

भरसक—(क्रि० हि०) यथा शक्ति। जहाँ तक हो सके।

भरापूरा—(वि० हि०) संपन्न।

भरी—(स्त्री० हि०) एक तौल जो एक रुपये के बराबर होती है।

भरोसा—(पु० हि०) आसरा। सहारा। आशा। दृढ़ विश्वास। यक़ीन।

भर्रा—(पु० अनु०) झाँसा। पट्टी। धकमा।

शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों का ज्ञान होता है।

भूत—(पु० सं०) जीव। प्राणी। बीता हुआ समय। गुज़रा हुआ ज़माना। मृत शरीर। शव। प्रेत। जिन। गत। (स्त्री०) भूतिनी।

भूतल—(पु० सं०) पृथ्वी का ऊपरी तल। संसार।

भूधर—(पु० सं०) पहाड़।

भूनना—(क्रि० हि०) अग्नि में डालकर या तवे पर रखकर या गरम बालू में डालकर पकाना। तलना।

भूप—(पु० सं०) राजा।

भूमंडल—(पु० सं०) पृथ्वी।

भूमि—(स्त्री० सं०) पृथ्वी। ज़मीन। स्थान। जगह। देश। प्रांत। क्षेत्र।

भूमिका—(स्त्री० सं०) रचना। किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले। मुख बन्ध।

भूमिहार—(पु०सं०) एक जाति।

भूरा—(पु० हि०) मटमैला रंग।

भूरि—(पु० सं०) अधिक।

भूल—(स्त्री० हि०) ग़लती। चूक। कसूर। अशुद्धि। —ना=याद न रखना। ग़लती करना। खो देना। भुलक्कड़=भूलनेवाला। भूल भुलैयाँ=घुमावदार इमारत। बहुत घुमाव फिराव की बात या घटना।

भूषण—(पु० सं०) गहना। भूषित=सजाया हुआ।

भूसा—(पु० हि०) भुस। (स्त्री०) भूसी=अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।

भृकुटी—(स्त्री० सं०) भौंह।

भृत्य—(पु० सं०) सेवक। नौकर।

भेंट—(स्त्री० हि०) मिलना। मुलाकात। उपहार। नज़राना।

भेंटना—(क्रि० हि०) मुलाक़ात

करना। मिलना। छाती से लगाना। आलिङ्गन करना।

भेजना—(क्रि० हि०) रवाना करना। पठाना।

भेजा—(पु० हि०) खोपड़ी के भीतर का गूदा। चदा। वेहरी।

भेड़—(स्त्री० हि०) बकरी की जाति का एक चौपाया। गाडर। बहुत सीधा या मूर्ख मनुष्य। भेड़ा=भेड़ जाति का नर भेड़ा। भेड़ियाधसान=अंध विश्वास। बिना सोचे विचारे काम करना। भेड़िया=एक जङ्गली जानवर। बड़ा सियार।

भेद—(पु० सं०) रहस्य। मर्म। तात्पर्य। फ़र्क। अंतर। क़िस्म। जाति। —बुद्धि=फूट। भेदिया=भेद लेने वाला। जासूस। गुप्त रहस्य जानने वाला।

भेरी—(स्त्री० सं०) बड़ा ढोल या नगाड़ा। दुंदभी।

भेली—(स्त्री हि०) गुड़ की गोल पिंडी। गुड़।

भेस—(पु० हि०) वेष। शकल सूरत।

भैंस—(स्त्री० हि०) दूध देने वाला एक चौपाया। (पु०) भैंसा।

भैया—(पु० हि०) भाई। बरा बर वालों या छोटों के लिये संबोधन शब्द। —दोज=कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भाईदूज।

भैरवी—(स्त्री० सं०) एक रागिनी। —चक्र=तान्त्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट तिथियों, नक्षत्रों और समयों में देवी की पूजा करने के लिये एकत्र होता है। मद्यपों और अनाचारियों का समूह।

भोंकना—(क्रि० हि०) धँसाना। घुसेड़ना।

भोंडा—(वि० हि०) भद्दा। बदसूरत। कुरूप। —पन=भद्दापन। बेहूदगी।

भोंदू—(वि० हि०) बेवकूफ। मूर्ख। सीधा। भोला।

भोंपू—(पु० अनु०) तुरही की तरह का एक प्रकार का बाजा।

भोग—(पु० सं०) सुख या दुःख आदि को अनुभव करना या सहना। सुख। स्त्री सम्भोग। भोगना=भुगतना। सहना। —विलास=आमोद प्रमोद। सुख चैन। भोगी=भोगने वाला। सुखी। इन्द्रियों का सुख चाहने वाला। भुगतने वाला। भोग्य=भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

भोज—(पु० हि०) दावत। जेवनार।

भोजन—(पु० सं०) खाना। भक्षण करना। खाने की सामग्री। —भट्ट=पेटू। —शाला=रसोईघर। पाकशाला। भोजनाच्छादन=खाना कपड़ा। अन्न-वस्त्र। भोजनालय=पाकशाला। रसोईघर। भोज्य=खाने योग्य पदार्थ

भोजपत्र—(पु० सं०) एक वृक्ष

भोला—(वि० हि०) सीधा सादा —पन=सरलता। नासमझी नादानी। मूर्खता। —भाला=सीधा। सरल चित्त का।

भौं—(स्त्री० हि०) आँख के ऊपर के बालों की श्रेणी। भौंह।

भौंरा—(पु० हि०) काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा। एक खिलौना।

भौंरी—(स्त्री० हि०) पशुओं आदि के शरीर में बालों के घुमाव से बना हुआ चक्र। तेज बहते हुए जल में पड़नेवाला चक्कर।

भौरी—(हि०) बाटी। उपले पर सेंकी हुई मोटी रोटी।

भौंह—(स्त्री० हि०) भौं।

भौचक—(वि० हि०) स्तम्भित। चकपकाया हुआ।

भौजाई—(स्त्री० हि०) भाभी। भाई की भार्या।

भौतिक—(पु० सं०) पंचभूत

मयवी। —विद्या = भूतों प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

भौमवार—(पु० सं०) मंगलवार।

भ्रम—(पु० सं०) मिथ्या ज्ञान। धोखा। सन्देह। शक। बेहोशी। —मूलक = जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो। सदिग्ध। भ्रमण = घूमना। भ्रामक = भ्रम उत्पन्न करने वाला। भ्रमात्मक = जिसके कारण भ्रम उत्पन्न होता है।

भ्रमर—(पु० सं०) भौंरा।

भ्रष्ट—(वि० सं०) पतित। बुरे चाल चलनवाला। दुराचारी।

भ्रष्टा = कुलटा। छिनाल।

भ्रांति—(स्त्री० सं०) धोखा। सन्देह। पागलपन। भूलचूक।

भ्राता—(पु० सं०) सगा भाई। सहोदर।

भ्रू—(स्त्री० सं०) आँखों के ऊपर के बाल। भौं। —भंग = त्योरी चढ़ाना। क्रोध आदि प्रगट करने के लिये भौंह चढ़ाना। —संचालन = भौं मटकाना। —विलास = स्त्रियों का हावभाव।

भ्रूण—(पु० सं०) स्त्री का गर्भ। —हत्या = गर्भ के बालक की हत्या।

म

म—हिंदी वर्णमाला का पच्चीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण।

मंगन—(पु० हि०) भिक्षुक। मँगता = भिखमंगा। मँगनी = ठहराव। विवाह के पहले की रस्म। बररक्षा।

मंगल—(पु० सं०) कल्याण। एक दिन। —प्रद = कल्याणकारी। —वार = सोमवार

के बाद बुधवार के पहले का वार। भौमवार। मांगलिक=शुभ।

मँगाना—(क्रि० हि०) माँगने काम दूसरे से कराना।

मंच, मंचक—(पु० सं०) खाट। खटिया। मँचिया। ऊँचा बना हुआ बैठका।

मंजन—(पु० हि०) दाँत साफ करने का चूर्ण। (अ०) टूथ पाउडर।

मंजरी—(स्त्री० सं०) कोंपल। बौर।

मंजिल—(स्त्री० अ०) पड़ाव। मकान का खंड। मरातिब।

मंजुल—(वि० सं०) सुन्दर।

मंजूर—(वि० अ०) स्वीकृत। मंजूरी=स्वीकृति।

मंजूषा—(स्त्री० सं०) छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी।

मंडन—(पु० सं०) सजाना। प्रमाण आदि देकर बात सिद्ध करना। मंडित=शोभित।

मंडप—(पु० सं०) किसी उत्सव या समारोह के लिये बाँस फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। देवमन्दिर के ऊपर का गुम्बद। चँदोवा। शामियाना।

मंडल—(पु० सं०) चक्कर। गोलाई। भूमिखंड। प्रदेश। समाज। समूह। ग्रह के घूमने की कक्षा। मंडलाकार=गोल। मंडलाना=किसी के चारों ओर घूमना। मंडली=गोल। समूह। समाज। समुदाय।

मँडवा—(पु० हि०) मंडप।

मंडी—(स्त्री० हि०) थोक बिक्री की जगह। बड़ा हाट।

मँडुआ—(पु० देश०) एक अन्न।

मंडूर—(पु० सं०) लोहे की मैल।

मंतव्य—(वि० सं०) मानने योग्य। माननीय। विचार। मत।

मंत्र—(पु० सं०) सलाह। परामर्श। गायत्री आदि वैदिक वाक्य। जप के लिये निर्दिष्ट शब्द या वाक्य। मंत्रणा=परामर्श। सलाह। —विद्या=

सत्रशिक्षा। मत्रशास्त्र। तत्र। मत्रित्र=मत्री का कार्य। यज्ञारम। मत्री=सलाह देने वाला। सचिव।

मंथन—(पु० स०) मथना। बिलोना।

मद—(वि० स०) धीमा। सुस्त। शिथिल। आलसी। मूर्ख। —भाग्य = दुर्भाग्य। —भागी = अभागा। मन्दी = मस्ती।

मदार—(पु० स०) आक। मदार।

मदिर—(पु० स०) घर। देवालय।

मद्र—(पु० स०) गम्भीर ध्वनि। धीमा।

मशा—(स्त्री० अ०) इच्छा। इरादा।

मसब—(पु० अ०) पद। पदवी।

मसूख—(वि० अ०) रद।

मकई—(स्त्री० हि०) एक अन्न।

मकडा—(पु० हि०) बड़ी मकड़ी। मकड़ी=एक कीड़ा।

मकतब—(पु० अ०) पाठशाला।

मक्दूर—(पु० अ०) सामर्थ्य।

मकनातीस—(पु० अ०) चुम्बक पत्थर।

मकफ़ूल—(वि० अ०) रेहन किया हुआ।

मकबरा—(पु० अ०) समाधि। मजार।

मकबूज़ा—(वि० अ०) अधिकृत।

मकरन्द—(पु० स०) फूलों का रस।

मकरा—(पु० हि०) मडुआ नामक अन्न। एक कीड़ा।

मकरूह—(वि० फा०) नापाक। घृणित।

मकसद—(पु० अ०) मनोरथ। मतलब।

मकसूद—(वि० अ०) उद्दिष्ट। अभिप्रेत।

मकान—(पु० फ़ा०) घर।

मकुना—(पु० हि०) बिना दाँत का नर हाथी। बिना मूछों का पुरुष।

मकुनी—(स्त्री० देश०) मटर के आटे की रोटी।

मजमुआ—(वि० अ०) इकट्ठा किया हुआ । संगृहीत ।

मज़मून—(पु० अ०) विषय । लेख ।

मजरिया—(वि० फा०) जो जारी हो । प्रचलित ।

मजरूआ—(वि० अ०) जोता और बोया हुआ ।

मजरूह—(वि० अ०) घायल । ज़ख्मी ।

मजल—(स्त्री० फा०) मंज़िल । पड़ाव ।

मजलिस—(स्त्री० अ०) सभा । महफिल । नाच रंग का स्थान । मजलिसी=निमंत्रित व्यक्ति । जो मजलिस में रहने योग्य हो । सबको प्रसन्न करनेवाला ।

मज़लूम—(वि० अ०) अत्याचार पीड़ित । सताया हुआ ।

मज़हब—(पु० अ०) धार्मिक सम्प्रदाय । पंथ । मत । मज़हबी=किसी धार्मिक मत या सम्प्रदाय से संबंध रखनेवाला । महतर सिख ।

मज़ा—(पु० फा०) स्वाद । लज्ज़त । आनंद । सुख । दिल्लगी ।

मज़ाक़—(पु० अ०) दिल्लगी । मज़ाक़न्=हँसी दिल्लगी के तौर पर । मज़ाक़िया=मज़ाक से ।

मजाज—(पु० फा०) गर्व । स्वभाव । तबीयत ।

मजाज़—(पु० अ०) अधिकार । हक़ । इख़्तियार ।

मजाज़ी—(वि० अ०) बनावटी । कल्पित ।

मज़ार—(पु० अ०) समाधि । मक़बरा । क़ब्र ।

मजाल—(स्त्री० अ०) सामर्थ्य ।

मजिस्ट्रेट—(पु० अ०) फौजदारी अदालत का अफसर । मजिस्ट्रेटी=मजिस्ट्रेट का कार्य या पद ।

मजीठ—(स्त्री० हि०) एक लता ।

मजीरा—(पु० हि०) ताल । झुनकी । जोड़ी ।

मजूर—(पु० फा०) मज़दूर ।

बुज़ो । मजूरी=मजदूर का काम ।

मज़ेदार—(वि० फा०) स्वादिष्ट । बढ़िया । मज़ेदारी=स्वाद । श्रानंद ।

मज्जन—(पु० स०) स्नान । नहाना ।

मज्जा—(स्त्री० स०) हड्डी के भीतर का गूदा जो बहुत कोमल और चिकना होता है ।

मझधार—(स्त्री० हि०) बीच धारा ।

मझला—(वि० हि०) मध्य का । बीच का ।

मझाना—(क्रि० हि०) प्रविष्ट करना । बीच म धँसाना ।

मझोला—(वि० हि०) बीच का । मध्यम आकार का ।

मटकना—(क्रि० हि०) नखरा करना । मटकाना=नखरे के साथ अंगों का संचालन करना ।

मटका—) मिट्टी का बड़ा घड़ा । मटकी=छोटा मटका । कमोरी ।

मटमँगरा—(पु० हि०) विवाह के पहले की एक रीति ।

मटमेला—(वि० हि०) मिट्टी के रंग का ।

मटर—(पु० हि०) एक अन्न ।

मटरगश्त—(स्त्री० हि०) सैर-सपाटा ।

मटरबोर—(पु० हि०) मटर के बराबर घुंघरू जो पाज़ेब आदि में लगते हैं ।

मटियामेट—(पु० हि०) तहस-नहस ।

मटियार—(पु० हि०) वह भूमि या खेत जिसमें चिकनी मिट्टी अधिक हो ।

मट्ठा—(पु० हि०) मथा हुआ दही । छाछ । मही ।

मठ—(पु० स०) निवास स्थान । रहने की जगह । मंदिर । देवालय । —धारी — वह साधु या महंत जिसके अधिकार में कोई मठ हो । मठा

धीश=मठ का मालिक। महन्त।
मठरी—(स्त्री० देश०) एक प्रकार की मिठाई।
मडई—(वि० हि०) कुटिया।
मड़राना—(क्रि० हि०) मंडप बाँधकर उड़ना। चक्कर देते हुए उड़ना। किसी के चारों ओर घूमना।
मड़ाड—(पु० देश०) छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।
मडुआ—(पु० देश०) बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।
मड़ैया—(स्त्री० हि०) छोटा मंडप। झोपड़ा।
मढ़—(पु० हि०) रहने की जगह। अविमुक्त।
मढ़ना—(क्रि० हि०) बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना। थापना। मढ़वाना=मढ़ने का काम दूसरे से कराना। मढ़ाई=मढ़ने की मज़दूरी। मढ़ने का काम। मढ़ाना=मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ी—(स्त्री० हि०) छोटा मठ। कुटी। झोंपड़ी।
मणि—(स्त्री० सं०) बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति। —माला=मणियों की माला।
मत—(पु० सं०) सम्मति। मज़हब। मतलब। (फ़ा०) निषेध वाचक शब्द। न। नहीं।
मतलब—(पु० अ०) तात्पर्य। स्वार्थ। अभिप्राय। आशय। अर्थ। कामना। मतलबी=स्वार्थी।
मतवाला—(वि० हि०) मस्त। नशे में चूर। पागल।
मतानुयायी—(पु० सं०) किसी के मत को माननेवाला। मतावलम्बी=किसी एक मत पर अमल करनेवाला।
मति—(स्त्री० सं०) बुद्धि। समझ।
मतीरा—(पु० मारवाड़ी) तरबूज।
मत्त—(वि० सं०) मस्त। मतवाला। पागल।
मत्सर—(पु० सं०) डाह। जलन।

मथना—(क्रि॰ हि॰) बिलोना।
मथित=मथा हुआ।

मथानी—(स्त्री॰ हि॰) रई।
बिलोनी। मदनी।

मद—(पु॰ स॰) दर्प। मद्य।
नशा। अहंकार। (फ़ा॰) कार्य्य
या कार्य्यालय का विभाग।
मीना। सरिश्ता। ख़ाता।

मदकची—(वि॰ हि॰) जो मदक
पीता हो।

मदखूला—(स्त्री॰ अ॰) वह
स्त्री जिसे कोई बिना विवाह
किए ही रख ले या घर में
डाल ले। रखनी।

मदद—(स्त्री॰ अ॰) सहायता।
—ख़र्च=पेशगी। —गार=
सहायक।

मदरसा—(पु॰ अ॰) पाठशाला।

मदांध—(वि॰ स॰) मदोन्मत्त।

मदाख़िलत—(स्त्री॰ अ॰) बाँध।
रोक। रुकावट। अधिकार।
—बेजा=(स्त्री॰ अ॰ फ़ा॰)
अनधिकार प्रवेश। अनुचित
हस्तक्षेप।

मधु—(पु॰ स॰) शहद। —पर्क
=दही, घी, जल, शहद और
चीनी का मिश्रण। —प्रमेह
=एक प्रकार का प्रमेह रोग।
—मक्खी=शहद की मक्खी।

मधुर—(वि॰ स॰) मीठा।
—ता=मिठास।

मध्य—(पु॰ स॰) बीच। —देश
=भारतवर्ष के बीच का
प्रदेश। मध्यम=बीच का।
मध्यमा=पाँच उँगलियों में
से बीच की उँगली। मध्य
की। —वर्त्ती=जो मध्य
में हो। बीच का। मध्यस्थ
=पंच। मध्याह्न=दिन का
मध्य भाग। दोपहर के
बाद का समय।

मन—(पु॰ हि॰) अंतःकरण।
चित्त। इच्छा। इरादा।

मनकूला—(वि॰ अ॰) अस्थिर।
चल।

मनकूहा—(वि॰ अ॰) जिसके
साथ निकाह हुआ हो।
विवाहिता।

मनगढ़त—(स्त्री॰ हि॰) कपोल-
कल्पित।

मरघट—(पु० स०) श्मशान घाट। मसान।

मरज—(पु० अ०) रोग। बीमारी। ख़राब आदत। कुटेव।

मरजिया—(वि० हि०) मरकर जीनेवाला। समुद्र में डूबकर उसके भीतर से मोती आदि निकालनेवाला। जिवकिया।

मरजी—(स्त्री० अ०) इच्छा। कामना। चाह। आशा। खुशी। प्रसन्नता। आज्ञा। स्वीकृति।

मरण—(पु० स०) मृत्यु। मौत।

मरतबा—(पु० अ०) पद। पदवी। बार। दफ़ा।

मरदना—(क्रि० हि०) मसलना। मलना। ध्वंस करना। चूर्ण करना। माँड़ना। गूँधना।

मरदानगी—(स्त्री० फा०) वीरता। शूरता। साहस।

मरदाना—(वि० फा०) पुरुष संबंधी। पुरुषों का सा।

मरदूद—(वि० अ०) तिरस्कृत। नीच।

मरना—(क्रि० हि०) मृत्यु को प्राप्त होना। बहुत दुःख सहना। मुरझाना। सूखना। डाह करना। हारना।

मरमर—(पु० हि०) एक प्रकार का दानेदार चिकना पत्थर।

मरमराना—(क्रि० अनु०) मर मर शब्द करना।

मरम्मत—(स्त्री० अ०) दुरुस्ती।

मरसा—(पु० हि०) एक प्रकार का साग।

मरसिया—(पु० अ०) शोक सूचक कविता। (उर्दू) सियापा। मरण शोक।

मरहटा—(पु० हि०) महाराष्ट्र देश का रहनेवाला। मरहठा।

मरहम—(पु० अ०) औषधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव भरने के लिए लगाया जाता है।

मरहला—(पु० अ०) मंज़िल। पड़ाव। झोंपड़ी। दर्जा। मरातिब।

मरहून—(वि० अ०) जो रेहन

किया गया हो। गिरों रक्खा गया हो।

मरहूम—(वि० अ०) स्वर्गीय। मृत।

मरातिब—(पु० अ०) दरजा। पद। उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाएँ। पद। तह। मकान का खंड। मंजिल।

मराल—(पु० सं०) हंस।

मरिच—(पु० सं०) मिरिच।

मरी—(स्त्री० हि०) एक रोग। एक प्रकार का भूत।

मरीज़—(वि० अ०) रोगी। बीमार।

मरीना—(पु०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

मरुआ—(पु० हि०) एक पौधे का नाम।

मरुस्थल—(पु० सं०) बालू का मैदान। रेगिस्तान।

मरोड—(पु० हि०) ऐंठन। पीड़ा। व्यथा। पेट ऐंठना। —ना ऐंठना। बल डालना। ऐंठकर नष्ट करना या मार डालना। दुःख देना पीड़ा देना। मसलना। मरोड़ा=ऐंठन। उमेठ। पेट की वह पीड़ा जिसमें ऐंठन होती है।

मर्ज़ी—(स्त्री० अ०) इच्छा। चाह। आज्ञा। स्वीकृति।

मर्तबा—(पु० अ०) पद। पदवी। बार। दफा।

मर्तबान—(पु० हि०) रोगनी बरतन जिसमें अचार, मुरब्बा, घी आदि रखा जाता है। अमृतबान।

मर्त्यलोक—(पु० सं०) पृथ्वी। मनुष्य-लोक।

मर्द—(पु० फ़ा०) मनुष्य। पुरुष। साहसी पुरुष। वीर पुरुष। जवान। पति।

मर्दाना—(वि० फ़ा०) पुरुष सबंधी। मनुष्योचित। वीरोचित। वीर। साहसी पुरुष का सा।

मर्दुम—(पु० फ़ा०) मनुष्य। —शुमारी=मनुष्य गणना। आबादी। मर्दुमी=मरदानगी। वीरता। पुरुष।

मद्न—(पु० स०) कुचलना। रौंदना। मलना। घसना। घोंटना। पामना। नाशक। सहारकर्ता। मर्दित=मला या मसला हुआ। टुकड़े टुकड़े किया हुआ। नष्ट किया हुआ।

मर्म—(पु० स०) स्वरूप। रहस्य। भेद। संधि स्थान। —ज्ञ=भेद की बात जाननेवाला। —पीड़ा=मन को पहुँचने वाला क्लेश। आंतरिक दुःख। —भेदी=आंतरिक कष्ट देनेवाला।

मर्यादा—(स्त्री० स०) सीमा। हद। नियम। सदाचार। मान। गौरव।

मल—(पु० स०) मैल। कीट। दोष। विष्ठा। —द्वार=शरीर की वे इन्द्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं। पाखाने का स्थान। गुदा। —रोधक=जो मल को रोके। कब्जियत करनेवाला।

मलना—(क्रि० हि०) मांजना। मसलना। घिसना। मालिश करना। ऐंठना। मरोड़ना। हाथ से बार-बार दबाना या रगड़ना।

मलमल—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पतला कपड़ा।

मलमास—(पु० स०) वह अर्थात मास जिसमें संक्रांति पड़ती हो।

मलहम—(पु० अ०) मरहम। घाव आदि पर लगाने का औषधियों का गाढ़ा चिकना लेप।

मलाई—(स्त्री० देश०) दूध की साढ़ी। सार। तत्व। रस।

मलामत—(स्त्री० अ०) लानत। फटकार। गदगी। मलामती=दुतकारने या फटकारने योग्य। घृणित। जघन्य।

मलाल—(पु० अ०) दुःख। रंज। उदासी।

मलिक—(पु० अ०) राजा। अधीश्वर। मुसलमानों की जाति का नाम। मलिका=रानी। अधीश्वरी।

मलिन—(वि० स०) मैला। गंदला। दूषित। खराब। बदरंग। फीका। उदासीन। —ता = मैलापन।

मलीदा—(पु० फ़ा०) चूरमा। एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

मलेरिया—(पु० अ०) एक प्रकार का ज्वर।

मल्ल—(पु० [illegible]) पहलवान। —युद्ध = कुश्ती। बाहुयुद्ध। —विद्या = कुश्ती की विद्या।

मल्लाह—(पु० अ०) धीवर। माँझी। मल्लाही का काम या पद।

मवक्किल—(पु० अ०) अपनी ओर से वकील या प्रतिनिधि नियत करनेवाला पुरुष। असामी।

मवर्रिखा—(वि० अ०) लिखित।

मवाजिब—(पु० अ०) नियमित मात्रा में नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ।

मवाज़ी—(वि० अ०) अनुमान किया हुआ।

मवाद—(पु० अ०) पीब।

मवास—(पु० स०) रक्षा का स्थान। शरण। किला।

मवेशी—(पु० अ०) पशु। ढोर।

मशक़्क़त—(स्त्री० अ०) मेहनत। परिश्रम।

मशगूल—(वि० अ०) काम में लगा हुआ। लीन।

मशरू—(पु० अ०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

मशविरा—(पु० अ०) सलाह। परामर्श।

मशहूर—(वि० अ०) प्रख्यात। प्रसिद्ध।

मसान—(पु० हि०) मरघट।

मशाल—(पु० अ०) जलनेवाली एक प्रकार की मोटी बत्ती। —ची = मशाल दिखलानेवाला।

मशीख़त—(स्त्री० अ०) शेख़ी। घमंड।

मशीन—(स्त्री० अ०) यंत्र। कल।

मशीर—(पु० अ०) सलाह देने वाला। मंत्री।

मश्क—(पु० अ०) अभ्यास। मश्शाक = अभ्यस्त।

भाव बहुत बड़ा साधु, सन्यासी या विरक्त।

महारत—(स्त्री० फा०) अभ्यास। मश्क।

महाल—(पु० अ०) मुहल्ला। भाग। हिस्सा।

महावत—(पु० हि०) फीलवान। हाथी हाँकनेवाला।

महावर—(पु० हि०) एक प्रकार का लाल रंग।

महावरा—(अ०) आदत। बोल चाल के निश्चित वाक्य या शब्द। महावरेदार=जिसमें महावरा हो।

महिला—(स्त्री० सं०) स्त्री।

महीन—(वि० हि०) पतला। कोमल।

महीना—(पु० हि०) काल का एक परिमाण जो साम दिन का होता है। मासिक वेतन। स्त्रियों का मासिक धर्म।

महुअर—(स्त्री० हि०) वह भेड़ जिसका ऊन कालापन लिए लाल रंग का होता है। वह रोटी जो महुआ मिलाकर पकाई गई हो। एक बाजा।

महुआ—(पु० हि०) एक वृक्ष।

महोगनी—(पु० अ०) एक पेड़।

महोत्सव—(पु० सं०) बड़ा उत्सव।

महोदय—(पु० सं०) एक आदर-सूचक शब्द। महाशय। महोदया=स्त्रियों के लिये आदर-सूचक शब्द।

महौषध—(पु० सं०) कारगर दवा।

मांगलिक—(वि० सं०) शुभ।

मांजना—(क्रि० हि०) जोर से मलकर मैल छुड़ाना। माँजा देना। अभ्यास करना।

मांझा—(पु० हि०) नदी में का टापू। वृक्ष का तना।

माँझी—(पु० हि०) केवट। मल्लाह। बलवान्।

माँड—(पु० हि०) पकाये हुये चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी।

मांडना—(क्रि० हि०) सजाना। सानना। गूँधना। मचाना।

माँडा—(पु० हि०) आँख का एक रोग।

माडी—(स्त्री० हि०) भात का पसावन। माँड। कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ।

माँद—(वि० हि०) गुफा। जंगली जानवरों का बिल।

माँदगी—(स्त्री० फा०) बीमारी। रोग। थकावट।

माँदा—(वि० फा०) थका हुआ। रोगी। बीमार।

मांस—(पु० स०) गोश्त। —खोर=मांस खाने वाला। मांसाहारी। —पिंड=शरीर। देह। —भक्षी=मांस खाने वाला। —भोजी=मांस खाने वाला। मांसल=मांस से भरा हुआ। मोटा ताजा। बलवान्। मांसाहारी=मांस खानेवाला।

मा—(स्त्री० स०) माता।

माकूल—(वि० अ०) उचित। ठीक। योग्य। पूरा। बढ़िया। जो निरुत्तर हो गया हो।

मालोलिया—(फा०) पागलपन। सनक।

मागधी—(स्त्री० स०) मगध देश की प्राचीन भाषा।

माघ—(पु० स०) हिन्दुओं का एक महीना।

माजरा—(अ०) घटना। धार दात।

माजिद—(अ०) गुरुजन। बुजुर्ग।

माजून—(स्त्री० अ०) वह बरफ़ी या अवलेह जिसमें भाँग मिली हो।

माजूफल—(पु० फा०) माजू नामक झाड़ी का गोंद।

माटा—(पु० हि०) लाल च्यूँटा।

माणिक्य—(पु० स०) लाल रंग का एक रत्न।

मात—(स्त्री० अ०) पराजय। हार।

मातदिल—(वि० अ०) न बहुत ठंढा न बहुत गरम।

मातबर—(वि० अ०) विश्वास करने योग्य। मातबरी=विश्वास।

मातम—(पु० अ०) शोक। —पुर्सी = मृतक के सम्बन्धियों को सान्त्वना देना। मातमी = शोक-सूचक।

मातहत—(पु० अ०) अधीनस्थ कर्मचारी। मातहती = अधीनता।

माता—(स्त्री० हि०) मा। कोई पूज्य या आदरणीय स्त्री। शीतला।

मातृपूजा—(स्त्री० हि०) विवाह की एक रीति।

मातृभाषा—(स्त्री० सं०) वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए सीखता है।

मात्र—(अव्य० सं०) केवल। सिर्फ।

मात्रा—(स्त्री० सं०) परिमाण। एक बार खाने योग्य औषध। मात्रिक = मात्रा सम्बन्धी।

मात्सर्य—(पु० सं०) ईर्ष्या। डाह।

माथुर—(पु० सं०) मथुरा का निवासी। ब्राह्मणों की एक जाति। कायस्थों की एक जाति। वैश्यों की एक जाति।

मादक—(वि० सं०) जिससे नशा हो। नशीला। —ता = नशीलापन।

मादर—(स्त्री० फा०) माँ। —जाद = बिलकुल नंगा।

मादा—(स्त्री० फा०) स्त्री जाति का प्राणी।

माद्दा—(पु० अ०) वह मूल तत्व जिससे कोई पदार्थ बना हो। शब्द का मूल। योग्यता। पीब।

माधुरी—(स्त्री० सं०) मिठास। माधुर्य = मधुरता। काव्य का एक गुण।

माध्यम—(वि० सं०) कार्य सिद्धि का उपाय या साधन। (अ०) मीडियम।

मान—(पु० सं०) परिमाण। मिकदार। पैमाना। अहङ्कार। इज्जत।

मानना—(क्रि० हि०) स्वीकार करना। अनुकूल होना। ठीक समझना। मन्नत करना।

मानवोचित गुणों से युक्त।

मानव—(पु० सं०) आदमी। —शास्त्र वह शास्त्र जिसमें मानव जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है। मानवी—स्त्री। मानुषी। मानवता।

मानस—(पु० सं०) मन। हृदय। —शास्त्र = मनोविज्ञान। मानसिक = मन सम्बन्धी।

मानसरोवर—(पु० हि०) हिमालय की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।

माना—(फा०) मानिंद। सदृश। तुल्य।

मानिक—(पु० हि०) एक मणि का नाम।

मानिनी—(वि० सं०) गर्ववती। रुष्टा।

मानी—(वि० हि०) घमंडी। (अ०) अर्थ। मतलब। माने। रहस्य। आशय।

मानुषी—(स्त्री० सं०) स्त्री। मनुष्य सम्बन्धी। मनुष्य का।

माप—(पु० सं०) नाप। तौल।

मापना—(स०क्रि० हि०) नापना।

मान्य—(वि० सं०) आदर के योग्य।

माफ़—(अ० वि०) क्षमा। मुक्त। माफ़ी—क्षमा।

माफ़—(वि० अ०) क्षमा।

माफ़िक—(स्त्री० अ०) अनुकूलता। मेल। रीति।

माफ़िक़—(वि० अ०) अनुकूल। अनुसार।

माफ़ी—(स्त्री० अ०) क्षमा। वह भूमि का हिस्सा जिसका लगान न लिया जाता हो।

मामलत—(अ० अ०) मामला। विवादास्पद विषय।

मामला—(पु० अ०) काम। पारस्परिक व्यवहार। झगड़ा। मुकदमा। प्रधान विषय।

मामा—(पु० अनु०) माता का भाई।

मामी—(स्त्री० फा०) मामा की स्त्री।

मामू—(स्त्री० अनु०) माता का भाई। मामा।

मामूल—(पु० अ०) ढंग। चाल। रीति। रवाज।

मामूली—(वि० अ०) नियमित। नियत। साधारण।

मायका—(पु० हि०) पीहर। नैहर।

मायल—(वि० फा०) झुका हुआ। मिला हुआ।

माया—(स्त्री सं०) धन। अविद्या। भ्रम। छल। कपट। जादू। —मोह = छल। प्रलोभन। —वादी = ईश्वर के सिवा प्रत्येक वस्तु को अनित्य माननेवाला। —वी = धोखेबाज़। फरेबी।

मायूस—(वि० फा०) निराश। नाउम्मेद।

मार—(स्त्री० हि०) चोट। निशाना। मार पीट। युद्ध। काली मिट्टी की जमीन। (फा०)साँप। अत्याचारी। —काट=युद्ध। लड़ाई। —ना = वध करना। सताना। फेंकना। छिपाना। पीटना। नष्ट। करना। चलाना। मारक=मार डालने वाला। किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला।

मारका—(पु० अ०) माक। चिह्न। निशान। (पु० अ०) युद्ध। लड़ाई। बहुत बड़ी या महत्वपूर्ण घटना।

मारखोर—(पु० फा०) एक प्रकार का बकरी या भेड़।

मारफत—(अव्य० अ०) द्वारा। ज़रिये से।

मारू—(पु० हि०) एक राग।

मारे—(अव्य० हि०) वजह से। कारण से।

मार्क—(पु० अं०) छाप। मार्का=छाप।

मार्केट—(पु० अं०) बाजार। हाट।

मार्ग—(पु० सं०) रास्ता।

मार्च—(पु० अं०) अंगरेजी का

तीसरा मास। गमन। गति। सेना का कूच।

मार्जन—(पु० स०) सफाई। मार्जनीय=मार्जन करने योग्य।

माल—(पु० फ़ा०) असबाब। सामान। —ख़ाना=भंडार। —गाड़ी=रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल आता जाता है। —गुज़ार=माल गुज़ारी देनेवाला। —गुज़ारी=ज़मीन का कर। लगान। —गोदाम=वह स्थान जहाँ माल रखा जाता है। —मताअ=असबाब और रुपया। —दार=धनी। बहुत धनी। भरा हुआ। जवालब।

मालटा—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की नारंगी।

मालती—(स्त्री० स०) एक प्रकार की लता का नाम।

मालवीय—(वि० स०) मालवे का। मालवे का रहनेवाला।

माला—(स्त्री० स०) पंक्ति। अवली। फूलों का हार। झुंड। —माल=(अ०)

मालिक—(पु० अ०) ईश्वर। पति। शौहर। मालिकाना=मिलकियत। स्वामित्व। मालिक की तरह। मालिकी=मालिक का स्वत्व।

मालिनी—(स्त्री० स०) मालिन।

मालिन्य—(पु० स०) मैला पन। अँधेरा।

मालियत—(स्त्री० अ०) क़ीमत। धन। क़ीमती चीज़।

माली—(पु० हि०) बाग को साचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगानेवाला पुरुष। माल के संबंध का। धन संबंधी।

मालीदा—(पु० फा०) मलीदा। चूरमा। एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

मालूम—(वि० अ०) जाना हुआ। ज्ञात।

माश—(अ०) खड़ी मूँग।

माशा—(पु० हि०) एक प्रकार का बाट या मान।

वाला। —कारी=सान या धातु पर होनेवाला रंगीन काम। किसी काम में निकाली या की हुई बहुत बड़ी बारीकी।

मीनार—(फ़ा०) स्तंभ। लाट। मसजिदों आदि के कोनों पर बहुत ऊँची उठी हुई गोल इमारत जो खंभे के रूप में होती है।

मीमांसक—(पु० सं०) मीमांसा करनेवाला। मीमांसा=तत्व का विचार, निर्णय या विवेचन। मीमांसित=जिसकी मीमांसा की जा चुकी हो।

मीर—(पु० फ़ा०) सरदार। प्रधान। धार्मिक आचार्य। सैयद जाति की एक उपाधि। ताश में सबसे बड़ा पत्ता। —अर्ज़=वह कर्मचारी जो बादशाहों की सेवा में लोगों के निवेदनपत्र आदि उपस्थित करे। —आतिश=वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में तोपखाना हो। मीरज़ा=अमीर या सरदार का लड़का।



मुगल शाहज़ादों की एक उपाधि। मीरज़ाई=मीरज़ा का पद या उपाधि। अमीरी। अमीरों या शाहज़ादों का सा ऊँचा दिमाग होना। अभिमान। मिरज़ई। —फर्श=वे भारी पत्थर जो बड़े बड़े फ़र्शों या चाँदनियों आदि के कोनों पर इसलिये रखे जाते हैं जिसमें वे हवा से उड़ न जायँ। —बख्शी=मुसलमानी राजत्व काल का एक प्रधान कर्मचारी। —बहर=मुसलमानी राजत्वकाल में जल-सेना का प्रधान अधिकारी। —बार=प्राचीन मुसलमानी राजत्वकाल का एक प्रधान कर्मचारी।—मंज़िल=वह कर्मचारी जो बादशाहों या लश्कर आदि के पहुँचने से पहले मंज़िल पर पहुँचकर प्रबंध करे।—मजलिस=सभापति।—महल्ला=किसी महल्ले का प्रधान या सरदार। —मुंशी

=प्रधान मुंशी। —शिकार=शिकार का प्रबंध करनेवाला प्रधान कर्मचारी। —सामान=पाकशाला का प्रधान प्रबंधक। —हाज=हाजियों का सरदार।

मीरास—(स्त्री० अ०) बपौती। मीरासी=एक प्रकार के मुसलमान।

मुँगरा—(पु० हि०) पीटने-ठोंकने का एक औज़ार।

मुगौरी—(स्त्री० हि०) मूँग की बनी हुई बरी।

मुंडन—(पु० सं०) सिर का उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया। एक संस्कार।

मुँड़ना—(क्रि० हि०) मूँड़ा जाना। सिर के बालों की सफ़ाई होना। लुटना। ठगा जाना। हानि उठाना। मुँड़ाई=मूँड़ने की मज़दूरी।

मुंडा—(पु० क्रि०) वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़ हुए हों। वह जो सिर मुँड़ा कर किसी साधु या जोगी का शिष्य हो गया हो। वह पशु जिसके सींग न हों। एक प्रकार का जूता। मुँडी=वह स्त्री जिसका सिर मुंडा हो। विधवा। एक प्रकार की जूती।

मुंडिन—(वि० अ०) मुँड़ा हुआ।

मुँडेर—(स्त्री० हि०) मुँडेरा। मकान की चोटी।

मुतक़िल—(वि० अ०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया हुआ।

मुंतज़िम—(पु० अ०) वह जो इन्तज़ाम करता हो।

मुंतज़िर—(पु० अ०) इन्तज़ार या भरोसा करने वाला।

मुँदरी—(स्त्री० हि०) छल्ला। अँगूठी।

मुंशी—(पु० फा०) लेखक। मुहर्रिर। मुंशियाना=मुंशियों की तरह का। —खाना=दफ्तर। —गिरी=मुंशी का काम या पद।

मुंसरिम—(पु० अ०) दफ्तर का प्रधान कर्मचारी।

मुन्तलिफ़—(पु० अ०) माथ में बाँधा या नत्था किया हुआ।

मुन्सिफ़—इन्साफ करने वाला। मुन्सिफी=न्याय करने का काम। मुन्सिफ़ का काम या पद। मुन्सिफ की अदालत।

मुँह—(पु० हि०) बोलने और भोजन करने का अंग। मुख विवर।—काला=बेइज्जती। बदनामी। एक प्रकार की गाली। —चोर=वह जो दूसरों के सामने आने से मुँह छिपाता हो। —छुट=मुँह फट। —ज़ोर=बकवादी। उद्दंड। —दिखलाई=नई वधू का मुँह देखने का रस्म। वह धन जो मुँह देखने पर बधू को दिया जाय। —फट=बदज़बान। —बंद=जिसका मुँह खुला न हो। कुँआरी। —माँगा=अपनी इच्छा के अनुसार। मुँहासा=मुँह पर की फुन्सियाँ जो युवावस्था में निकलती हैं।

मुअज्ज़न—(पु० अ०) मसजिद में अज़ान देने वाला।

मुअत्तल—(वि० अ०) जो काम से कुछ दिनों के लिये अलग किया जाय। मुअत्तली=काम से कुछ दिनके लिये अलग कर दिया जाना।

मुअम्मा—(पु० अ०) रहस्य। भेद। पहेली। घुमाव फिराव की बात।

मुअल्लिम—(पु० अ०) शिक्षक।

मुआफ—(वि० अ०) क्षमा। मुआफी=क्षमा।

मुआफकत—(फा०) दोस्ती। अनुकूलता।

मुआफिक—(अ०) अनुकूल। समान। ठीक ठीक। इच्छानुसार।

मुआमला—(अ०) व्यापार। काम। व्यवहार। विवादास्पद विषय।

मुआइना—(अ०) देख भाल करना। निरीक्षण।

मुआलिज—(अ०) इलाज करने वाला। चिकित्सक। मुआ

लिजा = इलाज । चिकित्सा ।

मुआवज़ा—(अ०) बदला । वह धन जो हानि के बदले में मिले । वह रकम जो जमींदार को ज़मीन के बदले में मिले ।

मुआहदा—(अ०) दृढ़ निश्चय । करार ।

मुकत्ता—(वि० अ०) ठीक तरह से बनाया हुआ । सभ्य । शिष्ट ।

मुक़द्दमा—(पु० अ०) अभियोग । दावा । नालिश । मुकद्दमेबाज़ = वह जो प्रायः मुकद्दमे लड़ा करता हो । मुक़द्दमेबाज़ी = मुक़द्दमा लड़ने का काम ।

मुकद्दम—(अ०) पुराना । सब श्रेष्ठ । ज़रूरी । आवश्यक । मुखिया । नेता ।

मुक़द्दर—(पु० अ०) भाग्य । तकदीर ।

मुक़द्दस—(वि० अ०) पवित्र । पाक ।

मुकम्मल—(वि० अ०) पूरा किया हुआ ।

मुकरना—(क्रि० हि०) इनकार करना । नटना ।

मुक़र्रर—(अव्य० अ०) दोबारा । फिर से निश्चित । मुक़र्रर = (अ०) नियुक्त । निस्सन्देह । मुक़र्ररी = नियुक्ति ।

मुक़ब्बी—(वि० अ०) बलवर्द्धक ।

मुक़ाबला—(पु० अ०) आमना सामना । मुठभेड़ । बराबरी । तुलना । मिलान । विरोध । लड़ाई ।

मुक़ाबिल—(क्रि० अ०) सम्मुख । सामने ।

मुकाम—ठहरने का स्थान । पड़ाव । घर । सरोद का कोई परदा ।

मुक़िर—(वि० अ०) प्रतिज्ञा करने वाला । किसी दस्तावेज़ या अरज़ीदावे का लिखने वाला ।

मुकुट—(पु० स०) ताज ।

मुकुलित—कुछ खिली हुई कली । कुछ कुछ खुला । झपकता हुआ नेत्र ।

मुक्का—(पु० हि०) बँधी मुट्ठी ।

मुक्की=घूँसा। मुक्केबाज़ी=घूसबाज़ी।

मुक्त—(वि० स०) छुटकारा पाया हुआ। फँसा हुआ। —कंठ=खुले गले से।

मुख—(पु० स०) मुँह। प्रधान। मुखड़ा=मुख। चेहरा।

मुख़्तार—(पु० अ०) प्रतिनिधि। एक प्रकार के क़ानूनी सलाहकार। —आम=वह प्रतिनिधि जिसे सब प्रकार के काम करने, मुक़द्दमे आदि लड़ने का अधिकार दिया गया हो। —कार=वह जो किसी काम की देख रेख के लिये नियुक्त किया गया हो। —कारी=मुख़्तार का काम या पद। मुख़्तारी। —ख़ास=वह जो किसी विशिष्ट कार्य या मुक़द्दमे के लिये प्रतिनिधि बनाया गया हो। —नामा=वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कारवाई करने के लिये मुख़्तार बनाया जाय। —नामा आम=वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई मुख़्तार आम नियुक्त किया जाय। —नामा ख़ास=वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई मुख़्तार ख़ास नियुक्त किया जाय।

मुख़न्नस—(वि० अ०) नपुंसक।

मुख़फ़्फ़फ़—(वि० अ०) जो घटाकर कम किया गया हो। संक्षिप्त।

मुख़बिर—(पु० अ०) भेदिया। जासूस। मुख़बिरी=भेद देना।

मुख़मसा—(पु० अ०) झगड़ा। बखेड़ा।

मुख़म्मस—(वि० अ०) जिसमें पाँच कोने या अंग आदि हों। पाँच चरणों की उर्दू की कविता।

मुखर—(वि० स०) बकवादी।

मुख़लिसी—(स्त्री० अ०) छुटकारा। रिहाई।

मुखाग्र—(पु० स०) कण्ठस्थ।

मुखातिब—(वि० अ०) जिससे बात की जाय।
मुखापेक्षी—(पु० हि०) दूसरों के सहारे रहनेवाला।
मुखालिफ—(वि० अ०) विरोधी। शत्रु। प्रतिद्वंद्वी। मुखालिफत=विरोध। दुश्मनी।
मुखिया—(पु० हि०) नेता। प्रधान। अगुआ।
मुख्तलिफ—(वि० अ०) अलग। भिन्न। अनेक प्रकार का।
मुख्तसर—(वि० अ०) संक्षिप्त। छोटा। थोड़ा।
मुख्तार—(पु० अ०) प्रतिनिधि।
मुख्य—(वि० स०) प्रधान। श्रेष्ठ। —ता=प्रधानता। —तया=विशेष करके।
मुगदर—(पु० हि०) एक प्रकार की लकड़ी जिसका उपयोग व्यायाम के लिये किया जाता है।
मुगल—(पु० फ़ा०) तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग।
मुगालता—(पु० अ०) धोखा। छल।
मुग्ध—(वि० स०) मोहित। मुग्धा=साहित्य में एक नायिका।
मुचलका—(पु० तु०) प्रतिज्ञा पत्र।
मुजक्कर—(वि० अ०) पुल्लिंग।
मुजरा—(पु० अ०) वह रकम जो किसी रकम में से काट ली गई हो। अभिवादन। वेश्या का वह गाना जो बैठकर हो और जिसमें उसका नाच न हो।
मुजर्रद—(वि० अ०) अकेला। संसार त्यागी।
मुजर्रब—(वि० अ०) आज़माया हुआ। परीक्षित।
मुजरिम—(पु० अ०) अभियुक्त।
मुजल्लद—(वि० अ०) जिल्द दार।
मुजस्सिम—स-शरीर। प्रत्यक्ष।
मुजावर—वह मुसलमान जो किसी दरगाह आदि की सेवा करता हो और चढ़ावा आदि लेता हो।
मुजिर—(वि० अ०) हानिकारक।

मुटाइ—(स्त्री० हि०) मोटापन। पुष्टि। घमंड। मुटाना=मोटा हो जाना। अहंकारी हो जाना। मुटासा=बेपरवा। घमंडी।

मुटिया—(पु० हि०) बोझ ढोने वाला। मज़दूर।

मुट्ठा—(पु० हि०) चंगुल भर वस्तु। पुलिंदा। मुट्ठी=बँधी हुई हथेली।

मुठभेड़—(स्त्री० हि०) टक्कर। भिड़ंत। भेंट। सामना।

मुठिया—(स्त्री० हि०) दस्ता। बेंट।

मुड़ना—(क्रि० हि०) घुमाव लेना। झुकना। घूम जाना। लौटना।

मुड़वाना—(क्रि० हि०) उस्तरे से बाल या रोएँ दूर कराना। मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना।

मुड़ाना—(क्रि० हि०) सिर के सब बाल बनवाना। ठगा जाना।

मुड़िया—(पु० हि०) सिर मुँड़ा हुआ।

मुतअल्लिक—(वि० अ०) संबंधी। विषय में।

मुतदायरा—(वि० अ०) मुकद्दमा जो दायर किया गया हो।

मुतफन्नी—(वि० अ०) चालाक। धोखेबाज़।

मुतफर्रिक—(अ०) अलग अलग। विविध।

मुतबन्ना—(अ०) दत्तक या गोद लिया हुआ पुत्र।

मुतमौवल—(अ०) धनवान्। अमीर।

मुतरज्जिम—(फा०) अनुवादक।

मुतलक—(अ०) ज़रा भी। तनिक भी।

मुतवफा—(फ्रा०) मृत। स्वर्गीय।

मुतवल्ली—(फा०) अभिभावक।

मुतवातिर—(फ्रा०) लगातार। निरंतर।

मुतसद्दी—(फा०) लेखक। मुंशी। पेशकार। ज़िम्मेदार। प्रबंध कर्त्ता। हिसाब रखने वाला। मुनीम।

मुतहम्मिल—(अ०) सहिष्णु। सहनशील।
मुताबिक—(अ०) अनुसार। बमूजिब। अनुकूल।
मुतालबा—(फ़ा० पु० अ०) बाकी रुपया।
मुताह—(अ०) मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह। मुताही = वह स्त्री जिसके साथ मुताह किया गया हो। रखेली स्त्री।
मुत्तफ़िक़—(वि० अ०) सहमत।
मुत्तसिल—(अ०) समीप। नजदीक। लगातार।
मुदर्रिस—(पु० अ०) शिक्षक। अध्यापक।
मुदाम—(क्रि० फ़ा०) सदा। हमेशा। लगातार। मुदामी = जो सदा होता रहे।
मुदित—(वि० स०) प्रसन्न। खुश।
मुद्गर—(पु० स०) मोगरा।
मुद्दआ—(पु० अ०) अभिप्राय। मतलब।
मुद्द[illegible]) दावा करनेवाला।
मुद्दत—(अ०) अवधि। बहुत दिन। अरसा। मुद्दती = वह जिसके साथ कोई मुद्दत लगी हो।
मुद्दाअलेह—(पु० अ०) प्रतिवादी।
मुद्रा—(स्त्री० स०) मोहर। छाप। रुपया, अशरफ़ी आदि। सिक्का। अँगूठी। छल्ला। हाथ, पाँव, आँख, मुँह आदि की कोई स्थिति। अंगों की कोई स्थिति। मुख की चेष्टा। गोरखपंथी साधुओं के पहनने का एक कर्ण भूषण। हठयोग में विशेष अंग विन्यास। मुद्रण = छपाई। मुद्रणालय = छापाखाना। प्रेस। मुद्रांकित = मोहर किया हुआ। मुद्रिका = अँगूठी। सिक्का। मुद्रित = छपा हुआ।
मुनक्का—(पु० फ़ा०) बड़ी किशमिश।
मुनब्बतकारी—(स्त्री० अ०) पत्थरों पर उभरे हुए बेल-बूटे का काम।

(स्त्री०) एक रागिनी । एक प्रकार की मिट्टी ।
मुलम्मा—(वि० अ०) गिलट । मलाई । ऊपरी तड़क भड़क । —साज़ = मुलम्मा करने वाला । मुलमची ।
मुलाकात—(स्त्री० फ०) भेंट । मिलन । हेल मेल । प्रसंग । मुलाकाती = परिचित ।
मुलाज़िम—(पु० अ०) नौकर । दास । —त = सेवा । नौकरी ।
मुलायम—(अ०) नरम । नाजुक । मुलायमत = सुकुमारता । कोमलता । मुलायियत = नर्मी । कोमलता ।
मुलाहज़ा—(अ०) निरीक्षण । देख भाल । सङ्कोच । रिआयत ।
मुलठी—(स्त्री० हि०) जेठी मधु ।
मुल्क—(पु० अ०) देश । प्रांत । संसार । —गीरी = मुल्क जीतना । मुल्की = देशी ।
मुल्तवी—(अ०) स्थगित ।
मुल्ला—(पु० अ०) मौलवी ।
मुवक्किल—(पु० अ०) वकील करने वाला ।
मुशज्जर—(पु० अ०) एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा ।
मुशफिक—(वि० अ०) कृपालु । मित्र । दयावान ।
मुश्क—(पु० अ०) कस्तूरी । गंध । —नाफा = कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है । मुश्की = कस्तूरी के रंग का । जिसमें कस्तूरी पड़ी हो ।
मुश्किल—(वि० अ०) कठिन । (स्त्री०) कठिनता । सङ्कट ।
मुश्त—(पु० अ०) मुट्ठी ।
मुश्तहिर—(अ०) जो प्रसिद्ध किया गया हो ।
मुश्ताक—(अ०) चाहनेवाला ।
मुष्टि—(स्त्री० सं०) मुट्ठी । घूँसा ।
मुसकराना—(क्रि० हि०) मंदहास । मुसकराहट = मुसकराने की क्रिया । मुसकान = मंदहास ।
मुसद्दिका—(वि० अ०) जाँचा हुआ ।
मुसन्ना—(पु० अ०) किसी असल कागज़ की नकल । रसीद आदि का आधा भाग ।

मुसन्निफ—(अ०) ग्रंथकर्त्ता। रचयिता।
मुसम्मा—(वि० अ०) नामक। —त=औरत। स्त्री।
मुसलधार—(क्रि० वि० हि०) बहुत अधिक वेग से।
मुसलमान—(पु० फा०) इस्लाम धर्म को मानने वाला। मुसलमानी=मुसलमानों की एक रसम।
मुसल्लम—(वि० फा०) पूरा। अखंड।
मुसल्ला—(अ०) नमाज़ पढ़ने की चटाई या दरी।
मुसव्विर—(पु० अ०) चित्रकार। मुसव्विरी = चित्रकारी। नक्काशी।
मुसहर—(पु० हि०) एक जंगली जाति।
मुसहिल—(अ०) रेचक। जुलाब।
मुसाफिर—(पु० अ०) यात्री। पथिक। —खाना=रेल के यात्रियों के ठहरने का बना हुआ स्थान। धर्मशाला। सराय। —त=मुसाफ़िरी। प्रवास। मुसाफ़िरी= यात्रा। प्रवास।
मुसाहब—(पु० अ०) पार्श्ववर्त्ती। सहवासी। धनवान् या राजा आदि का मन बहलानेवाला। —त=मुसाहब का पद या काम। मुसाहबी=मुसाहब का पद या काम।
मुसीबत—(अ०) तकलीफ़। कष्ट। संकट।
मुस्टंड—(वि० हि०) हृष्ट पुष्ट।
मुस्तकिल—(वि० अ०) स्थिर। मज़बूत। स्थायी।
मुस्तगीस—(पु० अ०) फ़रियादी। मुद्दई। दावेदार।
मुस्तनद—(वि० अ०) प्रामाणिक।
मुस्तसना—(फा०) छाँटा हुआ। भिन्न। जो अपवाद स्वरूप हो। बरी किया हुआ।
मुस्तहक—(अ०) हक़दार। योग्य।
मुस्तैद—(अ०) जो किसी कार्य्य के लिये तत्पर हो। चालाक।

मुहाल्ला—(अ०) चाँदी का वह बंद या चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिये चढ़ाई जाती है।

मुहावरा—(पु० अ०) अभ्यास। आदत। (अ०) इडियम।

मुहासिब—(पु० अ०) हिसाब जाननेवाला। गणितज्ञ। हिसाब लेनेवाला। मुहासिबा =हिसाब। लेखा। पूछताछ।

मुहासिरा—(पु० अ०) घेरा।

मुहासिल—(अ०) आमदनी। लाभ। मुनाफ़ा।

मुहिब्ब—(पु० अ०) दोस्त। मित्र।

मुहिम—(पु० अ०) युद्ध। चढ़ाई। आक्रमण।

मुहूर्त—(पु० सं०) ज्योतिष के अनुसार काल का एक मान। समय।

मूँग—(स्त्री० पु० हि०) एक अन्न जिसकी दाल बनती है। —फली=एक प्रकार का पौधा और उसकी फली। मूँगिया =मूँग का सा। हरे रंग का।

मूँगा—(हि०)एक प्रकार का रत्न।

मूँछ—(स्त्री० हि०) ऊपरी ओंठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं।

मूँज—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का तृण।

मूँडना—(क्रि० हि०) हजामत करना। ठगना। चेला बनाना।

मूँदना—(क्रि० हि०) ढाँकना। बंद करना।

मूक—(वि० सं०) गूँगा।

मूज़ी—(पु० अ०) दुष्ट। दुर्जन।

मूढ़—(वि० सं०) मूर्ख। जिसे आगा पीछा न सूझता हो। —ता=मूढ़ता। अज्ञान।

मूत—(पु० हि०) पेशाब। —ना =पेशाब करना।

मूत्र—(पु० सं०) पेशाब।—विज्ञान = मूत्र-परीक्षा पर आयुर्वेद का एक ग्रंथ। मूत्राघात=पेशाब बंद होने का रोग। मूत्राशय=नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है।

=मृगतृष्णा की लहरें।—तृषा, मृगतृष्णा = मृग मरीचिका। —राज=सिंह। —लोचनी=हरिण के समान नेत्रवाली। मृगी=हरिणी।

मृगया—(पु० सं०) शिकार। आखेट।

मृणाल—(स्त्री० सं०) कमल का डंठल।

मृत—(वि० सं०) मरा हुआ। मृतक=मुर्दा। मृतक कर्म= प्रेत कर्म। —वत्सा=(स्त्री०) जिसकी सन्तति मर मर जाती हो। —सञ्जीवनी=एक बूटी। ज्वर की एक औषध।

मृत्तिका—(स्त्री० सं०) मिट्टी।

मृत्युंजय—(पु० सं०) वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। एक मंत्र।

मृत्यु—(स्त्री० सं०) मरण। मौत। यमराज। —नाशक=पारा।

मृदंग—(पु० सं०) एक बाजा।

मृदु—(वि० सं०) कोमल। नरम। । धीमा। मंद। —ता मलता। धीमापन। —ल = कोमल। कृपालु। नाजुक।

मृन्मय—(वि० सं०) मिट्टी का बना हुआ।

मृषा—(अव्य० सं०) झूठमूठ। व्यर्थ।

में—(अव्य० हि०) आधार सूचक शब्द। बकरी के बोलने का शब्द।

मेंगनी—(हि०) लेंडी।

मेंबर—(अं०) सभासद। सदस्य।

मेकदार—(पु० अ०) परिमाण। मात्रा।

मेख—(स्त्री० फ़ा०) खूँटा।

मेखला—(सं०) करधनी। घेरा। मण्डल। कमरबंद या पेटी।

मेगजीन—(पु० अं०) बारूद खाना। सामयिक पत्र विशेषतः मासिक पत्र जिसमें लेख छपते हैं।

मेघ—(पु० सं०) बादल। एक राग। —गर्जन=बादल की गरज। —नाद=मेघ का गर्जन। रावण का पुत्र।

—माला = बादलों की घटा। —पुष्प = वर्षा का जल। मेघाच्छन्न = बादलों से ढका हुआ। मेघाच्छादित = बादलों से ढका हुआ।

मेचक—(पु० सं०) अँधेरा। काला।

मेज—(स्त्री० फा०) टेबुल। —पोश = मेज पर बिछाने का कपड़ा। —बान = मेहमान दार।

मेजर—(अ०) फ़ौज का एक अफ़सर।

मेट—(पु० अ०) मजदूरों का अफ़सर।

मेटना—(क्रि० हि०) मिटाना। दूर करना। नष्ट करना।

मेड—(पु० हि०) छोटा बाँध। दो खेतों के बीच में सीमा के रूप में बना हुआ रास्ता। —बंदी = हदबंदी। मेड़रा = किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। मण्डलाकार वस्तु का ढाँचा। मेंड़रा।

मेडल—(पु० अ०) तमगा। पदक।

मेढक—(पु० हि०) एक जल स्थल चारी जंतु। दादुर।

मेढ़ा—(पु० हि०) सींगवाला एक चौपाया।

मेथी—(स्त्री० सं०) एक शाक। मेथौरी = मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई उर्द की पीठी की बरी।

मेद्—(पु० हि०) चरबी।

मेदा—(अ०) पेट। पाकाशय।

मेदिनी—(सं०) पृथ्वी। धरती।

मेधा—(स्त्री० सं०) धारणावाली बुद्धि। —वी = मेधा शक्तिवाला। बुद्धिमान्। विद्वान्।

मेम—(स्त्री० अ०) युरप या अमेरिका की स्त्री। ताश का एक पत्ता।

मेमना—(अनु०) भेड़ का बच्चा।

मेमार—(पु० अ०) इमारत बनानेवाला।

मेमोरियल—(अ०) वह प्रार्थना पत्र जो किसी बड़े अधिकारी के पास विचारार्थ भेजा जाय।

स्मारक चिह्न । यादगार ।

मेरा—(सर्व० हि०) "मैं" के सबंधकारक का रूप । अपना । मेरी (स्त्री०) ।

मेरु—(पु० सं०) एक पर्वत । —दंड=पीठ के बीच की हड्डी । रीढ़ । पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा । —यंत्र= चरखा । बीजगणित में एक प्रकार का चक्र ।

मेरे—(सर्व० हि०) 'मेरा' का बहुवचन ।

मेल—(पु० सं०) संयोग मिलाप । एकता । सुलह । दोस्ती । मित्रता । अनुकूलता । संगति । समता । बराबरी । मिलावट । मेला=बहुत से लोगों का जमावड़ा । मेला ठेला=जमावड़ा । मेली= मुलाकाती । साथी । हेल-मेल रखनेवाला ।

मेल्टिंग केट्ल—(पु० अ०) सरेस गलाने की देगचा ।

मेवा—(पु० फ़ा०) फल । सुखाए हुए बढ़िया फल । —फरोश =फल या मेवे बेचनेवाला ।

मेष—(पु० सं०) एक राशि ।

मेहँदी—(स्त्री० हि०) एक झाड़ी ।

मेह—(पु० फ़ा०) बादल । वर्षा ।

मेहतर—(हि०) भंगी ।

मेहनत—(फ़ा०) श्रम । प्रयास । मेहनताना=किसी काम की मज़दूरी । मेहनती=परिश्रमी ।

मेहमान—(अ०) पाहुना । अतिथि । दारी=आतिथ्य । पहुनाई । —मेहमानी= आतिथ्य । पहुनाई ।

मेहर—(फ़ा०) कृपा । दया । —बान=कृपालु । दयालु । —बानी=दया । कृपा ।

मेहरा—(हि०) स्त्रियों की सी चेष्टावाला । स्त्रियों में बहुत रहनेवाला । खत्रियों की एक जाति ।

मेहराब—(अ०) दरवाज़े के ऊपर का । गोल किया हुआ हिस्सा । —दार=ऊपर की ओर गोल कटा हुआ ।

मैं—(सर्व० हि०) स्वयं । खुद ।

मैत्री—(स्त्री० सं०) मित्रता। दोस्ती।

मैथिल—(वि० सं०) मिथिला देश का निवासी।

मैथुन—(पु० सं०) संभोग। रतिक्रीड़ा।

मैदा—(पु० फा०) बहुत महीन आटा।

मैदान—दूर तक फैली हुई सपाट भूमि। युद्ध क्षेत्र।

मैनफल—(पु० हि०) एक वृक्ष।

मैनसिल—(हि०) एक धातु।

मैना—(हि०) काले रंग का एक पक्षी।

मैल—(वि० हि०) मैला। दोष। विकार। —खोरा = मैल को छिपा लेनेवाला (रंग)। साबुन। मैला = मलिन। अस्वच्छ। दूषित। गंदा। विष्ठा। कूड़ा कर्कट। मैला कुचैला = जो बहुत मैले कपड़े आदि पहने हुए हो। गंदा। मैलापन = मलिनता। गंदापन।

मोक्ष—(पु० सं०) छुटकारा। मुक्ति। नजात।

मोच—(स्त्री० हि०) किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से चोट आदि के कारण इधर उधर खिसक जाना।

मोचरस—(हि०) सेमल वृक्ष की गोंद।

मोची—(हि०) चमड़े का काम बनानेवाला।

मोज़ा—(पु० फा०) जुर्राब। पायताबा।

मोट—(स्त्री० हि०) गठरी। मोटरी।

मोटर—(अं०) एक गाड़ी जो यंत्र की सहायता से चलती है।

मोटरी—(हि०) गठरी।

मोटा—(वि० हि०) स्थूल शरीर वाला। दरदरा। मोटाई = स्थूलता। शरारत। मोटापन = मोटाई। स्थूलता। मोटापा = मोटापन। मोटाई।

मोटिया—(हि०) मोटा और

खुरखुरा देशी कपड़ा । गाढ़ा । गज़ी ।

मोठ—(स्त्री० हि०) एक अन्न ।

मोड़—(स्त्री० हि०) घुमाव । —ना=फेरना । लौटाना ।

मोतदिल—(वि० अ०) जो न बहुत गरम और न बहुत सर्द हो ।

मोती—(हि०) एक प्रसिद्ध रत्न । —चूर=छोटी बूँदियों का लड्डू । —ज्वर=चेचक निकलने के पहले आनेवाला ज्वर । मोतिया=एक फूल । —बिंद=आँख का एक रोग ।

मोतबर—(अ०) विश्वास पात्र ।

मोथा—(पु० हि०) एक घास ।

मोदक—(पु० सं०) लड्डू ।

मोदी—(हि०) परचूनिया । —खाना=भंडार । गोदाम ।

मोधू—(वि० हि०) मूर्ख ।

मोम—(पु० फा०) मधुमक्खी के छत्ते का उपकरण । —जामा=वह कपड़ा जिस पर मोम का रोग़न चढ़ाया गया हो । —बत्ती=मोम की जलने वाली बत्ती । मोमी=मोम का बना हुआ ।

मोमिन—(फा०) धर्मनिष्ठ मुसलमान । जोलाहों की एक जाति ।

मोमियाई—(हि०) नकली शिलाजीत । काले रंग की एक दवा ।

मोयन—(हि०) माँड़े हुए आटे में घी या चिकना देना ।

मोर—(पु० हि०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी । —नी=मोर पक्षी की मादा । —पंखी=वह नाव जिसका सिरा मोर की तरह बना और रँगा हुआ हो । (वि०) मोर के पंखे के रंग का । गहरा चमकीला नीला ।

मोरचा—(फ़ा०) ज़ंग । रुपया पर जमी हुई मैल । वह स्थान जहाँ खड़े होकर शत्रु-सेना से लड़ाई की जाती है ।

मोरना—(हि०) घुमाना ।

मोरी—(हि०) पनाली ।

मोल—(पु० हि०) क़ीमत । दाम ।

मोह—(पु० सं०) अज्ञान । भ्रम ।

प्यार। मुहब्बत। —क = लुभानेवाला। —निशा = अज्ञानांधकार। मोहिनी = वश में करना। मुग्धता। जादू। मोहित = मुग्ध। आशिक।

मोहताज—(फ़ा०) निर्धन। ग़रीब। मोहताजी = ग़रीबी।

मोहन—(पु० स०) मोहनेवाला। —भाग = हलुआ। —माला = सोने के गुरियों या दानों की बनी हुई माला।

मोहब्बत—(स्त्री० फ़ा०) प्रेम। स्नेह।

मोहर—(स्त्री० फ़ा०) ठप्पा। अशरफ़ी।

मोहरा—(पु० हि०) किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। सेना की गति। शतरंज की कोई गोटी।

मोहर्रिर—(पु० अ०) लेखक। मुंशी।

मोहलत—(स्त्री० अ०) फ़ुरसत। अवकाश। अवधि।

मोहल्ला—(पु० हि०) शहर का कोई हिस्सा।

मौक़ा—(पु० अ०) घटनास्थल। जगह। अवसर।

मौक़ूफ़—(वि० अ०) बरख़ास्त। निर्भर। मौक़ूफ़ी = बरख़ास्तगी।

मौक़िफ़—(पु० स०) मेंथी।

मौखिक—(वि० स०) ज़बानी।

मौज—(स्त्री० अ०) लहर। मौजी = मनमाना काम करने वाला।

मौज़ा—(पु० अ०) गाँव।

मौजूद—(पु० फ़ा०) उपस्थित। हाज़िर। मौजूदगी = उपस्थिति। मौजूदा = प्रस्तुत। वर्तमान काल का।

मौत—(स्त्री० अ०) मृत्यु।

मौतक़िद—(अ०) विश्वास करनेवाला।

मौताद—(स्त्री० अ०) मात्रा।

मौन—(पु० स०) चुप रहना। चुप। —व्रत = चुप रहने का व्रत।

मौर—(पु० हि०) मुकुट। विवाह

के समय वर के सिर का आभूषण। मजरी। मौर।

मौरूसी—(वि० अ०) पैतृक।

मौर्य—(पु० सं०) क्षत्रियों के एक वंश का नाम।

मौलवी—(पु० अ०) अरबी भाषा का पंडित। मुसलमान धर्म का आचार्य।

मौलसिरी—(स्त्री० हि०) एक पेड़।

मौसा—(पु० हि०) माता की बहन का पति। मौसी=माता की बहन। मौसिया=माता की बहन का पति। मौसेरा=मौसा का।

मौसिम—(पु० अ०) ऋतु। मौसिमी=काल के अनुकूल।

म्याँव—(स्त्री० अनु०) बिल्ली की बोली।

म्यान—(पु० फ़ा०) तलवार, कटार आदि का घर।

म्युनिसिपैलिटी—(स्त्री० अं०) किसी नगर के स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि का प्रबंध करने वाली प्रतिनिधि सभा।

म्यूज़िक—(पु० अं०) बाजा।

म्यूज़िशियन—(पु० अं०) बाजा बजानेवाला।

म्यूज़ियम—(पु० अं०) अजायब घर।

म्लेच्छ—(पु० सं०) वे मनुष्य जो वर्णाश्रम धर्म को न मानते हों।

य

य—हिंदी वर्णमाला का २६वाँ व्यञ्जन।

यंत्र—(पु० सं०) औज़ार। बाजा। —णा=सकलीफ़। दर्द। पीड़ा। —विद्या=कलों के चलाने और बनाने की विद्या। —शाला=मशीन घर।

यकता—(वि० फ़ा०) अद्वितीय। —ई=एक होने का भाव।

यक-बयक—(क्रि० फ़ा०) एक

प्यार। मुहब्बत। —क = लुभानेवाला। —निशा = अज्ञानांधकार। मोहिनी = वश में करना। मुग्धता। जादू। मोहित = मुग्ध। आशिक।

मोहताज—(फ़ा०) निर्धन। ग़रीब। मोहताजी = ग़रीबी।

मोहन—(पु० स०) मोहनेवाला। —भोग = हलुआ। —माला = सोने के गुरियों या दानों की बनी हुई माला।

मोहब्बत—(स्त्री० फ़ा०) प्रेम। स्नेह।

मोहर—(स्त्री० फ़ा०) ठप्पा। अशरफ़ी।

मोहरा—(पु० हि०) किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। सेना की गति। शतरंज की कोई गोटी।

मोहर्रिर—(पु० अ०) लेखक। मुंशी।

मोहलत—(स्त्री० अ०) फ़ुरसत। अवकाश। अवधि।

मोहल्ला—(पु० हि०) शहर का कोई हिस्सा।

मौका—(पु० अ०) घटनास्थल। जगह। अवसर।

मौकूफ़—(वि० अ०) बरख़ास्त। निर्भर। मौकूफ़ी = बरख़ास्तगी।

मौक्तिक—(पु० स०) मोती।

मौखिक—(वि० स०) ज़बानी।

मौज—(स्त्री० अ०) लहर। मौजी = मनमाना काम करनेवाला।

मौजा—(पु० अ०) गाँव।

मौजूद—(पु० फ़ा०) उपस्थित। हाज़िर। मौजूदगी = उपस्थिति। मौजूदा = प्रस्तुत। वर्तमान काल का।

मौत—(स्त्री० अ०) मृत्यु।

मौतकिद—(अ०) विश्वास करनेवाला।

मौताद—(स्त्री० अ०) मात्रा।

मौन—(पु० स०) चुप रहना। चुप। —व्रत = चुप रहने का व्रत।

मौर—(पु० हि०) मुकुट। विवाह

के समय वर के सिर का आभूषण। मञ्जरी। बौर।

मौरूसा—(वि० अ०) पैतृक।

मौर्य्य—(पु० स०) क्षत्रियों के एक वंश का नाम।

मौलवी—(पु० अ०) अरबी भाषा का पंडित। मुसलमान धर्म का आचार्य।

मौलसिरी—(स्त्री० हि०) एक पेड़।

मौसा—(पु० हि०) माता की बहन का पति। मौसी=माता की बहन। मौसिया=माता की बहन का पति। मौसेरा=मौसी का।

मौसिम—(पु० अ०) ऋतु। मौसिमी=काल के अनुकूल।

म्याँउँ—(स्त्री० अनु०) बिल्ली की बोली।

म्यान—(पु० फ़ा०) तलवार, कटार आदि का घर।

म्युनिसिपैलिटी—(स्त्री० अं०) किसी नगर के स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि का प्रबंध करने वाला प्रतिनिधि सभा।

म्यूज़िक—(पु० अं०) बाजा।

म्यूज़ीशियन—(पु० अं०) बाजा बजानेवाला।

म्यूज़ियम—(पु० अं०) अजायब घर।

म्लेच्छ—(पु० स०) वे मनुष्य जो वर्णाश्रम धर्म को न मानते हों।

य

य—हिंदी वर्णमाला का २६वाँ व्यञ्जन।

यंत्र—(पु० स०) औज़ार। बाजा। —णा=सकष्टाक। दर्द। पीड़ा। —विद्या=कलों के चलाने और बनाने की विद्या। —शाला=मशीन घर।

यकता—(वि० फ़ा०) अद्वितीय। —ई=एक होने का भाव।

यक बयक—(क्रि० फ़ा०) एक

वारगी। यकायक। यकवारगी =अचानक।

यकसाँ—(वि० फ़ा०) एक समान। बराबर।

यकायक—(क्रि० फ़ा०) अचानक।

यक़ीन—(पु० अ०) विश्वास। एतबार। —न् = अवश्य। बेशक। ज़रूर।

यकृत—(पु० सं०) पेट में दाहिनी ओर की एक थैली। जिगर।

यक्ष्मा—(पु० हि०) क्षय रोग। तपेदिक़।

यख़नी—(स्त्री० फ़ा०) शोरबा। झोल। उबले हुए मांस का रसा।

यगाना—(वि० फ़ा०) अपना। एक वंश का। अकेला।

यजमान—(पु० सं०) यज्ञ कराने वाला। यजमानी = पुरा हित की वृत्ति।

यज्ञ—(पु० सं०) प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य। —शाला = यज्ञ करने का स्थान। यज्ञमंडप।

यज्ञोपवीत—(पु० सं०) जनेऊ। एक संस्कार। उपनयन। व्रतबंध।

यति—(पु० सं०) संन्यासी। विश्राम। विराम। —भंग = काव्य का एक दोष।

यतीम—(अ०) अनाथ। —ख़ाना = अनाथालय।

यत्न—(पु० सं०) उपाय। हिफ़ाज़त।

यत्रतत्र—(क्रि० सं०) जहाँ तहाँ। जगह जगह।

यथा—(अव्य० सं०) जैसे। —क्रम = क्रमशः। क्रमानुसार। —तथ्य = ज्यों का त्यों। —मंश = समझ के मुताबिक। —योग्य = मुनासिब। उपयुक्त। —रुचि = इच्छानुसार। यथार्थ = ठीक। उचित। जैसे का तैसा। —वत् = जैसा का तैसा। पहली तरह। —विधि = विधिपूर्वक। —शक्ति = सामर्थ्य के अनुसार। —संभव = जितना हो सके। —साध्य

=जहाँ तक हो सके । यथाशक्ति । यथेच्छ=मनमाना । यथेप्सित=इच्छानुसार । यथेष्ट=काफ़ी । पूरा । यथोक्त=कहे हुए के अनुसार । यथोचित=मुनासिब । ठीक । याथातथ्य=यथार्थता ।

यदि—(अव्य० सं०) अगर । जो ।

यद्यपि—(अव्य० सं०) अगरचे । हरचंद ।

यम—एक देवता । —ज=एक साथ उत्पन्न होनेवाली दो संतानें । —पुरी=यमलोक । यमपुर । यमालय=यम का घर ।

यमक—(सं०) एक प्रकार का शब्दालंकार । एक वृत्त का नाम ।

यमुना—(स्त्री० सं०) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी ।

यवन—(पुं० सं०) यूनानी । यूनान देश का निवासी । मुसलमान । यवनी=यवन जाति की स्त्री ।

यश—(पुं० सं०) कीर्ति । नेकनामी । बड़ाई । —स्विनी=कीर्तिमती । —स्वी=कीर्तिमान् ।

यह—(सर्व० हि०) पास की वस्तु का निर्देश करनेवाला एक सर्वनाम । यही=यह ही ।

यहाँ—(वि० हि०) इस जगह पर । यहीं=यहाँ ही ।

यहूदी—(पुं० हि०) एक जाति ।

या—(अ० फा०) अथवा । वा ।

याकूत—(पुं० अ०) लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर । लाल ।

याकूब—(अ०) मुसलमानों के एक पैग़म्बर ।

याचक—(पुं० सं०) भिखारी । माँगनेवाला ।

यातायात—(पुं० सं०) गमनागमन । आना जाना ।

यात्रा—(स्त्री० सं०) सफ़र । प्रस्थान । यात्री=मुसाफ़िर ।

याद—(स्त्री० फ़ा०) स्मरणशक्ति । स्मृति । —गार=स्मारक । —दाश्त=स्मृति ।

यान—(पु० स०) गाड़ी, रथ आदि सवारी। विमान।

यानी, याने—(अव्य० अ०) अर्थात्। मतलब यह कि।

यापन—(पु० स०) बिताना।

यार—(पु० फा०) मित्र। दोस्त। उपपति। जार। यारना = मित्रता। स्त्री और पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। (वि०) मित्रता का। यारी = मित्रता। स्त्री और पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। —बाश = रसिक।

याल—(स्त्री० तु०) घोड़े की गरदन के ऊपर के लम्बे बाल।

युक्ति—(स्त्री स०) उपाय। ढंग। कौशल। तर्क।

युग—(पु० स०) समय। काल। युगांतर = दूसरा युग। ज़माने का बदलना।

युत—(वि० स०) सहित। मिला हुआ।

युद्ध—(पु० स०) लड़ाई।

युरेशियन—(पु० अ०) वह जिस के माता पिता में से कोई एक यूरोप का और दूसरा एशिया का हो।

युरप—(पु० अ०) एक महाद्वीप।

युवती—(वि० स०) जवान स्त्री।

युवराज—(पु० स०) राजा का वह राजकुमार जो उसके राज्य का उत्तराधिकारी हो।

युवा—(वि० हि०) जवान।

यूनाइटेड—(वि० अ०) मिला हुआ। संयुक्त। —स्टेट्स = अमेरिका। —किंगडम = बृटिश साम्राज्य।

यूनान—(पु० ग्रीक आयोनिया) एक देश। यूनानी = यूनान का। (स्त्री०) यूनान देश की भाषा। यूनान देश का निवासी। हकीमी।

यूनिवर्सिटी—(स्त्री० अ०) विश्व विद्यालय।

यूनियन—(पु० अ०) संघ। सभा। समाज। —जैक = ग्रेट-ब्रिटेन और आयर्लैण्ड के संयुक्त राज्यों की राष्ट्रीय पताका। यूनियन फ्लैग।

यों—(अव्य० हि०) इस भाँति।

योंहीं—(अव्य॰ हि॰) ऐसे ही। व्यर्थ ही।

योग—पु॰ स॰) संयोग। चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना। ६ दर्शनों में से एक। —फल=दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या। —रूढ़=दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे। योगाभ्यास=योग का साधन। योगिराज=योगियों में श्रेष्ठ। योगी=आत्मज्ञानी। योगीश्वर=योगियों में श्रेष्ठ।

योग्य—(वि॰ स॰) काबिल। लायक। श्रेष्ठ। उचित। —ता=लायकी। बड़ाई। बुद्धिमानी। सामर्थ्य। गुण।

योजन—(पु॰ स॰) दूरी की एक नाप।

योजना—(स॰) नियुक्ति। प्रयोग। मेल। रचना। घटना। स्थिति। व्यवस्था।

योज्य—(वि॰ स॰) संख्यायें जो जोड़ी जायँ।

योद्धा—(पु॰ हि॰) सिपाही। लड़ाका।

योनि—(स्त्री॰ स॰) आकर। खानि। उत्पत्ति-स्थान। स्त्रियों की जननेन्द्रिय। प्राणियों के विभाग।

योम—(अ॰) रोज। दिन।

यौवन—(पु॰ स॰) जवानी।

र

र—हिंदी-वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यञ्जन।

रंक—(वि॰ स॰) ग़रीब। कंगाल।

रंग—(पु॰ स॰) नाचना। गाना। युद्ध। वर्ण। वह चीज जिसके द्वारा कोई चीज रंगी जाय। शरीर का ऊपरी वर्ण। शोभा। प्रभाव। —त=रंग का

भाव। हालत। दशा। —भूमि = अभिनय का स्थान। क्रीड़ास्थल। रणभूमि। —शाला = नाटकघर। —मंच = नाटक का स्टेज। रंगीन = रँगा हुआ। —रेज़ = कपड़े रंगनेवाला। रंगीनी = रसिकता। सजावट। रंगीला = आनन्दी। रसिक। सुन्दर। प्रेमी। रँगना = किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना। किसी को अपने अनुकूल करना। किसी पर आसक्त होना। —बिरंग = कई रंगों का। तरह तरह के। —बिरंगा = अनेक रंगों का। —भवन = रंगमहल। —महल = भोगविलास करने का स्थान। —सार = ताश का खेल। —साज़ = रंग बनानेवाला। —साज़ी = रंग बनाने का काम। रँगाई = रंगने की मज़दूरी।

रंगरूट—(पु० अं० रिक्रूट) सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही।

रंज—(पु० फ़ा०) दुःख। खेद। शोक। रंजिश = मनमुटाव रंजीदगी = मनमुटाव। रंजीदा = नाराज़।

रंजक—(स्त्री० हि०) वह थोड़ी सी बारूद जो बत्ती लगाने वास्ते बंदूक की प्याली पर रखी जाती है। कोई तीखा चटपटा चूर्ण।

रंजित—(वि० सं०) रँगा हुआ। प्रसन्न। अनुरक्त।

रँडापा—(पु० हि०) वैधव्य। विधवा की दशा।

रंडी—(स्त्री० हि०) वेश्या। —बाज़ = वेश्यागामी। —बाज़ी = वेश्यागमन।

रँडुआ, रँडुवा—(पु० हि०) वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो। विधुर।

रंदा—(पु० फ़ा०) बढ़ई का एक औज़ार।

रंध्र—(पु० सं०) छेद। सुराख़।

रँभाना—(क्रि० हि०) गाय का बोलना।

रअय्यत—(स्त्री० अ०) प्रजा। रिआया। किसान।

रई—(स्त्री० हि०) दही मथने की लकड़ी। दरदरा आटा। सूजी। चूर्णमात्र।

रईस—(पु० फा०) अमीर। धनी।

रकबा—(पु० अ०) क्षेत्रफल।

रकम—(स्त्री० अ०) संपत्ति। ज़ेवर। लगान की दर। तरह। रकमी=वह किसान जिसके साथ कोई ख़ास रिआयत की जाय।

रकाब—(स्त्री० फा०) घोड़ों की ज़ीन का पावदान। रकाबा=बड़ी थाली। परात। रकाबी=तश्तरी।

रकीक—(वि० अ०) पानी की तरह पतला।

रकीब—(पु० अ०) प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

रक्त—(पु० सं०) लहू। खून। रक्त। लाल। —चंदन=लाल रंग का चंदन। —पात=लहू का गिरना या बहना। खून खराबी। —पित्त=एक रोग। नकसीर। —स्राव=लहू जाना या गिरना। रक्तातिसार=एक प्रकार का अतिसार। रक्ताशय=वे कोठे जिनमें रक्त रहता है। रक्तिम=ललाई लिए हुये।

रक्षा—(सं०) बचाना। पालना। रक्षक=बचानेवाला। पहरेदार। पालन करनेवाला। रक्षण=रक्षा करना। पालन पोषण। रक्षणीय=रक्षा करने योग्य। —बंधन=हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है। सलोना। रक्षित=जिसकी रक्षा की गई हो। पाला पोसा हुआ। (स्त्री०) रक्षिता।

रक्से ताऊस—(पु० फा०) एक प्रकार का नाच।

रखना—(क्रि० हि०) टिकाना। धरना। रक्षा करना। बचाना। निर्वाह या पालन करना।

संग्रह करना। सौंपना। रेहन करना। अपने हाथ में करना। अपनी अधीनता में लाना। नियुक्त करना। पकड़ या रोक लेना। धारण करना। किसी पर आरोप करना। कर्ज़दार होना। मन में अनुभव या धारणा करना। ठहराना। रखवाना = रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखवाला = रक्षा करनेवाला। पहरेदार। रखवाली = रक्षा करना। रखेली = रखना। उपपत्नी।

रग—(स्त्री० फा०) नस।

रगड़—(हि०) घर्षण। झगड़ा। धुन। —ना = घिसना। पीसना। अभ्यास आदि के लिये बार बार कोई काम करना। किसी काम को जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रमपूर्वक करना। परेशान करना। रगड़वाना = रगड़ने का काम दूसरे से कराना। रगड़ा = बहुत अधिक उद्योग। वह झगड़ा जो बराबर होता रहे।

रगबत—(स्त्री० अ०) चाह। इच्छा। रुचि।

रगरेशा—(पु० फा०) पत्तियों की नसें। शरीर के अंदर का प्रत्येक अंग। किसी विषय की भीतरी और सूक्ष्म बातें।

रगेदना—(क्रि० हि०) भगाना। खदेड़ना।

रग्गा—(पु० देश०) एक प्रकार का अश्व। रगी।

रचना—(स्त्री० सं०) बनावट। निर्माण। बनाई हुई वस्तु। कार्य। बनाना। निश्चित करना। ग्रंथ आदि लिखना। पैदा करना। आयोजन करना। कल्पना करना। सजाना। रंग चढ़ना। रचयिता = रचने या बनाने वाला। रचित = बनाया हुआ। रचा हुआ।

रज—(पु० सं०) धूल। गर्द।

रजत—(सं०) चाँदी।

रजनी—(सं०) रात।

रजस्वला—(सं०) ऋतुमती। रजवती।

रज़ा—(अ०) इच्छा । छुट्टी । आज्ञा । —मंद=सहमत । रज़ामंदी=राज़ी या सहमत होना ।

रजिस्टर—(अ०) अँगरेज़ी ढंग की बही या किताब । रजिस्टरी=किसी लिखित प्रतिज्ञा पत्र को क़ानून के अनुसार सरकारी रजिस्टरों में दर्ज कराने का काम । चिट्ठी, पार सल आदि डाक से भेजने के समय डाकख़ाने के रजिस्टर में उसे दर्ज कराने का काम ।

रज़ील—(वि० अ०) नीच ।

रजोगुण—(पु० सं०) प्रकृति का वह स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोग विलास तथा दिखावे की रुचि उत्पन्न होती है । राजस ।

रजोदर्शन—(पु० सं०) स्त्रियों का मासिक धर्म । रजस्वला होना ।

रटा—(स्त्री० हि०) कहना । बोलना । रटना=किसी शब्द को बार बार कहना । ज़बानी याद करने के लिए बार बार उच्चारण करना । रटंत=रटना ।

रण—(पु० सं०) युद्ध । —क्षेत्र =लड़ाई का मैदान । —भूमि=लड़ाई का मैदान । —सिंघा=तुरही । नरसिंघा । —स्थल=रणभूमि ।

रतनजोत—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की मणि । एक पौधा ।

रतनारी—(पु० हि०) लाल ।

रतालू—(पु० हि०) एक कंद ।

रति—(स्त्री० सं०) संभोग । मैथुन । प्रेम । अनुराग । —क्रिया=मैथुन । समागम ।

रतौंधी—(स्त्री० हि०) आँख का रोग ।

रत्ती—(स्त्री० हि०) घुँघची का दाना । गुंजा ।

रत्न—(पु० सं०) मणि । जवाहर । सर्वश्रेष्ठ । —परीक्षक =जौहरी । रत्नाकर=समुद्र ।

रथ—(पु० सं०) प्राचीन काल की एक प्रकार की सवारी । गाड़ी । —कार=रथ बनाने वाला । बढ़ई । एक जाति ।

—यात्रा=हिंदुओं का एक पर्व। —वान्=रथ हाँकने वाला सारथी। रथी=रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। रथ पर चढ़ा हुआ। वह ढाँचा जिसपर मुर्दों को रखकर अन्त्येष्टि क्रिया के लिये ले जाते हैं। टिकटी।

रद्दबदल—(क्रि० फ़ा०) परिवर्तन। अदल बदल।

रदीफ़—(अ० अ०) अक्षरक्रम। —वार=अक्षर क्रम से।

रद्द—(वि० अ०) जो काट या छाँट दिया गया हो। जो तोड़ या बदल दिया गया हो।

रद्दा—(फ़ा०) दीवार की पूरी लंबाई में एक बार रखी हुई एक ईंट की जोड़ाई। नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह या स्तह।

रद्दी—(फ़ा०) निकम्मा। बेकार। —रद्द ख़ाना=वह स्थान जहाँ ख़राब और निकम्मी चीज़ें रखी या फेंकी जाएँ।

रनवास—(पु० हि०) रानियों के रहने का महल। जनानखाना।

रपटना—(क्रि० हि०) फिसलना। झपटना। किसी काम को शीघ्रता से करना।

रफ़ा—(वि० अ०) मिटाया हुआ। शान्त। —दफ़ा=निबटाया हुआ। शान्त।

रफ़ीदा—(पु० अ०) वह गद्दी जिसके ऊपर नान कमा जाता है। कालुक। गोल पगड़ी।

रफ़ू—(पु० अ०) फटे हुए कपड़े के छेद को तागे से भरकर उसे बराबर करना। —गर=रफ़ू बनाने वाला। —गरी=रफ़ू करने का काम। —चक्कर=गायब। चंपत।

रफ़्तनी—(स्त्री० फ़ा०) जाना। निर्यात।

रफ़्तार—(स्त्री० फ़ा०) चाल। गति।

रफ़्तारफ़्ता—(क्रि० फ़ा०) धीरे धीरे। क्रम क्रम से।

रब—(पु० अ०) ईश्वर।

रबड़—(अ०) एक लचीला पदार्थ।

रबड़ी—(हि०) औटाकर गाढ़ा

औट कर खोयेदार किया हुआ दूध।

रबाब—(पु० अ०) सारंगी की तरह का एक बाजा। रबाबिया=रबाब बजाने वाला।

रबी—(स्त्री० अ०) बसंतऋतु। वह फसल जो बसंत ऋतु में काटा जाता है।

रब्त—(पु० अ०) अभ्यास। मश्क। —ज़ब्त=सम्बन्ध।

रमण—(पु० सं०) विलास। क्रीड़ा। मैथुन। घूमना। रमणी=नारी। स्त्री। रमणीक=सुन्दर। रमणीय=सुन्दर। रमणीयता=सुन्दरता।

रमज़ान—(अ०) मुसलमानों का नवाँ महीना जिसमें वे रोज़ा रखते हैं।

रमना—(क्रि० हि०) मन लगने के कारण कहीं रहना। भोग-विलास या रतिक्रीड़ा करना। [illegible] करना। चल देना। विहार करना। विचरना। बाग।

रमल—(पु० अ०) एक प्रकार का फलित ज्योतिष। रम्माल=पासा फेंककर फलित कहनेवाला।

रमूज़—(स्त्री० अ०) कटाक्ष। सैन। इशारा। पहेली। भेद। रहस्य।

रम्य—(वि० सं०) सुन्दर। मनोरम। रमणीय।

रम्हाना—(क्रि० हि०) रँभाना। गाय का बोलना।

रय्यत—(स्त्री० अ०) प्रजा।

रव—(पु० सं०) गुंजार। शब्द।

रवन्ना—(पु० फ़ा०) वह नौकर जो स्त्रियों के कामकाज करने या सौदा लाने को ड्योढ़ी पर रहता है। वह कागज जिस पर रवाना किये हुए माल का ब्योरा होता है। राहदारी का परवाना।

रवाँ—(वि० फ़ा०) बहता हुआ। जारी।

रवा—(पु० हि०) कण। रेणु।

भेद का बात। गोपनाय। जो एकान्त में हुआ हो।

रहा सहा—(वि० हि०) बचा हुआ।

रहित—(वि० सं०) बिना। बगैर।

रहीम—(वि० अ०) कृपालु। दयालु।

राँगा—(पु० हि०) एक धातु।

राँड—(स्त्री० हि०) विधवा। बेवा।

राँधना—(पु० हि०) पकाना।

राँपी—(स्त्री० देश०) मोचियों का एक औज़ार। सेंध लगाने के लिये चोरों का औज़ार।

राँभना—(क्रि० हि०) गाय का बोलना या चिल्लाना।

राई—(स्त्री० हि०) बहुत छोटी सरसों। बहुत थोड़ा मात्रा या परिमाण।

राइफल—(स्त्री० अं०) बड़ी बंदूक।

राका—(स्त्री० सं०) पूर्णिमा की रात। पूर्णमासी।

राक्षस—(पु० सं०) दैत्य। असुर। कोई दुष्ट प्राणी।

राख—(स्त्री० हि०) भस्म। खाक।

राग—(पु० सं०) सांसारिक सुखों की चाह। प्रेम। गीत। गान। रागिनी=संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री।

राघव—(पु० सं०) रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। श्रीरामचन्द्र।

राज—(पु० हि०) शासन। राज्य। हुकूमत। देश। राजा। राजगार। थवई। —कन्या =राजा की पुत्री। —कर= खिराज। —कोष=राज्य खजाना। —कुमार=राजा का पुत्र।—गद्दी=राजसिंहासन। राज्याभिषेक। राज्याधिकार। —गार=मकान बनानेवाला कारीगर।—गीरी =राजगीर का पद या कार्य। —गृह=राजा का महल। —पत्नी=राजा की स्त्री। रानी। —पथ= राजमार्ग। बड़ी सड़क।

—पद्धति=राजपथ। राजनीति। —पुत्र=राजकुमार। —पुत्री=राजकन्या। —पुरुष=राज्य का कोई अफसर या कार्यकर्त्ता। —पूत=राजकुमार। राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश। —पूताना=राजस्थान नामक प्रदेश। —बाड़ी=राजा की वाटिका। राजमहल। —भक्त=राजा का भक्त। —भक्ति=राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम। —भवन=राजा का महल। —भोग=एक प्रकार का महीन धान। —महल=राजा का महल। राजेश्वर=राजाओं का राजा। राजेश्वरी = महारानी। —वंश=राजा का कुल। राजकुल। —विद्या=राजनीति। —विद्रोह=बगावत। —विद्रोही=बागी। —श्री=राजा का ऐश्वर्य। राजा की शोभा। —स=रजोगुण से उत्पन्न =राजशक्ति। —सभा=राजा का दरबार। राजाओं की सभा। —समाज=राजमंडली। राजा लोग। —सिंहासन = राजगद्दी। —सी=राजाओं की सी शानवाला। जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। —सूय=एक यज्ञ का नाम। —स्थली=एक प्राचीन जनपद का नाम। —स्थान=राजपूताना। —स्व=भूमि आदि का वह कर जो राजा को दिया जाय। —हंस=एक प्रकार का हंस। राजेंद्र=राजाओं का राजा। बादशाह। राजा=किसी देश या जाति का प्रधान शासक। राजाधिराज=राजाओं का राजा। शाहंशाह।

राज—(फ़ा०) भेद। रहस्य।

राज़ी—(वि० अ०) अनुकूल। सम्मत। नीरोग। खुश। सुखी। रज़ामंदी। —नामा=संधि पत्र।

राज्ञी—(स्त्री० सं०) रानी।

राज्य—(पु० सं०) शासन। बाद शाहत। —च्युत=जो राज सिंहासन से उतार या हटा दिया गया हो। राज्यभ्रष्ट। —भंग=राज्य का नाश। —व्यवस्था =राज्यनियम। क़ानून। राज्याभिषेक=राज सिंहासन पर बैठने के समय राजा का अभिषेक। राजगद्दी पर बैठने की रीति।

राणा—(पु० हि०) राजा।

रात—(स्त्री० हि०) निशा।

रानी—(स्त्री० हि०) राजा की स्त्री। मालकिन। स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द।

राम—(पु० सं०) महाराज दशरथ के पुत्र। ईश्वर। —चंद्र= अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र का नाम। —नवमी =चैत्र सुदी नवमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था। —नामी=वह चादर, दुपट्टा या धोती जिस पर "राम राम" छपा रहता है। —बाँस=एक प्रकार का मोटा बाँस। —रज=एक प्रकार की पीली मिट्टी। —राज्य = रामचंद्रजी का शासन। अत्यंत सुखदायक शासन। —लीला=राम के चरित्रों का अभिनय। —शिला =गयाकी एक पहाड़ी।

रामानंद—(पु० सं०) एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य।

रामानुज—(पु० सं०) वैष्णव मत के एक प्रसिद्ध आचार्य।

रामायण—(पु० सं०) वह ग्रंथ जिसमें रामचरित वर्णित हो। रामायणी=रामायण संबंधी।

राय—(पु० हि०) राजा। छोटा राजा या सरदार। सम्मान की एक उपाधि। भाट। सम्मति। सलाह। —बहादुर एक प्रकार की उपाधि। —साहब=एक प्रकार की पदवी।

रायता—(सं०) दही या मट्ठे में उबाला हुआ साग।

रायल—(अं०) राजकीय। शाही।

छापने की शर्तों तथा कागज़ की एक नाप।

रायल्टी—(अ०) किसी पुस्तक के लेखक को प्रकाशक की ओर से नियमपूर्वक मिलने वाला पारिश्रमिक।

राल—(स्त्री० सं०) एक प्रकार का पेड़।

राय—(पु० हिं०) राजा। सरदार। दरबारी। भाट। कच्छ और राजपूताने के कुछ राजाओं की एक पदवी। एक प्रकार का पेड़। —बहादुर एक प्रकार की उपाधि। —साहब=एक प्रकार की पदवी।

रावटी—(हिं०) छोलदारी। किसी चीज़ का बना हुआ छोटा घर।

रावण—(त्रि० सं०) लंका का प्रसिद्ध राजा।

राश—(फ़ा०) राशि। अनाज का ढेर।

राशि—(स्त्री० सं०) ढेर। पुंज। किसी का उत्तराधिकार। क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारा समूह जिनकी संख्या बारह है। —चक्र=राशियों का मंडल।

राशी—(अ०)रिशवत खानेवाला। घूसखोर।

राष्ट्र—(पु० सं०) राज्य। देश। प्रजा। —पति=किसी राष्ट्र का स्वामी। आधुनिक प्रजातंत्र शासन प्रणाली में सर्व प्रधान शासक। —विप्लव =विद्रोह। बलवा। राष्ट्रीय =राष्ट्र संबंधी। राष्ट्र का।

रास—(पु० सं०) एक प्रकार का नाच। एक प्रकार का चलता गाना। —मंडल=श्रीकृष्ण के रासक्रीड़ा करने का स्थान। रासक्रीड़ा करनेवालों का समूह। रासधारियों का अभिनय। रासधारियों का समाज। —लीला=वह नृत्य या क्रीड़ा जो शरत पूर्णिमा को श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ किया था। रासधारियों का कृष्णलीला

मवधी अभिनय। (अ०) घोड़े की लगाम।

रास्त—(वि० फ़ा०) सीधा। सरल। सही। ठीक। उचित। अनुकूल। —गो=सच बोलनेवाला। —बाज़ी=सचाई। ईमानदारी।

रास्ता—(फ़ा०) राह। पथ।

राह—(स्त्री० फ़ा०) मार्ग। रास्ता। —ख़र्च=रास्ते में होनेवाला ख़र्च। —गीर=मुसाफ़िर। पथिक। —ज़न=डाकू। लुटेरा। —ज़नी=डकैती। लूट। —दारी=राह पर चलने का महसूल। —रीत=राह रस्म। व्यवहार। परिचय। राही=मुसाफ़िर। यात्री।

राहत—(फ़ा०) आराम। सुख।

रिंग—(स्त्री० अ०) अँगूठी। छल्ला। चूड़ी। घेरा।

रिंद—(पु० फ़ा०) धार्मिक बंधनों को [illegible] माननेवाला पुरुष। मनमौजी आदमी। मतवाला।

रिआयत—(स्त्री० अ०) कोमल और दयापूर्ण व्यवहार। नरमी। कमी। न्यूनता। ध्यान। विचार।

रिआया—(अ०) प्रजा।

रिकवँछ—(स्त्री० देश०) एक भोज्य पदार्थ।

रिक्शा—(स्त्री० अ०) एक गाड़ी जिसे आदमी खींचता है।

रिक्त—(वि० स०) ख़ाली। शून्य

रिज़्क़—(पु० अ०) रोज़ी। जीविका।

रिज़र्व—(वि० अ०) सुरक्षित।

रिज़ालत—(अ०) नालायक़ी। कमीनापन।

रिजेंट—(पु० अ०) राजा की नाबालिग़ी में राजकाज चलाने के लिये अंग्रेज़ सरकार की तरफ़ से नियुक्त प्रतिनिधि।

रिझाना—(क्रि० हि०) किसी को अपने ऊपर ख़ुश करना। मोहित करना। रिझाव=प्रेम।

रिपु—(पु० स०) शत्रु। —ता=दुश्मनी।

रिपोर्ट—(स्त्री० अं०) किसी घटना का सविस्तर बयान। सूचना। विवरण। बातों का ब्योरा। —र=रिपोर्ट करनेवाला। संवाददाता।

रियासत—(स्त्री० अ०) राज्य। अमलदारी। अमीरी। वैभव।

रिवाज—(पु० अ०) रस्म। प्रथा।

रिश्ता—(पु० फ़ा०) नाता। संबंध। रिश्तेदार=संबंधी। नातेदार। रिश्तेदारी=नाता। संबंध। रिश्तेमंद=संबंधी। नातेदार।

रिश्वत—(स्त्री० अ०) घूस। जाँच। —खोर=रिश्वत लेनेवाला। —खोरी=रिश्वत खाना।

रिस—(स्त्री० हि०) क्रोध। गुस्सा।

रिसालदार—(पु० फ़ा०) घुड़सवार सेना का अफ़सर।

रिसाला—(पु० फ़ा०) घुड़सवारों की सेना। (अ०) छोटी किताब। मासिक-पत्र।

रिहननामा—(पु० फ़ा०) गिरवीं रखे जाने की शर्तों का लेख।

रिहर्सल—(पु० अं०) नाटक के अभिनय का अभ्यास। वह अभ्यास जो किसी कार्य को ठीक समय पर करने से पहले किया जाय।

रिहल—(स्त्री० अ०) काठ की बनी हुई कैंचीनुमा चौकी।

रिहा—(वि० फ़ा०) मुक्त। छूटा हुआ। —ई=छुटकारा। मुक्ति।

रींधना—(क्रि० हि०) राँधना। पकाना।

रीझना—(क्रि० हि०) प्रसन्न होना। मोहित होना।

रीठा—(पु० हि०) एक बड़ा जंगली वृक्ष और उसका फल।

रीढ़—(स्त्री० हि०) पीठ के बीचो बीच लंबी हड्डी। मेरुदंड।

रीति—(स्त्री० सं०) प्रकार। तरह। रस्म। रिवाज। क़ायदा। साहित्य में किसी विषय का वर्णन।

रीम—(स्त्री० अं०) काग़ज़ की

यह गड्डी जिसमें बीस दस्ते होते हैं।

रुंड—(पु० सं०) बिना सिर का धड़। बिना हाथ पैर का शरीर।

रुधना—(क्रि० हि०) घेरा जाना।

रुआब—(पु० अ०) धाक। रोब। भय। डर।

रुकून—(अ०) स्तम्भ। बल। शान।

रुकना—(क्रि० हि०) आगे न बढ़ सकना। अटकना। काम आगे न होना। सिलसिला आगे न चलना।

रुकाव—(पु० हि०) रुकावट। रोक।

रुक्का—(पु० अ०) छोटा पत्र या चिट्ठा। वह लेख जो हुंडी या कर्ज़ लेनेवाले रुपया लेते समय लिखकर महाजन को देते हैं।

रुख—(पु० फा०) गाल। मुख। चेहरा। चेहरे का भाव। आकृति। मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो। मेहरबानी की नज़र। सामने का भाग। शतरंज का एक मोहरा। तरफ़। ओर। सामने। बाज़ार का भाव। —सार = गाल। कपोल।

रुखसत—(स्त्री०) आज्ञा। विदाई। काम से छुट्टी। अवकाश। (वि०) जो कहीं से चला गया हो। रुखसती = विदाई।

रुखाई—(स्त्री० हि०) रूखापन। शुष्कता। खुश्की। व्यवहार की कठोरता।

रुखानी—(स्त्री० हि०) बढ़इयों का एक औज़ार।

रुग्ण—(वि० सं०) बीमार।

रुचि—(पु० सं०) प्रवृत्ति। तबीयत। प्रेम। भूख। स्वाद। (वि०) शोभा के अनुकूल। —कर = अच्छा लगनेवाला। —कारक = रुचि उत्पन्न करने वाला। बढ़िया स्वादवाला। —कारी = अच्छे स्वादवाला। मनोहर। —र = सुंदर। अच्छा।

रुतवा—(पु० अ०) पद। ओहदा। इज़्ज़त। प्रतिष्ठा।
रुदन—(पु० हि०) रोना। विलाप करना।
रुद्र—(पु० सं०) भयानक। डरावना। रुद्राक्ष=एक वृक्ष जिसके के फल की माला बनती है।
रुधिर—(पु० सं०) लहू। खून।
रुपया—(पु० हि०) चाँदी का सिक्का।
रुपहला—(वि० हि०) चाँदी का सा।
रुबाई—(स्त्री० अ०) उर्दू या फ़ारसी की एक प्रकार की कविता। एक प्रकार का गाना।
रुमाली—(स्त्री० फा०) एक प्रकार का लँगोट। मुगदर हिलाने का एक हाथ।
रुलाई—(स्त्री० हि०) रोने की प्रवृत्ति। रुलाना=दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना। इधर उधर फिराना। नष्ट करना।
रुसवा—(वि० फा०) बदनाम। निंदित। —ई=अपमान और दुर्गति।
रुसूख—(अ०) मेल-जोल।
रूँधना—(क्रि० हि०) कँटीले झाड़ आदि से घेरना। रोकना। आने जाने का मार्ग बंद करना।
रू—(पु० फ़ा०) मुँह। सामना। —पोश=गुप्त। फरार। —पोशी=छिपना। —बरू=सामने। —बकार=मुक़द्दमे की पेशी। आज्ञापत्र।
रूई—(स्त्री० हि०)कपास के ढोंढे या कोश के अंदर का घूआ। रूईदार=जिसमें रूई भरी गई हो।
रूक्ष—(वि० सं०) रूखा।
रूखा—(पु० हि०) सीठा। नीरस। उदासीन। कठोर। विरक्त। —पन=नीरसता। खुश्की। कठोरता। उदासीनता। स्वादहीनता।
रूठना—(क्रि० हि०) नाराज़ होना। रूसना।

रूढ़ि—(स्त्री० सं०) परम्परा से चली आती हुई । प्रथा ।

रूदाद—(स्त्री० फ़ा०) समाचार । हाल । दशा । विवरण । अदालत की कारवाई । मुकदमे का रंग-ढंग ।

रूप—(पु० सं०) शक्ल । सूरत । आकार । स्वभाव । सुंदरता । वेष । दशा । समान । भेद । चिह्न । चाँदी । खूबसूरत । —क=मूर्ति । सादृश्य । दृश्यकाव्य । संगीत में एक ताल । —गर्विता=वह स्त्री जिसे रूप का अभिमान हो —वत=खूबसूरत । सुंदर । —वती=सुंदरी । रूपी=तुल्य । सदृश । —रेखा = आकार प्रकार ।

रूम—(पु० फ़ा०) टर्की या तुर्की देश का नाम ।

रूमाल—(पु० फा०) कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जो हाथ, मुँह पोंछने के काम आता है । चौकोना शाल ।

रूल—(पु० अं०) क़ायदा । लकीर खींचने का डंडा । लकीर । शासन । —र=लकीर खींचने का डंडा । पैमाना । शासक । रूलिंग=लकीर खींचना । रूलिंग चीफ़=बृटिश गवर्नमेंट के मातहत पर अपने राज्य में स्वतंत्र शासक राजा महाराजा ।

रूस—(पु० फा०) एक देश का नाम । रूसी—रूस देश का रहनेवाला । रूस की भाषा ।

रूसा—(पु० हि०) एक पौधा । अडूसा ।

रूसी—(स्त्री० हि०) सिर के बालों में जमी हुई मैल ।

रूह—(स्त्री० अ०) आत्मा । सार ।

रेंकना—(क्रि० अनु०) गदहे का बोलना । बुरे ढंग से गाना ।

रेंगना—(क्रि० हि०) कीड़ों आदि का चलना । धीरे धीरे चलना ।

रेंट—(पु० देश०) नाक का मल ।

रेंड़—(पु० हि०) एक पौधा । —ना = पौधे में डंठल

निकलना। रेंड़ी=भद्दी या रेंड़ का बीज।

रेखता—(पु० फा०) एक प्रकार का गाना उर्दू का पुराना नाम।

रेख—(स्त्री० हि०) मोछों के स्थान पर बारीक बालों की लकीर। —भिनना=मोछें निकलना।

रेखा—(स्त्री० स०) लकीर। किसी वस्तु का सूचक चिह्न। गणना। शुमार। आकार। सूरत। हथेली तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें। —गणित=गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं। रेखाङ्कित = चिह्नित। —चित्र=स्केच। वह चित्र जिसमें रंग न भरा गया हो। रेखांश=याम्योत्तर वृत्त की एक-एक डिग्री या अंश।

रेग—(स्त्री० फा०) बालू। रेगिस्तान=बालू का मैदान। मरुदेश।

रेचक—(वि० स०) दस्तावर। प्राणायाम की तीसरी क्रिया।

रेजा—(पु० फा०) किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा। सुनारों का एक औज़ार। नग। अदद।

रेजिश—(स्त्री० फ़ा०) जुकाम।

रेजीडेंट—(पु० अ०) देशी राज्यों में अँगरेज़ी राज्य का प्रतिनिधि।

रेजीमेंट—(स्त्री० अ०) सेना का एक भाग।

रेट—(पु० अ०) भाव। निर्ख़। चाल। गति।

रेडियम—(पु० अ०) एक धातु।

रेणु—(स्त्री० स०) धूल। बालू। कणिका।

रेत—(स्त्री० हि०) बालू। रेतीला=बालूवाला। बालुकामय।

रेतना—(क्रि० हि०) रेती नाम के औज़ार से रगड़ना। रेती=रेतने का औज़ार।

रेल—(स्त्री० अ०) लोहे की पटरी जिस पर रेलगाड़ी के पहिये चलते हैं। —गाड़ी=भाप के ज़ोर से चलनेवाली

परदे बाँधने की बारीक ताँत।

रोना—(क्रि॰ हि॰) रुदन करना। रंज मानना। पछताना। चिड़चिड़ा।

रोपना—(क्रि॰ हि॰) जमाना। स्थापित करना। बोना। हाथ से थापना।

रोब—(पु॰ अ॰) प्रभाव। आतंक। —दार=प्रभावशाली।

रोम—(पु॰ हि॰) देह के बाल। रोयाँ। —लता=रोमावलि। रोमांच=आनंद से रोयों का उभर आना। पुलक। भय से रोंगटे खड़े होना। रोमांचित=पुलकित। भय से जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों। रोयाँ=रोम। लोम।

रोमन—(अ॰) प्राचीन यूनान के रोम देश में प्रचलित। —कैथलिक=ईसाइयों का प्राचीन संप्रदाय।

रोलर—(पु॰ अ॰) बेलन। —फ्रेम=बेलन की कमानी। —मोल्ड=सरेस का बेलन ढालने का साँचा।

रोली—(स्त्री॰ हि॰) चूने हल्दी से बनी हुई लाल बुकनी।

रोवाँसा—(वि॰ हि॰) जो रो देना चाहता हो।

रोशन—(वि॰ फ़ा॰) जलता हुआ। प्रकाशित। मशहूर। प्रसिद्ध। प्रकट। ज़ाहिर। —चौकी=फूँककर बजाने का एक बाजा। नफ़ीरी। —दान=प्रकाश आने का छिद्र। मोखा। रोशनाई=स्याही। रोशनी=उजाला। दीपक। ज्ञान का प्रकाश।

रोष—(पु॰ स॰) क्रोध। गुस्सा। चिढ़। द्वेष। जोश।

रौ—(स्त्री॰ हि॰) रंग ढंग। रवैया। प्रवाह। झुकाव।

रौंदना—(क्रि॰ हि॰) पैरों से कुचलना। खूब पीटना।

रौ—(स्त्री॰ फ़ा॰) गति। चाल। वेग। झोंक। पानी का बहाव। किसी बात की धुन। चाल। ढंग।

रौग़न—(पु० अ०) तेल। लाख आदि का बना हुआ पक्का रंग। रौग़नी=तेल का। रौग़न फेरा हुआ।

रौज़ा—(पु० अ०) बाग़। बग़ीचा। समाधि।

रौद्र—(वि० सं०) भयंकर। डरावना।

रौनक़—(स्त्री० अ०) चमक दमक। कांति। विकास। शोभा।

रौरव—(वि० सं०) एक नरक।

रौला—(पु० हि०) हल्ला। शोर। हलचल।

ल

ल—हिंदी वर्णमाला का अट्ठाईसवाँ वर्ण। जिसका उच्चारण स्थान दाँत है।

लंकलाट—(पु० अ० लाग क्लाथ) एक प्रकार का मोटा बढ़िया कपड़ा।

लंका—(स्त्री० सं०) भारत के दक्षिण का एक टापू।

लंग—(फ़ा०) लँगड़ा।

लँगड़ा—(वि० फ़ा०) जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो। जिसका एक पाया टूटा हो। एक प्रकार का आम। —ना=लँगड़े होकर चलना। लंगड़ी=कुश्ती का एक दाव।

लंगर—(पु० फ़ा०) लोहे का एक प्रकार का काँटा जिसका उपयोग जहाज़ों और बड़ी नावों को खड़ा करने में होता है। —ख़ाना (फ़ारसी) = वह स्थान जहाँ से दरिद्रों को बना बनाया भोजन बाँटा जाता है। —गाह=किनारे पर का वह स्थान जहाँ लंगर डालकर जहाज़ ठहराये जाते हैं।

लंगूर—(पु० हि०) बन्दर। पूँछ। एक प्रकार का बड़ा बन्दर।

लँगोट, लँगोटा—(पु० हि०) कमर पर बाँधने का एक प्रकार का बना हुआ वस्त्र। लँगोटी=कोपीन। कछनी।

लघन—(पु० सं०) उपवास। अनाहार। लघनीय=लाँघने के योग्य।

लठ—(वि० हि०) मूर्ख। उजड्ड।

लँडूरा—(वि० देश०) बिना पूँछ का।

लप—(पु० अ०) दीपक। चिराग।

लपट—(पु० सं०) व्यभिचारी। कामी। —ता = दुराचार। कुकर्म।

लंबा—(वि० हि०) विशाल। बड़ा। ऊँचा। विस्तृत। लम्बाई=लम्बा होने का भाव। लंबी=लंबा का स्त्री लिंग। लंबोदर=पेटू।

लकड़बग्घा—(पु० हि०) एक जंगली जन्तु।

लकड़हारा—(पु० हि०) जंगल से लकड़ी तोड़कर बेंचनेवाला।

लकड़ी—(स्त्री० हि०) काठ। काष्ठ। ईंधन। लाठी।

लकदक—(वि० फ़ा०) मैदान जिसमें पेड़ आदि न हों। साफ़-सुथरा।

लकब—(पु० अ०) उपाधि। पदवी।

लकलक—(पु० अ०) लंबी गर्दन का जल-पक्षी। ढेंक। (वि०) बहुत दुबला पतला।

लकवा—(पु० अ०) एक वात रोग।

लकीर—(स्त्री० हि०) रेखा। खत। धारी। पंक्ति। सतर।

लकुड़—(पु० हि०) काठ का बड़ा कुंदा।

लक्का—(पु० अ०) एक प्रकार का कबूतर।

लक्ष—(वि० सं०) एक लाख। सौ हजार।

लक्षण—निशान। आसार। चाल-ढाल। लक्षणा=शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है। लक्षित=बतलाया हुआ।

देखा हुआ। जिसपर कोई चिह्न बना हो। वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति द्वारा ज्ञात होता है।

लक्ष्मी—(स्त्री० सं०) विष्णु की पत्नी। धन की अधिष्ठात्री देवी। धन सम्पत्ति। दौलत। शोभा।

लक्ष्य—(पु० सं०) निशाना। वह जिसपर आक्षेप किया जाय। उद्देश्य। —भेद—एक प्रकार का निशाना।

लखलखा—(पु० फा०) मूर्च्छा दूर करने का सुगंधित द्रव्य।

लगन—(स्त्री० हि०) लौ। प्रेम। सम्बंध।

लगना—(क्रि० हि०) सटना। जुड़ना। मिलना। चिपकाया जाना। शामिल होना। मालूम होना। सम्बन्ध या रिश्ते में कुछ होना। चोट पहुँचना। पौधा जमना। शुरू होना। चलना। सड़ना। असर होना। पीछे पीछे चलना। चिमटना।

लगभग—(क्रि० वि०) प्राय। करीब-करीब।

लगवाना—(क्रि० हि०) लगाने का काम दूसरे से कराना।

लगातार—(क्रि० वि०) निरंतर। सिलसिलेवार।

लगान—(पु० हि०) लगने या लगाने की क्रिया या भाव। लाग। भूमि पर लगने वाला कर। राजस्व।

लगाना—(क्रि० हि०) सटाना। मिलाना। जोड़ना। चिपकाना या गड़ाना। शामिल करना। उगाना। खर्च करना। पीटना। चोट पहुँचाना। काम में लाना। अभियोग लगाना। धारण करना। चुगली खाना। गाड़ना। पास ले जाना। छुआना। बन्द करना। दाँव पर रखना।

लगाम—(स्त्री० फा०) रास। बाग।

लगालगी—(स्त्री० हि०) लगन। प्रेम। सम्बन्ध। मेल-जोल।

लगार—(पु० हि०) सम्बन्ध। वास्ता। —ट=सम्बन्ध। प्रेम

लग्गा—(पु० हि०) लम्बा बाँस। वृक्षों से फल आदि तोड़ने का लम्बा बाँस। कार्य आरंभ करना। लग्गी=लम्बा बाँस। लग्गड़=बा । एक प्रकार का चीता।

लग्न—(पु० सं०) मुहूर्त। विवाह का समय। विवाह। शादी। विवाह के दिन। (वि०) लगा हुआ। लो। प्रेम। सम्बन्ध।

लघु—(वि० सं०) छोटा। थोड़ा। हलका। नीच। —ता=छोटापन।

लचक—(स्त्री० हि०) झुकाव।

लच्छा—(पु० अनु०) तारों या डोरों आदि का समूह। एक मिठाई। एक प्रकार का गहना। लच्छेदार=लच्छों वाला। दिलचस्प (बात)।

लजीज—(वि० अ०) स्वादिष्ट। लज़्ज़तदार।

लज्जत—(स्त्री० अ०) स्वाद। जायका। —दार=स्वादिष्ट।

लज्जा—(स्त्री० सं०) लाज। शर्म। इज़्ज़त। —वत=शर्मीला। लजालू का पौधा। —वती=लज्जाशील। शर्मीली। लजालू का पौधा। —शील=जिसमें लज्जा हो। लजीला। —हीन=बेहया। लज्जित=शर्माया हुआ। लजाना=शर्मिंदा होना। लाज=शर्म।

लट—(स्त्री० हि०) केशपाश। अलक। परस्पर चिमटे हुए बाल।

लटक—(स्त्री० हि०) झुकाव। लुभावनी चाल। अंगभंगी। लटकन=लटकने वाली चीज। लटकना=झूलना। टँगना। खटकना। फाँसी चढ़ना। लटका=गति। चाल। हाव भाव। बात चीत करने में स्वर का बना बटी ढंग। टोटका। एक प्रकार का चलता गाना।

लटवाना = दौंगना। हुन्त पार कराना। देर कराना।

लटोरा—(पु० हि०) एक प्रकार का छोटा पेड़।

लटट्टू—(पु० हि०) एक खिलौना।

लट्ठ—(पु० हि०) बड़ी लाठी। —बाज़ = लाठी बाँधने वाला। —बाज़ी = लाठी की लड़ाई या मारपीट। —मार = अप्रिय और कठोर। कड़वा। लट्ठा = शहतीर। कड़ी। लकड़ी का खंभा। एक प्रकार का मोटा कपड़ा। ज़मीन नापने का पैमाना। लट्ठाबन्दी = ज़मीन की साधारण नाप। लठैत = लट्ठबाज़।

लडका—(पु० हि०) बालक। पुत्र। —वाला = सन्तान। औलाद। परिवार। लड़की = बालिका। कन्या। पुत्री। लड़कपन = बाल्यावस्था। चचलता।

लडखडाना—(क्रि० हि०) डगमगाना। हिगना।

लडना—(क्रि० हि०) युद्ध करना। भिड़ना। कुश्ती करना। झगड़ा करना। बहस करना। टकराना। मेल मिल जाना। किसी स्थान पर पड़ना। लड़ाई = भिड़त। युद्ध। कुश्ती। बहस। टक्कर। विरोध। दुश्मनी। लड़ाकू = लड़ाई में काम आनेवाला। लड़ाना = लड़ने का काम दूसरे से कराना। कलह के लिये उद्यत करना। भिड़ाना। लक्ष्य पर पहुँचाना। परस्पर उलझाना। दुलार करना।

लड्डू—(पु० हि०) एक मिठाई। मोदक।

लत—(स्त्री० हि०) बुरी आदत।

लता—(स्त्री० स०) वल्ली। बेल। —कुञ्ज = लताओं से छाया हुआ स्थान। —गृह = लताओं से मडप की तरह छाया हुआ स्थान। —भवन = लताओं का कुञ्ज। —मडप = छाई हुई लताओं से बना हुआ मडप या घर। लतर =

बेल, बड़ी लतरा। लतरी = एक प्रकार की घास और दाना।

लतीफ़—(वि० अ०) दिलचस्प। बढ़िया। मज़ेदार। लतीफ़ा = चुटकुला। हँसी की बात। अनूठी बात।

लत्ता—(पु० हि०) चीथड़ा। कपड़े का टुकड़ा।

लत्ती—(स्त्री० हि०) पशुओं का पाद प्रहार। लात मारने की क्रिया। कपड़े की लंबी धज्जी। पतंग की पुछिल्ला।

लथपथ—(वि० अनु०) भीगा हुआ। सराबोर। पानी या कीचड़ आदि में सना हुआ।

लथाड़—(स्त्री० अनु०) पटक। मार। डाँट-डपट।

लथेड़ना—(क्रि० अनु०) कीचड़ आदि में घसीटना। हराना। थकाना। भला-बुरा कहना।

लदना—(क्रि० हि०) बोझ ऊपर लेना। पूर्ण होना। बोझ भरा जाना। लदाना = लादने का काम दूसरे से कराना। लदा फँदा = बोझ से भरा या लदा हुआ। लदाव = बोझ। लद्दू = बोझ ढोनेवाला।

लपक—(स्त्री० अनु०) ज्वाला। चमक। वेग। फुरती। —ना = तुरत दौड़ पड़ना। झपटना।

लपट—(स्त्री० हि०) ज्वाला। आग की लौ। आँच। —ना = चिमटना। सटना। घिर जाना। लगा रहना।

लपलपाना—(क्रि० अनु०) लचकना। चमकारना। चमचमाना। लपलपाहट = चमक।

लपसी—(स्त्री० हि०) थोड़े घी का हलुआ। गीली गाढ़ी वस्तु। लपग।

लपेट—(स्त्री० हि०) फेरा। तह का भार। घेरा। उलझन। बंधन। —ना = ढाँपना। पकड़ में कर लेना। चक्कर में फँसाना। लेपन करना।

लफंगा—(वि० फ़ा०) लपट। आवारा। कुमार्गी।

लफ़्ज़—(पु० अ०) शब्द। बात।

घात । लगओ = शारिदर्प । लग्गालाग = चालुती । लग्गाजाजी = डींग मारना ।

लग्य—(पु० फा०) गोट । चोट ।

लघडघोंघों—(स्त्री० हि०) मूर मूर का हल्ला । गड्डबडभाला । अन्याय । बेईमानी की चाल।

लगादा—(पु० फा०) कदहार घोड़ा । अश्व । घोड़ा ।

लपालाज—(क्रि० फा०) छलकता हुआ ।

लब्ध—(वि० स०) पाया हुआ । प्राप्त । कमाया हुआ । भाग करने से आया हुआ फल । —प्रतिष्ठ = सम्मानित ।जिसने प्रतिष्ठा पाई हो । लब्धि = प्राप्ति । लाभ । हिसाब का जवाब ।

लमहा —(अ०) क्षण ।

लय—(पु० स०) प्रवेश । विलीन होना । ध्यान में डूबना । लगन । प्रेम । प्रलय । मिल जाना । नाच, गाने और बाजे का मेल । विश्राम । मूर्छा । गाने का स्वर । गीत गाने का ढंग या तर्ज ।

लर्जा—(पु० फा०) कँपकँपी । भूकंप । जूडी ।

ललकार—(स्त्री० हि०) हाँक । लड़ने का बढ़ावा । —ना = हाँक लगाना । लड़ने के लिये बढ़ावा देना । चैलेंज ।

ललचाना—(क्रि० हि०) लुभाना ।

ललना—(स्त्री० सं०) स्त्री ।

ललाट—(पु० स०) मस्तक । माथा । भाग्य का लेख । —पटल = मस्तक का तल ।

ललाम—(पु० स०) सुन्दर । लाल रंग का

ललित—(वि० स०) सुंदर । प्यारा । —कला = वे कलायें या विद्यायें जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौन्दर्य की अपेक्षा हो ।

लल्लो चप्पो—(स्त्री० हि०) चिकनी चुपड़ी बात ।

लव—(पु० स०) बहुत थोड़ी मात्रा । लगन । प्रेम ।

—लीन=तन्मय। मग्न।
—लेश=ज़रा सा।

लवण—(पु० सं०) नमक।

लवाजमा—(पु० अ०) साथ में रहनेवाली भीड़ या असबाब। लवाज़मत=सामग्री। उपकरण।

लशकर—(पु० फा०) सेना। फौज। दल। छावनी। लशकरी=सेना सम्बन्धी। सिपाही।

लस—(पु० सं०) चिपचिपाहट। लासा। आकर्षण।—दार=जिसमें लस हो।—ना=चिपकाना।—लसा=लसदार। चिपचिपा। लसी=लस। आकर्षण। फायदे का डौल। दूध और पानी मिला शरबत।

लसोड़ा—(पु० हि०) एक प्रकार का छोटा पेड़।

लस्टम पस्टम—(पु० देश०) किसी न किसी तरह से।

लहँगा—(पु० हि०) स्त्रियों का एक घेरदार पहनावा।

लहकना—(क्रि० हि०) झोंक खाना। लहराना। हवा का बहना। दहकना। लपकना। उत्कंठित होना।

लहजा—(पु० अ०) स्वर। लय।

लहज़ा—(अ०) पल। क्षण।

लहना बही—(पु० हि०) वह बही जिसमें ऋण लेने वालों के नाम और रकमें लिखी जाती हैं।

लहमा—(पु० अ०) पल। क्षण।

लहर—(स्त्री० हि०) बड़ा हिलोरा। मौज। जोश। झोंका। आनंद की उमंग। आवाज़ की गूँज। वक्रगति। हवा का झोंका। —दार=जो बल खाता गया हो। लहरा=लहर। तरंग। बाजे की एक गति। लहराना=लहरें खाना। हिलोरें मारना। झोंका खाते हुये चलना। लपकना। दहकना। शोभित होना। लहरिया=लहरदार। एक प्रकार का कपड़ा। —दार=जिसमें

लहरिया बना हो। लहरी=लहर। हिलोर। मौज। आनन्द। लहर बहर=मौज।

लहलहा—(वि० हि०) लहलहाता हुआ। हरा भरा। प्रफुल्ल। हृष्ट पुष्ट। —ना=हरा भरा होना। खुशी में आना।

लहसुन—(पु० हि०) एक पौधा और उसकी गाँठ। लहसुनियाँ=एक बहुमूल्य रत्न या पत्थर।

लहालोट—(वि० हि०) हँसी से लोटता हुआ। उल्लास-मग्न।

लहू—(पु० हि०) खून। लोहू।

लाँग—(स्त्री० हि०) काछ।

लाँगप्राइमर—(पु० अ०) एक प्रकार का टाइप।

लाँघना—(क्रि० हि०) नाँघना। डाँकना। किसी वस्तु को उछलकर पार करना।

लाँच—(स्त्री० देश०) रिशवत। घूस।

लाञ्छन—(पु० सं०) दाग। कलंक।

लॉ—(पु० अ०) राजनियम या क़ानून। व्यवहारशास्त्र।

लाइट—(अ०) प्रकाश। हलका। —हाउस=प्रकाशस्तम्भ।

लाइन—(स्त्री० अ०) कतार। पेशा। लकीर। सीन। रेल की सड़क।

लाक्षणिक—(वि० सं०) जिससे लक्षण प्रकट हो।

लाइन क्लियर—(पु० अ०) रेलवे में संकेत।

लाइफ़—(स्त्री० अ०) जीवन। जीवन चरित्र।

लाइफ बॉय—(पु० अ०) एक प्रकार का यन्त्र।

लाइफ बोट—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की नाव।

लाइब्रेरी—(स्त्री० अ०) पुस्तकालय।

लाक्षा—(स्त्री सं०) लाख। लाह। —गृह=लाख का घर।

लाइसेन्स—(पु० अ०) आज्ञापत्र। अधिकारपत्र।

लॉकअप—(पु० अं०) हवालात।

लाकलाम—(अ०) निस्सन्देह।
लाकेट—(पु० अं०) लटकन।
लागडाँट—(स्त्री० हि०) प्रतियोगिता।
लागत—(स्त्री० हि०) वह खर्च जो किसी चीज़ का तय्यारी या बनाने में लगे।
लागू—(वि० हि०) चरितार्थ होनेवाला। (अं०) फिट।
लाचार—(वि० फ़ा०) मजबूर। विवश होकर। लाचारी=विवशता। मजबूरी।
लाज—(स्त्री० हि०) लज्जा। शर्म। शील।
लाजवाब—(अ०) बेजोड़। अनुपम। चुप। ख़ामोश।
लाजवर्द—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का प्रसिद्ध क़ीमती पत्थर। राजवर्त। विलायती नील।
लाज़िम—(वि० अ०) उचित। मुनासिब। लाज़िमी=ज़रूरी।
लाट—(पु० अं० लार्ड) गवर्नर। किसी प्रांत या देश का सबसे बड़ा शासक। (स्त्री०) मोटा और ऊँचा खंभा।
लाठी—(स्त्री० हि०) डंडा। लकड़ी।
लाड़—(पु० हि०) प्यार। दुलार। लाड़ला=प्यारा। दुलारा।
लॉटरी—(स्त्री० अं०) धन एकत्र करने का एक प्रकार का जुआ। चिट्ठी।
लात—(स्त्री० हि०) पैर। पाँव। पदाघात। पाद प्रहार। लतियाना=पैर से मारना।
लादना—(क्रि० हि०) एक पर एक चीज़ें रखना। ढोने या ले जाने के लिये वस्तुओं का भरना।
ला-दावा—(वि० अ०) जिसका कोई दावा न रह गया हो।
लादी—(स्त्री० हि०) कपड़ों की वह गठरी जिसे धोबी गदहे पर लादता है।
लान—(पु० अं० लॉन) हरी घास का बड़ा मैदान। —टेनिस=गेंद का एक खेल।
लानत—(स्त्री० फ़ा०) धिक्कार। फटकार।

लाना—(क्रि० हि०) सामने रखना। ले आना।
लापता—(वि० अ०) खोया हुआ गुम।
लापरवा—(वि० अ०) बेफ़िक्र। —ही = बेफ़िक्री।
लाभ—(पु० सं०) प्राप्ति। फ़ायदा। भलाई। —कारक = फ़ायदेमंद। —कारी = फ़ायदा करनेवाला। —दायक = फ़ायदेमंद। गुणकारी।
लामा—(पु० हि०) तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य।
लायक़—(वि० अ०) उचित। मुनासिब। सुयोग्य। समर्थ।
लॉयल—(वि० अं०) राजभक्त। —टी = राजभक्ति।
लार—(स्त्री० हि०) लसदार थूक।
लारी—(स्त्री० अं०) सवारी ढोने की बड़ी मोटरगाड़ी।
लार्ड—(पु० अ०) ईश्वर। स्वामी। ज़मींदार। इंगलैंड के बड़े-बड़े ज़मींदारों और रईसों की उपाधि। —सभा = ब्रिटिश पार्लामेंट की वह सभा जिसमें बड़े बड़े ताल्लुक़ेदारों और अमीरों के प्रतिनिधि होते हैं।
लाल—(पु० हि०) प्यारा बच्चा। बेटा। लाला = एक प्रकार का संबोधन। महाशय।
लालच—(स्त्री० फ़ा०) लोभ। लोलुपता। लालची = लोभी।
लालटेन—(स्त्री० अ० लेन्टर्न) कंडील।
लालबेग—(पु० हि०) एक प्रकार का परदार कीड़ा। लालबेगी = भंगी।
लालसा—(स्त्री० सं०) बहुत अधिक चाह या इच्छा।
लालायित—(वि० सं०) ललचाया हुआ।
लालित्य—(पु० सं०) सौंदर्य। मनोहरता।
लालिमा—(स्त्री० सं०) लाली। सुर्खी।
लाली—(स्त्री० हि०) सुर्खी।
लाले—(पु० हि०) मुसीबत।

लावण्य(पु० सं०) अत्यंत सुंदरता।

लावनी—(स्त्री० देश०) गाने का एक छंद।

लावल्द—(वि० फा०) नि सतान। लावल्दी = नि संतान होने की अवस्था।

लावा—(पु० हि०) भूना हुआ धान। खील। लाई। राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ वह द्रव पदार्थ जो ज्वालामुखी पर्वतों के मुख से विस्फोट होने पर निकलता है।

लाश—(स्त्री० फा०) मुरदा। शव। लाशा = मुर्दा। कमज़ोर।

लासा—(पु० हि०) चेप। लुआब।

लासानी—(फा०) अनुपम। बेजोड़।

लाहौल—(पु० अ०) एक अरबी वाक्य का पहला शब्द।

लिंग—(पु० सं०) चिह्न। निशान। पुरुष की गुप्त इंद्रिय। व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है।

लिंफ—(पु० अं०) शीतला का चेप जो टीका लगाने के काम में आता है।

लिए—(हि०) वास्ते।

लिक्खाड़—(पु० हि०) भारी लेखक।

लिक्विडेटर—(पु० अं०) वह अफ़सर जो किसी कंपनी आदि की ओर से मुकदमा लड़ने या और कोई आवश्यक कार्य के लिये नियुक्त किया जाता है।

लिक्विडेशन—(पु० अं०) सम्मिलित पूँजी से चलनेवाली कंपनी आदि के बंद कर उसकी बची हुई रकम को हिस्सेदारों में बाँट देना।

लिखना—(क्रि० हि०) अंकित करना। अक्षर अंकित करना। चित्र बनाना।

लिखाई—(स्त्री० हि०) लेख। लिपि। लिखने का कार्य।

लिखावट । लिखने की मजदूरी ।
लिखाना—(क्रि० हि०) अंकित कराना । लिखने का काम दूसरे से कराना ।
लिखापढ़ी—(स्त्री० हि०) पत्र व्यवहार ।
लिखावट—(स्त्री० हि०) लेख । लिपि । लिखने का ढंग । लेख प्रणाली ।
लिखित—(वि० सं०) लिखा हुआ । लेख । प्रमाण पत्र ।
लिटरेचर—(पु० अं०) साहित्य । लिटरेरी = साहित्यिक ।
लिटाना—(क्रि० हि०) लेटने की क्रिया कराना ।
लिपटना—(क्रि० हि०) चिमटना । चिपकना । आलिंगन करना । किसी काम में जी जान से लग जाना । लिपटाना = चिमटाना । आलिंगन करना ।
लिपाई—(स्त्री० हि०) लेपना । पोताई । लीपने की मजदूरी ।
लिपाना—(क्रि० हि०) पुताना । मिट्टी गोबर आदि का लेप कराना ।
लिपि—(स्त्री० सं०) लिखावट । अक्षर लिखने की प्रणाली । लेख । —कार = लेखक ।
लिप्त—(वि० सं०) लीन । अनुरक्त ।
लिफाफा—(पु० अ०) चिट्ठी आदि भेजने की कागज की थैली । सजावट की पोशाक ।
लिबरल—(पु० अं०) उदार । उदार नीतिवाला । इंग्लैंड का एक राजनीतिक दल । भारत का एक राजनीतिक दल ।
लियाकत—(स्त्री० अ०) योग्यता ।
लिवाना—(क्रि० हि०) लाने का काम दूसरे से कराना ।
लिसोड़ा—(पु० हि०) एक पेड़ ।
लिस्ट—(स्त्री० अं०) फ़िहरिस्त । तालिका ।
लिहाज—(पु० अ०) कृपा दृष्टि । मुलाहजा । पक्षपात । अदब का ख्याल । लज्जा । शर्म ।
लिहाडा—(वि० देश०) नीच ।

गिरा हुआ। खराब। निकम्मा।

लिहाफ—(पु० अ०) रज़ाई।

लीक—(स्त्री० हि०) लकीर। रेखा। लोक-नियम। प्रथा।

लीग—(स्त्री० अ०) संघ। सभा। समाज। —रिमेंबरर=वह अफसर जो सरकार के कानूनी कागज़-पत्र रखता है।

लीगल—(अ०) क़ानूनी।

लीचड़—(वि० देश०) सुस्त। जिसका लेन देन ठीक न हो।

लीडर—(पु० अ०) नेता। मुखिया। —आफ दी हाउस=पार्लामेंट या व्यवस्थापिका सभा का मुखिया।

लीडिंग आर्टिकल—(पु० अ०) सम्पादकीय अग्रलेख।

लीथो—(पु० अ०) पत्थर का छापा। —ग्राफ=पत्थर का छापा जिस पर हाथ से लिखकर या चित्र खींचकर छापा जाता है। —ग्राफर=लीथो का काम करने वाला। —ग्राफी=लीथो की छपाई में पत्थर पर हाथ से अक्षर लिखने और खींचने की कला।

लीद—(स्त्री० देश०) घोड़े आदि का मल।

लीन—(वि० सं०) तन्मय। तत्पर। अनुरक्त।

लीनो टाइप मशीन—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की कल जिस में टाइप या अक्षर कम्पोज़ होने के समय ढलता जाता है।

लीपना—(क्रि० हि०) पोतना। गीली मिट्टी या गोबर दीवार या ज़मीन पर फेरना।

लीफ्लेट—(पु० अ०) पुस्तिका। पर्चा।

लीला—(स्त्री० सं०) क्रीड़ा। प्रेम विनोद। विचित्र काम। चरित्र। —मय=क्रीड़ा के भाव से भरा हुआ।

लीव—(स्त्री० अ०) छुट्टी। अवकाश।

लीवर—(पु० अ०) यकृत। जिगर।

लीज—(पु० अ०) पट्टा।

लुगाडा—(पु० देश०) शोहदा। लफंगा।
लुगी—(स्त्री० हि०) तहमत।
लुडमुड—(वि० हि०) जिसके सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों। लँगड़ा लूला।
लुआब—(पु० अ०) लसदार गूदा। —दार=लसदार।
लुकना—(क्रि० हि०) छिपना।
लुकमा—(पु० अ०) कौर। ग्रास।
लुकाट—(पु० हि०) एक फल।
लुकाना—(क्रि० हि०) छिपाना। छिपना।
लुगाई—(स्त्री० हि०) स्त्री। औरत।
लुचुई—(स्त्री० हि०) मैदे की पतली और मुलायम पूरी।
लुच्चा—(वि० फ़ा०) दुराचारी। बदमाश। लुच्ची=खोटी या बदमाश औरत।
लुटना—(क्रि० हि०) लूटा जाना। बरबाद होना। लुटाना=दूसरे को लूटने देना। बरबाद करना। बहुतायत से बाँटना।
लुटिया—(स्त्री० हि०) छोटा लोटा।
लुटेरा—(पु० हि०) लूटनेवाला। डाकू।
लुढकना—(क्रि० हि०) ढुलकना। लुढकाना=ढुलकाना।
लुत्फ़—(पु० अ०) कृपा। दया। भलाई। उत्तमता। आनंद। स्वाद। रोचकता।
लुनना—(क्रि० हि०) खेत काटना।
लुनाई—(स्त्री० हि०) सुंदरता।
लुप्त—(वि० सं०) गुप्त। गायब। अदृश्य।
लुब्ध—(वि० सं०) ललचाया हुआ। मोहित।
लुब्बलुबाब—(पु० अ०) गूदा। साराश।
लुभाना—(क्रि० हि०) मोहित होना। लालच में पड़ना। मोह में पड़ना। मोहित करना। ललचाना। मोह में डालना।

लुरकी—(स्त्री० हि०) कान में पहनने की बाली। मुरकी।
लुहार—(पु० हि०) लोहे का काम करनेवाला।
लू—(स्त्री० हि०) गरमी के दिनों की तपी हुई वायु।
लूक—(स्त्री० हि०) आग की लपट। जलती हुई लकड़ी। लू। टूटा हुआ तारा।
लूकी—(स्त्री० हि०) आग की चिनगारी। लूका।
लूट—(स्त्री० हि०) डकैती। लूटने से मिला हुआ माल। —ना=ज़बरदस्ती छीनना। बरबाद करना। ठगना।
लूला—(वि० हि०) बिना हाथ का। बेकाम।
लेंड—(पु० हि०) बँधा मल। लेंड़ी=बँधा मल। मेंगनी।
लेंस—(पु० अ०) शीशे का ताल जो प्रकाश की किरनों को एकत्र या केंद्रीभूत करे।
लेई—(स्त्री० हि०) अवलेह। लपसी। घुला हुआ आटा।
लेक्चर—(पु० अ०) व्याख्यान। वक्तृता। —बाज़ी=खूब लेक्चर देने की क्रिया। —र=व्याख्यान देनेवाला।
लेख—(पु० स०) लिपि। लिखी हुई बात। लिखावट। लेखा। लेख्य=लिखने योग्य। हिसाब के लायक। —क=लिखनेवाला। लेखन=लिखने का कार्य। लिखने की कला या विद्या। चित्र बनाना। लेखनी=कलम। लेखप्रणाली=लिखने का ढंग। लेखशैली=लेखप्रणाली। लेखा=गणना। गिनती। हिसाब किताब। ठीक-ठीक अंदाज़ा। लेखाबही=वह बही जिसमें रुपये के लेन देन का ब्योरा रहता है। लेखिका=लिखनेवाली। ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।
लेजम—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की कमान।
लेजिस्लेटिव—(वि० अ०) व्यवस्था सम्बन्धी। कानून सम्बन्धी। —एसेम्बली=व्यवस्थापिका

परिषद्। —कौंसिल = व्यवस्थापिका सभा।

लेट—(स्त्री० देश०) गच। (वि०) जिसे देर हुई हो। —फी = वह फीस जो निश्चित समय के बाद डाकखाने में कोई चीज़ दाखिल करने पर देनी पड़ती हो।

लेटना—(क्रि० हि०) पौढ़ना।

लेटरबाक्स—(पु० अं०) चिट्ठी डालने की सन्दूक।

लेटर्स पेटेंट—(पु० अं०) राजकीय आज्ञापत्र।

लेनदार—(पु० हि०) जिसका कुछ बाकी हो। महाजन।

लेनदेन—(पु० हि०) लेने और देने का व्यवहार। महाजनी।

लन—(स्त्री० अं०) गली। कूचा।

लेना—(क्रि० हि०) प्राप्त करना। पकड़ना। खरीदना। जीतना। कर्ज़ लेना। काम पूरा करना।

लेप—(पु० स०) पोतने या चुपड़ने की चीज़। लेह। उबटन। —न = गाढ़ी गीली वस्तु को तह चढ़ाना।

लेफ्टिनेंट—(पु० अं०) एक सहायक कर्मचारी। सेना का एक अध्यक्ष। —जेनरल = सहायक सैन्याध्यक्ष। —कर्नल = सेना का एक अफ़सर।

लेमुल—(पु० अं०) नाम। पत्रक।

लेबरर—(पु० अं०) श्रमजीवी। मजूर।

लेबोरेटरी—(स्त्री० अं०) प्रयोग शाला।

लेमनेड—(पु० अं०) नीबू का शरबत।

लेश—(वि० स०) चिन्ह। थोड़ा अल्प।

लेवी—(स्त्री० अं०) एक प्रकार का दरबार।

लेस—(पु० हि०) गोटा। मेल।

लेसना—(क्रि० हि०) जलाना। चुगलीखाना।

लेंडो—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी।

लंप—(पु० अं०) दीपक। चिराग।

लैंसर—(पु० अं०) रिसाले के

सवारों के तीन भेदों में से एक।

लैन—(स्त्री० अ० लाइन) सीधी लकीर। साधा की लकीर। कतार। पंक्ति। पैदल सिपाहियों की सेना। बारक।

लैवेंडर—(पु० अ०) एक सुगंधित तरल पदार्थ।

लैसंस—(पु० अ० लाइसेंस) सनद। अधिकार पत्र।

लैस—(वि० अ० लेस) वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। तैयार।

लोंदा—(पु० हि०) किसी गीले पदार्थ का वह अंश जो ढले की तरह बँधा हो।

लोअर—(अ०) नीचे का। —कोर्ट=नीचे की अदालत।

लोइ—(स्त्री० हि०) गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिससे एक रोटी बन सके। एक प्रकार का कम्बल।

लोक—(पु० सं०) संसार। स्थान। लोग। जन। समाज। यश। —संग्रह=संसार के लोगों को प्रसन्न करना। सब की भलाई चाहने वाला। लोकांतरित=जो इस लोक से दूसरे लोक में चला गया हो। मरा हुआ। स्वर्गीय। लोकाचार=लोक व्यवहार। लोकोक्ति=कहावत। मसल। लोकोत्तर=अलौकिक। लौकिक=सांसारिक। लोक-सम्बन्धी।

लोकना—(क्रि० हि०) ऊपर से गिरी हुई चीज को गिरने से पहले हाथों से पकड़ लेना। रास्ते में से ही ले लेना।

लोकल—(वि० अ०) प्रांतिक। प्रादेशिक। स्थानीय।—बोर्ड=एक प्रकार की समिति।

लोग—(पु० हि०) मनुष्य। जन।

लोच—(पु० हि०) लचक। कोमलता।

लोचन—(पु० सं०) आँख।

लोट—(स्त्री० हि०) लोटने की क्रिया या भाव। लुढ़कना। —ना = सीधे और उलटे

लोटते हुए किसी ओर को आना। लोटना। —पोट = थकित होना।

लोटा—(पु० हि०) धातु का एक बरतन। लुटिया = छोटा लोटा।

लोढ़ा—(पु०हि०) बट्टा। लोढ़िया = छोटा लोढ़ा।

लोथड़ा—(पु० हि०) मांस पिंड।

लोन—(पु० अ०) कर्ज़।

लोना—(पु० हि०) नमकीन मिट्टी। लोनिया = एक जाति। लोनी = एक साग जो नमकीन होता है।

लोप—(पु० स०) नाश। क्षय। विच्छेद। अभाव। छिपना।

लोबान—(पु० अ०) एक वृक्ष का सुगंधित गोंद।

लोबिया—(फा०) साग की एक फली।

लोभ—(पु० स०) लालच। लोभाना = मोहित करना। मुग्ध होना। लोभित = लुभाया हुआ। मुग्ध। लोभी = लालची।

लोम—(पु० स०) रोम। रोवाँ। बाल। —हर्षण = रोमांच। ऐसा भीषण प्रसंग जिसमें रोएँ खड़े हो जाएँ।

लोमड़ी—(स्त्री० हि०) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक जंतु।

लोरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का गीत।

लोलक—(पु० स०) लटकन।

लोहा—(पु० हि०) एक धातु। हथियार। —र = एक जाति जो लोहे का काम करती है। लोहिया = लोहे की चीज़ों का व्यापार करनेवाला।

लोहू—(पु० हि०) खून। रक्त।

लौंग—(पु० हि०) एक झाड़ की कली।

लौंडा—(पु०) छोकरा। बालक। खूबसूरत लड़का। —पन = लड़कपन। छिछोरापन। लौंडी = दासी। मज़दूरनी।

लौंडेबाज—(वि० हि०) बालकों के साथ प्रकृति विरुद्ध आचरण करनेवाला।

लौ—(स्त्री० हि०) ज्वाला। दीपशिखा।

लौकी—(स्त्री० हि०) कद्दू। घीया।

लौटना—(क्रि० हि०) वापस आना। उलटना।

लौट पौट—(स्त्री० हि०) दोरुखी छपाई। उलटने पुलटने की क्रिया।

लौट-फेर—(पु० हि०) हेर-फेर। भारी परिवर्तन।

लौटाना—(क्रि० हि०) फेरना। वापस करना। वापस आना।

व

व—हिन्दी वर्णमाला का उन्तालिसवाँ व्यंजन वर्ण।

वंग—(पु० सं०) बंगाल।

वंचक—(वि० सं०) ठग। धूर्त। गरुड़।

वंचना—(स्त्री० सं०) धोखा। ठगना।

वंचित—(क्रि० सं०) जो ठगा गया हो। अलग किया हुआ। निस्पृह। अलग। रहित।

वंदना—(स्त्री० सं०) स्तुति। प्रणाम। वंदनीय=वंदना करने योग्य। —वंदित=पूज्य। आदरणीय।

वंदीगृह—(पु० सं०) कैदखाना।

वंश—(पु० सं०) कुल। घराना। —धर=संतान। वंशावली=किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की सूची।

वंशी—(स्त्री० सं०) बाँसुरी। मुरली।

वकालत—(स्त्री० अ०) दूसरे के पक्ष का मंडन। मुकद्दमे में किसी फ़रीक़ की तरफ से बहस करने का पेशा।—नामा

वज़ारत—(स्त्री० फ़ा०) मंत्री का काय ।

वज़ीफ़ा—(पु० अ०) वृत्ति । —दार=वज़ीफ़ा पानेवाला ।

वज़ीर—(पु० अ०) मंत्री । दीवान । शतरंज की एक गोटी । वज़ीरी=वज़ीर का काम या पद ।

वज़ू—(पु० अ०) नमाज़ पढ़ने के लिये हाथ, पाँव आदि धोना ।

वज्र—(पु० सं०) एक शस्त्र । बिजली । —लेप=एक मसाला जो कभी नहीं छूटता ।

वट—(पु० सं०) बरगद का पेड़ ।

वणिक्—(पु० सं०) रोज़गार करनेवाला । बनिया । —वृत्ति=व्यापार ।

वतन—(पु० अ०) वासस्थान । जन्मभूमि ।

वत्स—(पु० सं०) गाय का बच्चा । बालक । —ल=बच्चे के प्रेम से भरा हुआ । अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु । वात्सल्य=बच्चों के प्रति स्नेह ।

वत्सर—(सं०) वर्ष । साल ।

वदन—(पु० सं०) मुँह ।

वदान्य—(वि० सं०) उदार ।

वध—(पु० सं०) हत्या ।

वधू—(स्त्री० सं०) नव विवाहिता स्त्री । दुलहिन । पत्नी । पुत्र की बहू । पतोहू ।

वन—(पु० सं०) जंगल । वाटिका । —चर=वन में रहनेवाला । जंगली मनुष्य । —माली=वनमाला धारण करनेवाला । श्रीकृष्ण । —वास=जंगल में रहना । —वासी=वन में रहनेवाला । वनस्पति=वृक्षमात्र । पेड़ । पौधा । —शास्त्र=वनस्पति विज्ञान । वनौषध=जंगली जड़ी बूटी । वन्य=जंगली ।

वफ़ा—(स्त्री० अ०) वादा पूरा करना । सुशीलता । —दार=अपने काम को ईमानदारी से करनेवाला । सच्चा ।

वफ़ात—(स्त्री० अ०) मृत्यु ।

वबा—(स्त्री० अ०) महामारी। मरी।

वबाल—(अ०) बोझ। आफत। ईश्वरीय कोप। पाप का फल।

वय—(स्त्री० स०) अवस्था। —स्क=उमर का। अवस्था वाला। सयाना।

वरञ्च—(अव्य० स०) बल्कि। परन्तु। लेकिन।

वर—(पु० स०) किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। पति। श्रेष्ठ। उत्तम। किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। —यात्रा=दूल्हे का बाजे गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। बरात।

वरक—(अ०) पत्र। पुस्तकों का पन्ना। पन्ना। सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर जो मिठाइयों पर लगाने और औषध के काम में आते हैं।

वर्दी—(स्त्री० फा०) वह पोशाक, जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियों के लिये नियत हो।

वरन्—(क्रा) ऐसा नहीं। बल्कि।

वरजिश—(स्त्री० फा०) कसरत। व्यायाम।

वरिष्ठ—(वि० स०) श्रेष्ठ। पूजनीय।

वर्क—(पु० अ०) काम। वकर =काम करनेवाला।

वर्किंग कमिटी—(स्त्री० अ०) कार्यकारिणी समिति।

वर्ग—(पु० स०) जाति। श्रेणी। परिच्छेद। विभाग। —फल =वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो। —मूल=किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसीसे गुणन करें, तो गुणन वही वर्गांक हो।

वर्गलाना—(क्रा) उकसाना। बहकाना।

वर्जना—(स०) मना करना। वर्जनीय=निषेध के योग्य। मना। वर्जित=छोड़ा हुआ। निषिद्ध।

वर्ण—(पु० स०) रंग। जन समुदाय के चार विभाग। —संकर=व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य।

वर्णन—(पु० स०) चित्रण। बयान। —शैली=कहने का ढंग। वर्णनीय=बयान करने योग्य। वर्णित=कहा हुआ। बयान किया हुआ।

वर्त्तमान—(वि० स०) मौजूद। विद्यमान। साक्षात्। आधुनिक। हाल का। व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक।

वर्द्धक—(वि० स०) बढ़ानेवाला। वर्द्धमान = बढ़ता हुआ। वर्द्धित=बढ़ा हुआ।

वर्मा—(पु० हि०) क्षत्रियों आदि की उपाधि।

वर्ष—(पु० स०) साल। संवत्सर। —गाँठ=वह कृत्य जो किसी पुरुष के जन्म दिन पर किया जाता है। —फल=फलित ज्योतिष में जातक के अनुसार एक कुंडली।

वर्षा—(स्त्री० स०) वृष्टि। बरसात।

वलि—(पु० स०) किसी देवी या देवता को पशु मारकर चढ़ाना। देना।

वल्कल—(पु० स०) वृक्ष की छाल का वस्त्र जिसे मुनि और तपस्वी पहना करते थे।

वल्द—(पु० अ०) औरस बेटा। पुत्र। वल्दियत=पिता के नाम का परिचय।

वल्ली—(स्त्री० स०) लता।

वश—(पु०स०) काबू। अधिकार। कब्ज़ा। —वर्ती=जो दूसरे के वश में रहे। वशीकरण=वश में लाने की क्रिया। अधीन करना। वशीभूत=वश में आया हुआ। अधीन। वश्यता=अधीनता।

वसंत—(पु० स०) बहार का मौसिम। वसंतोत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पञ्चमी के दूसरे दिन होता था।

वसीका—(पु० अ०) वक्फ़ का इकरारनामा।

वसीयत—(स्त्री० अ०) अपनी संपत्ति के संबंध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है। (अ०) रिक्थ। —नामा = रिक्थ।

वसीला—(पु० अ०) संबंध। आश्रय। ज़रिया।

वसूल—(वि० अ०) प्राप्त। वसूली प्राप्ति। —याबी = प्राप्ति।

वस्त्र—(पु० सं०) कपड़ा।

वस्फ़—(पु० अ०) गुण। विशेषता।

वस्ल—(पु० अ०) मिलन। संयोग। मिलाप।

वह—(सर्व० सं०) कर्तृकारक। प्रथम पुरुष सर्वनाम।

वहम—(फ़ा०) झूठा ख़याल। भ्रम। व्यर्थ की शंका। वहमी = झूठे ख़याल में पड़ा रहनेवाला। वहम करनेवाला।

वहशत—(स्त्री० अ०) असभ्यता। उजड्डपन। पागलपन। अधीरता। विकलता। उदासी। डरावनापन। वहशी = जंगली। जो पालतू न हो। असभ्य। भड़कने वाला।

वहाँ—(अव्य० हि०) उस जगह।

वहिरंग—(पु० सं०) बाहरी भाग।

वहिष्कृत—(वि० सं०) निकाला हुआ। त्यागा हुआ।

वहीं—(अव्य० हि०) उसी जगह।

वही—(सर्व० हि०) पूर्वोक्त व्यक्ति।

वाञ्छनीय—(वि० सं०) चाहने योग्य। जिसकी इच्छा हो। वांछा = इच्छा। चाह। वांछित = चाहा हुआ।

वा—(अव्य० सं०) या। अथवा।

वाइज़—(अ०) उपदेशक।

वाइन—(अं०) शराब। मद्य।

वाइकाउंट—(पु० अं०) इंगलैंड के सामंतों को दी जानेवाली एक उपाधि।

वाइस चान्सलर—(पु० अं०) विश्वविद्यालय का वह ऊँचा अधिकारी जो चान्सलर के सहायतार्थ हो।

वाइस चेयरमैन—(पु० अ०) उपाध्यक्ष। उपसभापति।

वाइस प्रेसीडेंट—(पु० अ०) उपसभापति।

वाइसराय—(पु० अ०) हिन्दुस्तान में सम्राट् का प्रतिनिधि। बड़ा लाट।

वाक्अ—(अ०) घटना।

वाउचर—(पु० अ०) हिसाब के ब्योरे का कागज़।

वाक्ई—(वि० अ०) ठीक। यथार्थ। वास्तव में।

वाक्या—(पु० अ०) घटना। समाचार।

वाका—(पु० अ०) घटनेवाला। स्थित।

वाकिअ —(अ०) दुर्घटना। समाचार।

वाकिफ़—(वि० अ०) जानकार। ज्ञाता। अनुभवी। —कार = कायस्थ। वाकफ़ियत = जानकारी।

वाक्य—(पु० स०) जुमला। (अ०) सेंटेंस।

वाक्सिद्धि—(स्त्री० स०) वाणी की सिद्धि।

वाग्जाल—(पु० स०) बातों का आडम्बर या भरमार।

वाच—(स्त्री० अ०) जेब में रखने की या कलाई पर बाँधने की छोटी घड़ी। —मैन = चौकीदार।

वाचक—(वि०स०) बतानेवाला। नाम। संज्ञा।

वाचनालय—(पु० स०) वह कमरा या भवन जहाँ पुस्तकें और समाचार-पत्र आदि पढ़ने को मिलते हों। रीडिंग रूम।

वाचाल—(वि० स०) बकवादी। —ता = बहुत बोलना। बातचीत में निपुणता।

वाज़—(पु० अ०) उपदेश। शिक्षा धार्मिक व्याख्यान। कथा।

वाज़ेह—(अ०) मालूम। विदित।

वाजिब—(वि० अ०) उचित। ठीक। वाजिबी = उचित। वाजिबुल अदा = वह धन जिसके देने का समय आगया

हो। देय। (ब्य सं०)। वाजिबुल अर्ज=वह शर्त जो कानूनी बन्दोबस्त के समय ज़मींदारों और किसानों के बीच गाँव के रिवाज आदि के संबध में लिखी जाती है। वाजिबुल वसूल=धन जिसके वसूल करने का वक्त आ गया हो।

वाटर—(पु० अ०) पानी। —प्रूफ़=जिस पर पानी का प्रभाव न पड़े। —वर्क्स=नगर में पानी पहुँचाने का विभाग। पानी पहुँचाने की कल। —शूट=जल क्रीडा। वाटरिंग=छिड़काव।

वाटिका—(स्त्री० सं०) बाग। बगीचा।

वाण—(पु० सं०) तीर।

वाणिज्यदूत—(पु० सं०) वह मनुष्य जो किसी देश के प्रतिनिधि रूप से दूसरे देश में रहता और अपने देशके व्यापारिक स्वार्थों की रक्षा करता हो।

वाणी—(स्त्री० सं०) सरस्वती। वचन। वाक्शक्ति।

वात—(पु० सं०) हवा। —व्याधि=गठिया। वातायन=झरोखा। खिड़की।

वात्सल्य—(पु० सं०) प्रेम। स्नेह। माता पिता का प्रेम।

वाद—(पु० सं०) तर्क। शास्त्रार्थ। दलील। —विवाद=बहस मुबाहसा।

वादा—(पु० अ०) इक़रार। प्रतिज्ञा।

वादी—(पु० हि०) फ़रियादी। मुद्दई।

वानप्रस्थ—(पु० सं०) मनुष्य-जीवन के चार विभागों या आश्रमों में से तीसरा विभाग या आश्रम।

वापस—(वि० फा०) लौटा हुआ। फिरा हुआ। वापसी=लौटा हुआ या फेरा हुआ।

वामन—(वि० सं०) बौना।

वायु—(स्त्री० सं०) हवा। बयार।

वारंट—(पु० अ०) [illegible]-पत्र। —[illegible] [illegible]

विलाप—(पु० सं०) क्रन्दन। रुदन। रोना।

विलायत—(पु० अ०) पराया देश। दूर का देश। विलायती=विदेशी। परदेशी। विलायती बैंगन=टोमटो।

विलास—(पु० सं०) सुख भोग। मनोरञ्जन। आनंद। हर्ष। हाव भाव। नाज़ नखरा। अतिशय सुख भोग।

विवरण—(पु० सं०) ब्यौरा। तफ़सील।

विवाद—(पु० सं०) वाक् युद्ध। झगड़ा। कलह। मतभेद। विवादास्पद=जिस पर विवाद या झगड़ा हो। विवाद योग्य।

विवाह—(पु० सं०) शादी। ब्याह। विवाहिता=जिस कन्या का पाणिग्रहण हो गया हो। ब्याही हुई।

विविध—(वि० सं०) बहुत प्रकार का। अनेक तरह का।

विवेक—(पु० सं०) भली-बुरी वस्तु का ज्ञान। समझ। विचार। बुद्धि। सत्य ज्ञान।

विवेचन—(सं०) जाँचना। निर्णय। व्याख्या। तर्क-वितर्क। अनुसंधान। विवेचना=व्याख्या।

विशद—(वि० सं०) स्वच्छ। स्पष्ट।

विशारद—(पु० सं०) वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित हो। दक्ष।

विशेष—(पु०सं०) भेद। अधिक। ज़्यादा। —ज्ञ=किसी विषय का पारदर्शी। विशेषण=वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। विशेषता=ख़ासपन।

विश्राम—(पु० सं०) आराम। ठहरने का स्थान।

विश्रुत—(वि० सं०) विख्यात। मशहूर।

विश्व—(पु०सं०) समस्त ब्रह्माण्ड। संसार। दुनिया।

विश्वास—(पु० सं०) एतबार।

यक़ीन । —घात=छल । धोखेबाज़ी।—पात्र=विश्वसनीय । काबिल एतबार । विश्वासी=एतबारी।

विप—(पु० स०) ज़हर ।

विपम—(वि० स०) जो बराबर न हो । असमान । बहुत तेज़ । भीषण । सकट ।

विपय—(स०) सबध । विकार । काम । (अ०) सब्जेक्ट । विपयक=विपय का । सबधी । विपयी=विलासी । कामी ।

विपाद—(पु० स०) खेद । दु:ख ।

विसर्जन—(पु० स०) परित्याग । छोड़ना । विदा होना । चला जाना । समाप्ति । अत । दान ।

विसाल—(पु० अ०) सयोग । प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप ।

विसूचिका—(स्त्री० स०) हैजा ।

विस्तार—(पु० स०) फैलाव । पेड़ की शाखा ।

विस्तृत—(वि० स०) जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो ।

विस्मय—(पु० स०) आश्चर्य । ताज्जुब ।

विस्मरण—(पु० स०) भूल जाना ।

विस्मित—(वि० स०) चकित ।

विस्मृत—(स्त्री० स०) भूल जाना । विस्मरण ।

विहार—(पु० स०) [illegible] । घूमना । सभोग । [illegible] करने का स्थान । बौद्ध [illegible] के रहने का मठ ।

विह्वल—(वि० स०) [illegible] हुआ । व्याकुल ।

वीटो—(पु० अ०) [illegible] नामज़ूरी । [illegible]

वीज—(पु० स०) [illegible] वीर्य । [illegible] अकुर । [illegible] —गणित=[illegible]

वीड़ा—(पु० [illegible]) [illegible]

वीर्य्य—(पु० स०) [illegible]

धातुओं में से एक धातु। शुक्र। बीज।

वृत्त—(पु० स०) पेड़। दरख्त।

वृत्त—(पु० स०) चरित्र। चाल चलन। आचार। समाचार। हाल। मडल। वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो।

वृत्तांत—(पु० स०) समाचार। हाल।

वृत्ति—(स्त्री० स०) जीविका। रोजी। वह धन जो किसी दीन, विधवा या छात्र आदि को बराबर, कुछ निश्चित समय पर, उसके सहायतार्थ दिया जाय। व्यवहार। योग के अनुसार चित्त की अवस्था। व्यापार। स्वभाव।

वृद्ध—पु० स०) बुढ़ापा। बुड्ढा। —ता=वृद्धावस्था।

वृद्धि—(स्त्री० स०) बढ़ती। ज्यादती। अधिकता। ब्याज।

वेटेरिनरी—(वि० अ०) बैल, घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा संबंधी।—अस्पताल =पशु चिकित्सालय।

वेतन—(पु० सं०) तनख्वाह। दर माहा।

वेत्ता—(वि० स०) जाननेवाला। ज्ञाता।

वेद—(पु० स०) भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ, जिनकी संख्या चार है। वेदांग=वेदों के अंग या शास्त्र जो छ हैं। वेदांत = उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग। ब्रह्म विद्या। अध्यात्म। छ दर्शनों में से प्रधान दर्शन। उत्तर मीमांसा। अद्वैतवाद।

वेदी—(स्त्री० स०) यज्ञ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि। वेदिका=वेदी।

वेध—(पु० स०) बेधना। किसी नोकीली चीज़ से छेदने की क्रिया। यन्त्रों आदि की सहायता से ग्रहों नक्षत्रों और तारों आदि को देखना।

ज्योतिष के ग्रहों का किसी पथ स्थान में पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो। —क= वेध करनेवाला। वह जो मणियों आदि को वेधकर अपनी जीविका चलाता हो। वेधशाला=वह स्थान जहाँ नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी, गति आदि जानने के यन्त्र हों।

वेला—(स्त्री० सं०) काल। समय। समुद्र की लहर।

वेश—(पु० सं०) सजावट। पोशाक।

वेश्या—(स्त्री० सं०) रंडी। गणिका।

वेष—(पु० सं०) रूप रंग।

वेष्टन—(पु० सं०) वेठन।

वेस्ट—(पु० अ०) पश्चिम दिशा। —कोट=एक प्रकार की अँगरेज़ी कुरती।

वैकल्पिक—(वि० सं०) जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। जिसमें किसी प्रकार का संदेह हो। जो ठीक न जा सके।

वैकुंठ—(पु० सं०) स्वर्ग।

वैगनेट—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

वैचित्र्य—(पु० सं०) भेद। फ़र्क़। सुंदरता। खूबसूरती।

वैज्ञानिक—(पु० सं०) विज्ञान जाननेवाला। विज्ञान का।

वैतनिक—(पु० सं०) वह जो वेतन लेकर काम करता हो। नौकर। भृत्य।

वैतरणी—(स्त्री० सं०) एक पौराणिक नदी।

वैदिक—(पु० सं०) वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। वेदों का पंडित। जो वेदों में कहा गया हो। वेद संबंधी।

वैदूर्य—(पु० सं०) धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न।

वैद्य—(पु० सं०) चिकित्सक। भिषक्।

वैद्यक—(पु० सं०) चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद।

वैमनस्य—(पु० सं०) द्वेष। दुश्मनी।

वैमानिक—(पु० सं०) वह जो विमान पर चढ़कर आकाश में विहार करता हो। आकाशचारी।

वैर—(पु०सं०) शत्रुता। दुश्मनी। विरोध।

वैरागी—(पु० सं०) विरक्त। उदासीन वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

वैराग्य—(पु० सं०) विरक्ति।

वैवाहिक—(वि० सं०) विवाह संबंधी। विवाह का।

वैशाख—(पु० सं०) चैत के बाद का और जेठ के पहले का एक महीना।

वैशेषिक—(पु० सं०) छः दर्शनों [redacted] से एक। पदार्थ विद्या।

वैश्य—(पु० सं०) भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से एक। बनिया।

वैश्या—(स्त्री० सं०) वैश्य जाति की स्त्री।

वैश्वजनीन—(वि० सं०) समस्त संसार के लोगों का।

वैषम्य—(पु० सं०) विषमता।

वैष्णव—(पु० सं०) विष्णु का उपासना करनेवाला। हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय।

वोट—(पु० अ०) मत। राय। वोटर=वोट या सम्मति देनेवाला। वोटर लिस्ट=वोट देनेवालों की सूची।

व्यंग्य—(पु० सं०) गूढ़ और छिपा हुआ अर्थ। ताना। बोली। चुटकी।

व्यंजन—(पु० सं०) चिह्न। भोजन। वर्णमाला में का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता से न बोला जा सकता हो।

व्यंजना—(स्त्री० सं०) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता है।

व्यक्त—(वि० [redacted]०) प्रकट। ज़ाहिर। स्पष्ट।

व्यक्ति—(स्त्री० स०) आदमी।

व्यग्र—(वि० स०) व्याकुल। काम में फँसा हुआ।

व्यतिक्रम—(पु० स०) उलट फेर। बाधा। विघ्न।

व्यतिरेक—(पु० स०) अभाव। भेद। अंतर। अतिक्रम।

व्यतीत—(वि० स०) बीता हुआ। गत।

व्यथा—(स्त्री० स०) पीड़ा। वेदना। दुख। क्लेश। व्यथित=दुखित। रंजीदा।

व्यभिचार—(पु० स०) बद चलनी। छिनाला। व्यभिचारी =बदचलन। परस्त्रीगामी।

व्यय—(पु० स०) खर्च। सरफ़ा। खपत।

व्यर्थ—(वि० स०) निरथक फ़जूल। यों ही।

व्यवच्छिन्न—(वि० स०) अलग। जुदा। विभक्त।

व्यवच्छेद—(पु० स०) पृथकता। अलगाव। विभाग। हिस्सा।

व्यवसाय—(पु० स०) जीविका। उद्योग। कोशिश। काम धंधा। उद्यम। व्यवसायी= रोज़गार करनेवाला।

व्यवस्था—(स्त्री स०) प्रबन्ध। इन्तज़ाम। व्यवस्थापक= प्रबन्धकर्त्ता। व्यवस्थापत्र= विधान सम्बन्धी पत्र। व्यवस्थित=कायदे का। नियमित।

व्यवहार—(पु० स०) कार्य्य। बरताव। व्यापार। लेन देन। व्यवहारिक=व्यवहार-योग्य। काम काज सम्बन्धी। उपयोगी।

व्यवहृत—(वि० स०) जो काम में लाया गया हो।

व्यसन—(पु० स०) विपत्ति। आफ़त। दुख। विषयों के प्रति आसक्ति। आदत। व्यसनी=शौक़ीन। वेश्या-गामी।

व्यस्त—(वि० स०) काम में लगा हुआ या फँसा हुआ।

व्याकरण—(पु० स०) भाषा का शुद्ध प्रयोग और नियम आदि बतलानेवाला शास्त्र।

व्याकुल—(पु० म०) बहुत घबराया हुआ। व्याकुलता = घबराहट। कातरता।

व्याख्या—(स्त्री० म०) टीका। व्याख्यान।

व्याख्याता—(पु० म०) व्याख्या करनेवाला। वह जो व्याख्यान देता हो। भाषण करनेवाला।

व्याख्यान—(पु० म०) भाषण। वक्तृता। —शाला = वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का व्याख्यान आदि होता हो।

व्याघात—(पु० म०) विघ्न। बाधा।

व्याघ्र—(पु० स०) बाघ या शेर नामक प्रसिद्ध हिंसक जन्तु।

व्याज—(पु० स०) कपट। छल। धोखा। —निंदा = वह निंदा जो छल या कपट से की जाय। —स्तुति = वह स्तुति जो किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े। व्याजोक्ति = कपट भरी बात। एक प्रकार का अलंकार।

व्याध—(पु० म०) शिकारी।

व्याधि—(स्त्री० म०) रोग। बीमारी। आफ़त। झंझट।

व्यान—(पु० म०) शरीर में रहने वाली पाँच वायुओं में से एक।

व्यापक—(वि० स०) सर्वत्र। फैला हुआ।

व्यापार—(पु० स०) कार्य। रोज़गार। व्यवसाय। व्यापारी = रोज़गारी। व्यवसायी।

व्याप्य—(वि० स०) व्याप्त करने के योग्य। व्यापनीय।

व्यायाम—(पु० स०) कसरत। मेहनत।

व्यालू—(पु० हि०) रात के समय का भोजन।

व्यावहारिक—(पु०स०) व्यवहार संबंधी। व्यवहार शास्त्र संबंधी।

व्यासंग—(पु० स०) बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्युत्पत्ति—(स्त्री० स०) किसी

ङ्कार । शब्दालङ्कार = साहित्य में वह अलङ्कार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों से भाषा में लालित्य उत्पन्न किया जाय ।

शमा—(स्त्री० अ०) मोम । मोमबत्ती । —दान—वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगा कर जलाते हैं ।

शयन—(पु० सं०) सोना । बिछौना । मैथुन । सम्भोग । शयनागार = सोने का स्थान । शयनगृह । शय्या = बिस्तर । बिछौना । पलँग । खाट । शय्यादान = मृत्यु के अनन्तर मृतक के सम्बन्धियों का महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना । सज्जादान ।

शर —(पु० सं०) बाण । तीर ।

शरअ—(स्त्री० अ०) कुरान में दी हुई आज्ञा । मुसलमानों का धर्मशास्त्र ।

शरई—(वि० अ०) मुसलमानी धर्म के अनुसार । (पु०) शरअ पर चलनेवाला मनुष्य ।

शरण—(स्त्री० सं०) रक्षा । आड़ । आश्रय । आश्रय का स्थान । घर । अधीन । मातहत । शरणागत = शरण में आया हुआ व्यक्ति ।

शरद्—(स्त्री० सं०) एक ऋतु जो आश्विन और कार्त्तिक मास [illegible] मानी जाती है । शरद् पूर्णिमा = कुआर मास की पूर्णमासी । शरत्पूनो ।

शरफ—(अ०) योग्यता ।

शरबत—(पु० अ०) पीने की मीठी वस्तु । रस । चाशनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क जो दवा के काम में आता है । पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड़ । सगाई की रस्म । शरबती = एक प्रकार का हल्का पीला रंग । एक प्रकार का नगीना । एक प्रकार का नीबू । एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा । एक प्रकार का फालसा । रसीला । रसदार । शरबती नीबू = चकोतरा । गलगल । जंबीरी नीबू । मीठा नीबू ।

शरम—(स्त्री० फ़ा०) लज्जा। हया। लिहाज़। सकोच। इज़्ज़त। प्रतिष्ठा। —सार= जिसे शरम हो। लज्जावाला। लज्जित। शरमिंदा। —सारी = लज्जा। शरमिंदगी। मुँह देखे की लज्जा करने वाला। शरमालू=जिसे बहुत लज्जा मालूम होती हो। शरमीला। शरमाना= लज्जित होना। लाज करना। शरमा शरमी = लज्जा के कारण। शरमिंदा होकर। शरमिंदगी=लाज। झेंप। नदामत। शरमिंदा=लज्जित शरमीला=लज्जालु।

शरह—(स्त्री० अ०) टीका। व्याख्या। दर। भाव। शरह लगान=लगान की दर। ज़मीन की पड़ती।

शरायत—(अ०) शर्तें।

शराकत—(स्त्री० फा०) साझा। हिस्सेदारी।

शराफत—(स्त्री० अ०) भल मनसी। सज्जनता।

शराब—(स्त्री० अ०) मदिरा। सुरा। मद्य। हकीमों की परिभाषा में शरबत। —ख़ाना =वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो। —ख़ोरी= मदिरा-पान। —ख़्वार= शराबी। शराबी=शराब पीनेवाला। मद्यप।

शराबोर—(वि० फा०) तर-बतर। बिलकुल भींगा हुआ।

शरार—(अ०) चिनगारियाँ। शरारा=चिनगारी।

शरारत—(स्त्री० अ०) पाजीपन। दुष्टता।

शरीक—(वि० अ०) शामिल। मिला हुआ। साथी। हिस्से-दार।

शरीफ—(पु० अ०) कुलीन मनुष्य। भलाआदमी। मक्के के प्रधान अधिकारी की पदवी। कलकत्ते, बम्बई आदि में सरकार की ओर से नियुक्त किये हुए एक प्रकार के अवैतनिक अधिकारी जिनके

सुपुर्द शांति रक्षा तथा इसी प्रकार के काम रहते हैं।

शरीफा—(पु० हि०) सीताफल।

शरीर—(पु० स०) देह। बदन। तन। (वि० अ०) पाजी। दुष्ट।

शर्करा—(स्त्री० स०) शक्कर। चीनी। बालू का कण। —प्रमेह=एक प्रकार का प्रमेह।

शर्ट—(स्त्री० अ०) कमीज़।

शर्त—(स्त्री अ०) बाज़ी। दाँव।

शर्तिया—(क्रि० अ०) शर्त बद कर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक।

शर्मसार—(फ़ा०) लज्जित।

शर्म्मा—(पु० सं०) ब्राह्मणों की उपाधि।

शलजम—(पु० फा०) गाजर की भाँति का एक कंद।

शलाका—(स्त्री० स०) सलाई। वह सलाई जिससे घाव की गहराई आदि नापी जाती है। सुरमा लगाने की सलाई।

शव—(पु० स०) लाश। मुर्दा।

शशमाही—(वि० फ़ा०) छः माही। अर्द्ध वार्षिक।

शशिमंडल—(पु० स०) चन्द्रमा का घेरा या मंडल।

शस्त्र—(पु० स०) हथियार। औज़ार। —क्रिया=फोड़ों आदि की चीर फाड़। नश्तर लगाने की क्रिया। —विद्या=हथियार चलाने की विद्या। शस्त्रागार=शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रालय।

शस्य—(पु० स०) घास। खेत। फसल। अन्न।

शहंशाह—(पु० फ़ा०) बादशाहों का बादशाह। महाराजाधिराज। शहंशाही=शाही। राजसी। शाहंशाह का पद। लेने देने में खरापन।

शह—(पु० फ़ा०) बादशाह। गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव। शहज़ादा=राजकुमार। युवराज। —ज़ोर=बलवान। ताक़तवर। —तीर=लकड़ी का चीरा हुआ बहुत

पड़ा और छत्ता सुड़ा। —बाला = घर का छोटा भाई जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसके पीछे घोड़े पर बैठकर जाता है। —मात = शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

शहतूत—(पु० फ़ा०) तूत नाम का पेड़ और उसका फल।

शहद—(पु० अ०) मधु।

शहना—(पु० अ०) खेत की चौकसी करने वाला। कोतवाल।

शहनाई—(स्त्री० फा०) एक प्रकार का बाजा। नफ़ीरी।

शहर—(पु० फा०) नगर। —पनाह = प्राचार। नगर कोटा।

शहवत—(स्त्री० अ०) कामातुरता। भोग विलास। मैथुन।

शहादत—(स्त्री० अ०) गवाही। सबूत। प्रमाण। धर्म के लिये लड़ाई आदि में मारा जाना।

शहाब—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का गहरा लाल रंग। शहाबी = गहरा लाल।

शहीद—(पु० अ०) धर्म पर बलिदान होने वाला व्यक्ति।

शांत—(वि० स०) ठहरा हुआ। रुका हुआ। मिटा हुआ। स्थिर। मरा हुआ। धीर। सौम्य। गंभीर। मौन। चुप। शिथिल। थका हुआ। बुझा हुआ। विघ्न बाधा रहित। जिसकी घबराहट दूर हो गई हो। जिस पर असर न पड़ा हो। काव्य के नौ रसों में से एक रस। विरक्त पुरुष। शांति = स्थिरता। नीरवता। चैन। रोग आदि का दूर होना। मृत्यु। गम्भीरता। विराग। शांतिकर = शांति करने वाला। शांतिदाता = शांति देने वाला। शांतिदायक = शांति देने वाला।

शांतिदायी = शांति देने वाला।
शांतिमय = शांति से पूर्ण।
शाइस्ता—(फ़ा०) सभ्य। तहज़ीब वाला। नम्र। शिक्षित। शाइस्तगी = सभ्यता। शिष्टता। मनुष्यत्व।
शाक—(पु० सं०) तरकारी। साग। शाकाहार = अनाज अथवा फल-फूल पत्ते आदि का भोजन। शाकाहारी = केवल अनाज या साग भाजी खाने वाला। शाकद्वीप = पुराणानुसार। ईरान और तुर्किस्तान के बीच का प्रदेश। शाकद्वीपीय = शाकद्वीप का रहने वाला। ब्राह्मणों का एक भेद।
शाकिर—(वि० अ०) कृतज्ञ।
शाकी—(वि० अ०) शिकायत करनेवाला। नालिश करने वाला। चुगली करने वाला।
शाख—(स्त्री० फ़ा०) टहनी। डाली। सींग। नदी आदि की बड़ी धारा में से निकली हुई छोटी धारा। —दार = जिसमें बहुत सी शाखाएँ हों। टहनीदार। सींगवाला।
शाखा—(स्त्री० सं०) टहनी। डाल। अंग। किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद।
शागिर्द—(पु० फ़ा०) शिष्य। चेला। —पेशा = मातहत अहलकार। कर्मचारी। खिदमतगार। बड़ी कोठी के पास नौकरों के लिये अलग बने हुये घर। शागिर्दी = शिष्यता।
शाद—(वि० फ़ा०) खुश। प्रसन्न। भरा पूरा। —मान = प्रसन्न। खुश। —मानी = प्रसन्नता। खुशी। शादाब = हरा भरा। तरो ताजा। शादियाना = खुशी का बाजा। बधाई। शादी = खुशी। विवाह।
शान—(स्त्री० अ०) सजावट। तड़क भड़क। ठसक। विशालता। चमत्कार। करामात। शक्ति। ऐश्वर्य। इज़्ज़त। —दार = भड़कीला। ठाट बाट का।

भव्य। विशाल। वैभवपूर्ण। ठसक वाला। शौकत = ठाट-बाट। सजावट।

शाना—(पु० फ़ा०) कधा।

शाप—(पु० स०) कोसना। बद्दुआ। —ग्रस्त = जिसे शाप दिया गया हो। शापित।

शाबाश—(अव्य० फ़ा०) खुश रहो। धन्य हो। वाह वाह। शाबाशी = वाह वाही। साधु वाद।

शाम—(स्त्री० फ़ा०) साँझ। सध्या।

शामत—(स्त्री० अ०) दुर्भाग्य। बदक़िस्मती। आफ़त। विपत्ति। दुर्दशा। —ज़दा = अभागा। बदनसीब। शामती = जिसकी दुदशा होने को हो। जिसकी शामत आई हो।

शामियाना—(पु० फ़ा०) बड़ा तबू।

शामिल—(वि० अ०) मिला हुआ। सम्मिलित। —हाल = साथी। शरीक। शामिलात = हिस्सेदारी। साझा। सम्मिलित।

शायक—(वि० अ०) शौकीन। इच्छुक। आकाक्षी।

शायद—(अव्य० फा०) कदाचित। सभव है।

शायर—(पु० अ०) कवि। शायरी = काव्य। कविता।

शाया—(वि० अ०) प्रकट। ज़ाहिर। प्रकाशित। छपा हुआ।

शारीरिक—(वि० स०) शरीर सबधी। जिस्मानी।

शाल—(स्त्री० फा०) एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर। दुशाला।

शालिहोत्र—(पु० स०) घोड़ों और पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र। शालिहोत्री = विशेषत घोड़ों की चिकित्सा करने वाला।

शालीन—(वि० स०) विनीत। नम्र। जिसे लज्जा आती हो।

शाला। विद्यालय। विभाग = सरिश्ता तालीम। शिक्षित = विद्वान्। पढ़ा लिखा।

शिखर—(पु० सं०) सबसे ऊपर का भाग। चोटी। पहाड़ की चोटी। कँगूरा। कलश। मंडप। गुंबद।

शिखरिणी—(स्त्री० सं०) दही और चीनी का रस। सिखरन।

शिखा—(स्त्री० सं०) चोटी। कलगी। ज्वाला। दीपक की लौ। शिखर। —बंधन = चोटी बाँधना।

शिगाफ—(पु० फा) चीरा। नश्तर। दरार। दल। कलम के बीच का चिराव। छेद।

शिगूफा—(पु० फा०) बिना खिला हुआ फूल। कली। किसी अनोखी बात का होना।

शिजरा—(अ०) वंश। वंशावली।

शिताब—(क्रि० फा०) जल्द। शीघ्र। शिताबी = शीघ्रता। जल्दी। तेज़ी।

शिथिल—(वि० सं०) ढीला। सुस्त। धीमा। थका हुआ। —ता = ढीलापन। थकावट। मुस्तैदी का न होना। आलस्य। नियम पालन की कड़ाई का न होना।

शिद्दत—(स्त्री० अ०) तेज़ी। ज़ोर। अधिकता।

शिनाख्त—(स्त्री० फा०) पहचान। परख। तमीज़।

शिमाल—(स्त्री० अ०) उत्तर दिशा।

शिया—(पु० अ०) मददगार। मुसलमानों के दो प्रधान और परस्पर विरोधी सम्प्रदायों में से एक।

शिर—(पु० हि०) सिर। मस्तक। माथा। सिरा। चोटी। शिखर।

शिरकत—(स्त्री० अ०) साझा। हिस्सा।

शिरा—(स्त्री० सं०) रक्त की छोटी नाड़ी।

शिराकत—(स्त्री० अ०) साझा। हिस्सेदारी। कार्य में योग।

श्रेष्ठ। आचार व्यवहार में निपुण। आज्ञाकारी। —ता=सभ्यता। श्रेष्ठता। शिष्टाचार=सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। सभ्य व्यवहार। आवभगत।

शिष्य—(पु० सं०) विद्यार्थी। शागिर्द। चेला।

शीघ्र—(क्रि० सं०) तुरत। जल्द। —कारी=जल्दी से काम करने वाला। शीघ्र प्रभाव उत्पन्न करने वाला। —गामी=शीघ्र चलनेवाला। —पतन=स्तमन शक्ति का अभाव।

शीत—(वि० सं०) ठण्ढा। सर्दी। ओस। —कटिबंध=पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखंड के वे कल्पित विभाग जहाँ जाड़ा बहुत अधिक पड़ता है। —काल=हेमंत ऋतु। जाड़े का मौसम। शीतल=ठंढा। सर्द। शीतलचीनी=कबाबचीनी। शीतला=चेचक। विस्फोटक रोग।

शीर—(पु० फा०) दूध। क्षीर। —खिश्त=हकीमी में एक रेचक औषधि। —ख़्वारा दूध पीता बच्चा। अनजान बालक। —माल=एक प्रकार की ख़मीरी रोटी।

शीरा—(पु० फा०) चीनी मिला हुआ पानी। शरबत। चाशनी।

शीराजा—(पु० फा०) वह बुना हुआ रंगीन या सफेद फीता जो किताबों की सिलाई का छोर पर शोभा और मज़बूती के लिये लगाया जाता है। प्रबंध। इन्तज़ाम। सिलसिला।

शीरीं—(वि० फा०) मीठा। प्रिय। प्यारा। मधुर।

शीरीनी—(स्त्री० फा०) मिठाई।

शीर्ण—(वि० सं०) टूटा-फूटा हुआ। फटा पुराना। दुबला पतला।

शीर्ष—(पु० सं०) सिर। कपाल। माथा। सबसे ऊपर का

भाग। सिरा। —क=वह शब्द या वाक्य जो विषय का परिचय के लिये किसी लेख या प्रबन्ध के ऊपर लिखा जाय।

शील—(पु० सं०) चाल व्यवहार। आचरण। चरित्र। स्वभाव। आदत। अच्छा चाल चलन। उत्तम स्वभाव। कोमल हृदय। सकोच का स्वभाव। मुरौवत। तत्पर। स्वभावयुक्त।

शीशम—(पु० फ़ा०) एक पेड़।

शीशमहल—(पु० फ़ा०) काच का मकान।

शीशा—(पु० फ़ा०) काच। दर्पण। आइना।

शीशी—(स्त्री० फ़ा०) काच की लम्बी कुप्पी।

शुक—(पु० सं०) तोता। सुग्गा।

शुक्र—(वि० सं०) वीर्य। एक बहुत चमकीला ग्रह। शनिवार से पहले पड़नेवाला दिन। (अ०) धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकाश। —गुज़ार=एहसान माननेवाला। कृतज्ञ। —गुज़ारी=एहसानमंदी। शुक्रप्रमेह=धातु क्षीणता। शुक्रवार=सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद पड़ता है। शुक्रिया=धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकाश।

शुक्ल—(वि० सं०) सफ़ेद। श्वेत। ब्राह्मणों की एक पदवी।

शुचि—(पु० सं०) पवित्र। साफ। निर्दोष।

शुजा—(वि० अ०) बहादुर। शूरवीर। शुजाअत=बहादुरी। वीरता।

शुतुर—(फा०) ऊँट। —मुर्ग़=एक बहुत बड़ा पक्षी जो ऊँट की तरह होता है।

शुदनी—(स्त्री० फ़ा०) होनहार।

शुद्ध—(वि० सं०) पवित्र। साफ। ठीक। सही। निर्दोष। खालिस। —ता=पवित्रता। शुद्धि=सफाई। वैदिक धर्म के अनुसार वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुच व्यक्ति के शुद्ध होने के समय

होता है। शुद्धि पत्र=वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

शुबहा—(पु० अ०) सन्देह। शक। धोखा। भ्रम।

शुभ—(वि० स०) अच्छा। भला। (पु०) कल्याण। मंगल। —चिंतक=शुभ या भला चाहनेवाला। हितैषी। —दर्शन=सुन्दर। खूबसूरत।

शुभ्र—(पु० स०) सफ़ेद।

शुरू—(पु० अ०) आरंभ। प्रारंभ।

शुल्क—(पु० स०) महसूल। चंदा। दहेज। फ़ीस।

शुश्रूषा—(स्त्री० स०) सेवा। टहल। कथन।

शुष्क—(वि० स०) सूखा। खुश्क। नीरस। रसहीन। जिसमें मन न लगता हो। व्यर्थ। निरर्थक। निर्मोही।

शूद्र—(पु० स०) हिन्दुओं के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण।

शून्य—(पु० स०) ख़ाली स्थान। बिन्दु। बिन्दी। अभाव। ख़ाली। निराकार। रहित।

शूर—(पु० स०) वीर। बहादुर। योद्धा। सिपाही।

शूल—(पु० स०) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। सूली। नुकीला काँटा। पेट का दर्द। टीस। नुकीला।

शृंखला—(स्त्री० स०) क्रम। सिलसिला। ज़ंजीर। कतार। —बद्ध=सिलसिलेवार।

शृंग—(पु० स०) शिखर। कँगूरा।

शृंगार—(पु० स०) साहित्य के अनुसार नौ रसों में से एक रस। सजावट। शोभा।

शृगाल—(पु० स०) सियार। डरपोक। दुष्ट।

शेख़—(पु० अ०) पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। मुसलमानों के चार वर्णों में सब से पहला वर्ग। पीर। बड़ा बूढ़ा। —चिल्ली=एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबंध में बहुत सी विलक्षण और हँसाने

वाली कहानियाँ कही जाती हैं। बैठे-बैठे बड़े-बड़े मसूबे बाँधनेवाला। मूर्ख। मसख़रा।

शेख़ी—(स्त्री० फ़ा०) अहंकार। घमंड। ऐंठ। अकड़। अभिमान भरी बात। —बाज़ = अभिमानी। डींग मारनेवाला व्यक्ति।

शेयर—(पु० अ०) हिस्सा। भाग। किसी कारबार में लगी हुई पूँजी का अलग हिस्सा जो उसमें शामिल होनेवाला हरएक आदमी लगाये। —होल्डर = हिस्सेदार।

शेर—(पु० फ़ा०) बाघ। नाहर। अत्यंत वीर और साहसी पुरुष। (अ०) फ़ारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरण। —दहाँ = (वि०फा०) जिसका मुँह शेर का सा हो। —बच्चा = शेर का बच्चा। वीर पुत्र। बहादुर आदमी। एक प्रकार की छोटी बंदूक। —वानी =

अँग्रेज़ी ढँग की काट का एक प्रकार का अंगा।

शेष—(पु० स०) बाक़ी। अंत। परिणाम। बचा हुआ। ख़तम। समाप्त। और। अतिरिक्त। शेषांश = आख़िरी भाग।

शैतान—(पु० अ०) घोर अत्याचारी। बहुत शरारती आदमी। शैतानी = दुष्टता। शरारत।

शैली—(स्त्री० स०) चाल। ढंग। परिपाटी। तरीका। रीति। लिखने का ढंग।

शैशव—(वि० स०) बचपन। लड़कपन।

शोक—(पु० स०) रंज। ग़म। शोकातुर = शोक से व्याकुल। शोकार्त्त = शोक से विकल।

शोख़—(वि० फ़ा०) ढीठ। धृष्ट। शरीर। चंचल। चटकीला।

शोख़ी—(स्त्री० फ़ा०) ढिठाई। चंचलता। तेज़ी। चटकीलापन।

शोचनीय—(वि० सं०) शोक करने योग्य। जिससे दु:ख

ज़रुरत हो। बहुत हीन या बुरा।

शोध—(पु० सं०) जाँच। परीक्षा। खोज। तलाश।

शोभा—(स्त्री० सं०) कांति। चमक। सुन्दरता। सजीला पन। शोभायमान=सोहता हुआ। सुन्दर। शोभित= सुन्दर। सजीला। सजा हुआ।

शोर—(पु० फ़ा०) हल्ला। कोलाहल। धूम। प्रसिद्ध। शोरिश=हलचल। खलबली। बलवा। दंगा।

शोरवा—(पु० फा०) झोल। जूस। पके हुए मांस का पानी।

शोला—(पु० फ़ा०) आग की लपट।

शोषक—(पु० सं०) सोखने वाला। सुखानेवाला। चीण करनेवाला।

शोहदा—(पु० अ० + सं०) व्यभिचारी। लंपट। बदमाश। बहुत बनाव सिंगार करने वाला। —पन=गुण्डापन। लुच्चापन। छैलापन।

शोहरत—(स्त्री० अ०) नामवरी। प्रसिद्धि। धूम। खूब फैली हुई ख़बर।

शोहरा—(पु० अ०) प्रसिद्धि। ख्याति। धूम से फैली हुई ख़बर।

शौक—(पु० अ०) प्रबल लालसा। हौसिला। व्यसन। चसका। झुकाव। शौक़ीन= शौक़ करनेवाला। सदा बना ठना रहनेवाला। शौक़ीनी =सजावट। बनावट।

शौक्त—(स्त्री० अ०) ठाठ-बाट। शान।

शौकिया—(क्रि० अ०) शौक के कारण। (वि०) शौक से भरा हुआ।

शौच—(पु० सं०) पवित्रता। शुद्धता।

शौर्य्य—(पु० सं०) वीरता। परा क्रम।

श्मशान—(पु० सं०) मसान। मरघट।

श्याम—(पु० सं०) काला और नीला मिला हुआ रंग। —ता=कालापन। मलिनता। उदासी।

श्यामा—(स्त्री० सं०) एक पक्षी। सोलह वर्ष की तरुणी। काले रंग की गाय। श्याम रंग वाली। तपाये हुये सोने के समान वर्णवाली।

श्रद्धा—(स्त्री० सं०) बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव। भक्ति। विश्वास। श्रद्धालु=श्रद्धा रखनेवाला। श्रद्धास्पद=पूजनीय। श्रद्धेय। श्रद्धेय=श्रद्धा करने के योग्य।

श्रम—(पु० सं०) परिश्रम। मेहनत। —कण=पसीने की बूँदें, जो परिश्रम करने पर शरीर से निकलती हैं। —जीवी=मेहनत करके पेट पालनेवाला। —विभाग=परिश्रम या काम का विभाग। —सहिष्णु=मेहनती। परिश्रमी। —साध्य=बिना परिश्रम न सध सके। श्रमित=थका हुआ। श्रमी=मेहनती। परिश्रमी। श्रमजीवी।

श्रमण—(पु० सं०) बौद्ध सन्यासी। यति। मुनि।

श्रवण—(पु० सं०) कान।

श्रांत—(वि० सं०) परिश्रम से थका हुआ।

श्राद्ध—(पु० सं०) श्रद्धा से किया जानेवाला काम। वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। पितृ पक्ष।

श्रावक—(पु० सं०) जैन धर्म को माननेवाला सन्यासी।

श्रावण—(पु० सं०) सावन। श्रावणी=सावन मास की पूर्णमासी।

श्री—(स्त्री० सं०) लक्ष्मी। शोभा। चमक। आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। (पु०) योग्य। सुंदर। श्रेष्ठ। शुभ। —मत=श्रीमान्। धनी। —मत्=धनवान्। सुंदर। श्रीमती=स्त्रियों के लिये

आदर सूचक शब्द। —मान् = आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। श्रीयुत। धनवान्। सुदर। —युक्त = जिसमें श्री या शोभा हो। एक आदर-सूचक विशेषण। —युत = जिसमें श्री या शोभा हो।

श्रुत—(वि० स०) सुना हुआ।

श्रुति—(स्त्री० स०) कान। सुनी हुई बात। वेद। —कटु = जो कान को प्रिय न लगे। —मधुर = जो कान को प्रिय लगे।

श्रेणी—(स्त्री० स०) पंक्ति। कतार। सिलसिला। दल। सेना। —बद्ध = कतार बाँधे हुए।

श्रेय—(वि० स०) अधिक अच्छा। बेहतर। कल्याणकारी। यश देनेवाला। भलाई। —स्कर = कल्याण करनेवाला शुभ दायक।

श्रेष्ठ—(वि० स०) सर्वोत्तम। बहुत अच्छा। पूज्य। बड़ा।

श्लाघा—(स्त्री० स०) प्रशंसा। तारीफ़। स्तुति। बड़ाई। खुशामद। इच्छा। चाह। श्लाघनीय = तारीफ़ के लायक। उत्तम।

श्लील—(वि० स०) जो भद्दा न हो। मंगल-दायक। शुभ।

श्लेष्मा—(पु० स०) कफ। बलगम।

श्लोक—(पु० स०) संस्कृत का एक व्यवहृत छंद। संस्कृत का कोई पद्य। कीर्ति।

श्वपच—(पु० स०) कुत्ते का मांस पकाकर खानेवाला। चांडाल। डोम।

श्वसुर—(पु० स०) पति या पत्नी का पिता। ससुर।

श्वान—(पु० स०) कुत्ता। —निद्रा = हलकी नींद। झपकी।

श्वास—(पु० स०) साँस। दम। दमा। —कास = दमा और साँसी। दमा। श्वासा = साँस। दम। प्राण। श्वासो

...द्याम=घेरा से मीन खींचना और निकालना।

...न—(वि० सं०) सफेद।

श्वेतांबर=सफेद वस्त्र धारण करनेवाला। जैनों के दो प्रधान सम्प्रदायों में से एक।

ष

ष—हिंदी-वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में इकतीसवाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

षट्कर्म—(पु० सं०) ब्राह्मणों के छः कर्म—पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान लेना, दान देना।

षट्पदी—(स्त्री० सं०) भौंरा। एक छंद। छप्पय।

षटराग—(पु० सं०) संगीत के छः राग। बखेड़ा। झंझट।

षड्यंत्र—(पु० सं०) भीतरी चाल। छल का काम।

षोडश—(वि० सं०) सोलहवाँ। सोलह।

षोडश कला—(स्त्री० सं०) चन्द्रमा की सोलह कलाएँ।

षोडशी—(वि० स्त्री० सं०) सोलह वर्ष की अवस्थावाली।

षोडश संस्कार—(पु० सं०) वैदिक रीति के अनुसार गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के सोलह संस्कार जो द्विजातियों के लिये कहे गए हैं।

सग्रहणी—(स्त्री० स०) एक रोग।

सग्राम—(पु० स०) युद्ध। लड़ाई। —भूमि=लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

सघ—(पु० स०) समूह। दल। समिति। सभा। प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातत्र राज्य। साधुओं के रहने का मठ।

सघटन—(पु० स०) रचना। बनावट।

सघर्ष—(पु० स०) रगड़। घिस्सा। प्रतियोगिता। स्पर्धा।

सघात—(पु० स०) वध।

सघाराम—(पु० स०) बौद्ध भिक्षुओं तथा श्रमणों आदि के रहने का मठ। विहार।

सचय—(पु० स०) समूह। जमा करना। सचयी=सचय करनेवाला। कजूस।

सचार—(पु० स०) गमन। चलना। फैलना।

सचालक—(पु० स०) मैनेजर। प्रबधक। चलानेवाला।

सचित—(वि० स०) सचय किया हुआ। एकत्र किया हुआ।

सजाफ—(स्त्री० फ़ा०) झालर। किनारा। गोट। मगजी। सजाफी=झालरदार। किनारेदार।

सजीदा—(वि० फ़ा०) गभीर। शात। समझदार। बुद्धिमान्। सजीदगी=गभीरता।

सजीवनी विद्या—(स्त्री० स०) एक प्रकार की कल्पित विद्या।

सज्ञा—(स्त्री० स०) चेतना। होश। नाम। —हीन= बेहोश। सज्ञक=नामवाला।

सड मुसड—(वि० हि०) मोटा-ताज़ा। बहुत मोटा।

सडसा—(पु० हि०) लोहे का एक औज़ार जो दो छड़ों से बनता है। जँबूरा।

सडास—(पु०) कुएँ की तरह का गहरा पाखाना। शौच-कूप।

सतत—(अव्य० स०) सदा। निरतर।

सतति—(स्त्री० स०) सतान। औलाद।

सतप्त—(वि० स०) बहुत अधिक जला हुआ। दुःखी। पीड़ित।

सतरा—(पु० पुर्त०) एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू। बड़ी नारगी।

सतरी—(पु० अ०) किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। द्वारपाल।

सतान—(पु० स०) सतति। औलाद।

सताप—(पु० स०) जलन। आँच। कष्ट। मनोव्यथा।

सतुष्ट—(वि० स०) तृप्त।

सतोष—(पु० स०) सब्र। शाति। तृप्ति। इतमीनान। प्रसन्नता। सुख। आनद। सतोषी=सब्र करनेवाला। सतुष्ट रहने वाला।

सदर्भ—(पु० स०) रचना। निबध। लेख।

सदल—(पु० फ़ा०) चदन। सदली=(वि० फ़ा०) हलका पीला (रग)। चदन का।

सदिग्ध—(वि० स०) सदेहपूर्ण। मशकूक।

सदूक—(पु० अ०) पेटी। बकस। —चा=छोटा सदूक। —ची=छोटा सदूक।

सदेश—(पु० स०) समाचार। खबर। एक बँगला मिठाई।

सदेशा—(पु० स०) समाचार।

सँदेसा—(पु० हि०) खबर। हाल।

सदेह—(पु० स०) सशय। शका। शक।

सधि—(स्त्री० स०) सुलह। मित्रता। जोड़। गाँठ। —भग=हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ का टूटना। सुलहनामे के विरुद्ध आचरण। —पत्र=सुलह-नामा।

सध्या—(स्त्री० स०) शाम। सायकाल। हिन्दुओं की प्रातःकाल, मध्याह्न और सध्या की उपासना।

सन्यास—(पु० स०) हिन्दुओं

के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम। सन्यासी=वह जो सन्यास आश्रम में हो। विरक्त।

संपत्ति—(स्त्री० सं०) ऐश्वर्य। वैभव। धन। दौलत।

संपद्—(स्त्री० सं०) ऐश्वर्य। वैभव।

संपदा—(स्त्री० सं०) धन। दौलत। ऐश्वर्य। वैभव।

संपन्न—(वि० सं०) पूर्ण। सहित। युक्त। खुशहाल। धनी। दौलतमंद।

संपर्क—(पु० सं०) लगाव। समग। स्पर्श। मटना।

संपात—(पु० सं०) वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले।

संपादक—(पु० सं०) कोई काम पूरा करनेवाला। किसी समाचारपत्र या पुस्तक का क्रम आदि लगाकर निकालने वाला। एडिटर। संपादकीय=संपादक संबंधी। संपादक का। एडीटोरियल। संपादन=किसी काम को पूरा करना। प्रस्तुत करना। ठीक करना। तैयार करना। किसी पुस्तक या समाचारपत्र आदि का क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना। संपादित=पूर्ण किया हुआ। प्रस्तुत। क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ।

संपुट—(पु० सं०) ठीकरा। दोना। डिब्बा। अँजली। कोश। कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या औषधि फूँकते हैं।

संपूर्ण—(वि० सं०) सब। बिलकुल। पूरा। समाप्त। ख़तम। —त=पूरी तरह से। पूर्ण रूप से। —तया=पूरी तरह से। भली भाँति। —ता=पूरापन। समाप्ति।

सँपेरा—(पु० हि०) मदारी।

सँपोला—(पु० हि०) साँप का बच्चा।

संप्रति—(अ० सं०) इस समय अभी ।

सम्प्रदाय—(पु० सं०) फिरका । मार्ग । रीति । सम्प्रदायी = मतावलम्बी ।

सबंध—(पु० सं०) लगाव । वास्ता । नाता । रिश्ता । गहरा मित्रता । संयोग । मेल । विवाह । सगाई । व्याकरण में एक कारक । संबंधी = संबंध रखनेवाला । सिलसिले या प्रसंग का । रिश्तेदार । समधी ।

सबद्ध—(वि० सं०) बँधा हुआ । जुड़ा हुआ । मिला हुआ । बंद ।

संबोधन—(पु० सं०) पुकारना । व्याकरण में एक कारक ।

सँभलना—(क्रि० हि०) थामा जा सकना । आधार पर ठहरे रहना । होशियार होना । सावधान होना । गिरने पड़ने से रुकना । बुरी दशा को फिर सुधार लेना । कार्य्य का भार उठाया जाना ।

सभव—(पु० सं०) होना । मुमकिन होना । उपयुक्तता । मुनासिबत । —त = हो सकता है । मुमकिन है । संभवनीय = मुमकिन ।

सँभाल—(स्त्री० हि०) रक्षा । देख रेख । प्रबंध । ख़बरदारी । तन-बदन की सुध । होश हवास । —ना = रोके रहना । थामना । गिरने से बचाना । रक्षा करना । ख़राबी से बचाना । पालन पोषण करना । दशा बिगड़ने से बचाना । सहेजना । जोश थामना ।

संभावना—(स्त्री० सं०) कल्पना । अनुमान । हो सकना । संभावनीय = मुमकिन । संभावित = उपस्थित । योग्य । क़ाबिल ।

संभाषण—(पु० हि०) बातचीत । कथोपकथन ।

सभूय समुत्थान—(पु० सं०) साझे का कारबार । कम्पनी ।

सभोग—(पु० सं०) सुखपूर्वक व्यवहार । रति क्रीड़ा । मैथुन ।

सम्भ्रात—(वि० हि०) तेजस्वी । सम्मानित । प्रतिष्ठित ।

सयत—(वि० स०) बँधा हुआ । जकड़ा हुआ । दबाव में रखा हुआ । रोका हुआ । वशीभूत । क़ायदे का पाबन्द । सयतात्मा=जिसने मन को वश में किया हो ।

सयम—(पु० स०) रोक । मन और इन्द्रियों को वश में रखने की क्रिया । परहेज़ । सयमी =काबू में रखनेवाला । मन और इन्द्रियों को वश में रखनेवाला ।

सयुक्त—(वि० स०) जुड़ा हुआ । मिला हुआ । सबद्ध । लगाव रखता हुआ । सहित । साथ । लिप्त हुए । समन्वित । सयुत ।

सयुत—(वि० स०) सहित । साथ ।

सयोग—(पु० स०) मिलाप । सबध । सहवास । विवाह-सबध । इत्तफ़ाक़ ।

सरक्षण—(पु० स०) हिफ़ाज़त । देखरेख । निगरानी । सरक्षक=देखरेख और पालन पोषण करनेवाला । सरक्षित= भलीभाँति रक्षित । अच्छी तरह बचाया हुआ ।

सलग्न—(वि० स०) सटा हुआ । मिला हुआ । भिड़ा हुआ । जुड़ा हुआ ।

सवत्—(पु० स०) वर्ष । सवत्सर । साल । सन् । महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई वर्ष-गणना ।

सवरण—(पु० स०) रोकना । निग्रह ।

सवाद—(पु० स०) बातचीत । कथोपकथन । खबर । समाचार । कथा । —दाता= अख़बार का रिपोर्टर ।

सँवारना—(क्रि० हि०) सजाना । ठीक करना । ठीक ठाक लगाना ।

सवेदना—(पु० स०) सहानुभूति ।

सशय—(पु० स०) सदेह ।

गय । दुविधा । सशयात्मा = शकी ।

सशोधन—(पु० स०) शुद्ध करना । साफ करना । दुरुस्त करना । सुधारना । सशोधक = सुधारनेवाला । सशोधित = शुद्ध किया हुआ । सुधारा हुआ ।

ससर्ग—(पु० स०) सबध । लगाव । मेल । सहवास । घनिष्ठता ।

ससार—(पु० स०) जगत । दुनिया । माया जाल । गृहस्थी । —चक्र = दुनिया का चक्कर । ससारी = ससार सबधी । लौकिक । ससार में रहने वाला । लोक व्यवहार में कुशल । दुनियादार बार बार जन्म लेनेवाला । सासारिक = ससार सबधी ।

सस्करण—(पु० स०) ठीक करना । सजाना । सुधार करना । पुस्तकों की एक बार की छपाई । आवृत्ति ।

सस्कार—(पु० स०) सुधार । दोष या त्रुटि का निकाला जाना । शुद्धि । दिल पर जमा हुआ असर । पूर्व जन्म की वासना । रीति या रस्म । सस्कारी = सस्कारवाला ।

सस्कृत—(वि० स०) परिमार्जित । परिष्कृत । निखारा हुआ । सुधारा हुआ । पुराने आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा । देववाणी ।

सस्कृति—(स्त्री० स०) (अ०) कल्चर ।

सस्था—(पु० स०) समाज । सभा । (अ०) इन्स्टीट्यूशन । विभाग ।

सस्थापन—(पु० स०) खड़ा करना । नया काम खोलना । सस्थापक = स्थापित करने वाला । काम चलाने वाला । सस्थापित = जमाया हुआ । जारी किया हुआ ।

सस्पर्श—(पु० स०) छू जाना ।

सस्मरण—(पु० स०) याद-दाश्त । सस्मरणीय = याद

करने योग्य। सस्मारक=याद दिलानेवाला। यादगार।

सहार—(पु० म०) नाश। क्षत। निपुणता। —क=नाशक।

सहिता—(स०) वेदों का मत्रभाग।

सकना—(क्रि० हि०) कोई काम करने में समर्थ होना।

सकपकाना—(क्रि० अ० अनु०) आश्चर्ययुक्त होना। हिचकना। शरमाना। सकपकाहट=सकोच।

सकल—(वि० स०) सब। कुल।

सकारना—(क्रि० हि०) स्वीकार करना। महाजनों का हुडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुडी देखकर उस पर हस्ताक्षर करना।

सकाल—(वि० अ०) जो जल्दी हजम न हो।

सकुचना—(क्रि० अ० हि०) लज्जा करना। शरमाना।

सकूनत—(स्त्री० अ०) रहने का स्थान।

सकोरा—(पु० हि०) मिट्टी की कटोरी। कसोरा।

सक्का—(पु० अ०) भिश्ती।

सखा—(पु० हि०) साथी। सगी। मित्र। दोस्त। सखी=सहेली। सगिनी। सखी=(अ०) दानी। दाता। दानशील।

सखावत—(स्त्री० अ०) दानशीलता। उदारता। फैयाज़ी।

सखुन—(पु० फ़ा०) बातचीत। वार्तालाप। कविता। —चीन=चुगुलखोर। इधर-उधर बात लगानेवाला।—चीनी=चुगुलखोरी। —तकिया=वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ़ जाता है कि बातचीत करने में प्राय मुँह से निकला करता है। तकिया कलाम। सखुनदाँ=काव्य का रसिक। —दानी=बात चीत की समझदारी। काव्य-

रसिकता। —परवर=वह जो कथा। कही हुई बात का सदा पालन करता हो। हठी। जिद्दी। —शनास=वह जो सखुन या वाक्य भलीभाँति समझता हो। —साज़=कवि। शायर। अपने मन से झूठी बातें बनाकर कहनेवाला। —साज़ी=झूठी बातें गढ़ने का गुण।

सग—(पु० फा०) कुत्ता। श्वान। —सुफ़ान=वह घोड़ा जिसकी बीभ कुत्ते के समान पतली और लंबी हो।

सगपहती—(स्त्री० हि०) साग मिलाकर बनाई हुई दाल।

सगा—(वि० हि०) एक माता से उत्पन्न। सहोदर। बहुत ही निकट के संबंध का।

सगाई—(स्त्री० हि०) विवाह संबंधी निश्चय। मँगनी।

सघन—(वि० स०) घना। ठोस।

सच—(वि० हि०) सत्य। ठीक। —मुच=वास्तव में। वस्तुतः। अवश्य। सचाई=सच्चापन। वास्तविकता। यथार्थता। सचा=सच बोलनेवाला। यथार्थ। ठीक। असली। विशुद्ध। —पन=सत्यता। सचाई।

सचराचर—(पु० स०) संसार का स्थावर और जंगम सभी वस्तुएँ।

सचिक्कण—(वि० स०) बहुत अधिक चिकना।

सचिव—(पु० स०) मंत्री।

सचेत—(वि० हि०) समझदार। होशियार। सावधान। सचेतन=चेतनायुक्त। चतुर।

सच्चरित, त्र—(वि० स०) नेक चालचलनवाला। —ता=नेकचलनी।

सच्चिदानंद—(पु० स०) ईश्वर। परमेश्वर।

सजग—(वि० हि०) सावधान।

सजधज—(स्त्री० हि०) बनाव। सिंगार। सजावट।

सजना—(क्रि० हि०) शृंगार करना शोभा देना। भला जान पड़ना।

सजल—(वि० स०) जिसमें पानी हो। आँसुओं से पूर्ण।

सजा—(स्त्री० फा०) दंड। —याफ्ता=दंडित। —याब=दंडनीय। —वार=दंडनीय।

सजातीय—(वि० स०) एक जाति या गोत्र का।

सजाना—(क्रि० हि०) वस्तुओं का यथास्थान रखना। तरतीब लगाना। सँवारना। शृङ्गार करना।

सजावट—(स्त्री० हि०) शोभा। तैयारी।

सजीला—(वि० हि०) सजधज के साथ रहनेवाला। छबीला। सुन्दर। मनोहर।

सजीव—(वि० स०) जीव युक्त। फुरतीला। ओजस्वी। प्राणी। जीवधारी।

सज्जन—(पु० हि०) भला आदमी। शरीफ। —ता=भलमनसाहत। सौजन्य।

सज्जादा—(पु० अ०) जानमाज। आसन। फकीरों या पीरों आदि की गद्दी। —नशीन=मुसलमान पीर या बड़ा फकीर।

सज्जित—(वि० स०) सजा हुआ। सुशोभित। आवश्यक वस्तुओं से युक्त। तैयार।

सज्जी—(स्त्री० हि०) एक क्षार।

सज्ञान—(पु० स०) ज्ञानवाला। सयाना। प्रौढ़।

सटकना—(क्रि० अनु०) धीरे से से खिसक जाना। चल देना। छूटना। पीटना।

सटकाना—(क्रि० अनु०) किसी को छड़ी, कोड़े आदि से मारना जिसमें "सट" शब्द हो। चुपके से भगा देना।

सटपटाना—(क्रि० अनु०) दब जाना। स्तब्ध हो जाना। सकुचाना।

सटरपटर—(वि० अनु०) छोटा मोटा। तुच्छ। बहुत साधारण। बिलकुल मामूली।

सट्टा—(पु० देश०) इकरारनामा। व्यापारिक जुआ।

सट्टा बट्टा—(पु० हि०) मेल मिलाप। हेल मेल।
सठियाना—(क्रि० हि०) साठ बरस का होना। बुड्ढा होना। वृद्धावस्था के कारण बुद्धि तथा विवेक शक्ति का कम हो जाना।
सड़क—(स्त्री० हि०) आने-जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ। रास्ता। मार्ग।
सड़न—(स्त्री० हि०) गलना।
सड़ना—(क्रि० हि०) दुर्गन्धित होना। दुर्दशा में पड़ा रहना। बहुत बुरा हालत में रहना।
सड़ाहंद—(स्त्री० हि०) सड़ी हुई चीज की गंध।
सड़ासड़—(अव्य० हि०) 'सड़' शब्द के साथ।
सड़ियल—(वि० हि०) सड़ा हुआ। गला हुआ। रद्दी। तुच्छ।
सतत—(अव्य० सं०) निरंतर। हमेशा।
सतर्क—(वि० सं०) दलील के साथ। सावधान। सचेत।
सतसई—(स्त्री० हि०) वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सप्तशती।
सतह—(स्त्री० अ०) बाहर या ऊपर का फैलाव। तल।
सती—(वि० सं०) पतिव्रता स्त्री। पति के शव के साथ चिता में जलनेवाली स्त्री। —त्व =पातिव्रत।
सत्कर्म—(पु० हि०) अच्छा काम। पुण्य।
सत्कीर्ति—(स्त्री० सं०) उत्तम कीर्ति। यश।
सत्याग्रह—(पु० सं०) सत्य के लिये आग्रह या हठ।
सत्क्रिया—(स्त्री० सं०) पुण्य। धर्म का काम।
सत्त—(पु० हि०) किसी पदार्थ का सार भाग। रस। तत्त्व। काम की वस्तु।
सत्ता—(स्त्री० सं०) अस्तित्व। अधिकार। हुकूमत। ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।
सत्तू—(पु० हि०) भुने हुए चने

सनद—(स्त्री० अ०) प्रमाणपत्र। सर्टिफिकेट। —याफ्ता=जिसे किसी बात की सनद मिली हो। किसी परीक्षा में उत्तीर्ण।

सनम—(पु० अ०) प्रियतम। प्यारा।

सनसनाहट—(पु० हि०) हवा बहने का शब्द। हवा में किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द। खौलते हुए पानी का शब्द। सनसनी।

सनसनी—(स्त्री० अनु०) अत्यंत भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। घबराहट। सन्नाटा। नीरवता।

सनहकी—(स्त्री० अ०) मिट्टी का एक बरतन जो बहुधा मुसल मान काम में लाते हैं।

सनातन—(पु० सं०) अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। अनादिकाल का जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। नित्य। सदा रहनेवाला। शाश्वत। —धर्म =प्राचीन धर्म। परंपरागत धर्म। साधारण जनता के बीच प्रचलित हिन्दू धर्म।

सनातनी=सनातन धर्म का अनुयायी।

सन्न—(पु० हि०) मन्ना शून्य। एक दम चुप। डर से चुप।

सन्नद्ध—(वि० स०) तैयार। आमादा। लगा हुआ। जुड़ा हुआ।

सन्नाटा—(पु० हि०) नीरवता। निस्तब्धता। निर्जनता। निरालापन। चुप्पी। वायु के बहने का शब्द।

सन्निकट—(अव्य० स०) समीप।

सन्निधि—(स्त्री० स०) समीपता। निकटता।

सन्निपात—(पु० स०) त्रिदोष। सरसाम। एक बीमारी।

सन्निविष्ट—(वि० स०) जमा हुआ। रखा हुआ। स्थापित। लगा हुआ। प्रविष्ट।

सन्निवेश—(पु० स०) बैठना। रखना। लगाना। भीतर आना। एकत्र होना। समूह

सन्निहित—(वि० सं०) समीपस्थ रखा हुआ। तैयार।

सन्यास—(पु० सं०) छोड़ना। त्याग। वैराग्य। चतुर्थ आश्रम। सन्यासी=त्यागी।

सपत्नी—(स्त्री० सं०) सौत।

सपना—(पु० हि०) वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े। स्वाब।

सपरदाई—(पु० हि०) गानेवाला तवायफ़ के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला। साजिन्दा।

सपरना—(क्रि० हि०) समाप्त होना। हो सकना।

सपाट—(वि० हि०) बराबर। समतल। चिकना।

सपाटा—(पु० हि०) झोंका। तेज़ी। दौड़। झपट।

सपूत—(पु० हि०) अच्छा पुत्र।

सपोला—(पु० हि०) साँप का छोटा बच्चा।

सप्तपदी—(स्त्री० सं०) भाँवर। विवाह की एक रस्म।

सप्तम—(वि० सं०) सातवाँ। सप्तमी=सातवाँ।

सप्तर्षि—(पु० सं०) उत्तर दिशा में स्थापित सात तारों का समूह।

सप्तस्वर—(पु० सं०) संगीत के सात स्वर—स, रि, ग, म, प, ध, नि।

सप्ताह—(पु० सं०) हफ्ता।

सप्लाई—(स्त्री० अं०) पहुँचाना। सप्लायर=वह जो किसी को चीज़ें पहुँचाने का काम करता है। सप्लीमेंट=अतिरिक्त पत्र। क्रोड़पत्र। किसी वस्तु का अतिरिक्त अंश।

सप्रमाण—(वि० सं०) प्रमाण सहित। सबूत के साथ।

सफ—(स्त्री० अ०) पंक्ति। कतार।

सफर—(पु० अ०) यात्रा। प्रस्थान। —मैना=सेना के वे सिपाही जो सुरंग लगाने तथा खाई आदि खोदने को आगे चलते हैं।

सफरा—(पु० अ०) पित्त। भूसा

समक्ष—(अव्य० सं०) आँखों के सामने। सामने।

समग्र—(वि० सं०) समस्त। कुल। पूरा।

समन्वित—(वि० सं०) मिला हुआ। संयुक्त।

समर्थ—(वि० सं०) जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। उपयुक्त। योग्य।

समर्थन—(सं०) ताईद करना। समर्थक = समर्थन करनेवाला। समर्थित = समर्थन किया हुआ।

समर्पण—(पु० सं०) प्रतिष्ठा पूर्वक देना। भेंट करना।

समस्त—(वि० सं०) सब। कुल।

समस्या—(स्त्री० सं०) तरह। कठिन अवसर या प्रसंग। —पूर्ति = किसी छंद के एक टुकड़े को लेकर पूरा छंद या श्लोक बनाना।

समाँ—(पु० हि०) समय। वक्त।

समागम—(पु० सं०) मिलना। भेंट। स्त्री के साथ संभोग करना। मैथुन।

समाचार—(पु० सं०) संवाद। खबर। —पत्र = खबर का कागज़। अखबार।

समाज—(पु० सं०) समूह। दल। सभा।

समाधान—(पु० सं०) सन्देह दूर करना।

समाधि—(स्त्री० सं०) किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव ज़मीन में गाड़ना। वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों।

समान—(वि० सं०) सम। बराबर। —ता = बराबरी। समानार्थ = वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो।

समाप्त—(वि० सं०) ख़तम। पूरा। समाप्ति = अंत।

समारंभ—(पु० सं०) समारोह। धूमधाम।

समारोह—(पु० सं०) आडम्बर।

समालोचना—(स्त्री० सं०) किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना।

आलोचना। समालोचक=समालोचना करनेवाला।
समाविष्ट—(वि० स०) समाया हुआ।
समावेश—(पु० स०) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना।
समास—(पु० स०) व्याकरण में दो या अधिक शब्दों का संयोग।
समिति—(स्त्री० स०) सभा।
समीक्षा—(स्त्री० स०) समालोचना।
समीप—(वि० स०) पास। नज़दीक। —वर्ती=पास का। नज़दीक का। —स्थ=जो समीप में हो। पास का।
समीर—(पु० स०) वायु। हवा।
समुचित—(वि० स०) उचित। ठीक। जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।
समुच्चय—(पु० स०) एकत्रता।
समुत्थान—(पु० स०) उठना। आरम्भ।
समुदाय—(पु० स०) समूह। झुंड। गरोह।
समुद्र—(पु० स०) सागर। —फेन=समुद्र के पानी का फेन या झाग।
समुन्नत—(वि० स०) जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो।
समुल्लास—(पु० स०) आनंद। खुशी। ग्रंथ का प्रकरण या परिच्छेद।
समूह—(पु० स०) ढेर। राशि। समुदाय। झुंड।
समृद्धि—(स्त्री० स०) ऐश्वर्य। प्रभाव।
समेटना—(क्रि० हि०) बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठा करना। बटोरना।
समेत—(अव्य० स०) सहित। साथ।
सम्मत—(पु० स०) राय। सलाह। अनुमति। सम्मति=सलाह। राय। आदेश। अभिप्राय।
सम्मान—(पु० स०) इज़्ज़त।

समक्ष—(अव्य० सं०) आँखों के सामने। सामने।

समग्र—(वि० सं०) समस्त। कुल। पूरा।

समन्वित—(वि० सं०) मिला हुआ। संयुक्त।

समर्थ—(वि० सं०) जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। उपयुक्त। योग्य।

समर्थन—(सं०) ताईद करना। समर्थक = समर्थन करने वाला। समर्थित = समर्थन किया हुआ।

समर्पण—(पु० सं०) प्रतिष्ठा पूर्वक देना। भेंट करना।

समस्त—(वि० सं०) सब। कुल।

समस्या—(स्त्री० सं०) सरह। कठिन अवसर या प्रसंग। —पूर्ति = किसी छंद के एक टुकड़े को लेकर पूरा छंद या श्लोक बनाना।

समाँ—(पु० हिं०) समय। वक्त।

समागम—(पु० सं०) मिलना। भेंट। स्त्री के साथ संभोग करना। मैथुन।

समाचार—(पु० सं०) संवाद। खबर। —पत्र = खबर का कागज़। अखबार।

समाज—(पु० सं०) समूह। दल। सभा।

समाधान—(पु० सं०) सन्देह दूर करना।

समाधि—(स्त्री० सं०) किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव ज़मीन में गाड़ना। वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों।

समान—(वि० सं०) सम। बराबर। —ता = बराबरी। समानार्थ = वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो।

समाप्त—(वि० सं०) खतम। पूरा। समाप्ति = अंत।

समारंभ—(पु० सं०) समारोह। धूमधाम।

समारोह—(पु० सं०) आडंबर।

समालोचना—(स्त्री० सं०) किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना।

आलोचना। समालोचक=समालोचना करनेवाला।

समाविष्ट—(वि० सं०) समाया हुआ।

समावेश—(पु० सं०) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में अन्तर्गत होना।

समास—(पु० सं०) व्याकरण में दो या अधिक शब्दों का संयोग।

समिति—(स्त्री० सं०) सभा।

समीक्षा—(स्त्री० सं०) समालोचना।

समीप—(वि० सं०) पास। नज़दीक। —वर्ती=पास का। नज़दीक का। —स्थ=जो समीप में हो। पास का।

समीर—(पु० सं०) वायु। हवा।

समुचित—(वि० सं०) उचित। ठीक। जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

समुच्चय—(पु० सं०) एकत्रता।

समुत्थान—(पु० सं०) उठना। आरम्भ।

समुदाय—(पु० सं०) समूह। झुंड। गरोह।

समुद्र—(पु० सं०) सागर। —फेन=समुद्र के पानी का फेन या झाग।

समुन्नत—(वि० सं०) जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो।

समुल्लास—(पु० सं०) आनन्द। खुशी। ग्रंथ का प्रकरण या परिच्छेद।

समूह—(पु० सं०) ढेर। राशि। समुदाय। झुंड।

समृद्धि—(स्त्री० सं०) ऐश्वर्य। प्रभाव।

समेटना—(क्रि० हि०) बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठा करना। बटोरना।

समेत—(अव्य० सं०) सहित। साथ।

सम्मत—(पु० सं०) राय। सलाह। अनुमति। सम्मति=सलाह। राय। आदेश। अभिप्राय।

सम्मान—(पु० सं०) इज्ज़त।

गौरव। प्रतिष्ठा। सम्मानित=प्रतिष्ठित। इज़्ज़तदार।

सम्मिलन—(पु० सं०) मिलाप। मेल। सम्मिलित=मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।

सम्मुख—(अव्य० सं०) सामने। आगे।

सम्मेलन—(पु० सं०) सभा। समाज। जमावड़ा। जमघट। मेल। संगम।

सम्यक्—(क्रि० वि०) सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।

सम्राज्ञी—(स्त्री० सं०) सम्राट् की पत्नी। साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट्—(पु० हिं०) महाराजाधिराज। शाहंशाह।

सर—(पु० फ़ा०) सिर। सिरा। चोटी। (अं०) एक बड़ी उपाधि जो अँगरेज़ सरकार देती है।

सरअंजाम—(पु० फ़ा०) सामान। सामग्री। असबाब।

सरकंडा—(पु० हिं०) सरपत की जाति का एक पौधा।

सरकना—(क्रि० हिं०) टलना। काम चलना। निर्वाह होना।

सरकश—(वि० फ़ा०) उद्दंड। उद्धत। शरारती। सरकशी=उद्दंडता। शरारत।

सरकार—(स्त्री० फ़ा०) प्रधान। मालिक। राज्य। शासनसत्ता। गवर्नमेंट। सरकारी=राजकीय।

सरख़त—(पु० फ़ा०) वह काग़ज़ या दस्तावेज़ जिस पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं।

सरगना—(पु० फ़ा०) सरदार। अगुवा।

सरगम—(पु० हिं०) संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव उतार का क्रम। स्वरग्राम।

सरगर्म—(वि० फ़ा०) जोशीला। आवेशपूर्ण। उमंग से भरा हुआ। उत्साही। सरगर्मी=जोश। आवेश। उमंग। उत्साह।

सरज़ोर—(वि० फ़ा०) ज़बरदस्त। उद्दण्ड। सरकश। सरज़ोरी = ज़बरदस्ती।

सरणी—(स्त्री० सं०) मार्ग। रास्ता। पगडंडी। लकीर। वर्ग।

सरदा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का ख़रबूज़ा जो काबुल से आता है।

सरदार—(पु० फ़ा०) किसी मण्डली का नायक। श्रेष्ठ व्यक्ति। किसी प्रदेश का शासक। अमीर।

सरदारी—(स्त्री० फ़ा०) सरदार का पद।

सरना—(क्रि० हि०) निभना।

सरनाम—(वि० फ़ा०) प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।

सरनामा—(पु० फ़ा०) शीर्षक। पत्र का आरम्भ या सम्बोधन। पत्र आदि पर लिखा जाने वाला पता।

सरपंच—(पु० फ़ा०—हि०) पंचों में बड़ा व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

सरपट—(क्रि० वि०) घोड़े की बहुत तेज़ दौड़।

सरपत—(पु० हि०) एक घास।

सरपरस्त—(पु० फ़ा०) अभिभावक। संरक्षक। सरपरस्ती = संरक्षा। अभिभावकता।

सरपेच—(पु० फ़ा०) पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

सरपोश—(पु० फ़ा०) थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।

सरफ़राज़—(वि० फ़ा०) महत्वप्राप्त। धन्य। कृतार्थ।

सरबराह—(पु० फ़ा०) इंतज़ाम करनेवाला। कारिंदा। —कार = किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा। सरबराही = प्रबंध। इंतज़ाम। माल असबाब की निगरानी।

सरल—(वि० सं०) सीधा। भोला भाला। निष्कपट। सहज। आसान। —ता = सीधापन। निष्कपटता। सुगमता। आसानी। सादगी। भोलापन।

सरविस—(स्त्री० अ०) नौकरी। खिदमत। सेवा।
सरसब्ज़—(वि० फ़ा०) हरा भरा।
सर सर—(पु० अनु०) ज़मीन पर रगने का शब्द। वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। सरसराहट=साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि।
सरसरी—(वि० फ़ा०) जल्दी में। काम चलाने भर को। मोटे तौर पर।
सरसों—(स्त्री० हि०) एक पौधा। एक तेलहन।
सरस्वती—(स्त्री० स०) विद्या या वाणी की देवी। भारती। शारदा।
सरहद—(स्त्री० फ़ा०) सीमा। सरहदी=सरहद सम्बन्धी। सीमा सम्बन्धी।
सरहरी—(स्त्री० हि०) मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।
सराफ—(पु० अ०) सोने चाँदी का व्यापारी। सराफ़ा= सराफी का काम। सराफ़ों का बाज़ार। कोठी। बंक। सराफी = सराफ़का काम। महाजनी।
सराबोर—(वि० हि०) बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर।
सराय—(स्त्री० फ़ा०) यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना।
सरावगी—(पु० हि०) जैन धर्म माननेवाला। जैन। श्रावक।
सरासर—(अव्य० फ़ा०) एक सिरे से दूसरे सिरे तक। बिलकुल। पूर्णतया।
सराहना—(क्रि० हि०) तारीफ़ करना। प्रशंसा करना। प्रशंसा। तारीफ। सराहनीय = प्रशंसा के योग्य। अच्छा। बढ़िया।
सरिश्ता—(पु० फा०) अदालत। कचहरी। महकमा। दफ्तर। सरिश्तेदार = अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्म

वाले। सरिश्तेदारी = सरिश्तेदार का काम या पद।

सरेदस्त—(क्रि० फा०) इस समय। अभी। फिलहाल। इस समय के लिये।

सरेबाजार—(फा०) बाजार में। जनता के सामने। खुले आम। सब के सामने।

सरेश—(पु० फा०) एक चिपकने वाला पदार्थ, जो लोहे के स्थान पर जिल्द में लगता है और जिससे प्रेस के काम के लिए रोलर बनाते हैं।

सरो—(पु० फा०) एक पेड़। वनझाऊ।

सरोकार—(पु० फा०) वास्ता। लगाव। मतलब।

सरोद—(पु० फा०) बीन की तरह का एक बाजा।

सरोसामान—(पु० फा०) सामग्री। असबाब।

सरौता—(पु० हि०) सुपारी काटने का औजार।

सर्कस—(पु० अ०) वह स्थान जहाँ जानवरों का खेल दिखाया जाता है। पशुओं और नटों का खेल दिखाने वाली मण्डली।

सर्का—(पु० अ०) चोरी।

सर्कार—(स्त्री० फा०) मालिक। प्रधान। राज्य। शासन-सत्ता। गवर्नमेंट। रियासत।

सर्क्युलर—(पु० अ०) गश्ती चिट्ठी। सरकारी आज्ञा पत्र जो सब दफ्तरों में घुमाया जाता है।

सर्ग—(पु० सं०) प्रकरण। परिच्छेद।

सर्जेंट—(पु० अ०) हवलदार। जमादार।

सर्ज—(स्त्री० अ०) एक प्रकार का बढ़िया मोटा ऊनी कपड़ा।

सर्जन—(पु० अ०) चीर फाड़ करनेवाला डाक्टर। जर्राह।

सर्जरी—(अ०) चीर फाड़ करके चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या।

सर्टिफिकेट—(पु० अ०) प्रमाण-पत्र। सनद।

सर्द—(वि० फा०) ठंढा। शीतल।

मुस्त। नामर्द।—मिज़ाज=मुर्दादिल। बेमुरौवत। रूखा।

सर्प—(पु० सं०) साँप।

सर्फ—(पु० अ०) खर्च किया हुआ।

सर्फा—(पु० अ०) खर्च। व्यय।

सर्राफ—(पु० अ०) सोने चाँदी या रुपए पैसे का व्यापार करनेवाला।

सर्व—(वि० सं०) सारा। कुल। सर्वज्ञ=सब कुछ जानने वाला। —नाम=व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है। —नाश=सत्यानाश। पूरी बरबादी। —व्यापक=सब में रहनेवाला। ईश्वर। —श=समूचा। पूर्णरूप से। —श्रेष्ठ=सब में बड़ा।—स्व=सब कुछ। सारी सम्पत्ति। सर्वांग=सारा बदन। सम्पूर्ण शरीर। सर्वाधिकार=पूरा इख़्तियार।

सर्वतोमुख—(वि० सं०) जिसका मुँह चारों ओर हो। जो सब दिशाओं में प्रवृत्त हो। पूर्ण। व्यापक।

सर्वत्र—(अव्य० सं०) सब कहीं। हर जगह।

सर्वथा—(अव्य० सं०) सब प्रकार से। बिल्कुल। सब।

सर्वदा—(अव्य० सं०) हमेशा। सदा।

सर्वे—(पु० अं०) भूमि की नाप पैमाइश। वह सरकारी विभाग जो भूमि को नापकर उसका नक्शा बनाता है।

सलतनत—(स्त्री० अ०) राज्य। बादशाहत। साम्राज्य।

सलमा—(पु० अ०) सोने या चाँदी का तार जो बेलबूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलाई—(स्त्री० हि०) धातु की बनी हुई कोई पतली छड़। दियासलाई। सलाने की मज़दूरी।

सलाख—(स्त्री० फा०) शलाका। सलाई।

सलाद—(पु० अ०) गाजर, मूली,

राइ, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेज़ी ढंग से मिरचे आदि में डाला हुआ अचार।

सलाम—(पु॰ अ॰) प्रणाम। बंदगी। सलामी=सलाम करना। सिपाहियाना सलाम। तोपों या बन्दूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।

सलामत—(अ॰) सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित। तंदुरुस्त और जिन्दा। क़ायम। बरकरार। कुशल पूर्वक। ख़ैरियत से। सलामती=तंदुरुस्ती। स्वस्थता। कुशल।

सलाह—(स्त्री॰ अ॰) सम्मति। राय। मशवरा। —कार=राय देनेवाला।

सलीका—(पु॰ अ॰) ढंग। तमीज़। हुनर। तहज़ीब। सभ्यता।

सलीता—(पु॰ देश॰) एक प्रकार का ...

सलीपर—(पु॰ अ॰) सलपट। जूती। खड़ाऊँ। वह लकड़ी का तख्ता जो रेल की पटरियों के नीचे बिछाया जाता है।

सलीस—(वि॰ अ॰) सहज। आसान। समतल। मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक—(पु॰ अ॰) बरताव। व्यवहार। मेल। सद्भाव।

सलोनो—(पु॰ हि॰) हिन्दुओं का एक त्योहार। रक्षाबंधन।

सवा—(स्त्री॰ हि॰) चौथाई सहित।

सवाई—(स्त्री॰ हि॰) ऋण का एक प्रकार। जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि। एक और चौथाई। सवा।

सवाब—(पु॰ अ॰) पुण्य।

सवार—(पु॰ फ़ा॰) घोड़े पर चढ़ा हुआ। रिसाले का सिपाही। किसी चीज़ पर चढ़ा या बैठा हुआ। सवारी=चढ़ने की क्रिया। सवार होने की वस्तु। वह व्यक्ति जो सवार हो। ...

सवाल—(पु० अ०) पूछना। वह जो कुछ पूछा जाय। दरख्वास्त। माँग। विनती। भिक्षा की याचना। गणित का प्रश्न। —जवाब=बहस। उत्तर प्रत्युत्तर। तक़रार। झगड़ा।

सवेरा—(पु० हि०) प्रात काल। सुबह। निश्चित समय के पूर्व का समय।

सवैया—(पु० हि०) तौलने का एक बाट। एक छंद। एक पहाड़ा।

सशंक—(वि० स०) शंकित। भयभीत।

ससुर—(पु० हि०) पति या पत्नी का पिता। श्वसुर।

सस्ता—(वि० हि०) जो महँगा न हो। घटिया। मामूली। सस्ती=सस्तापन। वह समय जब कि सब चीज़ें सस्ते दाम पर मिला करती हों।

सस्त्रीक—(वि० स०) स्त्री सहित।

सहकार—(पु० सं०) मिलकर काम करना। सहयोग। सहकारिता=सहायता। मदद। साथ। मिलकर काम करना। सहकारी=साथ करनेवाला। साथी। सहायक। मददगार।

सहगमन—(पु० स०) सती होने की क्रिया। सहगामिनी=वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो जाय। स्त्री। साथिन।

सहचर—(पु० स०) साथ चलने वाला। नौकर। मित्र। दोस्त। सहचरी=पत्नी। भार्या। सखी। सहेली।

सहज—(वि० स०) साधारण। आसान। सुगम।

सहन—(पु० स०) बरदाश्त करना। क्षमा। (फ़ा०) आँगन। चौक। —शील=बरदाश्त करनेवाला। सतोषी। सब्र करनेवाला। सहना=बरदाश्त करना। झेलना। फल भोगना। बोझ बरदाश्त करना।

सहनक—(पु० अ०) रकाबी।

सहपाठी—(पु० हि०) वह जो

साथ में पड़ा हो। हास-फेंओ।

सहम—(फ़ा॰) भय।

सहमत—(वि॰ सं॰) एक मत का।

सहमना—(क्रि॰ फ़ा॰) भयभीत होना। डरना।

सहयोग—(पु॰ सं॰) साथ मिल कर काम करना। मदद। सहायता। राजनीति में सरकार के साथ मिलकर काम करने, और उसके पद आदि ग्रहण करने का सिद्धांत। सहयोगी=साथ काम करने वाला। साथी। सरकार के साथ मिलकर काम करनेवाला व्यक्ति।

सहर—(पु॰ अ॰) प्रात काल। सवेरा। जादू। टोना।

सहरा—(पु॰ अ॰) जंगल। वन।

सहरी—(स्त्री॰ हि॰) सफरी। मछली।

सहल—(वि॰ अ॰) सरल। ——।

सहलाना—(क्रि॰ हि॰) धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना।

सहवास—(पु॰ सं॰) मैथुन। साथ।

सहसा—(अव्य॰ सं॰) एकाएक। अचानक।

सहस्र—(पु॰ सं॰) दस सौ की संख्या।

सहानुभूति—(स्त्री॰ सं॰) हमदर्दी।

सहायक—(वि॰ सं॰) मददगार।

सहायता—(स्त्री॰ सं॰) मदद।

सहारा—(पु॰ हि॰) आसरा। भरोसा। इतमीनान।

सहिजन—(पु॰ हि॰) वृक्ष।

सहिष्णु—(सं॰) सहनशील। —ता=सहनशीलता।

सही—(वि॰ फ़ा॰) ठीक। यथार्थ। शुद्ध। हस्ताक्षर। दस्तखत। सही सलामत=स्वस्थ। तन्दुरुस्त। ठीक-ठीक।

सहूलियत—(स्त्री॰ फ़ा॰) आसानी। सुगमता।

सहृदय—(वि० स०) दयालु। रसिक। सज्जन। अच्छे स्वभाववाला। प्रसन्नचित्त। खुशदिल। —ता=सौजन्य। रसिकता। दयालुता।

सहेजना—(क्रि० हि०) भली भाँति जाँचना। सँभालना। अच्छी तरह कह सुनकर सुपुर्द करना।

सहेली—(स्त्री० हि०) संगिनी। अनुचरी। दासी।

सहोदर—(पु० स०) एक माता के पुत्र। सगा।

सांगोपांग—(अव्य० स०) संपूर्ण। समस्त। अंगों और उपांगों सहित।

साँचा—(पु० हि०) ठप्पा। मोल्ड (अ०) छापा। जुलाहों की वे दो लकड़ियाँ जिनके बीच में कूँच के साल को दबाकर कसते हैं।

साँटी—(स्त्री० हि०) पतली छोटी छड़ी। बाँस की कमची।

साँड़—(पु० हि०) वह बैल या घोड़ा जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं। वह बैल जिसे मृतक की स्मृति में हिन्दू लोग दागकर छोड़ देते हैं। मज़बूत। बदचलन।

साँड़नी—(स्त्री० हि०) ऊँटनी, जिसकी चाल बहुत तेज़ होती है।

साँड़िया—(पु० हि०) तेज चलनेवाला ऊँट। साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

सान्त्वना—(पु० सं०) आश्वासन।

सान्ध्य—(वि० स०) सन्ध्या सम्बधी। सन्ध्या का।

साँप—(पु० हि०) एक कीड़ा। सर्प। नाग। विषधर। बहुत दुष्ट आदमी। साँपिन=साँप की मादा।

साम्प्रत—(अव्य० स०) इसी समय। अभी। तत्काल।

साम्प्रदायिक—(वि० स०) किसी सम्प्रदाय से सम्बंध रखने वाला। सम्प्रदाय का।

साँभर—(पु० हि०) राजपूताने की एक झील और उसके

पानी से बना हुआ नमक। मृगों की एक जाति।
साँवता—(वि० हि०) श्यामवर्ण का। —पन=श्यामता।
साँवाँ—(पु० हि०) एक अन्न।
साँस—(स्त्री० हि०) श्वास। दम। अवकाश। गुंजाइश। दरार। दम फूलने का रोग। दमा।
साँसत—(स्त्री० हि०) दम घुटने का सा कष्ट। झंझट। बखेड़ा। —घर=कालकोठरी। बहुत तंग और छोटा मकान जिसमें हवा या रोशनी न आती हो।
सा—(अव्य० हि०) समान। तुल्य। बराबर।
साइक्लोपीडिया—(स्त्री० अं०) विश्वकोष।
साइत—(स्त्री० अ०) पल। लहमा। मुहूर्त्त। शुभलग्न।
साइन—(अं०) हस्ताक्षर।
साइनबोर्ड—(पु० अं०) वह तख्ता या टीन आदि का टुकड़ा जिस पर किसी व्यक्ति, दूकान या व्यवसाय आदि का नाम और पता आदि या कोई सूचना बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी हो।
साइंस—(स्त्री० अं०) विज्ञान।
साइर—(पु० अ०) ऊपरी आमदनी।
साईं—(स्त्री० हि०) पेशगी। बयाना। यह कीड़ा जो जानवरों के घावों में पड़ जाता है।
साईस—(पु० हि०) वह आदमी जो घोड़े की खबरदारी और सेवा करता है। साईसी=साईस का काम।
साका—(पु० हि०) संवत्। कीर्ति का स्मारक।
साकार—(वि० सं०) जिसका कोई आकार हो। साक्षात्। स्थूल। ब्रह्म का मूर्तिमान रूप।
साकिन—(वि० अ०) निवासी। रहनेवाला।
साकी—(पु० अ०) शराब पिलानेवाला। माशूक।
साकेत—(पु० सं०) अयोध्या नगरी। अवधपुरी।

साक्षात्—(अव्य० सं०) सामने। सम्मुख। भेंट। मुलाकात। —कार=भेंट।

साक्षी—(पु० हि०) गवाह। गवाही। शहादत।

साख—(पु० हि०) धाक। विश्वास। बाज़ार में व्यापारी का विश्वास।

साखी—(पु० हि०) साक्षी। गवाही। सन्तों के पद या दोहे।

साखू—(पु० हि०) शाल वृक्ष।

साग—(पु० हि०) शाक। भाजी। तरकारी। पकाई हुई भाजी।

सागर—(पु० सं०) समुद्र। बड़ा तालाब। झील। संन्यासियों का एक भेद।

सागू—(पु० हि०) ताड़ की जाति का एक पेड़। सागू दाना=सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। साबूदाना।

साज़—(पु० फ़ा०) सजावट का काम। सजावट का सामान। बाजा। लड़ाई के हथियार। बढ़इयों का एक प्रकार का रंदा। —बाज़=तैयारी। मेलजोल। —सामान=सामग्री। असबाब। ठाटबाट।

साज़िंदा—(पु० फ़ा०) साज़ या बाजा बजानेवाला। सफ़रदाई। समाजी।

साज़िश—(स्त्री० फ़ा०) किसी को हानि पहुँचाने में सलाह या मदद देना। षड्यन्त्र।

साझा—(पु० हि०) शराकत। हिस्सेदारी। हिस्सा। भाग। साझी=साझेदार। हिस्सेदार। साझेदार=हिस्सेदार। साझेदारी=शराकत।

साटी—(स्त्री० देश०) कमची। साँटा।

साठ—(वि० हि०) पचास और दस।

साठी—(पु० हि०) एक प्रकार का धान।

साड़ी—(स्त्री० हि०) स्त्रियों के पहनने की धोती। सारी।

साढसाती—(स्त्री० हि०) फलित ज्योतिष के अनुसार। शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़ेसात मास या साढ़ेसात दिन आदि की दशा, जिसका फल बहुत बुरा होता है। साढ़ेसाती।

साढ़ी—(स्त्री० हि०) मलाई।

साढ़ू—(पु० हि०) साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

सात—(वि० हि०) छः से एक अधिक।

सात्विक—(वि० सं०) सतोगुणी।

साथ—(पु० हि०) मेल मिलाप। सहित। से। प्रति। साथी= संगी। दोस्त। मित्र।

सादा—(वि० फ़ा०) बिना बनावट का। साधारण। बिना मिलावट का। खालिस। बिना रंग का। सफेद। सीधा।

सादगी—(स्त्री० फ़ा०) सादापन। सीधापन। —पन= सादगी। सरलता।

सादृश्य—(पु० सं०) समानता। बराबरी। तुलना।

साधक—(पु० सं०) साधना करनेवाला। योगी। तपस्वी।

साधन—(पु० सं०) विधान। सामग्री। सामान। उपाय। युक्ति। सहायता। कारण। सबब। तपस्या।

साधना—(स्त्री० सं०) सिद्धि। उपासना। तपस्या पूरा करना। निशाना लगाना। नापना। ठहराना। इकट्ठा करना।

साधारण—(वि० सं०) मामूली। आम। —त = मामूली तौर पर। आमतौर पर। बहुधा। प्राय।

साधु—(पु० सं०) धार्मिक पुरुष। महात्मा। सज्जन। भला आदमी। मुनि। प्रशंसनीय। योग्य। —ता= साधुओं का आचरण। सज्जनता। भलाई। सीधापन। —साधु=धन्य धन्य। वाह वाह।

साध्य—(वि० सं०) पूरा हो सकने के योग्य। सहज। आसान। जिसे साबित करना हो।

साध्वी—(वि० सं०) पतिव्रता। शुद्ध चरित्रवाली स्त्री।

सानंद—(वि० सं०) आनंद पूर्वक।

सान—(पु० हि०) वह पत्थर की चक्की जिस पर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। शाण।

सानी—(स्त्री० हि०) वह चारा जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है। (अ०) बराबरी का। मुकाबले का।

साफ—(वि० अ०) स्वच्छ। निर्मल। शुद्ध। खालिस। जो देखने में स्पष्ट हो। उज्ज्वल। निष्कपट। जो स्पष्ट सुनाई पड़े या समझ में आवे। सहा। कोरा। बेऐब। हिसाब साफ होना। बिलकुल।

साफा—(पु० हि०) सिर पर बाँधने की पगड़ी। मुरासा।

साफी—(स्त्री० हि०) रूमाल। दस्ती। वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। भाँग छानने का कपड़ा। रदा।

साबिक—(वि० अ०) पहले का। पूर्व का।

साबिका—(पु० अ०) काम पड़ना। मुलाकात। संबंध। व्यवहार।

साबित—(वि० फ़ा०) प्रमाणित। सिद्ध। पूरा। दुरुस्त। ठीक।

साबुन—(पु० अ०) रासायनिक क्रिया से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और कपड़े साफ किये जाते हैं। (अं०) सोप।

सामंजस्य—(पु० सं०) औचित्य। उपयुक्तता। अनुकूलता।

सामंत—(पु० सं०) वीर। योद्धा।

साम—(पु० हि०) मधुर भाषण। राजनीति के चार अंगों या उपायों में से एक।

सामग्री—(स्त्री० सं०) सामान। ज़रूरी। चीज़। साधन।
सामना—(पु० हि०) भेंट। मुलाक़ात। आगे की ओर का हिस्सा। आगा। मुक़ाबला। समचता।
सामने—(क्रि० हि०) सम्मुख। आगे। मौजूदगी में। मुक़ाबले में। विरुद्ध।
सामरिक—(वि० सं०) युद्ध का।
सामर्थ्य—(पु० सं०) बल। शक्ति।
सामाजिक—(वि० सं०) समाज का। सभा का। सभा से संबंध रखनेवाला।
सामान—(पु० फ़ा०) सामग्री। माल। असबाब। औज़ार। बन्दोबस्त। इन्तज़ाम।
सामान्य—(वि० सं०) साधारण। मामूली। —तः = साधारण रीति से।
सामुद्रिक—(वि० सं०) समुद्र का। हस्तरेखा विज्ञान।
सं०) एक सिद्धान्त जिसके अनुसार सब में समान रूप से संपत्ति का बँटवारा होता है।
साम्राज्य—(पु० सं०) सार्वभौम राज्य। सल्तनत।
सायंकाल—(पु० सं०) सन्ध्या। शाम। सायंकालीन = सन्ध्या के समय का। शाम का।
सायंटिफिक—(अं०) विज्ञान संबंधी।
सायंस—(स्त्री० अं०) विज्ञान।
सायत—(स्त्री० अ०) शुभ-मुहूर्त। अच्छा समय।
सायबान—(पु० फ़ा०) बरामदा।
सायर—(पु० अ०) वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। फुटकर।
सायल—(पु० अ०) सवाल करनेवाला। प्रार्थी।
साया—(पु० फ़ा०) छाया। छाँह। परछाईं। प्रभाव। (अं०) यूरोपियन स्त्रियों का घाँघरे की तरह का एक पहनावा।

सारगी—(स्त्री० हि०) एक बाजा।

सार—(पु० सं०) तत्त्व। निष्कर्ष। रस। गूदा। नतीजा। बल। (हि०) पालन। रक्षा। —गर्भित = जिसमें तत्त्व भरा हो। सार-युक्त।

सारजट—(पु० अ०) पुलिस के सिपाहों का जमादार।

सारथी—(पु० सं०) रथादि का चलानेवाला। सूत।

सारस—(पु० सं०) एक पक्षी।

सार्टिफिकेट—(पु० अ०) प्रमाण पत्र। सनद।

सार्थक—(वि० सं०) अर्थ सहित। सफल। सिद्ध।

सार्वजनिक—(वि० सं०) सब लोगों से सबध रखनेवाला।

सार्वभौम—(पु० सं०) समस्त भूमि सबधी। सपूर्ण भूमि का। चक्रवर्ती।

साल अमोनिया—(पु० अ०) नौसादर।

सालन—(पु० हि०) मसालेदार तरकारी।

सालना—(क्रि० हि०) दुःख देना। खटकना। कसकना। चुभना। गड़ना। खाट के पाये में छेद करके उसमें पाटी बैठाना।

सालसा—(पु० अ०) खून साफ करने का एक अँगरेज़ी काढ़ा।

साला—(पु० हि०) पत्नी का भाई।

सालाना—(वि० फ़ा०) वार्षिक।

सावधान—(वि० सं०) सचेत। होशियार।

सावन—(पु० हि०) श्रावण का महीना।

साष्टाग—(वि० सं०) आठों अग सहित।

साहब—(पु० अ०) स्वामी। मालिक। महाशय। एक सम्मान सूचक शब्द। गोरी जाति का कोई व्यक्ति। फिरगी। —ज़ादा = भले आदमी का लड़का। पुत्र। —सलामत = बदगी। सलाम साहबी = साहब का। साहब सबधी। प्रभुता। बड़ाई।

साहस—(पु० सं०) हिम्मत। साहसिक = साहस करनेवाला। पराक्रमी। निर्भय। साहसी = हिम्मती। दिलेर।

साहित्य—(पु० सं०) विचार का ज्ञान। गद्य और पद्य ग्रन्थों का समूह। (अं०) लिटरेचर।

साही—(स्त्री० हिं०) एक जन्तु।

साहु—(पु० हिं०) सज्जन। भलामानस। महाजन। धनी। साहूकार = बड़ा महाजन या व्यापारी। धनाढ्य।

सिंकोना—(पु० अं०) कुनैन का पेड़।

सिंगारदान—(पु० हिं०) छोटा सन्दूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृङ्गार की सामग्री रखी जाती है।

सिंघाड़ा—(पु० हिं०) पानी में पैदा होनेवाला एक फल। सुनारों का एक औज़ार। एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

सिंचाई—(स्त्री० हिं०) पानी छिड़कने का काम। सींचने का काम। सींचने की मज़दूरी।

सिन्दूर—(पु० सं०) इंगुर। जिसे सौभाग्यवती हिन्दू स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती हैं। सिन्दूरिया = सिन्दूर के रंग का। खूब लाल।

सिन्धु—(पु० सं०) एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिम भाग में है। समुद्र।

सिंह—(पु० सं०) शेर बबर। केसरी। ज्योतिष में एक राशि। —नाद = सिंह की गरज। युद्ध में वीरों का ललकार। सिंहावलोकन = आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। सिंहासन = राजा या देवता के बैठने की चौकी।

सिआर—(पु० हिं०) शृगाल। गीदड़।

सिकंजबीन—(स्त्री० फा०) सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकड़ी—(स्त्री० हिं०) किवाड़ की कुंडी। साँकल। सोने का एक गहना। करधनी।

सियापा—(पु० फ़ा०) मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति।

सियार—(पु० हि०) गीदड़।

सियासत—(स्त्री० अ०) देश का शासन = प्रबंध तथा व्यवस्था।

सियाहगोश—(पु० फ़ा०) काले कानवाला। बनबिलाव।

सियाहा—(पु० फ़ा०) आय व्यय की बही। रोज़नामचा। —नवीस = सियाहा का लिखनेवाला।

सिर—(पु० हि०) कपाल। खोपड़ी। ऊपर का छोर। सिरा। चोटी।

सिरका—(पु० फ़ा०) धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख, अंगूर, जामुन आदि का रस। —कश = अरक़ खींचने का एक यंत्र।

सिरकी—(स्त्री० हि०) सरकंडे या सरई की तीलियों की बनी हुई टट्टी।

सिरखपी—(स्त्री० हि०) हैरानी।

सिरजना—(क्रि० हि०) बनाना। सिरजनहार = रचनेवाला। बनानेवाला। परमेश्वर।

सिरताज—(पु० हि०) मुकुट। शिरोमणि।

सिर ता पा—(फ़ा०) सिर से पाँव तक। आदि से अंत तक। संपूर्ण।

सिरनामा—(पु० फ़ा०) लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। शीर्षक। हेडिंग।

सिरपेच—(पु० फ़ा०) पगड़ी। पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।

सिरपोश—(पु० फ़ा०) टोप। कुलहा। बंदूक के ऊपर का कपड़ा।

सिरफेंटा—(पु० हि०) साफ़ा। पगड़ी। मुरेठा।

सिरवा—(पु० हि०) वह कपड़ा जिससे अनाज ओसाने के समय हवा करते हैं।

सिरस—(पु० हि०) एक पेड़।

सिरहाना—(पु॰ हि॰) चारपाई में सिर की ओर का भाग। खाट का सिरा।
सिरा—(पु॰ हि॰) छोर। ऊपर का भाग। आख़िरी हिस्सा। नोक। अनी। अगला हिस्सा।
सिराजन—(पु॰ हि॰) पाटा। हेंगा।
सिरिश्ता—(पु॰ फ़ा॰) विभाग। सुहकमा। सिरिश्तेदार=अदालत का वह कर्मचारी जो मुक़दमें के काग़ज़ पत्र रखता है। सिरिश्तेदारी=सिरिश्तेदार का काम या पद।
सिरोपाव—(पु॰ हि॰) सिर से पैर तक का पहनावा। ख़िलअत।
सिल—(स्त्री॰ हि॰) पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर मसाला आदि पीसते हैं। काठ की पटरी। (पु॰ अ॰) तपेदिक़। क्षयरोग।
सिलखड़ी—(स्त्री॰ हि॰) एक चिकना मुलायम पत्थर। खरिया मिट्टी।
सिलपट—(वि॰ हि॰) साफ़। घिसा हुआ। मिटा हुआ। चौपट।
सिलवट—(स्त्री॰ देश॰) बल। शिकन। सिकुड़न।
सिलसिला—(पु॰ अ॰) क्रम। परंपरा। ज़ंजीर। शृंखला। व्यवस्था। तरतीब। कुल परंपरा। आनुक्रम। (वि॰ हि॰) रपटन वाला। चिकना। —वदी=तरतीब। क़तारबंदी। पंक्ति बँधाई। सिलसिलेवार=क्रमशः।
सिलह—(पु॰ अ॰) हथियार। शस्त्र। —ख़ाना=अस्त्रागार।
सिलाई—(स्त्री॰ हि॰) सीने का काम। सीने का ढंग। सीने की मज़दूरी। टाँका। सीवन।
सिलाजीत—(पु॰ हि॰) एक दवा।
सिलावट—(पु॰ हि॰) संग तराश।
सिलाह—(पु॰ अ॰) जिरह बख़्तर। कवच। हथियार।

अस्त्र-शस्त्र । —बंद = सशस्त्र । हथियारबंद । —साज = हथियार बनाने वाला ।

सिलौटा—(स्त्री० हि०) भाँग, मसाला आदि पीसने का छोटी सिल ।

सिल्ला—(पु० हि०) खेत या खलियान में गिरा हुआ अनाज का दाना ।

सिल्ली—(स्त्री० हि०) हथियार की धार चोखी करने का पत्थर । सान । आरे से चीरकर पेड़ों से निकाला हुआ तख़्ता । पटरी । पत्थर की छोटी पतली पटिया ।

सिवइँ—(स्त्री० हि०) आटे के सूत जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं । सिवँयाँ ।

सिवाय—(क्रि० वि० अ०) अति रिक्त । अलावा । छोड़कर ।

सिवार—(स्त्री० हि०) पानी में फैलनेवाला एक तृण ।

सिविल—(वि० अ०) नगर संबंधी । नागरिक । मुल्की । सभ्य । मिलनसार । —सर्जन = सरकारी बड़ा डाक्टर । —सर्विस = अंगरेजी सरकार की एक विशेष परीक्षा । —सूट = दीवानी मुकदमा । —कोर्ट = दीवानी अदालत । सिविलियन = सिविल सर्विस परीक्षा पास किया हुआ मनुष्य । —लॉ = दिवानी क़ानून । देश के शासन और प्रबंधविभाग का कर्मचारी । सिविलिज़ेशन = सभ्यता । सिविलाइज़्ड = सभ्य । शाइस्ता ।

सिसकना—(क्रि० अनु०) बहुत हिचकियाँ भरना ।

सी—(वि० स्त्री० हि०) समान । सरदी लगने पर मुँह से निकला हुआ शब्द ।

सीक्रेट—(अ०) गुप्तभेद । रहस्य ।

सीख—(स्त्री० फा०) लोहे की छड़ । —चा = लोहे की सीख जिस पर मांस लपेटकर भूनते हैं ।

सीखना—(क्रि० हि०) ज्ञान

कारी प्राप्त करना। काम करने का ढंग जानना।

सीटी—(स्त्री० हि०) मुँह से निकाला हुआ बारीक स्वर। एक प्रकार का बाजा। पिपहरी।

सीठना—(पु० हि०) विवाह की गाली।

सीठा—(वि० हि०) नीरस। फीका। बेज़ायका।

सीठी—(स्त्री० हि०) सार हीन पदार्थ।

सीड़—(स्त्री० हि०) तरी। नमी।

सीढ़ी—(स्त्री० हि०) ज़ीना।

सीतलपाटी—(स्त्री० हि०) बढ़िया चिक्नी चटाई। एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीता—(स्त्री० सं०) जानकी। श्रीरामचन्द्र की पत्नी।

सीत्कार—(पु० सं०) सिसकारी।

सीधा—(वि० हि०) सरल। भला। अनुकूल। आसान। सहज। दहिना। —पन= भोलापन। सीधे=बिना कहीं मुड़े या रुके। शिष्ट व्यवहार से। नरमी से। शांति के साथ। शिष्टता के साथ।

सीन—(पु० अं०) दृश्य। थियेटर के रंगमंच का कोई परदा। सीनरी=प्राकृतिक दृश्य।

सीना—(क्रि० हि०) टाँकों से मिलाना या जोड़ना। टाँका मारना। (पु० फ़ा०) छाती। वक्षस्थल। —तोड़=कुश्ती का एक पेंच।

सीप—(पु० हि०) सुतुही। सीप नामक समुद्री जलजंतु।

सीमा—(स्त्री० सं०) हद। मर्यादा। सीमांत=सरहद। गाँव की सीमा। —बद्ध= रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ। सीमित= मर्यादित। हद बँधा हुआ। सीमोल्लंघन=हद पार करना। मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीमाव—(पु० फ़ा०) पारा।

सीर—(स्त्री० हि०) वह ज़मीन जिसे भूस्वामी या ज़मींदार

शस्त्र शस्त्र । —बद=सशस्त्र । हथियारबंद । —साज=हथियार बनाने वाला।

सिलौटी—(स्त्री० हि०) भाँग, मसाला आदि पीसने का छोटी सिल।

सिल्ला—(पु० हि०) खेत या खलियान में गिरा हुआ अनाज का दाना।

सिल्ली—(स्त्री० हि०) हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। सान। आरे से चीरकर पेड़ी ■ निकाला हुआ तख़्ता। पटरी। पत्थर की छोटी पतली पटिया।

सिवई—(स्त्री० हि०) आटे के सूत जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिवैयाँ।

सिवाय—(क्रि० वि० अ०) अति रिक्त। अलावा। छोड़कर।

सियार—(स्त्री० हि०) पानी में फैलनेवाला एक तृण।

सिविल—(वि० अ०) नगर संबंधी। नागरिक। मुल्की। सभ्य। मिलनसार। —सर्जन=सरकारी बड़ा डाक्टर।—सर्विस=अँगरेज़ी सरकार की एक विशेष परीक्षा।—सूट=दीवानी मुकदमा।—कोर्ट=दीवानी अदालत। सिविलियन=सिविल सर्विस परीक्षा पास किया हुआ मनुष्य। —लॉ=दिवानी क़ानून। देश के शासन और प्रबंधविभाग का कर्मचारी। सिविलिज़ेशन=सभ्यता। सिविलाइज़्ड=सभ्य। शाइस्ता।

सिसकना—(क्रि० अनु०) बहुत हिचकियाँ भरना।

सी—(वि० स्त्री० हि०) समान। सरदी लगने पर मुँह से निकला हुआ शब्द।

सीक्रेट—(अ०) गुप्तभेद। रहस्य।

सीख—(स्त्री० फा०) लोहे का छड़।—चा=लोहे की सीख जिस पर मांस लपेटकर भूनते हैं।

सीखना—(क्रि० हि०) ज्ञान

पारी प्राप्त करना। काम करने का ढंग जानना।

सीटी—(स्त्री० हि०) मुँह से निकाला हुआ बारीक स्वर। एक प्रकार का बाजा। पिपहरी।

सीठना—(पु० हि०) विवाह की गाली।

सीठा—(वि० हि०) नीरस। फीका। बेज़ायका।

सीठी—(स्त्री० हि०) सार हीन पदार्थ।

सीड़—(स्त्री० हि०) तरी। नमी।

सीढ़ी—(स्त्री० हि०) ज़ीना।

सीतलपाटी—(स्त्री० हि०) बढ़िया चिकनी चटाई। एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीता—(स्त्री० सं०) जानकी। श्रीरामचन्द्र की पत्नी।

सीत्कार—(पु० सं०) सिसकारी।

सीधा—(वि० हि०) सरल। भला। अनुकूल। आसान। सहज। दहिना। —पन= भोलापन। सीधे=बिना कहीं मुड़ या रुके। शिष्ट व्यवहार से। नरमी से। शांति के साथ। शिष्टता के साथ।

सीन—(पु० अ०) दृश्य। थियेटर के रंगमंच का कोई परदा। सीनरी=प्राकृतिक दृश्य।

सीना—(क्रि० हि०) टाँकों से मिलाना या जोड़ना। टाँका मारना। (पु० फ़ा०) छाती। वक्षस्थल। —तोड़=कुश्ती का एक पेंच।

सीप—(पु० हि०) सुतुही। सीप नामक समुद्री जलजंतु।

सीमा—(स्त्री० सं०) हद। मर्यादा। सीमान्त=सरहद। गाँव की सीमा। —बद्ध= रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ। सीमित= मर्यादित। हद बँधा हुआ। सीमोल्लंघन=हद पार करना। मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीमाब—(पु० फ़ा०) पारा।

सीर—(स्त्री० हि०) वह ज़मीन जिसे भूस्वामी या ज़मींदार

सुधर्म—(पु० सं०) उत्तम धर्म। पुण्य कर्त्तव्य।

सुधा—(स्त्री० सं०) अमृत। —निधि=चन्द्रमा।—कर= चन्द्रमा।

सुधार—(पु० हि०) सुधरने की क्रिया। संशोधन।—क= संशोधक। दोषों या त्रुटियों का सुधार करने वाला। —ना=दोष या बुराइ दूर करना। सँवारना।

सुनाना—(क्रि० हि०) श्रवण करना। किसी के कथन पर ध्यान देना। भली, बुरी या उलटी सीधी बातें श्रवण करना।

सुनबहरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का रोग।

सुनवाई—(स्त्री० हि०) मुक़दमे आदि का पेश होकर सुना जाना। किसी शिकायत या फरियाद आदि का सुना जाना।

सुनसान—(वि० हि०) ख़ाली। निर्जन। सन्नाटा।

सुनहला—(वि० हि०) सोने के रंग का। सोने का सा।

सुनाम—(पु० सं०) यश। कीर्ति।

सुनार—(पु० हि०) सोने, चाँदी के गहने आदि बनाने वाली जाति।

सुन्न—(वि० हि०) निर्जीव। सुनसान। निर्जन। नीरव।

सुन्नत—(स्त्री० अ०) मुसलमानों की एक रस्म।

सुन्नी—(पु० अ०) मुसलमानों का एक भेद।

सुपक्व—(वि० सं०) अच्छी तरह पका हुआ।

सुपर रायल—(पु० अं०) काग़ज़ की एक नाप।

सुपरवाइज़र—(पु० अं०) जाँच करनेवाला। सुपरवीज़न= सँभाल।

सुपरिंटेंडेंट—(पु०अं०) निगरानी करनेवाला। प्रधान निरीक्षक।

सुपात्र—(पु० सं०) योग्य। उपयुक्त हो। अच्छा पात्र।

सुपारी—(स्त्री० हि०) छालिया। पसैला।

सुपास—(पु० देश०) सुख। आराम।

सुपीरियर—(अ०) बड़कर। श्रेष्ठतर।

सुपूत—(वि० हि०) अच्छा पुत्र। सुपुत्र।

सुप्रतिष्ठा—(स्त्री स०) आदर। प्रसिद्धि। सुनाम। सुप्रतिष्ठित = उत्तम रूप से प्रतिष्ठित।

सुप्रभात—(पु० स०) मंगल सूचक प्रभात।

सुप्रीम कोर्ट—(पु० अ०) प्रधान या उच्च न्यायालय। सब से बड़ी कचहरी।

सुबड़ा—(पु० देश०) ताँबा मिली हुई चाँदी।

सुबहान अल्ला—(अव्य० अ०) अरबी का एक पद।

सुबुक—(वि० फा०) हलका। कम बोझ का। सुंदर।

सुबुक रदा—(पु० फा०) लोहे का एक औजार।

सुबुद्धि—(स्त्री०स०) उत्तम बुद्धि।

सुबोध—(वि० स०) अच्छी बुद्धिवाला। जो कोई बात सहज में समझ सके।

सुभट—(पु० स०) महान् योद्धा। अच्छा सैनिक।

सुभाषित—(वि०) अच्छी तरह कहा हुआ।

सुभीता—(पु० देश०) सुगमता। आसानी। सुअवसर। आराम। चैन।

सुभूषित—(वि० स०) भली भाँति। अलंकृत।

सुम—(पु० फा०) टाप। खुर।

सुमति—(पु० स०) सुबुद्धि।

सुमार्ग—(पु० स०) अच्छा रास्ता। सन्मार्ग।

सुमुखी—(स्त्री० स०) सुंदर मुखवाली स्त्री।

सुयश—(पु० स०) अच्छा यश। सुकीर्ति।

सुयोग—(पु० स०) संयोग। सुअवसर। अच्छा मौका।

सुरंग—(वि० स०) सुंदर रंग का। ज़मीन के अंदर का रास्ता। किले या दीवार

बड़ा व्यापारी। धनी मनुष्य। क्षत्रियों की एक जाति।

सेतु—(पु० स०) पुल। सीमा।

सेतुआ—(पु० हि०) भुने हुये जौ चने का आटा।

सेना—(स्त्री० स०) फौज। पलटन। सेनानी=सेनापति। फौज का अफ़सर। —पति= फौज का अफसर।

सनेट—(स्त्री० अ०) कानून बनानेवाली सभा। विश्व विद्यालय की प्रबन्धकारिणी सभा। सेनेटर=क़ानून बनाने वाला।

सेव—(पु० फा०) एक फल।

सेम—(स्त्री० हि०) एक तरकारी।

सेमल—(पु० हि०) एक पेड़।

सेमिटिक—(पु० अ०) मनुष्यों का वर्ग विभाग।

सेमीकोलन—(पु० अ०) एक विराम चिह्न।

सेर—(पु० हि०) एक तौल। मन का चालीसवाँ भाग। (वि० फ़ा०) तृप्त।

सेवक—(पु० स०) सेवा करने वाला। नौकर। भृत्य।

सेवती—(स्त्री० स०) सफेद गुलाब। चैती गुलाब।

सेवा—(स्त्री० स०) खिदमत। टहल। नौकरी। उपासना। —टहल=खिदमत।

सेवार—(स्त्री० हि०) पानी में फैलनेवाली एक घास। मिट्टी की तहें जो किसी नदी के आसपास जमी हों।

सेविंग बंक—(पु० अ०) वह बैंक जो थोड़ी थोड़ी रकमें ब्याज पर ले।

सेविका—(स्त्री० स०) दासी।

सेवी—(वि० हि०) सेवा करने वाला।

सेशन—(पु० अ०) लगातार कुछ दिन चलनेवाली बैठक। दौरा अदालत। —कोर्ट=दौरा अदालत। —जज=दौरा जज।

सेहत—(स्त्री० अ०) रोग से छुटकारा। —खाना=पेशाब आदि करने और नहाने धोने

के लिये जहाज पर बनी हुई एक छोटी सी कोठरी।

सेहरा—(पु० हि०) विवाह का मुकुट। मौर।

सेहुआँ—(पु०) एक प्रकार का चर्म रोग।

सैतना—(क्रि० हि०) सीपना।

सैपुल—(पु० अ०) नमूना।

सैकड़ा—(पु० हि०) सौ का समूह।

सैकड़े—(क्रि० वि० हि०) प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत।

सैकड़ों—(वि० हि०) कई सौ। बहु संख्यक। गिनती में बहुत।

सैकल—(पु० अ०) हथियारों को साफ करने और उनपर सान चढ़ाने का काम। —गर= सान धरनेवाला। सिकलीगर।

सैनिक—(पु० स०) सेना या फौज का आदमी। सिपाही। संतरी। प्रहरी। (वि०) सेना सबंधी। सेना का।

सैन्य—(पु० स०) सैनिक।

सैफ—(स्त्री० अ०) तलवार।

सैयद—(पु० अ०) मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। मुसलमानों की एक जाति।

सैर—(स्त्री० फ़ा०) मन बहलाने के लिये घूमना फिरना। —गाह=सैर करने की जगह।

सैला—(पु० हि०) लकड़ी जो बैल की गरदन में जुवे को फँसाये रखती है।

सैलानी—(वि० फा०) मनमाना घूमनेवाला। आनंदी। मन-मौजी।

सैलाब—(पु० फ़ा०) बाढ़।

सोचर नमक—(पु० हि०) एक प्रकार का नमक।

सोटा—(पु० हि०) मोटी छड़ी। लाठी। भंग घोंटने का मोटा डंडा।

सोंठ—(स्त्री० हि०) सुखाया हुआ अदरक।

सोआ—(पु० हि०) एक साग।

सोक—(पु० देश०) चारपाई के

बुनावट का वह छेद जिसमें से रस्सी या निवार निकालकर कसते हैं।

सोरखना—(क्रि॰ हि॰) शोषण करना। सुखा डालना। पीना।

सोरता—(पु॰ फ़ा॰) स्याही सोख।

सोच—(पु॰ हि॰) चिंता। फ़िक्र। पछतावा। —ना=विचार करना। ग़ौर करना। चिंता करना। दुःख करना। —विचार=समझ-बूझ। ग़ौर।

सोजन—(पु॰ फ़ा॰) सूई। काँटा।

सोज़िश—(स्त्री॰ फ़ा॰) सूजन। शोथ।

सोडा—(पु॰ अ॰) एक प्रकार का क्षार पदार्थ। —वाटर=सोडे से बनाया हुआ पाचक पानी।

सोता—(पु॰ हि॰) झरना। चश्मा।

सोनजुही—(स्त्री॰ हि॰) पीली जूही।

सोना—(पु॰ हि॰) एक बहुमूल्य धातु। स्वर्ण। शरीर के किसी अंग का सुन्न होना। बहुत महँगी चाल। अत्यंत सुंदर वस्तु। नींद लेना। —मक्खी=एक खनिज पदार्थ।

सोप—(पु॰ अ॰) साबुन।

सोफ़ियाना—(वि॰ अ॰) सूफ़ियों का सा जो देखने में सादा पर बहुत अच्छा लगे।

सोमवार—(पु॰ सं॰) चंद्रवार।

सोरठा—(पु॰ हि॰) एक छंद, जो सौराष्ट्र (सोरठ) देश में अधिक प्रचलित है।

सोलह—(पु॰ हि॰) दस और छ की संख्या। —सिंगार=पूरा सिंगार।

सोशल—(वि॰ अ॰) समाज संबंधी। सामाजिक। सोशलिज़्म=साम्यवाद। सोशलिस्ट=साम्यवादी।

सोसन—(पु॰ फ़ा॰) फ़ारस का एक पौधा।

सोसाइटी, सोसायटी—(स्त्री॰ अ॰) समाज। गोष्ठी।

सोहगैला—(पु० हि०) सिंदूर रखने की डिबिया। सिंदूरा।

सोहारहलवा—(पु० हि०) एक मिठाई।

सोहबत—(स्त्री० अ०) संग। साथ। संगत। समागम।

सोहर—(पु० हि०) एक प्रकार का गीत जिसे घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। सोहला।

सौंदर्य—(पु० सं०) सुंदरता। खूबसूरती।

सौंपना—(क्रि० स० हि०) समर्पण करना। जिम्मे करना। सहेजना।

सौंफ—(स्त्री० हि०) एक पौधा।

सौ—(हि०) नब्बे और दस।

सौगंद, सौगंध—(स्त्री० हि०) शपथ। क़सम।

सौगात—(स्त्री० तु०) भेंट। उपहार।

सौजन्य—(पु० सं०) भलमनसाहत।

सौत—(स्त्री० के पति को दूसरी स्त्री या प्रेमिका। सवत।

सौतेला—(वि० हि०) सौत से उत्पन्न।

सौदा—(पु० अ०) वह चीज जो खरीदी या बेची जाती हो। लेन देन। व्यापार। पागलपन। —ई=पागल। —गर =व्यापारी। —गरी= तिजारत। रोजगार।

सौभाग्य—(पु०सं०) खुशनसीबी। सुहाग। ऐश्वर्य। —वती= सधवा। सुहागिन। अच्छे भाग्यवाली। —वान्=सुखी और संपन्न। खुशहाल।

सौम्य—(वि० सं०) शांत। नम्र। सुंदर।

सौरभ—(पु० सं०) सुगंध। खुशबू।

सौर मास—(पु० सं०) उतना काल जितने तक सूर्य किसी एक राशि में रहे।

सौर वर्ष—(पु० सं०) उतना काल जितना सूर्य को बारह

राशियों पर घूम आने में लगता है।

स्कालर—(पु० अ०) वह जो स्कूल में पढ़ता हो। छात्र। विद्यार्थी। उच्च कोटि का विद्वान्।—शिप=छात्रवृत्ति। वज़ीफ़ा।

स्कीम—(स्त्री० अ०) योजना।

स्कूल—(पु० अ०) मदरसा। विद्यालय।—मास्टर=स्कूल में पढ़ानेवाला। शिक्षक। स्कूली=स्कूल का।

स्क्रू—(पु० अ०) पेंच।—ड्राइवर=पेच खोलनेवाला।

स्खलित—(वि० सं०) गिरा हुआ। वीर्य का गिरना।

स्टाम्प—(पु० अ०) एक प्रकार का सरकारी कागज़। डाक का टिकट। मोहर। छाप।

स्टाइल—(स्त्री० अ०) ढंग। तरीका। शैली। पद्धति। लेखन शैली।

स्टाक—(पु० अ०) बिक्री या बेचने का माल। सरकारी कर्ज की हुंडी। रसद। सामान। भंडार। गुदाम।—एक्सचेंज=(पु० अ०) वह मकान या स्थान जहाँ स्टाक या शेयर खरीदे और बेचे जाते हों। स्टाक का काम करनेवालों या दलालों की संघटित सभा।—ब्रोकर=वह दलाल जो दूसरों के लिये स्टाक या शेयरों की खरीद बिक्री का काम करता हो।

स्टिचिंग मशीन—(स्त्री० अ०) लोहे के तारों से किताब सीने की कल।

स्टीम—(पु० अ०) भाप।—एंजिन=वह एंजिन जो भाप के ज़ोर से चलता हो। स्टीमर=भाप या स्टीम के ज़ोर से चलनेवाला जहाज।

स्टूल—(पु० अ०) तिपाई।

स्टेज—(पु० अ०) रंगमंच।—मैनेजर=रंगमंच का प्रबंधक।

स्टेट—(पु० अ०) रियासत। स्टेट्समैन = राजकाज में निपुण आदमी।

स्टार्मेट—(अ०) बयान।

स्टेशन—(पु० अ०) रेलगाड़ियों के ठहरने और उन पर मुसाफिरों के उतरने चढ़ने के लिये बना हुआ जगह।

स्तंभ—(पु० सं०) खम्भा। थूनी।

स्तन—(पु० सं०) स्त्रियों या मादा पशुओं का छाती जिसमें दूध रहता है। —पान=स्तन का दूध पीना।

स्तब्ध—(वि० सं०) निश्चेष्ट। सुन्न। हठी।

स्तर—(पु० सं०) तह। परत।

स्तव—(पु० सं०) स्तुति। स्तोत्र। ईश प्रार्थना।

स्तवक—(पु० सं०) फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। अध्याय। परिच्छेद।

स्तुति—(स्त्री० सं०) गुणकीर्तन। प्रशंसा। —पाठक=स्तुतिपाठ या प्रशंसा करनेवाला। भाट। चारण।

स्तूप—(पु० सं०) मिट्टी आदि का ढेर। मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का बना हुआ ऊँचा धूह या टीला जिसके नीचे भगवान बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि दाँत, केश या इसी प्रकार के अन्य स्मृति चिह्न सुरक्षित हों।

स्तोत्र=(पु० सं०) स्तव। स्तुति।

स्त्री—(स्त्री० सं०) नारी। औरत। पत्नी। मादा। —गमन=सम्भोग। मैथुन। —चोर=स्त्रीचर। —धन=वह धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो। —धर्म=स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन।

स्थगित—(वि० सं०) मुलतवी।

स्थपति—(पु० सं०) बढ़ई।

स्थल—(पु० सं०) जगह। ज़मीन। स्थली=स्थान।

स्थान—(पु० सं०) जगह। ओहदा। स्थानान्तरित=जो एक जगह से दूसरी जगह पर भेजा या पहुँचाया गया हो। स्थानिक=उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख

हो। स्थानीय=मुक़ामी। (अ०) ख़ाकस।

स्थापक—(वि० स०) क़ायम करनेवाला। प्रतिष्ठाता।

स्थापत्य—(पु० स०) भवन निर्माण। राजगीरी।

स्थापन—(पु० स०) खड़ाकरना। नया काम जारी करना। स्थापना=प्रतिष्ठित या स्थित करना। बैठना। स्थापित=जिसकी स्थापना की गई हो। रक्षित। व्यवस्थित। ठहरा हुआ।

स्थायी—(वि० स०) ठहरने वाला। टिकाऊ। स्थित। —भाव=साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक।

स्थावर—(वि० स०) अचल। स्थिर। स्थायी।

स्थित—(वि० स०) क़ायम। अवलंबित। वर्तमान। मौजूद। स्थिति=ठहराव। निवास। दशा। हालत। अस्तित्व। मौक़ा।

स्थिर—(वि० स०) निश्चल। शांत। दृढ़। अटल। —ता=ठहराव। निश्चलता। मज़बूती। धीरता। धैर्य।

स्थूल—(वि० स०) मोटा। —ता=मोटापन।

स्नातक—(पु० स०) वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर स्नान करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो।

स्नान—(पु० स०) नहाना। —शाला=नहाने का कमरा या कोठरी। गुसलख़ाना।

स्नायविक—(वि० स०) स्नायु संबंधी। स्नायु का।

स्नायु—(स्त्री० स०) शरीर के अंदर की वायुवाहिनी नसें।

स्निग्ध—(वि० स०) चिकना। —ता=चिकनापन।

स्नेह—(पु० स०) प्रेम। प्यार। तेल। कोमलता। —पात्र=प्रेमपात्र। —पान=वैद्यक के अनुसार एक प्रकार की क्रिया। स्नेही=प्रेमी। मित्र।

स्पंज—(पु० अ०) मुरदा बादल।

स्पंदन—(पु० स०) फड़कना।

स्पर्द्धा—(स्त्री० सं०) होड़। बराबरी।

स्पर्श—(पु० सं०) छूना। स्पर्शी=छूनेवाला।

स्पष्ट—(वि० सं०) साफ़। स्वच्छ। —बयान=साफ साफ़ कहना। —तया=स्पष्ट रूप से साफ़, साफ़। —ता=सफ़ाई। —वक्ता=साफ़ साफ़ बोलनेवाला। —वादी=स्पष्टवक्ता। स्पष्टीकरण=स्पष्ट करने की क्रिया।

स्पिरिट—(स्त्री० अ०) आत्मा। रूह। जीवन शक्ति। एक प्रकार का मादक द्रव पदार्थ। शराब।

स्पीच—(स्त्री० अ०) व्याख्यान। लेक्चर। वक्तृता।

स्पृहा—(स्त्री० सं०) इच्छा। कामना।

स्पेशल—(वि० अ०) ख़ास। —ट्रेन=वह रेलगाड़ी जो किसी विशिष्ट कार्य्य, उद्देश्य के लिये चले।

स्प्रिंग—(स्त्री० अ०) कमानी। —दार=कमानीदार।

स्प्रिचुअलिज़्म—(पु० अ०) भूतविद्या। आत्मविद्या।

स्प्लिंट—(पु० अ०) पट्टी। पटरा।

स्फटिक—(पु० सं०) एक प्रकार का पत्थर। बिल्लौर।

स्फुट—(वि० सं०) फुटकर। अलग अलग।

स्फूर्त्ति—(स्त्री० सं०) फड़कना। उत्तेजना। फुरती। तेज़ी। उमंग।

स्फोट—(पु० सं०) फूटना।

स्मरण—(पु० सं०) याद आना। —पत्र=किसी का स्मरण दिलाने के लिये लिखा हुआ पत्र। —शक्ति=याद रखने की शक्ति। स्मरणीय=याद रखने लायक़। स्मारक=यादगार।

स्मित—(पु० सं०) मंद हास्य। धीमी हँसी।

स्मृति—(स्त्री० सं०) याद। हिंदुओं के धर्म शास्त्र।

स्यदन—(पु० सं०) रथ।

स्यापा—(पु० फ़ा०) मरे हुए मनुष्य के लिये शोक मनाने की रीति।

स्याहा—(पु० फ़ा०) रोज़नामचा। बही खाता।

स्याही—(स्त्री० फ़ा०) रोशनाई। कालिख।

स्रोत—(पु० हि०) झरना। धारा।

स्लीपर—(पु० अ०) एक प्रकार की जूती। चट्टी। लकड़ी का लंबा टुकड़ा जो प्रायः रेल की पटरियों के नीचे बिछा रहता है।

स्लेज—(स्त्री० अ०) एक बिना पहिए की गाड़ी जो बरफ़ पर घसिटती हुई चलती है।

स्लेट—(स्त्री० अ०) लिखने के लिये पत्थर की पतली पटरी।

स्लो—(वि० अ०) सुस्त।

स्वगत—(पु० सं०) नाटक में पात्र का आप ही आप बोलना।

स्वच्छंद—(वि० सं०) स्वाधीन। स्वतंत्र। मनमाना काम करने वाला। —ता=स्वतंत्रता। आज़ादी।

स्वच्छ—(वि० सं०) निर्मल। साफ़। स्पष्ट। पवित्र। निष्कपट। —ता=सफ़ाई।

स्वजाति—(स्त्री० सं०) अपनी जाति।

स्वतंत्र—(वि० सं०) स्वाधीन। आज़ाद। अलग। —ता=स्वाधीनता। आज़ादी।

स्वतः—(अव्य० सं०) अपने आप। आप ही।

स्वत्व—(पु० सं०) अधिकार। हक़।

स्वदेश—(पु० सं०) मातृभूमि। वतन। स्वदेशी=अपने देश का। अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

स्वधर्म—(पु० सं०) अपना धर्म। अपना कर्त्तव्य। कर्म।

स्वप्न—(पु० सं०) निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। सपना। मन में उठने वाली ऊँची कल्पना या विचार। ख़्वाब। —दोष=

निद्रावस्था में वीर्यपात होना।

[स्व]भाव—(पु० सं०) तासीर। मिज़ाज। प्रकृति। आदत। बान। —तः = सहज ही।

[स्व]स्थ—(वि० सं०) नीरोग। तंदुरुस्त।

[स्व]ाँग—(पु० हि०) भेस। रूप। मज़ाक का खेल या तमाशा। धोखा देने का बनाया हुआ कोई रूप।

स्वागत—(पु० सं०) अगवानी। अभ्यर्थना। —कारिणी सभा = किसी सभा में आने वालों के लिये प्रबन्ध करने वाली समिति। (अं०) रिसेप्शन कमिटी।

स्वातन्त्र्य—(पु० सं०) स्वाधीनता। आज़ादी।

स्वाद—(पु० सं०) ज़ायक़ा। आनन्द।

स्वास्थ्य—(पु० सं०) नीरोगता। तंदुरुस्ती।

स्वीकार—(पु० सं०) अंगीकार। क़बूल। मंज़ूर। स्वीकृत = स्वीकार [किया हुआ]। क़बूल किया हुआ। स्वीकृति = मंज़ूरी। सम्मति। रज़ामंदी।

स्वेच्छा—(स्त्री० सं०) अपनी इच्छा। अपनी मर्ज़ी। स्वेच्छाचारिता = निरंकुशता। स्वेच्छाचारी = मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।

स्वामी—(पु० सं०) मालिक। प्रभु। घर का प्रधान पुरुष। पति। शौहर। राजा। साधु संन्यासियों की उपाधि। स्वामिनी = मालकिन। गृहिणी।

स्वार्थ—(पु० सं०) अपना मतलब। —त्याग = किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना। —परता = खुदग़र्ज़ी। —परायण = स्वार्थी। खुदग़रज़। —साधक = अपना मतलब साधनेवाला। खुदग़रज़।

स्वादु—(पु० सं०) ज़ायक़ेदार।

स्वाधीन—(वि० सं०) आज़ाद।

स्यापा—(पु० फ़ा०) मरे हुए मनुष्य के लिये शोक मनाने की रीति।

स्याहा—(पु० फ़ा०) रोज़ नामचा। बही खाता।

स्याही—(स्त्री० फ़ा०) रोशनाई। कालिख।

स्रोत—(पु० हि०) झरना। धारा।

स्लीपर—(पु० अं०) एक प्रकार की जूती। पट्टा। लकड़ी का लंबा टुकड़ा जो प्राय रेल की पटरियों के नीचे बिछा रहता है।

स्लेज—(स्त्री० अं०) एक बिना पहिए की गाड़ी जो बरफ पर घसिटती हुई चलती है।

स्लेट—(स्त्री० अं०) लिखने के लिए पत्थर की पतली पटरी।

स्लो—(वि० अं०) सुस्त।

स्वगत—(पु० सं०) नाटक में पात्र का आप ही आप बोलना।

स्वच्छंद—(वि० सं०) स्वाधीन। स्वतंत्र। मनमाना काम करने वाला। —ता=स्वतंत्रता। आज़ादी।

स्वच्छ—(वि० सं०) निर्मल। साफ़। स्पष्ट। पवित्र। निष्कपट। —ता=सफ़ाई।

स्वजाति—(स्त्री० सं०) अपनी जाति।

स्वतंत्र—(वि० सं०) स्वाधीन। आज़ाद। अलग। —ता= स्वाधीनता। आज़ादी।

स्वतः—(अव्य० सं०) अपने आप। आप ही।

स्वत्व—(पु० सं०) अधिकार। हक़।

स्वदेश—(पु० सं०) मातृभूमि। वतन। स्वदेशी=अपने देश का। अपने देश में उपजा या बना हुआ।

स्वधर्म—(पु० सं०) अपना धर्म। अपना कर्तव्य। कर्म।

स्वप्न—(पु० सं०) निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। सपना। मन में उठने वाली ऊँची कल्पना या विचार। ख़्वाब। —दोष=

निद्रावस्था में वीर्यपात होना।
स्वभाव—(पु० सं०) तासीर। मिज़ाज। प्रकृति। आदत। बान। —त =सहज ही।
स्वस्थ—(वि० सं०) नीरोग। तन्दुरुस्त।
स्वाँग—(पु० हि०) भेस। रूप। मज़ाक या खेल या तमाशा। धोखा देने को बनाया हुआ कोई रूप।
स्वागत—(पु० सं०) अगवानी। अभ्यर्थना। —कारिणी सभा=किसी सभा में आने वालों के लिये प्रबन्ध करने वाली समिति। (अं०) रिसेप्शन कमिटी।
स्वातन्त्र्य—(पु० सं०) स्वाधीनता। आज़ादी।
स्वाद—(पु० सं०) ज़ायक़ा। आनन्द।
स्वास्थ्य—(पु० सं०) नीरोगता। तन्दुरुस्ती।
स्वीकार—(पु० सं०) अंगीकार।

किया हुआ। स्वीकृति= मंज़ूरी। सम्मति। रज़ामंदी।
स्वेच्छा—(स्त्री० सं०) अपनी इच्छा। अपनी मर्ज़ी। स्वेच्छाचारिता=निरंकुशता। स्वेच्छाचारी=मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।
स्वामी—(पु० सं०) मालिक। प्रभु। घर का प्रधान पुरुष। पति। शौहर। राजा। साधु सन्यासियों की उपाधि। स्वामिनी = मालकिन। गृहिणी।
स्वार्थ—(पु० सं०) अपना मतलब। —त्याग=किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना। —परता=खुदग़रज़ी। —परायण=स्वार्थी। खुदग़रज़। —साधक=अपना मतलब साधनेवाला। खुदग़रज़।
स्वादु—(पु० सं०) ज़ायक़ेदार।

स्वतंत्र। मनमाना काम करनेवाला।
—ता=आज़ादी।

स्वाध्याय—(पु० सं०) वेदाध्ययन। अध्ययन।

स्वाभाविक—(वि० सं०) प्राकृतिक। कुदरती।

स्वामित्व—(पु० सं०) प्रभुता।

स्वराज्य—(पु० सं०) अपना राज्य।

स्वराष्ट्र—(पु० सं०) अपना राष्ट्र या राज्य।

स्वरूप—(पु० सं०) आकार। शक्ल। (अव्य०) तौर पर। रूप में।

स्वर्ग—(पु० सं०) बैकुंठ। —गामी=मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय। —वासी=स्वर्ग में रहनेवाला। जो मर गया हो। मृत। स्वर्गीय=स्वर्ग का। जो मर गया हो। मरहूम।

स्वयं—(अव्य० सं०) खुद। आप। आप से आप। खुद बखुद। —वर=कन्या के स्वयं वर चुन लेने की प्राचीन प्रथा। —सेवक=स्काउट।

स्वर—(पु० सं०) कंठ से निकलने वाला शब्द। वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार चढ़ाव। —भंग=आवाज़ का बैठना।

स्वर्ण—(पु० सं०) सोना। सुवर्ण।

स्वल्प—(वि० सं०) बहुत थोड़ा। बहुत कम।

स्ववश—(वि० सं०) जो अपने वश में हो। जितेंद्रिय।

स्वस्ति—(अव्य० सं०) कल्याण हो। मंगल हो। (स्त्री०) कल्याण। मंगल। सुख। —क=प्राचीनकाल का एक प्रकार का यंत्र। एक प्राचीन मंगल चिह्न। —वाचन=एक प्रकार का धार्मिक कृत्य।

स्वेच्छासेवक—(पु० सं०) स्वयंसेवक।

स्वेद—(पु० सं०) पसीना।

ह—हिन्दी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यंजन ।

हंगामा—(पु० फ़ा०) उपद्रव । हलचल । शोरगुल ।

हंटर—(पु० अं०) लंबा चाबुक । कोड़ा ।

हंडा—(पु० हि०) पीतल या ताँबे का बड़ा बरतन ।

हँडिया—(स्त्री० हि०) मिट्टी का बड़ा लोटा । हाँडी ।

हंस—(पु० सं०) एक जलपक्षी । शुद्ध आत्मा ।

हँसना—(क्रि० अ० हि०) खिलखिलाना । हँसाना=दूसरे को हँसाने में प्रवृत्त करना । हँसी =हास । मज़ाक । दिल्लगी । विनोद । अनादर सूचक हास । उपहास । बदनामी ।

हँसमुख—(वि० हि०) प्रसन्न-वदन । हास्यप्रिय ।

हँसली—(स्त्री० हि०) छाती के ऊपर की धनुषाकार हड्डी ।

[illegible]

हँसिया—(पु० हि०) एक औज़ार ।

हक़—(वि० अ०) वाजिब । उचित । स्वत्व । अधिकार । इख़्तियार ।—परस्त=ईश्वर भक्त । सत्य प्रेमी ।—दार= स्वत्व या अधिकार रखनेवाला । —नाहक़ = ज़बरदस्ती । व्यर्थ । फ़ज़ूल ।—मालिकाना =किसी चीज़ या जायदाद के मालिक का हक़ ।—मौरूसी =वह हक़ जो बाप दादों से चला आता है ।—शफ़ा= किसी ज़मीन को ख़रीदने का औरों से अधिक हक़ या स्वत्व । हक़ीयत=अधिकार । स्वत्व । हक़ूक़—हक़ का बहु वचन ।

हक़ीक़त—(स्त्री० अ०) सचाई । असलियत । ठीक बात । तथ्य । असल हाल ।

हक़ीक़ी—(वि० अ०) खास अपना । सगा ।

हकीम—(पु० अ०

वैद्य। चिकित्सक। हकीमी = यूनानी आयुर्वेद। हकीम का पेशा या काम।

हक़ीर—(वि० अ०) तुच्छ।

हक्का बक्का—(वि० अनु०) भौचक। घबराया हुआ।

हज—(पु० अ०) मक्के की तीर्थ यात्रा।

हज़म—(पु० अ०) पाचन।

हज़रत—(पु० अ०) महात्मा। महापुरुष। महाशय। नटखट या खोटा आदमी।—सलामत —बादशाहों या नवाबों के लिये संबोधन का शब्द। बादशाह।

हज्जाम—(पु० अ०) हजामत बनानेवाला। नाई। हजामत =बाल बनाने का काम। बाल बनाने की मज़दूरी।

हज़ार—(वि० फा०) सहस्र। बहुत से। अनेक। दस सौ की संख्या। हजारहा = हजारों। सहस्रों। बहुत से। हजारा = फूल जिसमें हज़ार या बहुत अधिक पखड़ियाँ हों। सहस्र दल। फौवारा। एक प्रकार की आतिशबाज़ी। हज़ारी = एक हज़ार सिपाहियों का सरदार। हज़ारों = सहस्रों। बहुत से। अनेक।

हजो—(स्त्री० अ०) निन्दा। बुराई।

हटना—(क्रि० अ० हि०) खिसकना। टलना। पीछे सरकना। हटाना = खिसकाना। सरकाना। दूर करना।

हट्टा-कट्टा—(वि० हि०)हृष्ट पुष्ट। मज़बूत।

हठ—(पु० सं०) टेक। ज़िद। दुराग्रह। दृढ़ प्रतिज्ञा।—धर्मी = दुराग्रह। कट्टरपन —योग = योग की एक प्रकार की क्रिया जिसमें आसनों का विधान है। हठात् = ज़बरदस्ती से। बलात्। ज़रूर। हठी = ज़िद्दी। टेकी। हठीला = हठी ज़िद्दी। बात का पक्का।

हड—(स्त्री० हि०) एक पेड़ और उसका फल।

हडताल—(स्त्री०हि०) किसी बा

स अर्सतोष प्रगट करने के लिये दुकानदारों का दूकान बंद कर देना या काम करने वालों का काम बन्द कर देना।
हप—(वि० अनु०) निगला हुआ। गायब किया हुआ। उड़ाया हुआ। —ना=खा जाना। गायब करना। उड़ा लेना।
हड़फूटन—(स्त्री० हि०) हड्डियों की पीड़ा।
हड़बड़—(स्त्री० अनु०) जल्द बाज़ी। हड़बड़ाना=जल्दी करना। आतुर होना। हड़बड़िया=जल्दबाज। उतावला। हड़बड़ी=जल्दी। घबड़ाहट।
हड़ा—(पु० हि०) भिड़। बर्रे। सतैया।
हड्डी—(स्त्री० हि०) अस्थि।
हतक—(स्त्री० अ०) बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। —इज्जती=मान हानि। बेइज्जती।
हताश—(वि० सं०) निराश। नाउम्मीद।
हताहत—(वि० सं०) मारे गए और घायल।
हतोत्साह—(वि० सं०) ना-उम्मीद।
हत्था—(पु० हि०) दस्ता। मूठ।
हत्थे—(क्रि० वि० हि०) हाथ में।
हत्या—(स्त्री० सं०) वध। खून। झंझट। हत्यारा=हत्या करने वाला। हत्यारी=हत्या करने वाली। हत्या का पाप।
हथउधार—(पु० हि०) वह क़र्ज़ जो थोड़े दिनों को बिना लिखा पढ़ी के लिया जाय।
हथकंडा—(पु० हि०) हाथ की सफ़ाई। हस्त कौशल। गुप्त चाल।
हथकड़ी—(स्त्री० हि०) डोरी से बँधा हुआ लोहे का कड़ा जो क़ैदी के हाथ में पहना दिया जाता है।
हथछुट—(वि० हि०) जिसको मार बैठने की आदत हो।
हथवाँस—(पु० हि०) नाव चलाने के सामान।

हथिनी—(स्त्री० हि०) हाथी की मादा।

हथियाना—(क्रि० हि०) अधिकार में करना। ले लेना। उड़ा लेना। हाथ में पकड़ना।

हथियार—(पु० हि०) औज़ार। अस्त्र-शस्त्र। —बंद=सशस्त्र।

हथेली—(स्त्री०हि०)हाथकीगद्दी। करतल। चरखे का मुठिया।

हथौटी—(स्त्री० हि०) हस्त-कौशल।

हथौड़ा—(पु० हि०) मारतौल। काल ठोंकने, खूँटे गाड़ने आदि का औज़ार। हथौड़ी= छोटा हथौड़ा।

हद—(स्त्री० अ०) सीमा। मर्यादा। —समाअत= वह मुकरर वक्त जिसके भीतर अदालत में दावा करना चाहिये। —सियासत= किसी न्यायालय के अधिकार की सीमा।

हदीस—(स्त्री० अ०) मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ।

हनफी—(पु० अ०) मुसलमानों में सुन्नियों का एक सम्प्रदाय।

हनोज़—(अव्य० फ़ा०) अभी। अभी तक।

हफ़्त—(फ़ा०) सात।

हफ़्ता—(पु० फ़ा०) सप्ताह।

हफ़्ती—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की जूता।

हबशी—(पु० फ़ा०) हबश देश का निवासी।

हबाब—(अ०) पानी का बुलबुला।

हब्बा—(अ०) दाना। गोली। रत्ती का वज़न।

हब्बा डब्बा—(पु० हि०) बच्चों की एक बीमारी।

हबीब—(अ०) माशूक़। दोस्त। प्रेमी।

हब्बुल् आस—(पु० अ०) एक प्रकार की मेहँदी।

हब्स—(पु० अ०) क़ैद। कारावास। —बेजा=अनुचित रीति से बंदी करना।

हम—(सर्व० हि०) "मैं" का बहुवचन। (अव्य० फ़ा०) साथ। संग। समान। तुल्य।

—ज़बान=एक ही भाषा के बोलनेवाले। —पेशा=सम व्यवसायी। —बिस्तर=एक बिस्तरे पर सोना। —असर=वे जिन पर एक ही प्रकार का प्रभाव पड़ा हो। —जिंस=एक ही वर्ग या जाति के प्राणी। —जोली=साथी। सखी। —दम=साथी। मित्र। —दर्द=दुःख का साथी। —दर्दी=सहानुभूति। —निवाला=एक साथ बैठकर भोजन करने वाला। —ख़याल=सहमत। —राह=साथ में। हमराही=साथी। —वतन=एक ही प्रदेश के रहनेवाले। देश भाई। —मकतब=सहपाठी। —सर=जोड़ का आदमी। —सरी=बराबरी। —राज़=मित्र। दोस्त। —साया=पड़ोसी।

(पु० अ०) गर्भ।

—(पु० अ०) चढ़ाई। आक्रमण। प्रहार।

हमशीर—(फ़ा०) सगा [illegible]। (सं०) [illegible]।

हमराज़—(वि० फ़ा०) [illegible]।

हमारा—(सर्व० हि०) हम का सम्बन्धकारक रूप।

हमाल—(पु० अ०) बोझ उठाने वाला। कुली।

हमें—(सर्व० हि०) हमको।

हमेल—(स्त्री० अ०) एक गहना।

हमेशा—(अव्य० फ़ा०) सदा। सर्वदा।

हम्माम—(पु० अ०) स्नानागार।

हया—(स्त्री० अ०) लज्जा। शर्म। लाज। —दार=शर्मदार। लज्जाशील। —दारी=लज्जाशीलता।

हयात—(स्त्री० अ०) ज़िंदगी। जीवन।

हर—(वि० सं०) ले जानेवाला। नाश करनेवाला। हटानेवाला। भाजक (गणित)। प्रत्येक। —सू=हर तरफ़।

हरकत—(स्त्री० अ०) गति। चाल। बुरी

हरकारा—(फा०) खबर लाने वाला।

हरगाह—(फा०) जब कभी।

हरगिज़—(अव्य० फा०) कदापि। कभी।

हरचन्द—(अव्य० फा०) कितना ही। बहुत बार। यद्यपि। अगरचे।

हरज—(पु० अ०) बाधा। अड़चन। हानि। नुक़सान।

हरजा—(पु० अ०) अड़चन। बाधा। नुक़सान। हरजाना = नुक़सान पूरा करना। हानि के बदले में दिया जानेवाला धन।

हरजाई—(पु० फा०) हर जगह घूमनेवाला। आवारा। (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

हरताल—(स्त्री० हि०) एक खनिज पदार्थ।

हरफ़—(पु० अ०) अक्षर। वर्ण। (पु० अ०) ज़नानखाना। ...=अन्त पुर। रनवास।

हरमज़दगी—(स्त्री० फा०) शरारत। नटखटी।

हरा—(वि० हि०) सब्ज़। ताज़ा। कच्चा। घास या पत्ती का सा रंग। हरित वर्ण।

हराना—(क्रि० हि०) परास्त करना। पराजित करना। थकाना।

हराम—(वि० अ०) निषिद्ध। बुरा। अनुचित। वर्जित। बेईमानी। व्यभिचार। —खोर = पाप की कमाई खानेवाला। मुफ़्तखोर। आलसी। —ज़ादा = दोगला। वर्णसंकर। बदमाश। दुष्ट। हरामी = पाजी।

हरारत—(स्त्री० अ०) गर्मी ताप। हलका ज्वर।

हरास—(पु० फा०) डर आशंका। खटका।

हरिण—(पु० सं०) मृग। हिरन हरिणी = मादा हिरन। हरि = मृग। हरिण। हरिनी = मादा। हिरन।

हरियाली—(स्त्री० हि०) हरा हरापन।

हरी—(वि० हि०) सब्ज़।

हरीकेन—(पु० अ०) एक प्रकार का लालटेन।

हरीफ़—(पु० अ०) दुश्मन। शत्रु। विरोधी। प्रतिद्वंद्वी।

हरीस—(स्त्री० हि०) हल का एक भाग।

हरूफ़—(पु० अ०) अक्षर।

हर्ज—(पु० अ०) बाधा। अड़चन। हानि। नुकसान।

हर्फ़—(अ०) हरूफ़।

हर्बा—(अ०) लड़ाई का हथियार।

हर्रा—(पु० हि०) बड़ी जाति की हड़।

हर्सा—(पु० हि०) हल का लंबा लट्ठा।

हल्—(पु० सं०) शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।

हल—(पु० सं०) एक औज़ार जिससे ज़मीन जोती जाती है। हिसाब लगाना। किसी कठिन बात का निर्णय। —वाहा=हल जोतनेवाला।

हलकप—(पु० हि०) हलचल। आंदोलन। हड़कंप। चारों ओर फैली हुई घबराहट।

हलक़—(पु० अ०) गले की नली। कंठ।

हलकना—(क्रि० हि०) हिलोरें लेना। लहराना। हिलना।

हलका—(वि० हि०) जो तौल में भारी न हो। पतला। कम। तुच्छ। निश्चिंत। घटिया। पानी की हिलोर। लहर।

हलक़ा—(पु० अ०) मंडल। गोलाई। दल। झुंड। कई गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो।

हलचल—(स्त्री० हि०) खलबली। धूम। उपद्रव।

हलदी—(स्त्री० हि०) एक पौधा।

हलफ़—(पु० अ०) क़सम। सौगंध। —नामा=शपथ पत्र।

हलवा—(पु० अ०) एक प्रकार का मीठा भोजन। मोहनभोग। गीली और मुलायम चीज़।

हरकारा—(फा०) खबर लाने वाला।

हरगाह—(फ़ा०) जब कभी।

हरगिज़—(अव्य० फ़ा०) कदापि। कभी।

हरचन्द—(अव्य० फ़ा०) कितना ही। बहुत बार। यद्यपि। अगरचे।

हरज—(पु० अ०) बाधा। अड़चन। हानि। नुक़सान।

हरजा—(पु० अ०) अड़चन। बाधा। नुक़सान। हरजाना = नुक़सान पूरा करना। हानि के बदले में दिया जानेवाला धन।

हरजाई—(पु० फ़ा०) हर जगह घूमनेवाला। आवारा। (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

हरताल—(स्त्री० हि०) एक खनिज पदार्थ।

हरफ़—(पु० अ०) अक्षर। वर्ण।

हरम—(पु० [illegible]०) ज़नानख़ाना। —सरा = अन्तःपुर। रनवास।

हरमज़दगी—(स्त्री० फ़ा०) शरारत। नटखटी।

हरा—(वि० हि०) सब्ज़। ताज़ा। कच्चा। घास या पत्ती का सा रंग। हरित वर्ण।

हराना—(क्रि० हि०) पराजित करना। पराजित करना। थकाना।

हराम—(वि० अ०) निषिद्ध। बुरा। अनुचित। वर्जित। बेईमानी। व्यभिचार। —ख़ोर = पाप की कमाई खानेवाला। मुफ़्तख़ोर। आलसी। —ज़ादा = दोगला। वर्णसंकर। बदमाश। दुष्ट। हरामी = पाजी।

हरारत—(स्त्री० अ०) गर्मी। ताप। हलका ज्वर।

हरास—(पु० फ़ा०) डर। आशंका। खटका।

हरिण—(पु० सं०) मृग। हिरन। हरिणी = मादा हिरन। हरिन = मृग। हरिण। हरिनी = मादा। हिरन।

हरियाली—(स्त्री० हि०) हरा। हरापन।

हरी—(वि० हि०) सब्ज़।
हरीकेन—(पु० अं०) एक प्रकार की लालटेन।
हरीफ—(पु० अ०) दुश्मन। शत्रु। विरोधी। प्रतिद्वंद्वी।
हरीस—(स्त्री० हि०) हल का एक भाग।
हरूफ—(पु० अ०) अक्षर।
हर्ज—(पु० अ०) बाधा। अड़चन। हानि। नुकसान।
हर्द—(अ०) हल्दी।
हर्बा—(अ०) लड़ाई का हथियार।
हर्रा—(पु० हि०) बड़ी जाति की हड़।
हर्सा—(पु० हि०) हल का लंबा लट्ठा।
हल्—(पु० सं०) शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।
हल—(पु० सं०) एक औज़ार जिससे ज़मीन जोती जाती है। हिसाब लगाना। किसी कठिन बात का निर्णय। —वाहा=हल जोतनेवाला।
हलचल—(पु० हि०) हलचल। आन्दोलन। हलचल। चारों ओर फैली हुई घबराहट।
हलक़—(पु० अ०) गले की नली। कंठ।
हलकना—(क्रि० हि०) हिलोरें लेना। लहराना। हिलना।
हलका—(वि० हि०) जो तौल में भारी न हो। पतला। कम। तुच्छ। निश्चिन्त। घटिया। पानी की हिलोर। लहर।
हलक़ा—(पु० अ०) मंडल। गोलाई। वृत्त। झुंड। कई गाँवों या कस्बों का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो।
हलचल—(स्त्री० हि०) खलबली। धूम। उपद्रव।
हलदी—(स्त्री० हि०) एक पौधा।
हलफ़—(पु० अ०) कसम। सौगंध। —नामा=शपथ पत्र।
हलवा—(पु० अ०) एक प्रकार का मीठा भोजन। मोहनभोग। गीली और मुलायम चीज़।

हलवाइ=मिठाई बनाने और बेचनेवाला। हलवाइन=हलवाई की स्त्री।

हलाक—(वि० अ०) मारा हुआ। वध किया हुआ। नष्ट होना। हलाकत=हत्या। वध। मृत्यु। हलाकू=हलाक करनेवाला।

हलाल—(वि० अ०) जायज़। (पु०) वह जानवर जिसके खाने का निषेध न हो। —ख़ोर=हलाल की कमाई खानेवाला। मेहतर। भंगी। —ख़ोरी=हलालख़ोर की स्त्री। पाखाना उठाने या कूड़ा करकट उठानेवाली स्त्री। हलालख़ोर का काम। हलालख़ोर का भाव या धर्म।

हलाहल—(पु० सं०) महाविष।

हलीम—(वि० अ०) सीधा। शांत। एक प्रकार का खाना जो मुहर्रम में बनता है।

हल्ला—(पु० अनु०) शोरगुल। चिल्लाहट।

हवन—(पु० सं०) होम।

हवलदार—(पु० अ०+फ़ा०) फ़ौज का एक अफ़सर।

हवस—(स्त्री० अ०) कामना। चाह। तृष्णा।

हवा—(स्त्री० अ०) वायु। पवन। प्रसिद्धि। साख। —दार=जिसमें हवा आती, जाती हो।

हवाल—(पु०अ०) हाल। दशा। परिणाम। समाचार। संवाद।

हवाला—(पु० अ०) प्रमाण का उल्लेख। उदाहरण। मिसाल। ज़िम्मेदारी। सुपुर्दगी।

हवालात—(पु० अ०) नज़र बंद। हाजत। क़ैद।

हवास—(पु० अ०) इंद्रियाँ। चेतना।

हवि—(पु० हि०) हवन की वस्तु।

हवेली—(स्त्री० अ०) पक्का बड़ा मकान।

हशमत—(स्त्री० अ०) गौरव। बड़ाई। वैभव। ऐश्वर्य।

हसद—(पु० अ०) ईर्ष्या। डाह।

हसब—(अव्य० अ०) अनुसार। मुताबिक़।

हसरत—(स्त्री० अ०) रंज । अफ़सोस । शोक ।

हसीन—(वि० अ०) सुंदर । ख़ूबसूरत ।

हस्त—(सं०) हाथ ।—कौशल = हाथ की सफ़ाई । —क्षेप = किसी काम में हाथ डालना । दख़ल देना । —गत = प्राप्त । हासिल । हाथ में आया हुआ । —रेखा = हथेली में पड़ी हुई रेखायें ।—लिखित = हाथ का लिखा हुआ । —लिपि = हाथ की लिखावट । लेख । हस्ताक्षर = दस्तख़त । हस्ते = हाथ से । मारफ़त ।

हाँ—(अव्य० हि०) स्वीकृति सूचक शब्द । सम्मति-सूचक शब्द ।

हाँक—(स्त्री० हि०) किसी को बुलाने के लिये ज़ोर की पुकार । ललकार ।

हाँकना—(क्रि० हि०) बढ़ बढ़कर बोलना । जानवरों को चलाना । गाड़ी चलाना । चौपायों को किसी स्थान से हटाना । पंखा डिलाना ।

हाँडी—(पु० हि०) मिट्टी का मझोला बरतन । हँडिया ।

हाँफना—(क्रि० अनु०) शीघ्र श्वास लेना ।

हाँ, हा—(अव्य० हि०) रोकने का शब्द । स्वीकृति-सूचक शब्द ।

हा—(अव्य० सं०) शोक, भय, आश्चर्य या आह्लाद सूचक शब्द ।

हाइड्रोसील—(पु० अं०) अंड वृद्धि । फोते का बढ़ना ।

हाइफ़न—(पु० अं०) एक चिह्न ।

हाई—(अं०) ऊँचा । बड़ा । —कोर्ट = सबसे बड़ा न्याया लय । —स्कूल = अंगरेज़ी की बड़ी पाठशाला ।

हाइड्रोफोबिया—(पु० अं०) शरीर के भीतर एक प्रकार का व्याधि । जलातंक रोग ।

हाउस—(पु० अं०) घर । मकान । बड़ी दूकान । सभा । मंडली । —आफ़ कामन्स =

इंगलैंड की श्रामसभा। —श्राफ लार्ड्स=इंगलैंड की लार्ड सभा। —बोट=पानी पर रहने के लिये लकड़ी का तैरता हुआ मकान। —टैक्स=मकान का वार्षिक कर।

हाकिम—(पु० अ०) हुकूमत करनेवाला। शासक। हाकिमी=हुकूमत। शासन।

हॉकी—(पु० अं०) एक खेल।

हाजत—(स्त्री० अ०) ज़रूरत। आवश्यकता।

हाज़मा—(पु० अ०) पाचन क्रिया। पाचन शक्ति।

हाज़िम—(वि० अ०) भोजन पचानेवाला। पाचक।

हाज़िर—(वि० अ०) मौजूद। विद्यमान। प्रस्तुत। तैयार —जवाब=उत्तर देने में निपुण। —जवाबी=चटपट उत्तर देने की निपुणता। —बाश=सामने मौजूद रहने वाला। बराबर सेवा में रहने वाला। —बाशी=खुशामद।

हाजी—(पु० अ०) वह जो हज कर आया हो।

हाता—(पु० अ०) घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। प्रांत। हद।

हातिम—(पु० अ०) चतुर। कुशल। उस्ताद। अत्यंत उदार मनुष्य।

हाथ—(पु० हि०) कर। हस्त। बाहु से लेकर पंजे तक का भाग।

हाथा—(पु० हि०) दस्ता। एक औज़ार। —पाई=मुठभेड़। ऐसी लड़ाई जिसमें हाथ पैर चलाए जायँ।

हाथी—(पु० हि०) एक जंतु। गज। —खाना=फ़ीलखाना। —पाँव=एक रोग। —वान=फ़ीलवान। महावत।

हादसा—(पु० अ०) बुरी घटना। दुर्घटना।

हादी—(अ०) हिदायत करने वाला। मार्ग दर्शक।

हानि—(स्त्री० सं०) नाश। क्षय। नुक़सान। घाटा। टोटा।

रसों में एक। दिल्लगी। मज़ाक। हास्यास्पद = उपहास के योग्य। हास्योत्पादक हँसी उत्पन्न करने वाला। उपहास के योग्य।

हाहाकार—(पु० सं०) कुहराम।

हिंडोला—(पु० हि०) पालना। झूला।

हिंद—(पु० फ़ा०) हिंदोस्तान। भारतवर्ष।

हिंदवाना—(पु० फ़ा०) तरबूज़।

हिंदवी—(स्त्री० फ़ा०) हिंद या हिंदोस्तान की भाषा। पुरानी हिंदी भाषा।

हिंदी—(वि० फ़ा०) हिंदुस्तान का। भारतीय। हिंदुस्तान की भाषा।

हिंदुस्तान—(पु० फ़ा०) भारत वर्ष। भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग। युक्तप्रान्त। हिंदुस्तानी = हिंदुस्तान का। हिंदुस्तान संबंधी। भारत वासी। हिंदुस्तान की भाषा।

हिंदुस्थान—(पु० हि०) हिंदुस्तान। भारतवर्ष।

हिंदू—(पु० फ़ा०) भारतीय आर्य धर्म का अनुयायी।

हिंसक—(पु० सं०) हत्यारा। घातक।

हिंसा—(स्त्री० सं०) जीवों का मारना या सताना। हानि पहुँचाना। —कर्म = मारने या सताने का काम। हिंसात्मक = जिसमें हिंसा हो।

हिंस्र—(वि० सं०) हिंसा करने वाला। खूंखार।

हिआव—(पु० हि०) साहस। हिम्मत। दिलासा।

हिकमत—(स्त्री० अ०) विद्या। कला-कौशल। उपाय। चाल। पालिसी। किफ़ायत। वैद्यक। हिकमती = उपाय साधने-वाला। चतुर। चालाक।

हिकायत—(स्त्री० अ०) कथा। कहानी।

हिक्का—(स्त्री० सं०) हिचकी। शब्द का रुक-रुककर आना।

हिचकी—(स्त्री० अनु०) पेट की वायु का कंठ में धक्का देत

का बोलना। हिनहिनाना। हिनहिनाहट=घोड़े की बोली।

हिना—(स्त्री० अ०) मेंहदी।

हिपोक्रिट—(पु० अ०) कपटी। पाखंडी। हिपोक्रिसी=छल।

हिफाजत—(स्त्री० अ०) रक्षा। बचाव। देखरेख।

हिब्बा—(पु० अ०) दाना। दो जौ का एक तौल। दान। हिब्बानामा=दानपत्र।

हिम—(पु० सं०) पाला। बर्फ।

हिमाकत—(स्त्री० अ०) बेवकूफी। मूर्खता।

हिमामदस्ता—(पु० फा०) खरल और बट्टा।

हिमायत—(स्त्री० अ०) पक्षपात। समर्थन। मदद। हिमायती=तरफदारी।

हिमालय—(पु० सं०) भारतवर्ष का संसार के सब पहाड़ों से ऊँचा पहाड़।

हिम्मत—(स्त्री० अ०) साहस। बहादुरी। पराक्रम। हिम्मती=साहसी। दृढ़। बहादुर।

हियाव—(पु० हि०) साहस।

हिरन—(पु० हि०) हरिन। मृग।

हिरफत—(स्त्री० अ०) पेशा। व्यापार। दस्तकारी। हुनर। कला-कौशल। —बाज=चालबाज़। धूर्त।

हिरमजी—(स्त्री० अ०) लाल रंग का एक प्रकार की मिट्टी।

हिराना—(क्रि० हि०) खो जाना। गायब होना। अभाव होना। न रह जाना। मिटना। भूल जाना।

हिरास—(स्त्री० फा०) भय। खेद। नाउम्मेदी।

हिरासत—(स्त्री० अ०) पहरा। चौकी। कैद। नज़रबंदी।

हिरासाँ—(वि० फा०) निराश। नाउम्मेद। हिम्मत हारा हुआ।

हिर्स—(स्त्री० अ०) लालच। लोभ।

हिलकोर, हिलकोरा—(पु० हि०) हिलोर। लहर। तरंग।

हिलना—(क्रि० हि०) डोलना। हरकत करना।

हिलाना—(क्रि॰ हि॰) चला यमान करना ।

हिलाल—(अ॰) दूज का चाँद ।

हिस—(पु॰ अ॰) होश । चेतना ।

हिसाब—(पु॰ अ॰) गिनती । गणित । लेखा । भाव । दर । नियम । मेज । —किताब = आमदनी, खर्च आदि का ब्यौरा । ढंग । कायदा । —बही = वह पुस्तक जिसमें आय-व्यय या लेन देन का ब्यौरा लिखा जाता हो ।

हिसार—(अ॰) किला । गढ़ी ।

हिस्सा—(पु॰ अ॰) भाग । अंश । खंड । टुकड़ा । साझा । शिरकत । —दार = साझेदार । रोज़गार में शरीक ।

हिस्टीरिया—(पु॰ अं॰) मूर्च्छा रोग ।

हींग—(स्त्री॰ हि॰) एक पौधा और उसका जमाया हुआ दूध या गोंद ।

हींसना—(क्रि॰ हि॰) घोड़े का बोलना । हिनहिनाना । गदहे का बोलना । रेंकना ।

ही—(अव्य॰ हि॰) निश्चय, अनन्यता, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति सूचक एक अव्यय ।

हीक—(स्त्री॰ हि॰) हिचकी । हलकी अरुचिकर गंध ।

हीन—(वि॰ स॰) छोड़ा हुआ । वंचित । नीचे दर्जे का । घटिया । ओछा । खराब । तुच्छ । कम ।

हीन-हयात—(पु॰ अ॰) जीवन भर ।

हीर—(पु॰ हि॰) सार । सत । शक्ति । मज्जा ।

हीरा—(पु॰ हि॰) एक रत्न । बहुत ही अच्छा आदमी ।

हीरा कसीस—(पु॰ हि॰) लोहे का वह विकार जो गंधक के रासायनिक योग से होता है ।

हीला—(पु॰ अ॰) बहाना । मिस ।

हुँकारी—(स्त्री॰ अनु॰) स्वीकृति-सूचक शब्द ।

का बोलना। हींसना। हिन हिनाहट=घोड़े की बोली।

हिना—(स्त्री० अ०) मेंहदी।

हिपोक्रिट—(पु० अं०) कपटी। पाखंडी। हिपाक्रिसी=छल।

हिफाजत—(स्त्री० अ०) रक्षा। बचाव। देखरेख।

हिब्बा—(पु० अ०) दाना। दो जौ की एक तौल। दान। हिब्बानामा=दानपत्र।

हिम—(पु० सं०) पाला। बर्फ।

हिमाक्त—(स्त्री० अ०) बेवकूफी। मूर्खता।

हिमामदस्ता—(पु० फ़ा०) खरल और बट्टा।

हिमायत—(स्त्री० अ०) पक्षपात। समर्थन। मदद। हिमायती=तरफदारी।

हिमालय—(पु० सं०) भारतवर्ष का संसार के सब पहाड़ों से ऊँचा पहाड़।

हिम्मत—(स्त्री० अ०) साहस। बहादुरी। पराक्रम। हिम्मती=साहसी। दृढ़। बहादुर।

हियाव—(पु० हि०) साहस।

हिरन—(पु० हि०) हरिन। मृग।

हिरफत—(स्त्री० अ०) पेशा। व्यापार। दस्तकारी। हुनर। कला कौशल। —बाज़=चालबाज़। धूर्त।

हिरमजी—(स्त्री० अ०) लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।

हिराना—(क्रि० हि०) खो जाना। गायब होना। अभाव होना। न रह जाना। मिटना। भूल जाना।

हिरास—(स्त्री० फ़ा०) भय। खेद। नाउम्मेदी।

हिरासत—(स्त्री० अ०) पहरा। चौकी। कैद। नज़रबंदी।

हिरासाँ—(वि० फा०) निराश। नाउम्मेद। हिम्मत हारा हुआ।

हिर्स—(स्त्री० अ०) लालच। लोभ।

हिलकोर, हिलकोरा—(पु० हि०) हिलोर। लहर। तरंग।

हिलना—(क्रि० हि०) डोलना। हरकत करना।

हिलाना—(क्रि० हि०) चलायमान करना।

हिलाल—(अ०) दूज का चाँद।

हिस—(पु० अ०) होश। चेतना।

हिसाब—(पु० अ०) गिनती। गणित। लेखा। भाव। दर। नियम। मेल। —किताब = आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा। ढंग। क़ायदा। —बही = वह पुस्तक जिसमें आयव्यय या लेन देन का ब्योरा लिखा जाता हो।

हिसार—(अ०) क़िला। गढ़ी।

हिस्सा—(पु० अ०) भाग। अंश। खंड। टुकड़ा। साझा। शिरकत। —दार = साझेदार। रोज़गार में शरीक।

हिस्टीरिया—(पु० अ०) मूर्च्छा रोग।

हींग—(स्त्री० हि०) एक पौधा और उसका जमाया हुआ दूध या गोंद।

हींसना—(क्रि० हि०) घोड़े का बोलना। हिनहिनाना। गदहे का बोलना। रेंकना।

ही—(अव्य० हि०) निश्चय, अनन्यता, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति सूचक एक अव्यय।

हीक—(स्त्री० हि०) हिचकी। हलकी अरुचिकर गंध।

हीन—(वि० सं०) छोड़ा हुआ। वंचित। नीचे दर्जे का। घटिया। ओछा। खराब। तुच्छ। कम।

हीन हयात—(पु० अ०) जीवन भर।

हीर—(पु० हि०) सार। सत। शक्ति। बल।

हीरा—(पु० हि०) एक रत्न। बहुत ही अच्छा आदमी।

हीरा कसीस—(पु० हि०) लोहे का वह विकार जो गंधक के रासायनिक योग से होता है।

हीला—(पु० अ०) बहाना। मिस।

हुँकारी—(स्त्री० अनु०) स्वीकृति-सूचक शब्द।

करनेवाला। बहुत बुरा लगनेवाला। —स्पर्शी = हृदय पर प्रभाव डालनेवाला। जिससे मन में दया हो। —हारी = मन मोहनेवाला।

हृष्ट—(वि० सं०) अत्यंत प्रसन्न। आनंदयुक्त। —पुष्ट = मोटा ताज़ा। तैयार। तगड़ा।

हेंहें—(पु० अनु०) धीरे से हँसने का शब्द। दीनता-सूचक शब्द।

हेंगा—(पु० हि०) पाटा। पटेला।

हे—(अव्य० सं०) संबोधन का शब्द।

हेकड़—(वि० हि०) हृष्ट पुष्ट। मज़बूत। ज़बरदस्त। बली। उजड्ड। हेकड़ी = अक्खड़पन। ज़बरदस्ती।

हेच—(वि० फा०) तुच्छ। नाचीज़। निःसार।

हेड—(अं०) सिर। प्रधान। —आफ़िस = प्रधान कार्यालय। —क्वार्टर = सदर मुकाम। —मास्टर = प्रधानाध्यापक। हेडेक = सिरदर्द। हेडिंग = शीर्षक।

हेतु—(पु० सं०) अभिप्राय। उद्देश्य। कारण। वजह।

हेमंत—(पु० सं०) जाड़े का मौसम। शीतकाल।

हेर फेर—(पु० हि०) घुमाव। चक्कर। चाल। अदल बदल। अदला बदला। हेराफेरी = हाथ की सफ़ाई। चालाकी। अदल बदल।

हेल मेल—(पु० हि०) मित्रता। घनिष्ठता। मुहब्बत। परिचय।

हेल्थ—(पु० अं०) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती। हेल्दी = तन्दुरुस्त।

हैं—(अव्य०) एक आश्चर्य, निषेध या असम्मति सूचक शब्द। 'है' का बहुवचन।

हैंगिंग लैंप—(पु० अं०) छत में लटकाने का लैंप।

हैंड—(अं०) हाथ। —बैग = चमड़े का एक छोटा बक्स जिसे सफ़र में हाथ में रखते हैं। हैंडी = हलका, जो हाथ में आसानी से उठाया जा सके।

—बिल = विज्ञापन। —स्ट्राइक = हड़ताल। हैंडिल = मुठिया। दस्ता।

हैजा—(पु० अ०) विशूचिका।

हैफ—(अव्य० अ०) अफसोस। हाय। हा।

हैबत—(स्त्री० अ०) भय। त्रास। दहशत। —नाक = भयानक। डरावना।

हैरत—(स्त्री० अ०) आश्चर्य। अचरज।

हैरान—(वि० अ०) चकित। दंग। परेशान। व्यग्र।

हैवान—(पु० अ०) पशु। जानवर। गँवार या बेवकूफ आदमी। उजड्ड आदमी।

हैवानी—(वि० अ०) पशु का। पशु के करने योग्य।

हैसियत—(स्त्री० अ०) योग्यता। सामर्थ्य। आर्थिक दशा। श्रेणी। प्रतिष्ठा। धन। जायदाद।

है है—(अव्य०) हाय। अफसोस।

होंठ—(पु० हि०) ओष्ठ।

हो—(क्रि०) सत्तार्थक क्रिया।

होटल—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ मूल्य देकर यात्रियों के भोजन और ठहरने का प्रबंध रहता है। निवास।

होड़—(स्त्री० हि०) दाँव। बाजी।

होनहार—(वि० हि०) जो होने वाला है। भावी। अच्छे लक्षणों वाला।

होना—(क्रि० अ०) अस्तित्व रखना। उपस्थित या मौजूद रहना। सूरत या हालत बदलना। बिगड़ जाना। बनना। बीतना। होनी = हो सकनेवाली बात।

होम—(पु० सं०) यज्ञ। (अं०) घर। —डिपार्टमेंट = स्वराष्ट्र विभाग। —मिनिस्टर = स्वराष्ट्र मंत्री। —मेम्बर = स्वराष्ट्र सचिव। —सेक्रेटरी = स्वराष्ट्र सचिव।

होमियोपैथी—(स्त्री० अं०) रोग निवारण की एक पद्धति। होमियोपैथिक = होमियोपैथी नामक चिकित्सा पद्धति के अनुसार।

परिशिष्ट १

देहात के कुछ शब्द, जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दी या हिन्दुस्तानी में प्रचलित नहीं हैं, पर हिन्दी भाषा में जिनकी आवश्यकता है, इस कोष में पहले आ चुके हैं। कुछ यहाँ दिये जाते हैं।

अँकटोर=कंकड़ी।

अँकरा, अँकरी=गेहूँ के खेत में होनेवाली एक घास।

अँकवार=खेत में का कटा हुआ सब डंठल के उतना अनाज जो एक बार दोनों बाहुओं के बीच उठाया जा सके।

अँकुसी=हुक।

अँखुआ=अंकुर।

अँगऊँ=देवता को चढ़ाने के लिये जो धन या अन्न अलग निकाल कर रख दिया जाता है, वह अँगऊँ कहलाता है।

अँगेरी=ऊख का ऊपरी हिस्सा।

अँधियारी=जानवरों की आँख पर बाँधने की पट्टी।

अगउड़=पेशगी।

अगवार=मकान के आगे का हिस्सा। खेत काटनेवाले मजूरों का एक हक।

अगवारी=हल के फाल में लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

अगाड़ी=घोड़े के गले की रस्सी।

अगिया=धान के खेत में उगने वाली एक घास।

अढिया=कठौता।

अदराधा=चना और जौ मिला कर दला हुआ जो घोड़ों को दिया जाता है।

अहकना=तरसना।

अहारना=लकड़ी चीरना।

आँखा=अंकुर।

आँखि=गन्ने में वह स्थान जहाँ से अंकुर फूटता है।

आँठा=ठोस जमे हुए दही का टुकड़ा।

इँदारा=पक्का कुँआ।

इनरी=नई ब्याई हुई गाय या भैंस का उबाला हुआ दूध, जो जम जाता है।

उचारना=जड़ सहित उखाड़ लेना।

उचास=वह ज़मीन जो आस पास की सतह से ऊँची हो।

उसना=चावल, जिसकी भूसी पानी में उबालकर निकाली गई हो।

एका, इक्की=दो पहियों की गाड़ी जिसे एक घोड़ा या एक बैल खींचता है।

ऐपन=हल्दी, दही आदि पदार्थ का मिश्रण, धार्मिक संस्कारों में जिससे तिलक किया जाता है।

ओटना=रूई से बिनौले निकालना।

ओटा=चबूतरा।

ओनचन=चारपाई कड़ी करने की रस्सी।

ओरदावन=चारपाई कड़ी करने की रस्सी।

ओलती=ओरी।

ओसौनी=डंठल से अन्न अलग करते समय ओसाने की मजूरी।

कइन=बाँस की पतली टहनी।

कररेजा=बैंगनी।

कड़ाह=जिसमें ईख का रस पकाते हैं।

कचारना, कछारना=पटक पटक कर धोना। पैर से कपड़ा धोना।

कछोंड=स्त्रियाँ पुरुषों की तरह धोती चढ़ा लेती हैं, उसे कछाँद कहते हैं।

कजरौटा=काजल रखने का लोहे का पात्र।

कटनी=खेत काटने की फ़सल।

कठरा=जौहरी या सोनार की दूकान की धूल धोने का कठौता।

कठोलो=काठ की थाली।

कत्ता=बाँस काटने का औज़ार।

कनकुत्ती=अन्दाज़।

परिशिष्ट १

देहात के कुछ शब्द, जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दी या हिन्दुस्तानी में प्रचलित नहीं हैं, पर हिन्दी भाषा में जिनकी आवश्यकता है, इस कोष में पहले आचुके हैं। कुछ यहाँ दिये जाते हैं।

अँकटोर=ककड़ी।

अँकरा अँकरी=गेहूँ के खेत में होनेवाली एक घास।

अँकवार=खेत में कटा हुआ मय डंठल के उतना अनाज जो एक बार दोनों बाहुओं के बीच उठाया जा सके।

अँकुसी=हुक।

अँखुआ=अंकुर।

अँगँऊँ=देवता को चढ़ाने के लिये जो धन या अन्न अलग निकाल कर रख दिया जाता है, वह अँगँऊँ कहलाता है।

अँगोरी=ऊख का ऊपरी हिस्सा।

अँधियारा=जानवरों की आँख पर बाँधने की पट्टी।

अगयड=पेशगी।

अगवार=मकान के आगे का हिस्सा। खेत काटनेवाले मजूरों का एक हक़।

अगवारी=हल के फाल में लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

अगाढ़ी=घोड़े के गले की रस्सी।

अगिया=चावल के खेत में उगनेवाली एक घास।

अढ़िया=कठौता।

अरदावा=चना और जौ मिला कर दला हुआ जो घोड़ों को दिया जाता है।

अहकना=तरसना।

अहारना=लकड़ी चीरना।

आखा=अंकुर।

आँखि=गन्ने में वह स्थान जहाँ से अंकुर फूटता है।

आँठा=ठोस जमे हुए दही का टुकड़ा।
ईँदारा=पक्का कुँआ।
इनरी=नई ब्याई हुई गाय या भैंस का उबाला हुआ दूध, जो जम जाता है।
उचारना=जड़ सहित उखाड़ लेना।
उचास=वह ज़मीन जो आस पास की सतह से ऊँची हो।
उसना=चावल, जिसकी भूसी पानी में उबालकर निकाली गई हो।
एक्का, इक्को=दो पहियों की गाड़ी जिसे एक घोड़ा या एक बैल खींचता है।
ऐपन=हल्दी, दही आदि पदार्थों का मिश्रण, धार्मिक संस्कारों में जिससे तिलक किया जाता है।
ओटना=रुई से बिनौले निकालना।
ओटा=चबूतरा।
ओनचन=चारपाई कड़ी करने की रस्सी।
ओरदावन=चारपाई कड़ी करने की रस्सी।
ओलती=ओरी।
ओसौनी=डंठल से अन्न अलग करते समय ओसाने की मजूरी।
कइन=बाँस की पतली टहनी।
कस्रेजा=बैंगनी।
कड़ाह=जिसमें ईख का रस पकाते हैं।
कचारना, कछारना=पटक-पटक कर धोना। पैर से चपका धोना।
कछाँड=स्त्रियाँ पुरुषों की तरह धोती चढ़ा लेती हैं, उसे कछाँड कहते हैं।
कजरौटा=काजल रखने का लोहे का पात्र।
कटनी=खेत काटने की फ़सल।
कठरा=सौहरो या सामार की दूकान का धूल धाने का कठौता।
कठालो=काठ की थाली।
कत्ता=बाँस काटने का औज़ार।
कनपुत्ती=अन्दाज़।

घनियाँ=गोद। मथा।
घन्हेला, घन्हेली=वह गठरी, जो कंधे से बाँधकर पीठ पर लटका ली जाती है।
घम्पा=वह चीज़ जिस पर लासा लगाकर बहेलिये चिड़ियाँ फँसाते हैं।
घरठालना=कूदना।
घरछुरा=कड़ाई में से दाल निकालने का बड़ा चम्मच।
घरसी=उपले का चूरा।
घरहिया=वह ब्राह्मण जिसकी बनाई हुई पूरी बहुत से ब्राह्मण खाते हैं।
घरा=रहा।
घरेन=मशगूल।
घरात=थारा।
घरोना=खुरचना।
घरोनी=दूध गरम करने पर बरतन की पेंदी में जो दूध का जला हुआ भाग चिपका रहता है उसे करोनी कहते हैं।
घाज=वस्त्र का घर।
घामो=सुनार का एक औज़ार जिसमें सोना चाँदी गलाकर ढाला जाता है।
घिर्री=मशीन का दाँत।
कुँडमुन्दन—बोआई खतम हो जाने पर की एक रस्म।
कुचरा कूँचा=भाड़ू।
कुढ़ा=हल का वह हिस्सा जो हलवाहे के हाथ में रहता है।
कुदार=मिट्टी खोदने का एक औज़ार।
कुमहैंटी=वह मिट्टी जिसे कुम्हार काम में लाता है।
कूँची=भाड़ू।
कूरा=स राश।
कूतना=कीमत लगाना।
कूरा, कुरी=राशि। (Heap)
कूला=क्यारी।
केनारा=रास्ता।
कोचना=चोंचना। (Prick)
कोठिला, कोठिली=मिट्टी का घर जिसमें अनाज रखते हैं।
कोठी=बखार।
कोंढ़ा=कुंजी। हुक।
कोंढ़ी=फल का बतिया।
कोछ=आँचल। गोद।

कोरई=बाँस के टुकड़े, जो छप्पर में लगते हैं।

कोल्हुआर=वह घर जहाँ ईख पेरी और गुड़ पकाया जाता है।

कौराना=सोते समय बड़बड़ाना।

खड़बीहड़=खुरदरा। ऊँचा नीचा।

खपरी=घड़ा या हाँडी का पेंदा जिसमें चना चबेना भूनते हैं।

खपटा=टूटा हुआ खपड़ा।

खपोच=बाँस का छोटा चिरा हुआ टुकड़ा।

खर=सरपत, जिससे छप्पर छाया जाता है।

खरिका=दाँत साफ करने का तिनका।

खरिहक, खरिहग=फ़सल के अन्त में हलवाहों को जो नाज दिया जाता है।

खलँगा=धिन्ना।

खाँची, खँचिया=अरहर के डंठल का बना हुआ जालीदार टोकरा, जिसमें घास और भूसा ढोते हैं।

खाँचना=कपड़े धोना।

खुरपी=घास छीलने का हथियार।

खुरपियाना=खुरपी से खेत में से घास निकालना।

खूँथ=कटे हुए पेड़ के तने का हिस्सा, जो जड़ से लगा हो।

खूलना=फूटना। कुचलना।

खेड़ा=गाँव के पास की ज़मीन।

खेना=नाव से नदी को पार करना।

खैनी=तम्बाकू।

खोइया=रस निकाल लेने पर ईख का बचा हुआ डंठल।

खोंच=किसी नोकदार चीज़ की चोट।

खोंचा=लंबा पतला बाँस, जिसकी नोक पर कोई लस-दार चीज़ लगाकर बहेलिये चिड़ियाँ फँसाते हैं।

खोंप=कोना। पिछवाड़ा।

खोभार=वह घर जिसमें सूअर रहते हैं।

खौरा=कुत्ते, भेड़ आदि का रोग, जिसमें बाल झड़ जाते हैं।

गँठिया=बोरा।

गँड़ुरी=घास की गोल रस्सी, जिसपर घड़ा रक्खा जाता है।
गँड़ास=गँड़ासा। पशुओं के लिये चारा काटने का औज़ार।
गजबाँक=अकुश।
गद्दर=आधा पका।
गरू=भारी (गुरु)
गल्हँड़=भेड़ों का सुण्ड जिसमें सौ से अधिक भेड़ें हों।
गाटा=जमीन का टुकड़ा।
गाड़=गड्ढा, जिसमें किसान लोग अनाज रखते हैं।
गाड़ा=खाद आदि ढोने की छोटी गाड़ी।
गाढ़=सकट।
गाढ़ा=ठोस। मोटा।
गामा=ग्रकुर।
गींजना=सानना।
गुइयाँ=सखी। सहेली।
गुड़म्बा=चपाले हुए आम और गुड़ के योग से बना हुआ। शीरा, जो खाया जाता है।
गुँथना=पिराना।
गुनरी, गुँदरी=चगाई।
गुनियाँ=कोना ठीक करने का औज़ार।
गुरगी=छोटी लड़की।
गुराँव=खलियान।
गुहरी=डपली।
गेंड़ा=बीज के लिये काटा हुआ गन्ने का टुकड़ा।
गेंड़ो=ईख का लगभग १ हाथ लम्बा टुकड़ा।
गेंड़ुआ, गेंड़ुली=घास-फूस की बनी हुई गोल अँगूठा जिसे स्त्रियाँ सिर पर पानी से भरे हुए घड़े के नीचे रखती हैं।
गोइठा=कण्डा।
गोजी=लाठी।
गोनरी=घास की चटाई।
गोरसो=दूध रखने का बरतन।
गोला=घर, जिसमें गल्ला जमा रहता है।
गोलौर=गुड़ पकाने का घर।
घँघोरना=द्रव पदार्थ को हाथ से मिलाकर खराब कर देना।
घड़िया, घरिया=जिसमें सुनार सोना चाँदी गलाता है।

घटिहा=ठग। धोखा देनेवाला।
घरनई, घरई=घड़ों की नाव।
घुघुरी, घुँगनी=उबाला हुआ नाज।
घैला=छोटा घड़ा।
घोघी=कम्बल या दूसरे ओढ़ने का एक सिरा एक खास क़िस्म से मोड़कर सिर पर डाल लिया जाता है जिससे बरसात और धूप से बचाव होता है, उसे घोघी कहते हैं।
चकरा=जिस पर गरम गुड़ फैलाया जाता है।
चकवड़=बरसात का एक पौदा, जिसकी पत्तियाँ देखकर देहात के लोग सूर्यास्त और सूर्योदय का पता लगाते हैं।
चगड़=धूर्त।
चटक=तेज़ रंग।
चटकना=गरजना। पतली दरारें पड़ जाना। चप्पड़।
चपड़ल=फैला हुआ।
चमकी=छोटा चाबुक।
चमोटी=मोटे चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार ठीक करता है।
चरखी=कुएँ से पानी निकालने का यंत्र।
चरन, चरनी=पैशा के खाने की जगह।
चरफर=चुस्त। तेज़।
चरुश्रा, चरुई=मिट्टी का छोटा घड़ा।
चहबच्चा=छोटा पक्का कुंड।
चहूँटना=रौंदना।
चहला=कीचड़।
चहेंटा=कीचड़।
चाइ=उठाईगीर।
चाइ चूह=सिर का एक रोग जो प्रायः लड़कों को होता है।
चातर=वह जाल जो चिड़ियाँ फँसाने के लिये रात में लगाया जाता है।
चापर=बरबाद। नष्ट। चौपट।
चिन्या=इमली का बीज।
चिरनिया=छैला।
चिकवा=भेंड़ बकरी का मांस बेंचनेवाला।

चिचियाना = चिल्लाना।
चिचोरना = दाँत से फाड़ फाड़ कर चबाना।
चिनगा = जला हुआ गुड़।
चिनगी = चिनगारी।
चिपरी = उपली।
चीलुर = गिलहरी।
चुनौता = अन्त।
चुकड़, चुरुर = कुल्हड़।
चुरा = कुल्हड़।
चुन्धला = धुँधली दृष्टिवाला।
चुरना = पकना। यह शब्द दाल, भात, तरकारी के लिये ही प्रयुक्त होता है।
चुभकी = डुबकी।
चुन्नी = शिखा।
चेलुर = मकई की जड़।
चेरुइ = छोटी गगरी।
चोआ = चौपाया।
चौमस = वह खेत जो जाड़े की फ़सल के लिये चार महीने बरसात में जोतकर तैयार किया जाता है।
छुरिन्दा = अकेला (छड़ी लिये हुए)।
छाँटना = हाथ या पैर, पर पटक-पटककर कपड़ा धोना।
छालिया = सुपारी।
छिट्टआ = वह बीज जो खेत में बखेर दिया जाता है।
छितना, छितनी = टूटे हुए टोकरे।
छेरी = बकरी।
छोंढ़ = कूँड़ से बड़ा घड़ा।
छोत = गाय या भैंस जितना एक बार में हगती है, उतना एक छोत कहलाता है।
जन्तो = सुनार का औज़ार जिससे वह तार खींचता है।
जमूरा = दाँत उखाड़ने का औज़ार।
जाँगर = बल। ज़ोर।
जाउरि = खीर।
जियुगर = मज़बूत।
जुआठ = जुआ जो बैल की गर्दन में पड़ा रहता है।
जेंगर = मटर या आलू का डंठल।
जेंवर = रस्सी।
जोता, जोती = रस्सा।
जोंधरी = मक्का।

जोड़ी=दो बैल या दो घोड़े से खींची जानेवाली गाड़ी।
झँझरी=जालीदार खिड़की।
झगरा=बैल, जिसके कान पर बड़े बड़े बाल हों।
झलास, झलासी=झाड़ झंखाड़।
झाँकड़, झाखर=सूखी झाड़ी।
झाँपा=बड़ा पिटारा।
झाँस=दुष्ट। घमिया।
झारी=लोटा। [illegible] का बना लोटा।
झींक=मुठी भर अन्न, जो जाँत में डाला जाता है।
झूल=बैल या हाथी का ओढ़ना।
झोरा=थैला।
झोली=अरहर के तने का बना हुआ टोकरा या टोकरी।
टँगाड़ी=लकड़ी काटने का औज़ार।
टकोरी=छोटी तराजू।
टहरना=गलना। (यह शब्द घी और तेल के लिए ही प्रयुक्त होता है)।
टाँगी, टँगारी=कुल्हाड़ी।

टिकठी=मुर्दे को ले जाने की अर्थी।
टिकरी=छोटी रोटी।
टिकोर, टीकुर=साफ जगह जहाँ घास फूस या गड्ढ न हों।
ठाँठ होना=गाय जब दूध देना बन्द कर देती है।
ठाढ़ा=जबरदस्त।
ठिलिया=मिट्टी का छोटा घड़ा।
ठिहा=लकड़ी, जिस पर लोहार और बढ़ई काम करते हैं।
ठेंग, ठेंगा=डण्डा।
ठोकवा=महुवे की रोटी।
ठोपारो=गन्ने का रस जो गुड़ तैयार छानने के बाद बचता है।
डगरिन=चमारिन, जो नाल काटती है।
डगरा=[illegible]। आसपास।
डभकारना=पानी को [illegible] करके भरना।
[illegible]ना=उल्लंघन करना।
[illegible]=[illegible]।
ढाँड़=जौ, गेहूँ का [illegible] की फसल का [illegible]
ढौंड़ी=तराजू की लकड़ी [illegible]

सहारे तराजू के दोनों पलड़े लटकते हैं।

डाभी = घास का चबूतर।

डासना = बिछाना।

डीह = उजड़ हुये गाँव की पुरानी जगह।

डेहरी = नाज रखने का कोठिला।

डोपनी = काठ का छोटी थाली।

डोपी = छोटी डलिया।

डोभना = सीना। टाँके डालना।

ढकुआ = लाठ के सिरे पर लगी हुई काठ की टोपी।

ढकोसना = जल्दी-जल्दी पानी पीना।

ढपड़ल = गँदला।

ढरका = बाँस की चोंगी, जिससे पशुओं को दवा पिलाई जाती है।

ढरकी = ढरकी।

ढाँसी = जानवरों की खाँसी।

ढाटा = सिर के चारों ओर कान के ऊपर से रूमाल बाँधना।

ढाठा = लकड़ी का टुकड़ा, जो बैल के मुँह से लगा दिया जाता है, जिससे वह खा नहीं सकता।

ढाठा = पगड़ी का वह सिरा जो एक कान की तरफ से आकर दाढ़ी को ढकता हुआ दूसरे कान की तरफ खोंस लिया जाता है।

ढील = जूँ।

ढूह, ढूहा = छोटा टीला।

ढेंडी = कली।

ढेंपी = फल का मुँह, जो टहनी में जुड़ा रहता है।

ढोंका = छोटा टुकड़ा।

तक = तराज़ू।

तनिक = ज़रा सा।

तस्सुर = एक अंगुल की चौड़ाई।

तागना = डोरा डालना। सीना।

तिड़ी बिड़ी = तितर बितर।

तिलक = विवाह के पहले होने वाली एक रस्म।

तिल्ली = सरसों और तिल का डंठल।

तेहा = तेज़। मिजाज़।

तोड़ा = कमी। अभाव।

दँवरी = माँडने के लिये 'पैर' पर घूमनेवाले बैलों का समूह ।
दहेंडी = दही जमाने की हाँडी ।
दाब = खपड़ा काटने का औज़ार ।
दीअट = दिया रखने का स्टैंड ।
दीउली = छोटा दिया ।
दौना = डंठल में से अन्न अलग करने की फसल ।
दोंगा, दोंगे = बाँस की बनी टोकरी ।
दौंरी = डंठल से अन्न अलग करने के लिये उसे ज़मीन पर फैला कर उस पर बैल घुमाना ।
धनकटी = धान कटने का मौसम ।
धनखर, धनहर = वह खेत जिसमें धान बोया जाता है ।
धागा = तागा ।
धामा = बड़ा दौरा ।
नदुवा = जिसमें उबाला हुआ रस रखा जाता है ।
नरिया = गोल खपड़ा ।
नहरनी = नाखून काटने का औज़ार ।
नाटा = छोटे कद का बैल ।
नाड़ा = इज़ारबन्द ।
निहंग = नंगा । असावधान ।
निखारना = मैल छुड़ा देना ।
नियारिया = राख में से सोना-चाँदी अलग करनेवालों की जाति ।
निसुहा = काठ, जिस पर अनाज का डंठल रखकर गँड़ासे से काटते हैं ।
निहाइ = जिस पर रखकर लोहार लोहे को पीटता है ।
निहोरा = कृपा ।
नेग = हक ।
नेरना = नाखून से किसी फल या रेशेदार पौधे का छिलका निकालना ।
नोनियाँ, लोनियाँ = मिट्टी से नमक निकालनेवालों की एक जाति ।
पगडंडी = केवल पैदल चलने का रास्ता ।
पङ्गत = भोजन के लिये बैठनेवालों की पंक्ति ।
पगहा = पशुओं के बाँधने की रस्सी ।

पग्यिा = पगड़ा ।

पठाग्ना = सूप में फटकना ।

पटरा = लकड़ी का तख्ता ।

पडछुता = मिट्टी की दीवार पर का छप्पर ।

पटपर = बरसात के बाद धूप से सूखी हुई मुलायम ज़मीन ।

पतघी = बहुत छोटा हँड़िया ।

पताला = दाल पकाने का मिट्टी का एक छोटा बरतन ।

पनौटी = पनडब्बा ।

परई = मिट्टी का बड़ा सिकोरा जो ढकने के काम आता है ।

परछुना = दूल्हा-दुलहिन के सिर पर मूसल, बट्टा तथा आरती घुमाना ।

परेता = जिसमें तागा लपेटा जाता है ।

पलान = काठी ।

पलानना = घोड़ा या बैल लादना ।

पलिहर = वह खेत जो जाड़े की फसल के लिये चार महीने बरसात में जोतकर तैयार किया जाता है ।

पलेथन, परथन = सूखा आटा, जो रोटी बनाते वक्त काम आता है ।

पल्ला = फ़ासला । दूर । किनारा । एक किवाड़ा या धोती ।

पहटा = खेत काटने की नाप ।

पहसुल = तरकारी काटने का औज़ार ।

पाचड = हरिस को हल में फसाने वाली लकड़ी ।

पाटा = तख्ता ।

पाटी = खाट की लम्बाई की तरफ़ की लकड़ी या बाँस । मांग की दोनों तरफ का भाग ।

पारी = बारी ।

पिअरी = पीली धोती ।

पिहाना = डेहरी का ढक्कन ।

पुरखिन = गृहस्थी चलाने में होशियार स्त्री ।

पुरवट = चमड़े के बड़े थैले में बैलों के द्वारा कुएँ से पानी निकालना ।

पेटपोंछुआ = अन्तिम सन्तान ।

पेटारी = मूँज का बना हुआ सन्दूक ।

पेहाना = गाय जब दूध देने को तैयार होती है।
पैक = हरकारा।
पैड़ी = सीढ़ी।
पैना = चाबुक।
पैर = डठल से धान अलग करने के लिये ज़मीन पर फैलाई हुई डठलों पसल जिसका धान एक बार में डठल से अलग किया जाय।
पैरा = धान का डंठल। पयाल।
पौना = लोहे का जालीदार बड़ा चम्मच जिससे गन्ने के रस का मैल छाँटते या कड़ाई में से पूरियाँ निकालते हैं।
फरियाना = निथरना। अलग करना।
फरी = ढाल।
फत्र = माफ़।
फाँड = कमरबन्द।
फाँका = मूठी भर।
फाँटा = जाल।
फार = हल का फल।
फींचना = कपड़े धोना।
फुनगी = टहनी का सिरा, जहाँ नये और कोमल पत्ते होते हैं।
फिरिहिरी = पत्तों का बना हुआ एक खिलौना।
फेंटा = पगड़ी।
फैंच = बाँस का बारीक टुकड़ा।
बँसवार = बाँसों की बाड़ी।
बखरा = बारी।
बखार = गल्ला रखने का घर।
बझना = फँसना।
बटखरा = बाट।
बटियारी = वह जाल जो चिड़ियाँ फँसाने के लिये दिन में लगाया जाता है।
बटुवा = थैली।
बतिया = छोटा फल।
बतौरी = रसौली।
बधना = मुसलमानी लोटा।
बया = बाज़ार में तौलने का पेशा करनेवाला व्यक्ति।
बयाई = बया की उजरत।
बरच्छा = विवाह के लिये वर रोकना।
बरारी = रस्सी।
बराव = परहेज़।

पेन्हाना=गाय जब दूध देने को तैयार होती है।
पैक=हरकारा।
पैड़ो=सीढ़ी।
पैना=चाबुक।
पैर=डठल से अन्न अलग करने के लिये ज़मीन पर फैलाई हुई उतनी फसल जितना अन्न एक बार में डठल से अलग किया जाय।
पैरा=धान का डण्ठल। पयाल।
पौना=लोहे का जालीदार बड़ा चम्मच जिससे गन्ने के रस का मैल छाँटते या कड़ाह में से पूरियाँ निकालते हैं।
फरियाना=निथरना। अलग करना।
फरी=ढाल।
फर्च=साफ़।
फाँड=कमरबन्द।
फाँका=मूठी भर।
फाँदा=जाल।
फार=हल का फल।
फींचना=कपड़े धोना।
फुनगी=टहनी का सिरा, जहाँ नये और कोमल पत्ते होते हैं।
फिरिहिरी=पत्तों का बना हुआ एक खिलौना।
फेंटा=पगड़ी।
फैंच=बाँस का बारीक टुकड़ा।
बँसवार=बाँसों की बाड़ी।
बखरा=पाठी।
बखार=गल्ला रखने का घर।
बझना=फँसना।
बटरारा=बाट।
बटियारी=वह जाल जो चिड़ियाँ फँसाने के लिये दिन में लगाया जाता है।
बटुना=थैली।
बतिया=छोटा फल।
बतौरी=रसोली।
बधना=मुसलमानी लोटा।
बया=बाज़ार में तौलने का पेशा करनेवाला व्यक्ति।
बयाई=बया की उजरत।
बरच्छा=विवाह के लिये वर रोकना।
बरारी=रस्सी।
बराव=परहेज़।

बरैठा=भीट, जिस पर पान लगाया जाता है।

बल्लम=भाला।

बलुआट=बालू मिला हुई मिट्टी।

बहेलिया=चिड़ियों का शिकार करनेवालों की एक जाति।

बाँक=गँड़ास की तरह का लोहे का एक हथियार।

बाँगर=ऊँची ज़मीन।

बहिंगा, बहिंगी=बाँस का एक टुकड़ा जिसके दोनों सिरों पर रस्सी लटकाये रहते हैं, जिसमें भारी चीज़ें बाँधकर ढोते हैं।

बिदाह=एक फुट ऊँचा हो जाने पर धान के खेत में हेंगा चलाना।

बिदोरना=मुँह बनाना।

बिलहरा=पान रखने के लिये बाँस का बना हुआ डब्बा।

बिसरना=भूल जाना।

बिसार=बीज।

बिसुकना=दूध देना बन्द करना।

बिहड़=ऊबड़-खाबड़ ज़मीन।

बींड, बिड़िया=गाड़ी का तीसरा बैल जो सबसे आगे रहता है।

बीता=बालिश्त।

बीहन=धान के पौध, जो खेत में लगाने के लिये पहले ही उगा लिये जाते हैं।

बूकना=सिल पर पीसना।

बेआना=पेशगी रुपया।

बेझरा=मिले हुए दो अन्न।

बेंट=दस्ता। हैंडिल।

बेठन=कोई चीज़ लपेटने का कपड़ा।

बेढ़ना=पशुओं को किसी घेरे में कैद करना।

बेढ़नी=रोटी, जिसके भीतर पिसी हुई मटर भरी रहती है।

बेर्रा=जौ और मटर मिला हुआ।

बेलहरा=पनडब्बा।

बेलाना=चकले पर बेलन से रोटी बनाना।

बेवहर=उधार।

बेवहरिया=ब्याज पर रुपया देनेवाला।

बै=सूत को अधिक बल देना।

बोअनी = बोने की फसल।
बौंग = भारी पगानी छड़।
मडुआ = मुर्वे।
मरभाँड़ = एक कॉटेदार पौधा।
मरदा = मिट्टी का बरतन, जो पानी पाने के काम आता है।
माथी = चमड़े का थैला, जिसमे लोहार भट्ठी में हवा देता है।
माट = टोला।
मुजिया = उबाले हुए धान का चावल।
मुसील = भूसा रखने का घर।
भुआ = घास के ऊपर सफेद रंग का रुई।
मड़ई = झोंपड़ी, जिसमे खपरा न हो।
मडार = पुराना कुआँ, जो खराब हो गया हो।
मँगनी = विवाह के लिये किसी लड़के का याचना।
मचिया = खाट की तरह की बुनी हुई एक बहुत छोटी चौकीनुमा खटिया जो सिर्फ बैठने के काम आती है।
मरतबान = मिट्टी का घड़ा, लाख का पालिश किया हुआ।
माझा = पतंग की डोर में लगाया जानेवाला मसाला।
माट = बड़ा घड़ा।
मारतौल = छोटा लंबा हथौड़ा।
मींजना = हाथ से मसलना।
मुँगरा, मुँगरा = जिससे धोबी कपड़े पीटता है। लकड़ी का टुकड़ा जो ढेले में अन्न अलग करने तथा ज़मीन को चौरस करने में काम आता है।
मुँगरी = मिट्टी पीटने की लकड़ी।
मुरहा = नि शील।
मुरेठा = पगड़ी।
मुसरा = कुएँ में पानी देनेवाला मोटा सोता।
मूका = घूँसा।
मूठ, मुठिया = हल का ऊपरी सिरा जो हलवाहे की मुट्ठी में रहता है।
मूठ पूजा = बोआई खतम हो जाने पर की एक रस्म।
मेंसारी = नालबन्द का झोला।

मेँड़=खेत का हद।

मेटा, मेटी=घी, तेल या अचार रखने के लिए मिट्टी का बरतन।

मोखा=ताक या दीवार में एक छोटा छेद जिससे हवा और रोशनी कमरे में आती है।

मोचना=चिमटी।

मोटरा=बोझा। बण्डल।

मोट=चमड़े का थैला,[1] जिसमें कुएँ का पानी ऊपर निकालते हैं।

मोढ़ा=बाँस की तीलियों या सरकंडे का बना स्टूल।

मोहरी=जानवर का मुँह बाँधने की रस्सी, जिससे वह खेत चर न सके।

मोहार=द्वार।

मौनी=मूँज की बनी हुई छोटी डलिया।

रखेली=वह स्त्री, जो बिना विवाह के किसी पुरुष के साथ रहती है।

रखौनी=खेत रखाने की मजूरी।

रगी=वर्षा के बाद जब धूप निकल आती है, उसे रगी कहते हैं।

रनबन=अरण्य। वन।

रन्दा=लकड़ी साफ़ करने का औज़ार।

रमझल्ला=झगड़ा।

रुखा=लकड़ी में छेद करने का औज़ार।

रहमना=प्रसन्न होना।

रहाइस=रहना।

रहेठा=अरहर का डण्ठल।

राउत=सरदार। महतो।

राढ़ी=एक घास।

राँधना=पकाना।

राब=गुड़ का शीरा जिससे चीनी बनती है।

राम=देरी।

रिगिर=हठ।

रोकड़िया=खजांची।

रोगदानी=खेल में बेईमानी।

रोरहा=जिस मिट्टी में रोड़ बहुत हों।

लकठा=मकई का डंठल।

लग्गा लगाना=शुरू करना।

लढ़ा = गाड़ी ।
लढ़िया = गाड़ा ।
लतरी = पुरानी जूता ।
लतर, लथेर = टंटा ।
लपाड़िया = खुशामदी ।
लहना = उधार ।
लाठा = ज़मीन नापने का बाँस ।
लिट्टी = रोटी, जो बिना तवे के सेंकी जाय ।
लीचड़ = कीचड़ ।
लुगरा = फटा हुआ पुरानी धोती ।
लुंजा = हाथ या पैर से लँगड़ा ।
लूगा = कपड़ा ।
लेदरा = तागाल पैदा हुआ कपड़ा ।
लेंहड़ = भेड़ों का वह झुंड जिसमें बीस या उससे अधिक भेड़ें हों ।
लेहना, लेहनी = कटे हुए अनाज का एक खास वज़न ।
लोढ़निहार = रुई धुननेवाला ।
लोचर = दो वर्ष की उमर की भैंस ।
लोथ = लाश ।
लोहबंदा = लाठी, जिसके निचले किनारे पर लोहा लगा हो ।
लौनी = फसल काटने की रस्म ।
सकेन = सँकरा ।
सकार = बड़े सबेरे ।
सकिलाना = पूरा पड़ना ।
सटका = जानवर हाँकने की छड़ी ।
सतवाँसा = जो सात मास में पैदा हो ।
सनकारना = इशारा करना ।
सन्ता = बदले में ।
सँपेरा = साँप पकड़नेवाला ।
सँपेला = साँप का बच्चा ।
सरहज = साले की स्त्री ।
सवाचना = सावधान करना । गिनना । परीक्षा करना ।
साटना = एक साथ करना ।
साटा = बदला-बदली ।
साँटा = पतली छड़ी जिससे जानवर हाँके जाते हैं ।
सानना = मिलाना ।
साम = मूसल के मुँह पर लगी हुई लोहे की अँगूठी ।
सालू = लाल रंग का कपड़ा ।
सिकन्दरी गज = छब्बीस इंच का गज ।
सिकहर = छत से लटकाया जाने-

वाला एक जाल, जिसमें दूध, दही, घी आदि रखे जाते हैं।

सिकहुली=मूँज की बनी हुई टोकरी।

सिजिल=ठीक। पसन्द-योग्य।

सिन्दुरदान=विवाह के समय की एक रस्म।

सिरावन=हेंगा। पटेला।

सिराना=काम पूरा होना।

सिर्री=पागल। सिड़ी।

सिल्ली=पत्थर, जिस पर नाई छुरा तेज करता है।

सिहरना=ठंडक से काँपना।

सुआसिन=विवाहिता कन्या जो पिता के घर रहे।

सुटुकना=पतली छड़ी या चाबुक से मारना।

सुँदरी=रेंड़ के पत्ते खानेवाला एक कीड़ा।

सुरती=तम्बाकू।

सूआ=तोता। शुक।

सेंत=मुफ्त।

सैंका=ईख का रस कड़ाह में डालने का पात्र। काठ का बड़ा चम्मच, जिससे गुड़ चलाते हैं।

सतना=रसोईघर लीपना।

सैल=हल के जुए की एक लकड़ी।

सैला=लकड़ी, जो जुए को बैल की गर्दन में फँसाये रखती है।

सोक=धान बुनते वक्त किनारों पर छोड़ी हुई खाली जगह।

सोटा=छोटा डंडा।

सौजा=शिकार।

सौरना=मिलाना। सानना।

सौर=जच्चाखाना।

हथौना=साड़ी रखने का बड़ा घड़ा।

हँकारना=पुकारना। बुलाना।

हरकना=रोकना।

हराइ=जोतने की एक नाप।

हरिस=लम्बी लकड़ी या बाँस जिससे हल खींचा जाता है।

हर्सि=हल में लगी हुई बड़ी लकड़ी, जिसमें बैल जुतते हैं।

हलकना=छलकना।

हलकोरना=हाथ से पानी हिलाना।

हलकोरा = लहर।

हलोरना = इकट्ठा करना। अच्छा अच्छा चुनना।

हँसिया = खेत काटने का एक औज़ार।

हँसुआ = खेत काटने का औज़ार।

हाड़ = वैर। दुश्मनी।

हाथा = पानी उलीचने का काठ का एक औज़ार।

हामी भरना = स्वीकार करना।

हुडुक = धोबियों का एक बाजा।

हुँडार = भेड़िया।

हुमकना = ज़ोर करके आगे को उठना।

हुमसाना = ज़ोर लगाकर किसी भारी चीज़ को उठाना।

हूँड = धक्का।

हूरा = सिरा।

हूलना = भोंकना। धँसाना।

हेंगा = पटेला। सिरावन।

हेठ = नीचा।

हेठी = अपमान।

होरसा = गोल पत्थर, जिस पर चन्दन घिसा जाता है।

होरहा = हरा चना, जो आग में भूनकर खाया जाता है।

हौद, हौदी = नाद, जिसमें बैल सानी खाते हैं।

हौली = शराब की दूकान।

परिशिष्ट २

अँगरेजी के शब्द जो इस कोष में आने से छूट गये हैं
पर जो पढ़े लिखे लोगों में प्रचलित हैं।

आयल क्लाथ = मोमी कपड़ा।
आर्डरली = अर्दली।
इन्सल्ट = अपमान करना।
इमीटेशन = नकल।
इम्पायर = साम्राज्य।
इम्पीरियल = साम्राज्य संबंधी।
इम्पीरियलिज़म = साम्राज्यवाद।
इयरिंग = कान में पहनने का एक प्रकार का सोने का गहना।
एक्सप्रेस = प्रकट करना। —ट्रेन = तेज़ रेलगाड़ी।
एक्सप्लेन = व्याख्या करना।
एक्सप्लेनेशन = व्याख्या।
कटपीस = कपड़े के थान से बचे हुए टुकड़े।
कनेक्शन = संबंध।
कन्ट्री = मुल्क। देहात। —मेड = स्वदेशी।
कन्डीशन = हालत। दशा। शर्त।
कन्वरसेशन = बातचीत।
कन्सल्ट = सलाह लेना। राय लेना।
कन्सेशन = रिआयत।
कन्सिडरेशन = विचार। निर्णय।
कम्पल्सरी = अनिवार्य।
कम्पाउंड = घेरा।
कम्पाउंडर = दवा बनानेवाला।
कम्प्लेन = शिकायत।
कम्प्लीट = पूरा करना।
कम्पिटीशन = प्रतियोगिता।
काटेज = झोपड़ी।
कान्डक्ट = चालचलन।
कामा = विराम चिह्न।
कारोनेशन = राज्यतिलक। राज्याभिषेक।
कार्निवाल = खेलों का समूह।
क्रिटिक = समालोचक। जाँचने वाला।

क्रिटिकल=गुण दोष परीक्षा में दक्ष। नाजुक।

क्रिटिसाइज़=आलोचना।

क्रिटिसिज़्म=छिद्रान्वेषण। समालोचना।

क्रिश्चियन=ईसाई।

क्रिश्चियानिटी=ईसाइयत।

क्रिसमस=ईसाइयों का एक त्यौहार।

क्लियरेंस=अदा करना। पटा देना।

केक=एक अँगरेज़ी मिठाई।

कैनिस्टर=कनस्तर।

कैस्टर आयल=रेंडी का तेल।

कोलतार=तारकोल। अलकतरा।

गनबोट=अग्निबोट।

गार्टर=पेटी।

गेट=फाटक। —कीपर=द्वारपाल।

जजमेन्ट=राय। फ़ैसला।

जम्पर=स्त्रियों के पहनने का अँगरेज़ी ढंग का कुरता।

जिमनास्टिक=एक अँगरेज़ी कसरत।

जेन्टिलमैन=शरीफ़ आदमी।

जून=अँगरेज़ी साल का छठा महीना।

टर्न=बारी। नम्बर।

टर्म=नियम।

टिफ़िन=तीसरे पहर का भोजन। —कैरियर=बरतन, जिसमें खाना भरकर दूसरी जगह ले जाया जाता है।

ट्विल=एक प्रकार का कपड़ा।

टेम्पर=मिजाज। टेम्परामेन्ट=मिजाज का।

टीम=टोली।

टोबैको=तम्बाकू।

डबल मार्च=तेज़ चाल।

डम्बेल=मुगदर।

ड्राइव=हाँकना। चलाना।

डिज़ीज़=रोग।

डिफ़ीट=हार।

डिफ़ेक्ट=ऐब। दोष।

डिस्कवरी=खोज। अन्वेषण।

डिस्टर्ब=घबड़ाना। अस्तव्यस्त।

डिस्ट्रीब्यूशन=वितरण। बाँटना।

डिसीशन=फ़ैसला।

डिस्पैच=भेजना। —र=डाक भेजनेवाला।
डिस्टेंस=फासला। दूरी।
डुप्लीकेट=दोहरा।
डेथ=मृत्यु।
डेमरेज=हानि।
थर्ड=तीसरा। —क्लास=रद्दी। —डिवीज़न=तीसरी श्रेणी।
नॉलेज=ज्ञान। अनुभूति।
नेकलस=हार।
नोट=लिखना। काग़ज़ी रुपया। —बुक=याददाश्त की पुस्तक।
नोटिस=सूचना।
पन्चर=छेद।
परमिशन=आज्ञा।
परेड=सिपाहियों के क़वायद करने की जगह।
पावर=शक्ति। बल।
पेन्ट=रँगना। तस्वीर उतारना।
पेलेस=महल।
पोजीशन=जगह। हालत। हैसियत। दशा।
प्लाट=मैदान। ज़मीन का टुकड़ा।
प्ले=खेलना। —यर=खिलाड़ी।
प्लेज=रेहन। बंधक। जमानत।
प्लेज़र=आराम।
प्राइज़=पुरस्कार।
प्राइस=मूल्य।
प्रापर्टी=जायदाद।
प्रीवियस=पहले का।
फारचून=क़िस्मत। भाग्य।
फिनायल=दुर्गन्ध मिटानेवाली एक दवा।
फैमिली=कुटुम्ब। परिवार।
फैशन=रवाज। शौक।
फैशनेबुल=शौकीन।
फोर्स=ज़ोर। बल। सेना। दबाना। विवश करना। बेगार।
बक्लस=बकसुआ।
विदाउट=बिना।
बिअरर=वाहक।
ब्रीचेज=समझौता तोड़ना।
बुक=किताब। —कीपिंग=बही खाता लिखने का विद्या। —बाइंडर=जिल्दसाज़। —स्टाल=किताबों की दूकान। —लेट=पुस्तिका।
बेंच=लम्बा स्टूल।

वैरिस्टर = क़ानून का ज्ञाता।
ब्रेक = रोकना। तोड़ना।
ब्यूटी = सुन्दरता। —फुल = सुन्दर। खूबसूरत।
ब्लू ब्लेक = नीली स्याही।
मटन = भेड़ का भुना हुआ गोश्त।
मनीबेग = रुपये पैसे रखने की चमड़े की थैली।
मफ़लर = गलेबन्द।
मशीनगन = मशीन से चलने वाली बंदूक।
मरचेंट = व्यापारी।
मानीटर = मुखिया।
मिक्श्चर = मिश्रण।
मिनट = घंटे का साठवाँ भाग।
मिस = कुमारी। छूट जाना।
मिसेज = श्रीमती।
मिस्टर = महाशय।
मिस्ट्रेस = अध्यापिका।
मीटिंग = सभा।
मेन्टल = दिमागी।
मेम्बर = सदस्य।
मेस = समूह।
रिटायर्ड = अलग हो जाना। एकान्त सेवी।
रिफार्म = सुधारना। दुरस्ती।
रिफ्यूज = इन्कार करना।
रीफलेक्ट = अक्स डालना। दोष लगाना।
रीफलेक्शन = परछाईं।
रेफरी = निर्णयकर्त्ता।
लेटर-पेपर = चिट्ठी लिखने का कागज।
लगवेज = भाषा।
बर्थ डे = जन्म दिवस। सालगिरह।
बिज़िनेस = व्यापार। धंधा।
वेट = बाट ओहदा।
सबमिट = पेश करना।
सस्पेन्ड = मुअत्तल।
सिगनेचर = हस्ताक्षर।
सिचुयेशन = दशा। अवस्था। परिस्थिति।
सिस्टम = क़ायदा। नियम।
सीज़न = मौसम।
सीनियर = उच्च।
स्ट्राइक = हड़ताल।
हनीमून = नववधू के साथ विहार करना।
हारमनी = एक ताल। एक लय। मेल।

हार्न = मोटर का भोंपू।
हार्म = नुक़सान। घाटा।
हार्स = घोड़ा।
हिस्ट्री = इतिहास।
हेडिंग = शीर्षक। विषय।
हैट = अँगरेज़ी टोप।

मुद्रक—श्यामसुन्दर श्रीवास्तव, कायस्थ पाठशाला प्रेस, इलाहाबाद